

‘अरे यायावर रहेगा याद’ यात्रा-वृत्तांत विधा की रचना है। इसमें ‘अज्ञेय’ जी’ द्वारा स्वतन्त्रता पूर्व भारत की यात्रा का वर्णन है। इसमें वर्णित कुछ स्थल वर्तमान पाकिस्तान का हिस्सा हैं।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वर्ष 1955 में यूनेस्को के निमन्त्रण पर अज्ञेय जी यूरोप भ्रमण पर गये तथा इस यात्रा का वृत्तांत ‘एक बूँद सहसा उछली’ में किया।
- इनके अतिरिक्त अज्ञेय ने चार छोटे यात्रा वृत्तांत-बीसवीं शती का गोलोक, वसंत का अग्रदूत, ऋण स्वीकारी हूँ और अज्ञेय अपनी निगाह में, का उल्लेख मिलता है। इनमें से ‘बीसवीं शती का गोलोक’, एक बूँद सहसा उछली का एक अंश है।

9. ‘अरे यायावर रहेगा याद’ किस विधा की रचना है?

- (a) जीवनी (b) आत्मकथा
- (c) यात्रा-साहित्य (d) डायरी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. ‘अरे यायावर रहेगा याद’ किसकी कृति है?

- (a) डॉ. नगेन्द्र (b) दिनकर
- (c) अज्ञेय (d) किसी की भी नहीं

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. ‘एक बूँद सहसा उछली’ यात्रा वृत्तांत के लेखक हैं—

- (a) भगवतशरण उपाध्याय (b) सच्चिदानन्द वात्स्यायन ‘अज्ञेय’
- (c) यशपाल जैन (d) धर्मवीर भारती

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. ‘एक बूँद सहसा उछली’ की रचना विधा है—

- (a) संस्मरण (b) डायरी
- (c) रिपोर्टाज (d) यात्रावृत्त

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. ‘एक बूँद सहसा उछली’ किसके द्वारा लिखित यात्रा वृत्तांत है?

- (a) अज्ञेय जी (b) राहुल सांकृत्यायन
- (c) यशपाल (d) रामवृक्ष बेनीपुरी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. रामवृक्ष बेनीपुरी की कौन-सी कृति यात्रावृत्त की है?

- (a) सागर की लहरों पर
- (b) अप्रवासी की यात्राएं
- (c) पैरों में पंख बाँधकर
- (d) मेरी यूरोप यात्रा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

रामवृक्ष बेनीपुरी ने सन् 1952 में ‘पैरों में पंख बाँधकर’ अपनी यात्रावृत्त लिखा। उनकी दूसरी यात्रावृत्त ‘उड़ते चलो उड़ते चलो’ सन् 1954 में लिखी गयी।

15. ‘आखिरी चट्टान’ रचना के लेखक हैं—

- (a) मोहन राकेश (b) अमृत राय
- (c) रांगेय राघव (d) राहुल सांकृत्यायन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

‘आखिरी चट्टान तक’ मोहन राकेश का यात्रा वृत्त है, जो भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुआ था। दिसम्बर, 1952 से फरवरी, 1953 के बीच मोहन राकेश ने गोआ से कन्याकुमारी तक की यात्रा की थी। यात्रा से लौटते ही यह लिख डाली थी। अमृत राय की प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं—साहित्य में संयुक्त मोर्चा, सुबह रंग, लाल धरती, नई समीक्षा, नागफनी का देश, हाथी के दांत, अग्नि शिखा, फांसी के तख्ते से, कस्बे का एक दिन, गीलीमिट्टी, कठधरे जंगले, सहचिंतन, भटियाली, बतरस, चतुरंग, सारंग और धुआँ।

## □ गद्य काव्य एवं व्यंग्य

1. ‘साधना’ गद्य काव्य किसने लिखा है?

- (a) रायकृष्ण दास (b) अज्ञेय
- (c) दिनकर (d) माखनलाल चतुर्वेदी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

रायकृष्ण दास, कहानी सम्राट प्रेमचन्द के समकालीन कहानीकार एवं गद्य गीत लेखक थे। साधना (1919), अनाख्या (1929), सुधांशु (1929), प्रवाल (1929) आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इन्होंने 'भारत कला भवन' की स्थापना की, थी जिसे वर्ष 1950 में 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' को हस्तगत कर दिया गया। चित्रकला एवं मूर्तिकला के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण योगदान था। उनकी लिखित 'भारत की चित्रकला' और 'भारतीय मूर्तिकला' अपने विषय के मौलिक ग्रन्थ हैं।

**2. विष्णुकान्त शास्त्री की प्रसिद्ध गद्य काव्य-कृति का नाम है—**

- (a) पूजा
- (b) शुभ्रा
- (c) कुछ चन्दन की कुछ कपूर की
- (d) दुपहरिया के फूल

**T.G.T. परीक्षा, 2010**

**उत्तर—(c)**

विष्णुकान्त शास्त्री की प्रसिद्ध गद्य काव्य-कृति का नाम 'कुछ चन्दन की कुछ कपूर की' है। शास्त्री जी की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं— कवि निराला की वेदना तथा निबन्ध, चिन्तन मुद्रा, अनुचिन्तन, तुलसी के हियहेरि, बांग्लादेश के सन्दर्भ में (रिपोर्टाज), स्मरण को पाथेय बनने दो (संस्मरण), सुधियाँ उस चन्दन वन की, भक्ति और शरणागत, ज्ञान और कर्म आदि। भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी (भारत रत्न से सम्मानित) की चुनी हुई कविताओं का संकलन इन्होंने 'अमर आग है' में किया है।

**3. 'निठल्ले की डायरी' नामक हास्य-व्यंग्य निबन्ध-संग्रह के लेखक हैं—**

- (a) श्रीलाल शुक्ल
- (b) गोपाल प्रसाद व्यास
- (c) रवीन्द्रनाथ त्यागी
- (d) हरिशंकर परसाई

**T.G.T. परीक्षा, 2005**

**उत्तर—(d)**

'निठल्ले की डायरी' हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों का एक संग्रह है। इसमें उनके 26 व्यंग्य शामिल हैं, जिसमें समाज में फैले भ्रष्टाचार, दिखावा और अफसरशाही आदि को उन्होंने अपनी कलम से निशाना बनाया।

**4. 'तुलसीदास चन्दन घिसैं' के लेखक हैं—**

- (a) विद्यानिवास मिश्र
- (b) हरिशंकर परसाई
- (c) कुबेर नाथ राय
- (d) इनमें से कोई नहीं

**T.G.T. परीक्षा, 2002**

**उत्तर—(b)**

हरिशंकर परसाई 'तुलसीदास चन्दन घिसैं' के लेखक हैं। इस रचना की मूल अन्तर्वस्तु और उसके भाषा शिल्प दोनों ही स्तरों से यह ज्ञात होता है कि परसाई जनता के रचनाकार थे। उनके इस निबन्ध संग्रह में 'सारिका' के लिए दो स्तम्भों- 'तुलसीदास चन्दन घिसैं' तथा 'कबिरा खड़ा बाजार में' के अन्तर्गत लिखे गये इकतीस निबन्ध शामिल हैं। इन

निबन्धों में उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर दिखने वाले अन्तर्विरोधों पर कड़े प्रहार किये हैं। हरिशंकर परसाई की रचनाओं में मौलाना का लड़का, राग-विराग, सदाचार का ताबीज, भोलाराम का जीव, मुंडन, एक तृप्त आदमी की कहानी, मैं हूँ तोता प्रेम का मारा और सत्य साधक मंडल आदि कहानियाँ व्यंग्यपरक हैं। इन कहानियों में यदि एक ओर राजनीति और शासनतंत्र की विकृतियों एवं कार्य पद्धति की आलोचना की गई है, तो दूसरी ओर साधारण आदमी की यातनाओं और महत्वाकांक्षा शून्य मानसिकता के निर्माण की विडम्बना को भी रेखांकित किया गया है।

**5. 'भोलाराम का जीव' व्यंग्य के लेखक हैं—**

- (a) हरिशंकर परसाई
- (b) ज्ञान वाजपेयी
- (c) रामगोपाल
- (d) श्रीलाल शुक्ल

**P.G.T. परीक्षा, 2004**

**उत्तर—(a)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**6. 'भोलाराम का जीव' किस विधा की रचना है?**

- (a) निबन्ध
- (b) रेखाचित्र
- (c) संस्मरण
- (d) व्यंग्य

**नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014**

**उत्तर—(d)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**7. 'भूत के पाँव' किसकी व्यंग्य रचना है?**

- (a) रवीन्द्रनाथ त्यागी
- (b) हरिशंकर परसाई
- (c) शरद जोशी
- (d) के.पी. सक्सेना

**नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014**

**उत्तर—(b)**

'भूत के पाँव पीछे' हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचना है। इनकी अन्य व्यंग्य रचनाएँ हैं-वैष्णव की फिसलन टिडुरता हुआ गणतंत्र, विकलांग श्रद्धा की दौर आदि।

**नोट—**प्रश्न में केवल 'भूत के पाँव' पूछा गया है, जबकि वास्तव में 'भूत के पाँव पीछे' है।

**8. हरिशंकर परसाई के व्यंग्यात्मक निबन्धों का लक्ष्य क्या है?**

- (a) पाठकों को वास्तविकता के प्रति आँखें खोलना
- (b) पाठकों को गम्भीर हास्य प्रदान करना
- (c) पाठकों की भाव जड़ता को तोड़ना
- (d) पाठकों में विडम्बनाओं के प्रति आक्रोश और घृणा जगाना

**दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015**

**उत्तर—(a)**

हरिशंकर परसाई के व्यंग्यात्मक निबन्धों का लक्ष्य पाठकों के वास्तविकता के प्रति आँखें खोलना है। उनके व्यंग्य सामान्यतः मूल्यगत विसंगतियों से संबद्ध होते हैं - मूल्य चाहे राजनीतिक हो, सांस्कृतिक हो या पीढ़ीगत।

9. निम्नलिखित में से कौन-सी व्यंग्य रचना 'हरिशंकर परसाई' की नहीं है?

- (a) नेताजी कहिन (b) भूत के पाँव  
(c) निठल्ले के डायरी (d) बारात की वापसी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

नेताजी कहिन मनोहर श्याम जोशी की व्यंग्य रचना है। शेष रचनाएँ हरिशंकर परसाई की हैं।

10. 'नेताजी कहिन' के लेखक हैं—

- (a) रवीन्द्र कलिया (b) रवीन्द्रनाथ त्यागी  
(c) श्रीलाल शुक्ल (d) मनोहर श्याम जोशी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'नेताजी कहिन' के रचनाकार हैं—

- (a) हरिशंकर परसाई (b) श्रीलाल शुक्ल  
(c) मनोहर श्याम जोशी (d) भैरव प्रसाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्न में से व्यंग्यकार नहीं हैं—

- (a) रवीन्द्रनाथ त्यागी (b) अज्ञेय  
(c) लतीफ घोषी (d) हरिशंकर परसाई

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' व्यंग्यकार नहीं हैं, बल्कि प्रयोगवाद एवं नयी कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। रवीन्द्रनाथ त्यागी, लतीफ घोषी एवं हरिशंकर परसाई व्यंग्यकार हैं। लतीफ घोषी ने व्यंग्यकृत 'व्यंग्य चरितम्' लिखा है। परसाई जी की व्यंग्य रचनाएँ हैं—वैष्णव की फिसलन, ठिठुरता हुआ गणतन्त्र, विकलांग श्रद्धा का दौर आदि, जबकि रवीन्द्रनाथ त्यागी की प्रमुख व्यंग्य रचनाएँ हैं—उर्दू-हिन्दी हास्य व्यंग्य, बसन्त से पतझर तक, भाद्रपद की साँझ, एक फाइल का सफर, पूरब खिले पलाश आदि।

13. निम्नलिखित लेखकों में व्यंग्यकार कौन हैं?

- (a) मोहन राकेश (b) कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'  
(c) बेदब बनारसी (d) पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c & d)

स्वतन्त्रता पूर्व के व्यंग्यकारों ने राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र की विसंगतियों पर अधिक लक्ष्य सन्धान किया। गौरतलब है कि अंग्रेज सरकार के प्रेस एक्ट लाने के बाद राजनीतिक व्यंग्य लिखने का मतलब था-सरकार के विरोध में जाना। लेकिन इस युग में बेदब बनारसी (कृष्ण देव प्रसाद गौड़), पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', भुवनेश्वर प्रसाद, हरिशंकर शर्मा जैसे निडर रचनाकारों ने इस खतरे को देखते हुए भी अपना युगधर्म निभाया और अंग्रेजी सत्ता को अपने साहित्य द्वारा चुनौती दी। बेदब बनारसी की उत्कृष्ट कृति 'लफ्टर पिगसन की डायरी' में गम्भीर व्यंग्य देखा जा सकता है। गम्भीर सरोकार युक्त व्यंग्य लेखन पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने खूब किया। 1927 ई. में प्रकाशित उनके लघु व्यंग्य उपन्यास 'खुदा राम' और 'चन्द्र हसीनों के खतूत' में उनके तीक्ष्ण व्यंग्य की बानगी देखी जा सकती है। उग्र जी ने 'नेता का स्थान', सरकार तुम्हारी आँखों में' जैसे राजनीतिक व्यंग्यों के साथ-साथ 'भुनगों' जैसी तीव्र लाक्षणिक कहानी भी लिखी। साथ ही धार्मिक और सामाजिक आडम्बरों की विसंगतियों पर 'चुम्बन' और 'चार बेचारे' जैसे व्यंग्य नाटकों के माध्यम से चोट की। अतः स्पष्ट है कि बेदब बनारसी तथा पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' दोनों व्यंग्यकार हैं। इस प्रकार प्रश्न के दो विकल्प (c) तथा (d) सही हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जब पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानी संग्रह 'चाकलेट' (जिसकी प्रशंसा स्वयं महात्मा गाँधी ने भी की थी) छपी, तो हिन्दी के तथाकथित प्रौढ़ आलोचकों ने उग्र साहित्य को 'घासलेट साहित्य' की व्यंग्य संज्ञा की।
- निराला और उग्र की रचनाओं में गद्य और पद्य दोनों में व्यंग्य उपस्थित है।
- निराला की 'कुकुरमुत्ता', 'गर्म पकौड़ी' 'बाप तुम मुर्गी खाते यदि' आदि तथा उग्र जी की 'अपनी खबर' में संकलित हास्य-व्यंग्य और 'जेल में क्या-क्या है?' शीर्षक कविताओं में व्यंग्य की यह उपस्थिति देखी जा सकती है।
- गम्भीर जनोन्मुखी व्यंग्य कर्म की बानगी विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' की 'दुबे जी की चिट्ठियाँ' हरिशंकर शर्मा की व्यंग्य रचना 'कन्ट्रोल कीर्तन', भुवनेश्वर के व्यंग्य नाटक 'तॉबे के कीड़े', भगवती चरण वर्मा की व्यंग्य कथा 'दो बाँके' प्रेमचन्द की कहानी 'कफन' और 'नशा' यशपाल की 'महादान' अमृतलाल नागर की 'देश सेवा शाह मदारों की' आदि रचनाओं में देखी जा सकती है।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'म्युनिसिपैलिटी के कारनामे' में नगरपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार की जमकर खबर ली, वहीं 'सुतापराधे जनकस्य दण्डे' में उनकी चुटीली शैली आकर्षक का केन्द्र रही।

# रचना एवं रचनाकार

1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए-

सूची-I (रचना)	सूची-II (रचनाकार)
(A) मछलीघर	(i) दुष्यंत कुमार
(B) अपनी शताब्दी के नाम	(ii) श्रीराम वर्मा
(C) शब्दों की शताब्दी	(iii) दूधनाथ सिंह
(D) साये में धूप	(iv) विजयदेव नारायण साही

कूट:

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) ii	iv	i	iii
(b) i	ii	iii	iv
(c) iv	iii	ii	i
(d) iii	i	iv	ii

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I (रचना)	सूची-II (रचनाकार)
मछलीघर	- विजयदेव नारायण साही
अपनी शताब्दी के नाम	- दूधनाथ सिंह
शब्दों की शताब्दी	- श्रीराम वर्मा
साये में धूप	- दुष्यंत कुमार

2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए।

सूची-I (रचनाएँ)	सूची-II (रचनाकार)
(A) वीर पंचरत्न	(i) मुकुटधर पाण्डेय
(B) उलाहना पंचक	(ii) गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'
(C) मातृवन्दना	(iii) अमीर अली 'मीर'
(D) कानन कुसुम	(iv) लाला भगवानदीन

कूट :

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) iii	iv	i	ii
(b) i	ii	iii	iv
(c) iv	iii	ii	i
(d) ii	i	iv	iii

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

रचनाएँ	रचनाकार
वीर पंचरत्न	- लाला भगवानदीन
उलाहना पंचक	- अमीर अली 'मीर'
मातृवन्दना	- गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'
कानन कुसुम	- मुकुटधर पाण्डेय

3. इनमें से कौन-सी सुमेलित नहीं है?

(a) मुक्तिमार्ग	- भारत भूषण अग्रवाल
(b) पिघलते पत्थर	- रांगेय राघव
(c) अजेय खण्डहर	- निराला
(d) प्रलय सृजन	- शिवमंगल सिंह 'सुमन'

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'अजेय खण्डहर' रांगेय राघव की रचना है। शेष युग्म सुमेलित हैं।

4. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए-

सूची-I (लक्षण ग्रन्थ)	सूची-II (आचार्य)
(A) रसिक प्रिया	(i) चिन्तामणि
(B) काव्य प्रकाश	(ii) मतिराम
(C) ललित ललाम	(iii) कुलपति मिश्र
(D) रस रहस्य	(iv) केशवदास

कूट:

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) ii	iii	iv	i
(b) iv	i	ii	iii
(c) iii	iv	i	ii
(d) i	ii	iii	iv

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I (लक्षण ग्रन्थ)	सूची-II (आचार्य)
रसिक प्रिया	- केशवदास
काव्य प्रकाश	- चिन्तामणि
ललित ललाम	- मतिराम
रस रहस्य	- कुलपति मिश्र



5. निम्नलिखित लक्षणग्रंथों को उनके रचनाकारों से सुमेलित कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

लक्षणग्रंथ	रचनाकार
अ) भाषाभूषण	1. भिखारीदास
ब) ललित ललाम	2. पद्माकर
स) काव्यनिर्णय	3. मतिराम
द) जगद्विनोद	4. जसवंत सिंह

	अ	ब	स	द
(a)	1	3	2	4
(b)	4	2	1	3
(c)	2	4	3	1
(d)	4	3	1	2

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

सुमेलित है-

(लक्षणग्रंथ)	(रचनाकार)
भाषाभूषण	जसवंत सिंह
ललित ललाम	मतिराम
काव्यनिर्णय	भिखारीदास
जगद्विनोद	पद्माकर

6. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए।

सूची-I	सूची-II
(A) प्रद्युम्न-चरित्र	(i) नारायणदास
(B) स्वर्गारोहण	(ii) चतुर्भुजदास
(C) मधुमालती कथा	(iii) विष्णुदास
(D) छिताई वार्ता	(iv) सुधीर अग्रवाल

कूट:

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) i	ii	iii	iv
(b) iv	iii	ii	i
(c) iii	iv	i	ii
(d) ii	i	iv	iii

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
प्रद्युम्न-चरित्र	- सुधीर अग्रवाल
स्वर्गारोहण	- विष्णुदास
मधुमालती कथा	- चतुर्भुजदास
छिताई वार्ता	- नारायणदास

7. इनमें से कौन-सा सुमेलित नहीं है?

(a) गीत गोविन्दानन्द	(i) भारवेन्दु
(b) नागरी नीरद	(ii) प्रेमघन
(c) पृथ्वीराज प्रयाण	(iii) राधाकृष्णदास
(d) आनन्द मंजरी	(iv) बालमुकुन्द गुप्त

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

‘आनन्द मंजरी’ के रचयिता पंडित अम्बिका दत्त व्यास हैं। शेष युग्म सुमेलित हैं।

8. निम्नलिखित से कौन-सा सुमेलित नहीं है?

(a) श्यामा स्वप्न	(i) डॉ. जगमोहन सिंह
(b) आश्चर्य वृत्तांत	(ii) पं. अम्बिका दत्त व्यास
(c) सौ अजान एवं एक सुजान	(iii) देवदत्त
(d) विधवा विपत्ति	(iv) राधाचरण गोस्वामी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

‘सौ अजान एवं एक सुजान’ के रचनाकार बालकृष्ण भट्ट हैं। शेष युग्म सही हैं।

9. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (कविता)	सूची-II (रचनाकार)
(A) जूही की कली	1. अज्ञेय
(B) नौका विहार	2. माखनलाल चतुर्वेदी
(C) नदी के द्वीप	3. सुमित्रानन्दन पन्त
(D) पुष्प की अभिलाषा	4. निराला
(a) A B C D	
4 3 1 2	
(b) A B C D	
4 1 2 3	
(c) A B C D	
3 2 1 4	
(d) A B C D	
1 4 3 2	

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

सुमेलित है-

सूची-I (कविता)	सूची-II (रचनाकार)
जूही की कली	निराला
नौका विहार	सुमित्रानन्दन पन्त
नदी के द्वीप	अज्ञेय
पुष्प की अभिलाषा	माखनलाल चतुर्वेदी

10. रीतिकाल के निम्नलिखित कवियों को उनकी रचनाओं के साथ सुमेल कीजिए:

सूची-I (कवि का नाम)	सूची-II (रचना का नाम)
(A) चिन्तामणि	(i) रस सारांश
(B) रसलीन	(ii) रसरराज
(C) भिखारीदास	(iii) रसविलास
(D) मतिराम	(iv) रस-प्रबोध

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	i	iv	ii	iii
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	iii	iv	i	ii

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

रीतिकालीन कवियों की उनकी रचनाओं के साथ सही सुमेलन इस प्रकार है—

सूची-I (कवि का नाम)	सूची-II (रचना का नाम)
चिन्तामणि	- रसविलास
रसलीन	- रस-प्रबोध
भिखारीदास	- रस सारांश
मतिराम	- रसरराज

11. निम्न में कौन-सी रचना एवं रचनाकार का युग्म सही नहीं है?

- (a) काव्यनिर्णय-भिखारीदास (b) रसरहस्य-कुलपति मिश्र  
(c) रसविलास-चिन्तामणि (d) भावविलास-केशवदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

‘भावविलास’ के रचनाकार देव हैं। शेष युग्म सही हैं।

12. निम्न में से कौन-सी रचना के रचनाकार का नाम सही नहीं है?

- (a) फूल नहीं रंग बोलते हैं-केदारनाथ अग्रवाल  
(b) उस जनपद का कवि हूँ-त्रिलोचन शास्त्री  
(c) सीढ़ियों पर धूप में-शमशेर बहादुर सिंह  
(d) संसद से सड़क तक-सुदामा पांडेय ‘धूमिल’

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘सीढ़ियों पर धूप में’ कृति के रचनाकार रघुवीर सहाय हैं। शेष युग्म सही हैं।

13. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही विकल्प चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(A) दिव्या	(i) भीष्म साहनी
(B) तमस	(ii) फणीश्वरनाथ रेणु
(C) मैला आँचल	(iii) नागार्जुन
(D) बलचनमा	(iv) यशपाल

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(c)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(d)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

सही सुमेलित युग्म इस प्रकार है—

सूची-I	सूची-II
दिव्या	यशपाल
तमस	भीष्म साहनी
मैला आँचल	फणीश्वरनाथ रेणु
बलचनमा	नागार्जुन

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- तमस उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय हुए साम्प्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसका अनुवाद वर्ष 1988 में अंग्रेजी में किया गया।
- इस उपन्यास पर टेलीविजन धारावाहिक भी बनाया जा चुका है जिसमें ओमपुरी और अमरीश पुरी जैसे कलाकारों ने अपना योगदान दिया है।
- भीष्म साहनी को ‘तमस’ के लिए वर्ष 1975 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
- पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविता संग्रह) पर नागार्जुन को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
- नागार्जुन को भारत-भारती पुरस्कार, मध्य प्रदेश के मैथिली गुप्त पुरस्कार और बिहार सरकार के राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- नागार्जुन को दिल्ली की हिन्दी अकादमी का शिखर सम्मान भी मिला।

14. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) सूरदास	(i) बीजक
(B) जगन्नाथदास	(ii) लोकायतन
(C) कबीर	(iii) सूरसागर
(D) सुमित्रानन्दन पन्त	(iv) उद्धव शतक

कूट :

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iii)	(iv)	(i)	(ii)
(b) (ii)	(i)	(iii)	(iv)
(c) (iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d) (i)	(ii)	(iii)	(iv)

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-	
<b>सूची-I</b>	<b>सूची-II</b>
सूर दास	सूरसागर
जगन्नाथदास	उद्धव शतक
कबीर	बीजक
सुमित्रानन्दन पन्त	लोकायतन

15. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) लालटीन की छत	(i) निर्मल वर्मा
(B) आपका बंटी	(ii) गिरिराज किशोर
(C) जुगतबंदी	(iii) ऊषा प्रियंवदा
(D) पचपन खम्भे लाल दीवारें	(iv) मन्नू भण्डारी

कूट :

A	B	C	D
(a) (i)	(iv)	(ii)	(iii)
(b) (i)	(ii)	(iv)	(iii)
(c) (iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d) (iii)	(i)	(iv)	(ii)

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
लालटीन की छत	निर्मल वर्मा
आपका बंटी	मन्नू भण्डारी
जुगतबंदी	गिरिराज किशोर
पचपन खम्भे लाल दीवारें	ऊषा प्रियंवदा

16. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) मानस के हंस	(i) भगवतीचरण वर्मा
(B) झूठा सच	(ii) अमृतलाल नागर
(C) टेढ़े-मेढ़े रास्ते	(iii) यशपाल
(D) मरी हुई मछली	(iv) राजकमल चौधरी

कूट :

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iv)	(ii)	(i)	(iii)
(b) (iii)	(iv)	(ii)	(i)
(c) (ii)	(iii)	(i)	(iv)
(d) (ii)	(i)	(iii)	(iv)

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
मानस के हंस	अमृतलाल नागर
झूठा सच	यशपाल
टेढ़े-मेढ़े रास्ते	भगवतीचरण वर्मा
मरी हुई मछली	राजकमल चौधरी

17. 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' के लेखक हैं—

- (a) वृन्दावन लाल वर्मा  
(b) भगवतीचरण वर्मा  
(c) विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'  
(d) चंडी प्रसाद हृदयेश

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) क्या भूलूँ क्या याद करूँ	(i) विष्णु प्रभाकर
(B) रसीदी टिकिट	(ii) अमृता प्रीतम
(C) आवारा मसीहा	(iii) अमृत राय
(D) कलम का सिपाही	(iv) हरिवंशराय बच्चन

कूट :

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (i)	(iv)	(iii)	(ii)
(b) (iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c) (iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d) (ii)	(iv)	(iii)	(i)

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-	
सूची-I	सूची-II
क्या भूलूँ क्या याद करूँ	हरिवंशराय बच्चन
रसीदी टिकिट	अमृता प्रीतम
आवारा मसीहा	विष्णु प्रभाकर
कलम का सिपाही	अमृत राय

19. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) क्या भूलूँ क्या याद करूँ	(i) रेखाचित्र
(B) आवारा मसीहा	(ii) यात्रा-साहित्य
(C) तन्त्रालोक से यन्त्रालोक तक	(iii) आत्मकथा
(D) मेरा परिवार	(iv) जीवनी

कूट :

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b) (iii)	(iv)	(ii)	(i)
(c) (iv)	(iii)	(i)	(ii)
(d) (ii)	(i)	(iv)	(iii)

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-	
सूची-I	सूची-II
क्या भूलूँ क्या याद करूँ	आत्मकथा
आवारा मसीहा	जीवनी
तन्त्रालोक से यन्त्रालोक तक	यात्रा-साहित्य
मेरा परिवार	रेखाचित्र

20. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(पुस्तक)	(लेखक)
(A) शेखर : एक जीवनी	(i) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(B) अशोक के फूल	(ii) हरिवंशराय बच्चन
(C) क्या भूलूँ क्या याद करूँ	(iii) अज्ञेय

कूट :

(A)	(B)	(C)
(a) (i)	(ii)	(iii)
(b) (ii)	(i)	(iii)
(c) (iii)	(i)	(ii)
(d) (iii)	(ii)	(i)

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-	
सूची-I	सूची-II
(पुस्तक)	(लेखक)
शेखर : एक जीवनी	अज्ञेय
अशोक के फूल	हजारी प्रसाद द्विवेदी
क्या भूलूँ क्या याद करूँ	हरिवंशराय बच्चन

21. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) मंगलसूत्र	(i) विष्णु प्रभाकर
(B) इरावती	(ii) भीष्म साहनी
(C) आवारा मसीहा	(iii) जयशंकर प्रसाद
(D) तमस	(iv) प्रेमचन्द

कूट :

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iii)	(iv)	(ii)	(i)
(b) (iv)	(iii)	(i)	(ii)
(c) (ii)	(i)	(iii)	(iv)
(d) (i)	(ii)	(iv)	(iii)

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

कूट से सही उत्तर का चयन इस प्रकार है-	
सूची-I	सूची-II
मंगलसूत्र	प्रेमचन्द
इरावती	जयशंकर प्रसाद
आवारा मसीहा	विष्णु प्रभाकर
तमस	भीष्म साहनी



22. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) प्रियप्रवास	(i) मैथिलीशरण गुप्त
(B) रंग में भंग	(ii) राय देवीप्रसाद पूर्ण
(C) मृत्युंजय	(iii) हरिऔध
(D) पथिक	(iv) रामनरेश त्रिपाठी

कूट :	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(b)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(c)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(d)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर-(c)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
प्रियप्रवास	हरिऔध
रंग में भंग	मैथिलीशरण गुप्त
मृत्युंजय	राय देवीप्रसाद पूर्ण
पथिक	रामनरेश त्रिपाठी

23. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिये और दिये गये कूटों से सही विकल्प चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(A) बाणभट्ट की आत्मकथा	(i) अज्ञेय
(B) शेखर : एक जीवनी	(ii) मोहन राकेश
(C) आधे-अधूरे	(iii) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(D) संस्कृति के चार अध्याय	(iv) हजारी प्रसाद द्विवेदी

कूट :	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(d)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर-(d)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
बाणभट्ट की आत्मकथा	हजारी प्रसाद द्विवेदी
शेखर : एक जीवनी	अज्ञेय
आधे-अधूरे	मोहन राकेश
संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह 'दिनकर'

24. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(A) अरी ओ करुणा प्रभामय	1. मुक्तिबोध
(B) धूप के धान	2. अज्ञेय
(C) खुशबू के शिलालेख	3. गिरिजा कुमार माथुर
(D) चाँद का मुँह टेढ़ा है	4. भवानी प्रसाद मिश्र

कूट-

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	i	iv	iii	ii
(b)	ii	iii	iv	i
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	iv	i	iii	ii

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(b)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
अरी ओ करुणा प्रभामय	- अज्ञेय
धूप के धान	- गिरिजा कुमार माथुर
खुशबू के शिलालेख	- भवानी प्रसाद मिश्र
चाँद का मुँह टेढ़ा है	- मुक्तिबोध

25. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(a) इत्यलम्	1. धर्मवीर भारती
(b) ठंडा लोहा	2. अज्ञेय
(c) गीत फरोस	3. नरेश मेहता
(d) संशय की एक रात	4. भवानी प्रसाद मिश्र

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	ii	iv	iii	i
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	iv	ii	iii	i
(d)	ii	i	iv	iii

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(d)

सही सुमेलन इस प्रकार है—

**सूची-I**

इत्यलम्

ठंडा लोहा

गीत फरोस

संशय की एक रात

**सूची-II**

अज्ञेय

धर्मवीर भारती

भवानी प्रसाद मिश्र

नरेश मेहता

26. निम्न में से कौन-सी रचना एवं उसके रचनाकार का युग्म सही नहीं है?

- (a) कविता-कौमुदी-रामनरेश त्रिपाठी
- (b) हिमकिरीटिनी-माखनलाल चतुर्वेदी
- (c) हल्दीघाटी-श्यामनारायण पाण्डेय
- (d) रसवन्ती-सियारामशरण गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

रसवन्ती रामधारी सिंह 'दिनकर' की कृति है। शेष युग्म सही हैं।

27. इनमें से कौन-सा जोड़ा सही है?

- (a) महादेवी वर्मा - नीहार
- (b) मैथिलीशरण गुप्त - कामायनी
- (c) पन्त - तोड़ती पत्थर
- (d) निराला - साकेत

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

विकल्प (a) का जोड़ा सही है। 'कामायनी', जयशंकर प्रसाद, 'तोड़ती पत्थर' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा 'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त की रचना है।

28. इनमें से कौन-सा जोड़ा सही है?

- (a) प्रियप्रवास - हरिऔध
- (b) सांध्यगीत - प्रसाद
- (c) आँसू - निराला
- (d) साकेत - तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

विकल्प (a) का जोड़ा सही है। 'सांध्यगीत' महादेवी वर्मा, 'आँसू' जयशंकर प्रसाद तथा 'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त की रचना है।

29. इनमें से कौन-सी सुमेलित नहीं है?

- (a) चतुरसेन शास्त्री - उत्सर्ग
- (b) चन्द्रगुप्त विद्यालंकार - अशोक

(c) हरिकृष्ण प्रेमी - प्रतिशोध

(d) सिद्धलिंग पट्टणशेट्टी - विशाखा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'विशाखा' शिरवाडकर यांचा की कृति है। शेष युग्म सही हैं।

30. सही युग्म का चयन कीजिए—

- (a) भगवतशरण उपाध्याय - विलायत यात्रा
- (b) देवेन्द्र सत्यार्थी - तूफानों के बीच
- (c) रामकृष्ण बेनीपुरी - हिमालय यात्रा
- (d) मोहन राकेश - अखिरी चट्टान तक

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

सही युग्म इस प्रकार सुमेलित हैं—

- प्रतापनारायण मिश्र - विलायत यात्रा
- रांगेय राघव - तूफानों के बीच
- काका कालेलकर - हिमालय यात्रा
- मोहन राकेश - अखिरी चट्टान तक

31. निम्नलिखित तथ्यों को कालक्रमानुसार लिखिए—

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखा
2. तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना की
3. अज्ञेय द्वारा 'तारसप्तक' का प्रकाशन किया गया
4. जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' की रचना की

- (a) 1 2 4 3
- (b) 2 1 3 4
- (c) 2 1 4 3
- (d) 4 2 3 1

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का इतिहास 1929 ई. में लिखा। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना लगभग 1574 ई. में की। अज्ञेय ने 'तारसप्तक' का प्रकाशन 1943 ई. में किया। जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' की रचना 1935 ई. में की। अतः कालक्रमानुसार विकल्प (c) सही उत्तर है।

32. रसरतन के रचयिता हैं—

- (a) जानकवि
- (b) पुहकर
- (c) शेखनबी
- (d) शेखनिसार

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

पुहकर कवि ने सन् 1616 में 'रसरतन' नामक प्रेम-कथानक काव्य लिखा था, जिसमें रंभावती और सूरसेन की प्रेमकथा है। ये प्रतापपुर (मैनपुरी) के निवासी थे।

33. 'चंदनबाला रास' के रचयिता हैं :

- (a) जिनधर्म सूरि (b) विजयसेन सूरि  
(c) जिनदत्त सूरि (d) आसगु

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'चंदनबाला रास' के रचयिता आसगु हैं।

34. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना शिवराज सिंह चौहान की है?

- (a) हिन्दी साहित्य की परम्परा  
(b) अनैतिक  
(c) प्रेमचंद ! विरासत का सवाल  
(d) हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

'हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष' शिवराज सिंह चौहान की रचना है।

35. 'माधवानल कामकंदला' काव्य के रचयिता हैं-

- (a) आलम (b) बोध  
(c) ठाकुर (d) गंग

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(a)

'माधवानल कामकंदला' काव्य के रचयिता आलम हैं। आलम रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। आलम के नाम से चार ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है। माधवानल कामकंदला, श्याम स्नेही, सुदामा चरित तथा आलम केलि। इनमें दो ग्रन्थ प्रेमाख्यात्मक काव्य परम्परा व सुदामा चरित कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा की प्रबन्धात्मक रचनाएँ हैं। 'आलम केलि' मुक्तक काव्य रचना है। इनकी रचनाओं में भावों की प्रधानता है।

36. 'रामकृष्ण परमहंस' के जीवन को लक्ष्य करके लिखी गई पुस्तक

'हलचल के पंख' के लेखक हैं—

- (a) रामचंद्र तिवारी (b) मोहन अवरथी  
(c) कृष्णबिहारी मिश्र (d) कुबेरनाथ राय

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

'हलचल के पंख' के लेखक मोहन अवरथी हैं। यह उनके अनुगीतों का संग्रह है।

37. 'प्राकृत पैंगलम' के रचयिता हैं-

- (a) हेमचन्द्र (b) स्वयंभू  
(c) वंशीधर (d) विद्यापति

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

कतिपय आचार्यों के ग्रन्थों का विलोडन (चुराने के अर्थ में) करके कई हजार शब्द संग्रहीत किये गये हैं। उनमें वररुचि, हेमचन्द्र, स्वयंभू, हरिदेव, विद्यापति, सरहपाद तथा संग्रहीत उद्धरणों के सम्पादित ग्रन्थ तथा व्याकरण में प्रमुख "प्राकृत पैंगलम तथा विशलिका", "प्राकृत भाषाओं का व्याकरण" प्रमुख हैं। 'प्राकृत पैंगलम' के टीकाकार वंशीधर हैं। प्राकृत पैंगलम में संग्रहीत अपभ्रंश कविताओं की भाषा को अवहट्ट कहा है। प्राकृत पैंगलम किसी एक काल की रचना नहीं है। उचित विकल्प के अभाव में विकल्प (c) उत्तर माना जा सकता है। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के मतानुसार इसमें संकलित पदों का रचनाकाल 900 ई. से लेकर 1400 ई. तक का है। ब्रजभाषा पर कार्य करने वाले विद्वानों ने इसे ब्रजभाषा का ग्रन्थ माना है। किन्तु डॉ. उदय नारायण तिवारी के अनुसार इसमें अवधी, भोजपुरी, मैथिली और बंगला के प्राचीनतम रूप भी मिलते हैं।

38. 'अंगवधू' ..... की रचना है।

- (a) गरीबदास (b) मिरसीनदास  
(c) मल्लूकदास (d) दादूदयाल

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'अंगवधू', दादूदयाल का प्रसिद्ध काव्य संग्रह है। वे कबीर की विचारधारा से प्रभावित थे। निर्गुण भक्त कवि होने पर भी उन्होंने ईश्वर के सगुण स्वरूप को मान्यता दी है। उनकी काव्यभाषा ब्रजभाषा है, जिसमें राजस्थानी और खड़ी बोली के शब्दों का मिश्रण भी मिलता है। उनकी भाषा कबीर की अपेक्षा सरल और बोधगम्य है। उनके 52 शिष्यों में रज्जब और सुन्दरदास सर्वप्रमुख थे।

39. 'बुद्धचरित' के रचनाकार की इनमें से एक और कृति है, वह है—

- (a) मुद्राराक्षस (b) प्रतिज्ञायौगन्धरायण  
(c) हनुमन्नाटक (d) सौन्दरानन्द

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'बुद्धचरित' महाकवि अश्वघोष की कवित्व कीर्ति का आधार स्तम्भ है। 28 सर्गों में विरचित इस महाकाव्य के द्वितीय से लेकर त्रयोदश सर्ग तक तथा प्रथम एवं चतुर्दश सर्ग के कुछ अंश ही मिलते हैं। बुद्धचरित के अलावा अश्वघोष रचित अन्य रचनाएँ हैं—सौन्दरानन्द, शरिपुत्रप्रकरण तथा राष्ट्रपाल (दो रूपक) है। इसके अतिरिक्त अश्वघोष का जातक की शैली पर लिखित 'कल्पना मण्डितिका' कथाओं का संग्रह है।

40. 'प्रवासी के गीत' के रचनाकार हैं-

- (a) नरेन्द्र शर्मा (b) हरिवंशराय 'बच्चन'  
(c) भगवतीचरण वर्मा (d) हरिकृष्ण प्रेमी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

नरेन्द्र शर्मा के प्रमुख कविता संग्रह हैं- 'प्रवासी के गीत', 'मिट्टी और फूल', 'अग्निशय्य', 'प्यासा निर्झर', 'मुट्टी बंद रहस्य', 'मनोकामिनी', 'द्रोपदी', 'उत्तरजय सुवर्णा' इनके प्रबंधकाव्य हैं।

41. 'रामायण महानाटक' के लेखक हैं-

- (a) प्राणचंद चौहान (b) केशवदास  
(c) हृदयराज (d) अग्रदास

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

प्राणचंद चौहान भक्तिकाल के कवि थे। वे रामायण महानाटक के रचयिता हैं।

42. 'औरत की बोली' कृति के रचनाकार हैं-

- (a) महुआ माझी (b) गीताश्री  
(c) मैत्रेयी पुष्पा (d) अलका सरावगी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'औरत की बोली' कृति के रचनाकार गीताश्री हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं-

कहानी संग्रह-प्रार्थना के बाहर, कविता जिनका हक।

स्त्री विमर्श-स्त्री आकांक्षा के मानचित्र।

शोध-सपनों की मंडी (आदिवासी लड़कियों की तस्करी पर आधारित), देहराग (बैगा आदिवासियों की गोदना कला पर एक सचित्र शोध पुस्तक)।

43. 'मनबोध मास्टर की डायरी' के लेखक हैं

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) विवेकी राय  
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) अमृतराय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

विवेकी राय गंवई (गांव) रंग में रंगे हुए सहज और अस्तिक रचनाकार हैं। उन्होंने अनेक विधाओं में रचना की है। वे एक साथ ही कवि, कथाकार, निबन्धकार और रिपोर्टाज लेखक भी हैं। 'मनबोध मास्टर की डायरी' डॉ. विवेकी राय की रचना है।

44. 'सनेह लीला' के रचयिता हैं-

- (a) रैदास (b) पीपा  
(c) विष्णुदास (d) बेनी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'सनेह लीला' के रचयिता विष्णुदास हैं। 'महाभारत कथा' और 'स्वर्गारोहण' भी इन्हीं की रचनाएँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- विष्णुदास के कृष्णलीला सम्बन्धी दो काव्य उपलब्ध हुए हैं- 'रुक्मिणी मंगल' तथा 'सनेह लीला'।
- 'सनेह लीला' में कृष्ण को अपना ब्रज-सम्बन्धी बाल्यकाल स्मरण आता है और वह ऊद्धव को गोपियों के लिए संदेश देकर ब्रज भेजते हैं।
- 'रुक्मिणी मंगल' में कृष्ण-रुक्मिणी-विवाह की कथा है।
- विष्णुदास के ये दोनों काव्य कृष्ण एवं राम काव्यों के प्रेरक हैं।

45. हिन्दी में शिकार साहित्य के अप्रतिम लेखक हैं-

- (a) जगमोहन सिंह (b) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी  
(c) श्रीराम शर्मा (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

श्रीराम शर्मा ने शिकार के सम्बन्ध में बहुत से लेख लिखे हैं। पर 'बोलती प्रतिमा' (1937 ई.) और 'वे जीते कैसे हैं' (1957 ई.) में इनके रेखाचित्र संस्मरण संगृहीत हैं। इन संग्रहों में वे ही चित्र अधिक प्रभावशाली हैं, जो शिकार से सम्बद्ध हैं।

46. निम्नलिखित में से कौन-सी पुस्तक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नहीं लिखी है?

- (a) अशोक के फूल (b) कबीर  
(c) नया साहित्य (d) कुटज

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'नया साहित्य' के लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी नहीं हैं, जबकि अशोक के फूल, कबीर और कुटज उनकी रचनाएँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'नया साहित्य' भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा संचालित मासिक पत्रिका है।
- जिसका प्रगतिशील साहित्य की रचना और प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

47. 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' निम्नलिखित में से किसके द्वारा लिखा गया है?

- (a) डॉ. इन्द्रनाथ मदान (b) डॉ. सुमन राजे  
(c) डॉ. श्यामसुन्दर दास (d) डॉ. ममता कलिया

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' डॉ. सुमन राजे द्वारा लिखी गयी पुस्तक है। डॉ. सुमन राजे द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें हैं- कविता सपना और लाश घर, चौथा सप्तक, उगे हुए हाथों के फूल, यात्रादेश, साहित्य, निकेतन, कानपुर, इक्कीसवीं सदी का गीत आलोचना एवं साहित्येतिहास : संरचना और स्वरूप, काव्य रूप-संरचना, उद्भव और विकास, नाट्य शिल्प, रचना की कार्यशाला आदि।



48. 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' ग्रन्थ के लेखक हैं—

- (a) नामवर सिंह (b) दूधनाथ सिंह  
(c) सुमन राजे (d) बच्चन सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक एवं चिन्तक डॉ. बच्चन सिंह की महत्वपूर्ण पुस्तक है। इन्होंने आदिकाल को 'अपभ्रंश काल' कहा है। आधुनिक काल का आरंभ 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से मानते हुए इस काल का उपविभाजन 'नवजागरण-युग', स्वच्छन्दतावाद-युग तथा उत्तर-स्वच्छन्दतावाद-युग के नाम से किया है। उत्तर-स्वच्छन्दतावाद-युग के अंतर्गत प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता और उत्तर आधुनिकतावाद का विवेचन मिलता है।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➔ डॉ. बच्चन सिंह की अन्य कृतियाँ हैं—बिहारी का नया मूल्यांकन, क्रान्तिकारी कवि निराला-आलोचक और आलोचना, रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना, समकालीन साहित्य और आलोचना की चुनौती, हिन्दी नाटक, हिन्दी आलोचना के बीच-शब्द ।

49. 'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर' के लेखक हैं—

- (a) फ्रैंक ई.के. (b) मैक्समूलर  
(c) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (d) रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर' के लेखक फ्रैंक ई.के. हैं। भारत में यह सन् 1920 में कलकत्ता एसोसिएशन प्रेस द्वारा प्रकाशित की गयी थी। यह अंग्रेजी भाषा में लिखी गयी है।

50. 'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर' के लेखक हैं :

- (a) मौलवी करीम उद्दीन (b) एफ.ई.के.  
(c) जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (d) इडविन ग्रीव्स

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर' के लेखक इडविन ग्रीव्स हैं। इसका प्रकाशन 1918 में हुआ था।

51. 'आलसियों का कोड़ा' किसकी रचना है?

- (a) लल्लू लाल (b) मुंशी सदासुख लाल  
(c) सदल मिश्र (d) सितारे हिन्द

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

'आलसियों का कोड़ा' के रचनाकार राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—राजा भोज का सपना, वीर सिंह का वृत्तांत, भूगोल हस्तमलक, वामामनरंजन, मानवधर्म सार, उपनिषदसार, योगवशिष्ट आदि।

52. 'चंडी चरित्र' किसकी विशिष्ट साहित्यिक रचना है?

- (a) गुरु गोविन्द सिंह (b) अर्जुनसिंह  
(c) रामदास (d) अंगद

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'चंडी चरित्र' गुरु गोविन्द सिंह की विशिष्ट साहित्यिक रचना है। इनकी रचनाओं के संग्रह का नाम 'दशम ग्रन्थ' है। इसमें 16 रचनाएँ संकलित हैं। इनकी शैली ओजस्विनी है। गुरुजी की रचनाओं में वीर रस प्रधान है।

53. कबीर के बीजक पर रची गई 'त्रिज्या' टीका किसकी है?

- (a) पूरनदास (b) जगजीवनदास  
(c) भगवानदास (d) पल्लू साहब

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

पूरनदास, अमर साहब के शिष्य सुखलाल साहब के शिष्य थे। उन्होंने 'वैराग्य शतक' नामक ग्रंथ की रचना की। तत्पश्चात् उन्होंने 'निर्णयसार' और 'बीजक की त्रिज्या' टीका की रचना की।

54. 'कालिदास हजारा' की रचना की—

- (a) भारतेन्दु ने (b) घनानन्द ने  
(c) चिन्तामणि (d) कालिदास ने

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

रीतिकालीन कवि कालिदास ने 'कालिदास हजारा' की रचना की है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'सुन्दरी तिलक' में रीतिकालीन कवियों का संकलन किया है।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➔ कालिदास का पूरा नाम कालिदास त्रिवेदी था। इनका जन्म नरेश जोगजीत सिंह के यहाँ रहना पाया जाता है, जिनके लिए संवत् 1749 में इन्होंने 'वर-क्यू-विनोद' बनाया। यह नायिकाभेद और नखशिख की पुस्तक है।  
➔ बतीस कवितों की इनकी एक छोटी सी पुस्तक 'जँजीराबंद' भी है।



55. 'हालात-ए-कन्हैया' किसकी रचना है?

- (a) पूरन भगत (b) विद्यापति  
(c) अमीर खुसरो (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'हालात-ए-कन्हैया' अमीर खुसरो की रचना है। इनके द्वारा नजरान-ए-हिन्दी नामक एक और ग्रन्थ की रचना का उल्लेख मिलता है।

56. 'हिन्दी नवरत्न' के लेखक हैं?

- (a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) प्रतापनारायण मिश्र  
(c) मिश्रबन्धु (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

हिन्दी भाषा के मानकीकरण की दृष्टि से बीसवीं शती का प्रथम चरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस काल में जिन विद्वानों ने सक्रिय भूमिका निभाई, उनमें मिश्रबन्धुओं (गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र और शुकदेव बिहारी मिश्र) का नाम सर्वोपरि है। 'हिन्दी नवरत्न' तथा मिश्रबन्धु विनोद (तीनों भाग, 1913) मिश्रबन्धुओं की रचना है।

57. 'हिन्दी नवरत्न' एक आलोचनात्मक कृति है, जिसके आलोचक रचनाकार हैं—

- (a) शिवसिंह सरोज (b) मिश्रबन्धु  
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) श्यामसुन्दर दास

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. 'माधव विलास' के रचनाकार हैं—

- (a) लल्लू लाल (b) सदल मिश्र  
(c) राम प्रसाद निरंजनी (d) सदासुख लाल

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'माधव विलास' (1817) के रचनाकार लल्लू लाल हैं। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं—सिंहासन बत्तीसी (1801), बैताल पच्चीसी (1801), माधोनल (1801), शकुन्तला (1801), प्रेम सागर इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➔ सदल मिश्र की 'चन्द्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान' को संस्कृत से खड़ी बोली में अनूदित किया।
- ➔ राम प्रसाद निरंजनी ने योगवशिष्ट एवं सदासुख लाल ने सुखसागर की रचना की।

59. 'बिहारी बिहार' नामक ग्रंथ के रचयिता हैं:

- (a) काशीनाथ खत्री (b) बिहारी  
(c) राधाचरण गोस्वामी (d) पं. अंबिकादत्त व्यास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने पं. अंबिकादत्त व्यास (1858-1900) को ब्रजभाषा का अछा कवि माना है। इन्होंने बिहारी के दोहों के भाव को विस्तृत करने के लिए कुंडलियाँ छन्द में 'बिहारी बिहार' नामक एक बड़ा काव्यग्रन्थ लिखा।

60. 'मोचीराम' तथा 'पटकथा' के लेखक हैं—

- (a) चन्द्रकान्त देवताले (b) धूमिल  
(c) बलदेव वंशी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'मोचीराम' तथा 'पटकथा' सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की कविताएँ हैं। इनकी अन्य कविताएँ हैं—मैंने घुटने से कहा, हरित क्रान्ति, उसके बारे में, कुछ सूचनाएँ, हर तरफ धुआँ है, रोटी और संसद, भेंट, गाँव, घर में, वापसी आदि। संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डेय का प्रजातन्त्र इनके कविता-संग्रह हैं।

61. 'संसद से सड़क तक' के रचनाकार हैं—

- (a) मुक्तिबोध (b) धूमिल  
(c) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (d) लीलाधर जगूड़ी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

62. वह विकल्प छँटिए जिसमें खड़ी बोली के महाकाव्यों का नाम हो—

- (a) रामचरितमानस, बीसलदेव रासो, पद्मावत  
(b) लहर, दीपशिखा, भारतभारती  
(c) चन्द्रगुप्त, पद्मावत, कुरुक्षेत्र  
(d) साकेत, कामायनी, प्रियप्रवास

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचित 'प्रियप्रवास' (1914), मैथिलीशरण गुप्त रचित 'साकेत' (1931) तथा कामायनी (1935) जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य है।

63. इनमें से कौन-सी नागार्जुन द्वारा रचित नहीं है?

- (a) पाषाणी (b) रवीन्द्र के प्रति  
(c) चंदना (d) कला और बूढ़ा चाँद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

‘कला और बूढ़ा चाँद’ नागार्जुन द्वारा नहीं, बल्कि सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा रचित काव्य है।

64. निम्न में से ‘हिन्दी साहित्य का अतीत’ किसने लिखा?

- (a) डॉ. विश्वनाथ तिवारी (b) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र  
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा (d) राहुल सांकृत्यायन

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘हिन्दी साहित्य का अतीत’ (भाग- 1 और 2) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का आलोचनात्मक ग्रन्थ है। इनके अन्य आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं— बिहारी का वाग्भूति, वाङ्मय विमर्श, हिन्दी का समसामयिक साहित्य और हिन्दी नाट्य साहित्य का विकास इत्यादि। शुक्ल जी ने अपनी आलोचना के लिए सगुणोपासक भक्त कवियों को चुना, तो मिश्र जी ने रीतिकालीन कवियों को, बिहारी एवं घनानन्द उनके प्रिय कवि हैं।

65. ‘हिन्दी साहित्य का अतीत’ (भाग-1 और 2) साहित्येतिहास ग्रन्थ के लेखक हैं—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र  
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) श्यामसुन्दर दास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

66. ‘हिन्दी साहित्य का अतीत’ नामक इतिहास ग्रन्थ के रचनाकार का नाम है—

- (a) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (b) रामचन्द्र शुक्ल  
(c) रामकुमार वर्मा (d) गणपति चन्द्र गुप्त

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

67. ‘आत्मबोध’ किसकी रचना है?

- (a) जालन्धरनाथ (b) गोरखनाथ  
(c) मत्स्येन्द्रनाथ (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

‘आत्मबोध’ नामक ग्रन्थ के रचनाकार हठयोग के प्रवर्तक गोरखनाथ हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—सबदी, पद, प्राणसंकली, सिष्यादरसन, नर वैबोध, अभैमात्रा जोग, पन्द्रह तिथि, सप्तवार, मछीन्द्र-गोरखबोध, रामावली, ग्यान विलक, ग्यान चौतीसा तथा पंचमात्रा आदि।

68. ‘आत्मबोध’ किसकी रचना है?

- (a) गोरखनाथ (b) जालन्धरनाथ  
(c) मत्स्येन्द्रनाथ (d) चर्पटनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

69. इनमें से किस ग्रन्थ में सबसे प्राचीन गद्य का नमूना द्रष्टव्य है?

- (a) गोरखसार (b) योगवशिष्ठ  
(c) पद्मपुराण (d) बैताल पच्चीसी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

गोरखनाथ नाथ साहित्य के आरम्भकर्ता माने जाते हैं। वे सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य थे, किन्तु उन्होंने सिद्धों के मार्ग का विरोध किया था। गोरखपंथी साहित्य के अनुसार आदिनाथ स्वयं शिव थे। उनके पश्चात मत्स्येन्द्रनाथ हुए, जिनके आचरण का विरोध उनके शिष्य गोरखनाथ ने किया। गोरखनाथ के काल को लेकर विभिन्न विद्वानों में मतभेद है। गोरखनाथ कृति ‘गोरखसार’ में सबसे प्राचीन गद्य का नमूना प्राप्त होता है।

70. ‘कौलज्ञान निर्णय’ के रचनाकार हैं—

- (a) गोरखनाथ (b) जालन्धरनाथ  
(c) मत्स्येन्द्रनाथ (d) गोपीचन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

‘कौलज्ञान निर्णय’ के रचनाकार मत्स्येन्द्रनाथ हैं।

71. ‘देहाती दुनियाँ’ के रचनाकार हैं—

- (a) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी  
(c) शिवपूजन सहाय (d) बलभद्र दीक्षित

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

शिवपूजन सहाय हिन्दी साहित्य के उपन्यासकार, कहानीकार, सम्पादक एवं पत्रकार थे। ये ‘भाषा के जादूगर’ के रूप में प्रसिद्ध हैं। ‘कुछ’ में संकलित निबन्धों में उन्होंने तुच्छ से तुच्छ विषय को अपनी रोचक रचना शैली से मोहक बना दिया है। आत्माभिव्यंजना, शिष्ट हास्य, मार्मिक व्यंग्य और अनौपचारिक, किन्तु परिष्कृत परिमार्जित शैली के कारण शिवपूजन सहाय का हिन्दी निबन्ध साहित्य में विशेष तथा महत्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रारम्भिक लेख ‘लक्ष्मी’, ‘मनोरंजन’ तथा ‘पाटलीपुत्र’ आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—देहाती दुनियाँ (1926), मत्वाला माधुरी (1924), गंगा (1931), जागरण (1932), हिमालय (1946), साहित्य (1950), वही दिन वही लोग (1965), मेरा जीवन (1985), स्मृतिशेष (1994), हिन्दी भाषा और साहित्य (1996) आदि।

### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वर्ष 1934 में इन्होंने लहेरिया सराय (दरभंगा) से 'बालक' नामक मासिक पत्र का सम्पादन किया।
- 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद' के संचालक तथा बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रकाशित 'साहित्य' नामक शोध-समीक्षा प्रधान, त्रैमासिक पत्र के सम्पादक थे।
- वर्ष 1921-22 में आरा से मारवाड़ी सुधार नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन किया तथा कलकत्ता के 'मतवाला मण्डल' के सदस्य रहे।

72. 'भाषा के जादूगर' के रूप में कौन विख्यात सीरीज है?

- (a) शिवपूजन सहाय (b) बेचन शर्मा 'उग्र'  
(c) जैनेन्द्र कुमार (d) यशपाल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

73. 'सन्दर्भ' के लेखक हैं—

- (a) डॉ. विनय (b) दूधनाथ सिंह  
(c) श्रीराम वर्मा (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

'सन्दर्भ' का लेखक प्रस्तुत विकल्पों में से कोई नहीं है। डॉ. विनय की कृति 'एक पुरुष और भी' है। शैक्षिक 'सन्दर्भ' एक द्विमासिक पत्रिका है। यह शिक्षकों तथा शिक्षा में रुचि रखने वाले के लिए समान रूप से उपयोगी है। यह एकलव्य, भोपाल (म.प्र.) द्वारा प्रकाशित होती है।

74. 'आत्मजयी' के लेखक हैं—

- (a) कुँवर नारायण (b) दुष्यन्त कुमार  
(c) रघुवीर सहाय (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'आत्मजयी' कुँवर नारायण द्वारा लिखित 'कठोपनिषद्' के नचिकेता-प्रसंग पर आधारित एक प्रबन्धकाव्य है।

75. इनमें से किस कृति रचना का आधार 'कठोपनिषद्' है?

- (a) अंधायुग (b) आत्मजयी  
(c) महाप्रस्थान (d) आर्यावर्त

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

76. इनमें से कुँवर नारायण का काव्यसंग्रह है—

- (a) मछलीघर (b) धूप के धान  
(c) उत्सवा (d) हाशिए का गवाह

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

हिन्दी के वरिष्ठ कवि और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कुँवर नारायण का निधन नवम्बर, 2017 में हो गया। इन्होंने कविता के अलावा कहानी एवं आलोचना विधाओं में भी लिखा। इनके कवित संग्रह में चक्रव्यूह, परिकेस : हम तुम आत्मजयी, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं, इन दिनों बाजश्राव के बहाने, हाशिये का गवाह प्रमुख हैं।

77. 'लुकमान अली' किसकी काव्य रचना है?

- (a) मणि मधुकर (b) लीलधर जगूडी  
(c) सौमित्र मोहन (d) मंगलेश डबराल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

हिन्दी में 'अकविता' आंदोलन के प्रमुख कवियों में से एक सौमित्र मोहन भी थे। 'लुकमान अली' सौमित्र मोहन की काव्य रचना है। इनकी अन्य कृतियाँ हैं—निषेध, पहचान, चाकू से खेलते हुए आदि। इसके अलावा 'देहरा में अब भी उगते हैं हमारे पेड़' नाम से रस्किन बाण्ड की कहानियों का अनुवाद भी किया है।

78. 'प्रबन्ध चिन्तामणि' के रचयिता का नाम है—

- (a) दामोदर पण्डित (b) कवि आसुग  
(c) रोडा कवि (d) मेरुतुंग

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'प्रबन्ध चिन्तामणि' के रचयिता मेरुतुंग हैं।

79. 'जयचन्द्र प्रकाश' के रचनाकार हैं—

- (a) नल्ल सिंह (b) जगनिक  
(c) भट्ट केदार (d) मधुकर

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'जयचन्द्र प्रकाश' के रचनाकार भट्ट केदार जी हैं। नल्ल सिंह ने 'विजयपाल रासो' की रचना की है। मधुकर कवि ने जयमयंक-जस-चन्द्रिका की रचना की है। जगनिक ने परमाल रासो की रचना की है।

80. 'जयमयंक-जस-चन्द्रिका' के रचयिता का नाम है—

- (a) भट्ट केदार (b) नरपति नाल्ल  
(c) नल्ल सिंह (d) मधुकर कवि

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

जयमयंक जस-चन्द्रिका की रचना मधुकर ने 1186 ई. में की थी। यह ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं है, किन्तु 'राठौड़ा री ख्यात' में यह उल्लेख मिलता है कि दयालदास ने इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर कन्नौज का वृत्तांत लिखा था।

81. 'अपराजिता' के लेखक हैं-

- (a) नरेन्द्र शर्मा (b) अंचल  
(c) दिनकर (d) माखन लाल चतुर्वेदी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'अपराजिता' काव्य ग्रन्थ के लेखक रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' हैं। इनके अन्य काव्य ग्रन्थ हैं—'मधुलिका', 'अपराधिता' आदि। इनकी कहानी संग्रह हैं— नंगमनंग, ये वे बहुचरे, कुँआर की दुलहिन आदि।

82. 'समाधिलेख' के लेखक हैं-

- (a) श्रीराम वर्मा (b) श्रीकान्त वर्मा  
(c) दूधनाथ सिंह (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'समाधिलेख' काव्य कृति के लेखक श्रीकान्त वर्मा हैं। इनके अन्य काव्य संग्रह हैं—भटका मेघ, दिनारम्भ, माया दर्पण, जलसाधर, मगध, संवयिता आदि। इनकी कुछ प्रतिनिधि रचनाएँ हैं—कुछ का व्यवहार बदल गया, राजनीतिज्ञों ने मुझे, कोसल में विचारों की कमी, कलिंग, आस्था की प्रतिध्वनियाँ, टूटी पड़ी है परम्परा, महामहिम, ऊब, भद्रवंश के प्रेत, एक और ढंग आदि।

83. 'मगध' पुस्तक के लेखक कौन हैं?

- (a) श्रीकान्त वर्मा (b) श्रीराम वर्मा  
(c) रामचन्द्र वर्मा (d) केदार नाथ सिंह

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

84. 'मगध' कविता संग्रह के रचयिता हैं-

- (a) अशोक वाजपेयी (b) श्रीकान्त वर्मा  
(c) मोहन राकेश (d) रघुवीर सहाय

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

85. शेखर जोशी की रचना है—

- (a) मकान (b) हत्यारे  
(c) कोसी का घटवार (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

शेखर जोशी की रचना 'कोसी का घटवार' है। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं— साथ के लोग, हलवाहा, नौरंगी बीमार है, मेरा पहाड़, प्रतिनिधि कहानियाँ, एक पेड़ की याद आदि।

86. 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' पुस्तक के लेखक हैं—

- (a) मुनिजिन विजय (b) मोतीलाल मेनारिया  
(c) टीकमसिंह तोमर (d) पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'राजस्थानी भाषा और साहित्य' पुस्तक के लेखक मोतीलाल मेनारिया हैं। इसमें मारवाड़ी गद्य का जो नमूना लिया गया है, उसमें 'रहता' के लिए 'रैवतो', 'हमारा' या 'म्हारा' के लिए मारा, 'काढ' के लिए 'काड' आदि रूप मिलते हैं।

87. निम्नांकित में से कौन-सा काव्य-ग्रन्थ नहीं है?

- (a) वैदेही वनवास (b) पथिक  
(c) रसज्ञ-रंजन (d) भारत-भारती

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'रसज्ञ-रंजन' महावीर प्रसाद द्विवेदी का निबन्ध संग्रह है। 'पथिक', राम नरेश त्रिपाठी, 'भारत-भारती' मैथिलीशरण गुप्त तथा 'वैदेही वनवास', अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का काव्य-ग्रन्थ है।

88. 'शम्बूक वध' के रचनाकार हैं—

- (a) धर्मवीर भारती (b) जगदीश गुप्त  
(c) भारतभूषण अग्रवाल (d) प्रभाकर माचवे

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'शम्बूक' राम कथा से सम्बन्धित जगदीश गुप्त की एक चर्चित रचना है। 'शम्बूक' एक शूद्र है, जो तपस्या करने के कारण राम के द्वारा मारा जाता है। शम्बूक, दलित विमर्श का एक उत्कृष्ट काव्य है। 'रीतिकाव्य संग्रह', 'नवधा' और 'त्रयी' गुप्तजी की संपादित रचनाएँ हैं। 'नवधा' में जगदीश गुप्त अज्ञेय के साथ मिलकर नव कवियों की रचनाओं का संकलन प्रस्तुत करते हैं। 'त्रयी' शीर्षक से तीन संकलन युवा कवियों से सम्बन्धित प्रकाशित हुए। गुप्त जी रचित 'जयन्त' पौराणिक कथानक के आधार पर रचा गया एक खण्ड काव्य है।



89. 'गोरखबानी' नामक पुस्तक के सम्पादक हैं—

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) डॉ. भागीरथ मिश्र  
(c) डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थवाल (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थवाल ने गोरखनाथ की रचनाओं का संकलन व सम्पादन अपनी कृति 'गोरखबानी' में किया है। वे हिन्दी में डी. लिट. की उपाधि प्राप्त करने वाले पहले शोधार्थी थे। बाल्यकाल में 'अंबर' नाम से कविताएँ रचते थे। 'हिल्लैन' नामक अंग्रेजी पत्रिका का भी उन्होंने सम्पादन किया।

90. 'एकलव्य' नामक कृति के लेखक हैं—

- (a) भगवतीचरण वर्मा (b) रामकुमार वर्मा  
(c) नन्ददुलारे वाजपेयी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'एकलव्य' नामक काव्य कृति के लेखक रामकुमार वर्मा हैं। इनकी अन्य काव्य कृतियाँ हैं—उत्तरायण, ओ अहल्या आदि। इनके प्रमुख नाटक संग्रह हैं—पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी टाई, चारुमित्रा, विभूति, सप्तकिरण, रूपरंग, रजतरङ्गिणी, दीपदान, ऋतुराज, रिमझिम, इन्द्रधनुष, पाँचजन्य, कौमुदी महोत्सव, मयूरपंख, जूही के फूल आदि।

91. 'अंगदपैज' की रचना किसने की है?

- (a) नाभादास (b) धरणीदास  
(c) ईश्वरदास (d) मल्लूदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

ईश्वरदास ने 'अंगदपैज' और 'भरत मिलाप' की रचना की है।

92. 'कवितावली' किसकी रचना है?

- (a) लालदास (b) रामप्रिया शरण  
(c) रामचरण दास (d) मधुसूदन दास

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

कवितावली रामचरण दास की कृति है। कवितावली को बहुत से पुराने हस्तलेखों में कवित्त-रामायण और कवितावली-रामायण की भी संज्ञा दी गई है। कवित्त-रामायण संज्ञा चंद, लाला मंगल दास, लाल (कवि), सेनापति, हरिदास के रामकथा सम्बन्धी हस्तलेखों को भी दी गई है। कवितावली नाम के हस्तलेख जनकराज, किशोरी शरण, दूलनदास, परमेश्वरी दास, सरयूदास, सहजराम के भी प्राप्त हुए हैं।

93. कौन-सी कृति भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की नहीं है?

- (a) भारत हरण (b) भारत दुर्दशा  
(c) अंधेर नगरी (d) वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

भारत हरण (1890) कृति भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की नहीं, बल्कि देवकीनन्दन त्रिपाठी की है। शेष रचनाएँ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की हैं।

94. इनमें से कौन-सी भारतेन्दु की रचना नहीं है?

- (a) वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति (b) विषस्य विषमौषधम्  
(c) बादशाह दर्पण (d) पद्मावती

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति, विषस्य विषमौषधम् तथा बादशाह दर्पण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचना है, जबकि पद्मावती मलिक मुहम्मद जायसी की रचना है।

95. 'पृथ्वीकल्प' किसकी रचना है?

- (a) भवानी प्रसाद मिश्र (b) गिरिजा कुमार माथुर  
(c) मुक्तिबोध (d) धर्मवीर भारती

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'पृथ्वीकल्प' गिरिजा कुमार माथुर की रचना है। इनके अन्य काव्य संग्रह हैं—मंजीर, नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, मुझे और अभी कुछ कहना है, भीतरी नदी की यात्रा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गिरिजा कुमार माथुर का पहला काव्य संग्रह 'मंजीर' सन् 1941 में प्रकाशित हुआ।
- ये तार सप्तक के कवि थे।
- रामविलास शर्मा के शब्दों में—“उनका किशोर मन न वयस्क होता है, न प्रौढ़, वार्धक्य तो दूर की बात है।”
- माथुर जी 'वक्त के सामने' कविता संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा वर्ष 1993 में बिरला फाउण्डेशन द्वारा व्यास सम्मान प्रदान किया गया।

96. निम्नलिखित में कौन गिरिजा कुमार माथुर की कृति नहीं है?

- (a) नाश और निर्माण (b) धूप के धान  
(c) पृथ्वीकल्प (d) चाँद का मुँह टेढ़ा है

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।



97. कौन-सी काव्यकृति गिरिजा कुमार माथुर की नहीं है?

- (a) नाश और निर्माण (b) शिलापंख चमकीले  
(c) छाया मत छूना (d) बुनी हुई रस्सी

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

‘बुनी हुई रस्सी’ (1971), भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं का संग्रह है। इस रचना पर उन्हें 1972 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। शेष रचनाएँ गिरिजा कुमार माथुर की हैं।

98. ‘सोए पलाश दहकेंगे’ शीर्षक नवगीत-संग्रह के रचनाकार हैं :

- (a) नचिकेता (b) शंभुनाथ सिंह  
(c) माहेश्वर तिवारी (d) यश मालवीय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

‘सोए पलाश दहकेंगे’ शीर्षक नवगीत-संग्रह के रचनाकार नचिकेता हैं। ‘पलाश’ को केंद्र में रखकर की गई अन्य रचनाएँ हैं—पूरब खिले पलाश (रवींद्रनाथ त्यागी, व्यंग्य संग्रह), अकेला पलाश (मेहरनुसिसा परवेज, उपन्यास), जाने कितने रंग पलाश के (मृदुला वाजपेयी, उपन्यास), पलाश वन (नरेंद्र शर्मा)।

99. ‘हिन्दी शब्दानुशासन’ के लेखक हैं—

- (a) कामता प्रसाद गुरु  
(b) किशोरीदास वाजपेयी  
(c) श्यामसुन्दर दास  
(d) रामचन्द्र वर्मा

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

‘हिन्दी शब्दानुशासन’ के लेखक किशोरीदास वाजपेयी जी हैं। ये महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा चलाये गये व्याकरण सम्मत परिष्कार आन्दोलन के अगुआ थे। वाजपेयी जी पहले ऐसे भाषाविद् थे, जिन्होंने हिन्दी व्याकरण के अंग्रेजी आधार को अस्वीकार कर उसे संस्कृत के आधार पर प्रतिष्ठित किया। इन्हें ‘हिन्दी का पाणिनि’ घोषित किया गया।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने किशोरीदास वाजपेयी से ‘हिन्दी शब्दानुशासन’ कहकर लिखवाया था।
- किशोरीदास वाजपेयी ने ‘सुदामा’ नामक नाटक लिखा तथा ‘तरंगिणी’ नामक संग्रह में ब्रज कविताएँ एवं दोहे रचे।
- इनकी प्रमुख रचनाओं में शामिल हैं—ब्रजभाषा व्याकरण, कांग्रेस का इतिहास, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राष्ट्र भाषा का प्रथम व्याकरण, भारतीय भाषा विज्ञान आदि।

100. हिन्दी व्याकरण ग्रन्थ ‘शब्दानुशासन’ के रचनाकार हैं—

- (a) हेमचन्द्र (b) किशोरीदास वाजपेयी  
(c) पाणिनि (d) पतंजलि

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

101. ‘हिन्दी शब्दानुशासन’ ग्रन्थ के रचनाकार हैं—

- (a) हेमचन्द्र (b) कामता प्रसाद गुरु  
(c) किशोरीदास वाजपेयी (d) धीरेन्द्र वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2010

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

102. ‘हिन्दी का पाणिनि’ किसको कहा जाता है?

- (a) कामता प्रसाद गुरु (b) रामचन्द्र वर्मा  
(c) भोलानाथ तिवारी (d) किशोरीदास वाजपेयी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

103. हिन्दी भाषा का सर्वप्रथम व्याकरण नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की देख-रेख में लिखा गया, जिसका नाम था—‘हिन्दी व्याकरण’। इसके लेखक थे—

- (a) किशोरीदास वाजपेयी (b) कामता प्रसाद गुरु  
(c) हरदेव बाहरी (d) पृथ्वीनाथ पाण्डेय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

हिन्दी भाषा का सर्वप्रथम व्याकरण ‘नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की देख-रेख में किया गया, जिसका नाम ‘हिन्दी व्याकरण’ था। हिन्दी व्याकरण के लेखक कामता प्रसाद गुरु थे। इनकी ख्याति इसी रचना के कारण ज्यादा हुई। यह हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा और प्रामाणिक व्याकरण माना जाता है। कामता प्रसाद गुरु की अन्य रचनाओं में—सत्य, प्रेम, पार्वती और यशोदा (उपन्यास), भौमासुर वध, विनय पचासा (ब्रजभाषा काव्य), पद्य पुष्पावली, सुदर्शन (पौराणिक नाटक) तथा हिन्दुस्तानी शिष्टाचार आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

104. ‘प्रेमचन्द : सामन्त का मुंशी’ पुस्तक के लेखक हैं—

- (a) डॉ. धर्मवीर (b) विवेकी राय  
(c) मुद्राराक्षस (d) प्रेमचन्द

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

डॉ. धर्मवीर ने दलित दृष्टि से प्रेमचन्द साहित्य का मूल्यांकन करते हुए 'प्रेमचन्द : सामन्त का मुंशी' व 'प्रेमचन्द की नीली आँखें' नाम से पुस्तकें लिखी हैं।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हिन्दी साहित्य व आलोचना में प्रेमचन्द को प्रतिष्ठित करने का श्रेय डॉ. रामविलास शर्मा को दिया जाता है। उन्होंने प्रेमचन्द पर दो प्रमुख किताबें 'प्रेमचन्द' और 'प्रेमचन्द का युग' लिखीं।
- प्रेमचन्द के पत्रों को सहेजने का काम अमृतराय और मदन गोपाल ने किया।
- कमल किशोर गोयनका ने प्रेमचन्द के जीवन के कमजोर पक्षों को उजागर करने के साथ-साथ 'प्रेमचन्द का अप्राप्य साहित्य' (दो भाग) व 'प्रेमचन्द विश्वकोश' (दो भाग) का सम्पादन किया।

#### 105. 'ठण्डा लोहा' के रचनाकार हैं—

- (a) गिरिजा कुमार माथुर (b) धर्मवीर भारती  
(c) दुष्यन्त कुमार (d) जैनेन्द्र कुमार

T.G.T. परीक्षा, 2002

#### उत्तर—(b)

'ठण्डा लोहा' के रचनाकार धर्मवीर भारती हैं। इनकी अन्य काव्य कृतियाँ हैं—सात गीत वर्ष, अन्धायुग, कनुप्रिया।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सात गीत वर्ष में भारती जी आधुनिकता बोध को उजागर करते हैं।
- अन्धायुग में महाभारत की कथा के माध्यम से युद्धजन्य कुण्ठा, युद्ध की निरर्थक परिणति, विवेकहीन अमानवीय स्थितियों को अभिव्यजित किया है।
- कनुप्रिया में रक्षा-कृष्ण का रागबोध उद्घाटित होता है। इसमें उनके विरहजन्य भावद्वेलन को भारती जी ने रूपायित किया है।

#### 106. 'अन्धायुग' किसकी रचना है?

- (a) धर्मवीर भारती (b) भारतेन्दु  
(c) यशपाल (d) गोविन्द बल्लभ पन्त

P.G.T. परीक्षा, 2010

#### उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

#### 107. 'अन्धायुग' के लेखक हैं—

- (a) गिरिजा कुमार माथुर (b) धर्मवीर भारती  
(c) मुक्तिबोध (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

#### उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

#### 108. 'कनुप्रिया' के लेखक हैं—

- (a) नन्ददुलारे वाजपेयी (b) वीरेन्द्र मिश्र  
(c) मोहन राकेश (d) धर्मवीर भारती

T.G.T. परीक्षा, 2004

#### उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

#### 109. धर्मवीर भारती की काव्यकृति कनुप्रिया में किसका वर्णन है?

- (a) राधा के नवीन रूप (b) सीता का दुःख  
(c) मीरा (d) रसिक प्रिया

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

#### उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

#### 110. 'सिद्ध साहित्य' किसकी रचना है?

- (a) राहुल सांकृत्यायन (b) धर्मवीर भारती  
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) नागेन्द्र नाथ उपाध्याय

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

#### उत्तर—(b)

'सिद्ध साहित्य' धर्मवीर भारती की रचना नहीं है, बल्कि उन्होंने इस विषय पर शोध कार्य किया था। बाद में यही पुस्तकाकार के रूप में प्रकाशित हुआ।

#### 111. निम्नलिखित में कौन-सी रचना धर्मवीर भारती की नहीं है?

- (a) ठण्डा लोहा (b) सात गीत वर्ष  
(c) कनुप्रिया (d) सूर्य का स्वागत

T.G.T. परीक्षा, 2003

#### उत्तर—(d)

'सूर्य का स्वागत' के रचनाकार दुष्यन्त कुमार हैं। शेष कृतियाँ धर्मवीर भारती की हैं।

#### 112. इनमें से कौन-सी रचना धर्मवीर भारती की नहीं है?

- (a) अन्धायुग (b) कनुप्रिया  
(c) ठण्डा लोहा (d) हरी घास पर क्षण भर

P.G.T. परीक्षा, 2011

#### उत्तर—(d)

हरी घास पर क्षण भर 'अज्ञेय' की रचना है। शेष रचनाएँ धर्मवीर भारती की हैं।

113. किन दो साहित्यकारों ने 'अर्द्धनारीश्वर' नाम से रचना की है?

- (a) हरिऔध — माखनलाल चतुर्वेदी  
(b) विष्णु प्रभाकर — हरिऔध  
(c) दिनकर — बच्चन  
(d) विष्णु प्रभाकर — दिनकर

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

विष्णु प्रभाकर और रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अर्द्धनारीश्वर नाम से रचना की है।

114. धर्म नैतिकता और विज्ञान के लेखक हैं—

- (a) प्रेमचन्द (b) जयशंकर प्रसाद  
(c) रामधारी सिंह दिनकर (d) मुक्तिबोध

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

धर्म नैतिकता और विज्ञान (1969) के लेखक रामधारी सिंह दिनकर हैं। इनके अन्य गद्यकाव्य रचनाएँ इस प्रकार हैं—मिट्टी की ओर (1946), चितौड़ का साका (1948), रेती को फूल (1954), हमारी सांस्कृतिक एकता (1955), भारत की सांस्कृतिक कहानी (1955), उजलीआँग (1956), काव्य की भूमिका (1958), पन्त-प्रसाद और मैथिलीशरण (1958), वेणुवन (1958), वट-पीपल (1961), लोकदेव नेहरू (1965) एवं शुद्ध कविता की खोज (1966) आदि।

115. 'रूपांवरा' किसकी रचना है?

- (a) अज्ञेय (b) मुक्तिबोध  
(c) नेमिचन्द्र जैन (d) भारत भूषण अग्रवाल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'रूपांवरा' अज्ञेय का कविता संग्रह है। अज्ञेय के अन्य कविता संग्रह हैं—शरणार्थी (1948), हरी घास पर क्षण भर (1949), बावरा अहेरी (1954), इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये (1957), अरी ओ करुणा प्रभामय (1959), आँगन के पार द्वार (1961), कितनी नावों में कितनी बार (1967), क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1969), सागर मुद्रा (1969), पहरे में सन्नाटा बुनता हूँ (1973), महावृक्ष के नीचे (1977), नदी की बाँक पर छाया (1981) एवं ऐसा कोई घर आपने देखा है (1986)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'असाध्य वीणा' अज्ञेय की लम्बी कविता है।
- अज्ञेय ने तारसप्तक का सम्पादन किया।
- अज्ञेय को 'कितनी नावों में कितनी बार' नामक काव्य संग्रह के लिए सन् 1978 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

116. 'हरी घास पर क्षण भर' शीर्षक काव्य संकलन के रचयिता हैं—

- (a) दिनकर (b) निराला  
(c) अज्ञेय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

117. 'असाध्य वीणा' कविता के रचनाकार का नाम है—

- (a) धर्मवीर भारती (b) केदारनाथ अग्रवाल  
(c) भवानी प्रसाद मिश्र (d) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

118. 'अज्ञेय' की 'असाध्य वीणा' किस प्रकार की काव्यकृति है?

- (a) खण्डकाव्य (b) प्रबन्धकाव्य  
(c) महाकाव्य (d) प्रलम्ब काव्य या लम्बी कविता

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

119. 'अज्ञेय' की रचना है—

- (a) कुरुक्षेत्र (b) हुंकार  
(c) पवनदूत (d) हरी घास पर क्षण भर

T.G.T. परीक्षा, 2010, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

120. 'सागर मुद्रा' के लेखक हैं—

- (a) मुक्तिबोध (b) अज्ञेय  
(c) धर्मवीर भारती (d) गिरिजा कुमार माथुर

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

121. किस काव्य कृति पर अज्ञेय को 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ था?

- (a) सागर मुद्रा (b) कितनी नावों में कितनी बार  
(c) इत्यलम् (d) आँगन के पार द्वार

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

122. निम्नांकित में से कौन-सा काव्य संग्रह 'अज्ञेय' का नहीं है?

- (a) हरी घास पर क्षण भर (b) अरी ओ करुणा प्रभामय  
(c) सीढ़ियों पर धूप (d) आँगन के पार द्वार

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'सीढ़ियों पर धूप' काव्य संग्रह रघुवीर सहाय का है। इनके अन्य काव्य संग्रह हैं—आत्मा के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गये हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ, एक समय था। शेष काव्य संग्रह 'अज्ञेय' के हैं।

123. इनमें से एक काव्य संग्रह 'अज्ञेय' का नहीं है :

- (a) आँगन के पार द्वार  
(b) धरती  
(c) ऐसा कोई घर आपने देखा है  
(d) सदानीरा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

'धरती' काव्य संग्रह त्रिलोचन की है, शेष सभी 'अज्ञेय' के काव्य संग्रह हैं।

124. 'लोहे के दीवार के दोनों ओर' किसकी कृति है?

- (a) अज्ञेय (b) सत्यदेव परिव्राजक  
(c) यशपाल (d) राहुल सांकृत्यायन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'लोहे के दीवार के दोनों ओर' एक यात्रा साहित्य है, जिसके लेखक यशपाल हैं। इसमें यशपाल ने यूरोपीय पूँजीवादी देशों तथा सोवियत रूस की जीवन-पद्धति का अध्ययन एक जिज्ञासु यात्री की हैसियत से किया है। इस वृत्तांत में 'वियना', 'मॉस्को' और 'लन्दन' इन तीन महानगरों का जीवन चित्र प्रमुख रूप से उभारा गया है।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'राहबीती' यात्रा वृत्तांत में यशपाल जी ने पूर्वी यूरोप की यात्रा का वर्णन किया है।
- हिन्दी साहित्य में यात्रा वृत्तांत लिखने की परम्परा का सूत्रपात भारतेन्दु से माना जाता है।
- सत्यदेव परिव्राजक की यात्रा वृत्तांत है—'मेरी कैलाश यात्रा'।

125. पूँजीपतियों की शोषक वृत्ति को उजागर करने वाले लेखक हैं—

- (a) आचार्य चतुरसेन शास्त्री (b) जयशंकर प्रसाद  
(c) यशपाल (d) पाण्डेय बेचनशर्मा 'उग्र'

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

126. 'बकरी विलाप' किसकी काव्य कृति है?

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) प्रेमघन  
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'बकरी विलाप' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्य कृति है। होली डफ की, डरहना, रानी छन्न लीला, बसन्त होली, उर्दू का स्यापा, भारत मित्र, श्री पंचमी, कृष्ण चरित, नये जमाने की मुकरी आदि इनके प्रसिद्ध काव्य हैं।

127. 'वंशी और मादल' किसका गीत संग्रह है?

- (a) रवीन्द्र भ्रमर (b) माहेश्वर तिवारी  
(c) श्रीराम सिंह (d) ठाकुर प्रसाद सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'वंशी और मादल' गीत संग्रह ठाकुर प्रसाद सिंह की रचना है। ठाकुर प्रसाद सिंह का नाम नवगीत विधा के कवियों में प्रमुखता से लिया जाता है। कविता के क्षेत्र में 'महामानव' (प्रबन्ध-काव्य) 'वंशी और मादल' (गीत-संग्रह) विशेष चर्चित रहे। इनकी अन्य रचनाएँ हैं— महामानव (1946), कुब्जा सुन्दरी (1963), हिन्दी निबन्ध और निबन्धकार (1952) एवं पुराने घर नये लोग (1960)।

128. 'नाटक जारी है' किस विधा की रचना है?

- (a) उपन्यास (b) नाटक  
(c) निबन्ध (d) कविता

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'नाटक जारी है' (1972) कविता विधा की रचना है। इसके रचनाकार लीलाधर जगूड़ी हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—शंखमुखी शिखरों पर (1964), इस यात्रा में (1974), रात अभी मौजूद है (1976), बची हुई पृथ्वी (1977), खबर का मुँह विज्ञापन से ढका है, घबराए हुए शब्द (1981)। जगूड़ी जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार पद्मश्री सम्मान तथा रघुवीर सहाय सम्मान से सम्मानित किया गया है।

129. 'बलदेव खटिक' किसकी कविता है?

- (a) धूमिल की (b) लीलाधर जगूड़ी की  
(c) बलदेव वंशी की (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

लीलाधर जगूड़ी की बलदेव खटिक एवं अन्तर्देशीय कविताएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। धूमिल की कविता 'बीस साल बाद' देश की आजादी के बीस वर्ष बीतने पर लिखी गयी थी, लेकिन आज भी पुरानी नहीं लगती है। इनकी दूसरी कविता 'मोवीराम' बहुचर्चित कृति है।



**130. 'प्रतिबद्ध कविता' के जनक हैं—**

- (a) श्याम परमार (b) अरुण कमल  
(c) प्रभाकर माचवे (d) परमानन्द श्रीवास्तव

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'प्रतिबद्ध कविता' के जनक परमानन्द श्रीवास्तव हैं। इनकी अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं—

**कविता संग्रह**— उजली हँसी के छोर पर, अगली शताब्दी के बारे में, चौथा शब्द, एक अनायक वृत्तांत आदि।

**कहानी संग्रह**— रुका हुआ समय, नींद में मृत्यु, इस बार सपने में आदि।

**131. 'जिंदगी मुस्काई' के रचनाकार हैं—**

- (a) बनारसीदास चतुर्वेदी (b) किशोरीदास वाजपेयी  
(c) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (d) रामकृष्ण बेनीपुरी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'जिन्दगी मुस्काई' के रचनाकार कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं। प्रभाकर जी हिन्दी के जाने-माने निबन्धकार हैं, जिन्होंने राजनीतिक और सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाले अनेक निबन्ध लिखे हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं— 'नयी पीढ़ी, नये विचार', 'माटी हो गयी सोना', 'आकाश के तारे-धरती के फूल', 'दीप जले', 'शंख बजे' एवं 'बाजे पायलिया के घुँघरू'।

**132. 'बाजे पायलिया के घुँघरू' के लेखक हैं—**

- (a) कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' (b) कन्हैया लाल ओझा  
(c) कन्हैया लाल मणिक लाल मुंशी (d) सोहन लाल द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**133. 'जगत सच्चाई सार' कविता के रचयिता हैं—**

- (a) नाथूराम शर्मा (b) देवीदत्त शुक्ल  
(c) श्रीधर पाठक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'जगत सच्चाई सार' कविता के रचयिता श्रीधर पाठक हैं। हिन्दी के अतिरिक्त इन्होंने अंग्रेजी, फारसी और संस्कृत का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। इन्होंने भारतोत्थान, भारत प्रशंसा आदि देशभक्ति पूर्ण कविताएँ भी लिखी हैं, तो दूसरी ओर 'जार्ज वन्दना' जैसी कविताओं में राजभक्ति का प्रदर्शन किया, परन्तु इनको सर्वाधिक सफलता प्रकृति चित्रण में प्राप्त हुई है।

**134. 'कलिकौतुक' रूपक के लेखक हैं—**

- (a) प्रेमघन (b) प्रतापनारायण मिश्र  
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'कलिकौतुक' एक रूपक है, जिसके लेखक प्रतापनारायण मिश्र हैं। यह उनका एक नाट्य साहित्य है। हठी हमीर, संगीत शाकुन्तल (अभिज्ञान-शाकुन्तलम् के आधार पर रचित गीतिरूपक), भारत दुर्दशा (रूपक), कवि प्रदेश (गीतिरूपक) इनके अन्य प्रमुख नाट्य साहित्य हैं। जुआरी-खुआरी (प्रहसन) तथा दूध का दूध और पानी का पानी इनकी अपूर्ण रचना है।

**135. 'रवीन्द्र कविता कानन' के लेखक हैं—**

- (a) निराला (b) प्रसाद  
(c) गुप्त (d) हरिऔध

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'रवीन्द्र कविता कानन' के लेखक निराला हैं। यह उनकी एक आलोचनात्मक कृति है। इसमें उन्होंने रवीन्द्र के काव्य सौन्दर्य को पूर्णतः परखा है।

**136. 'हृदय का मधुभार' काव्य रचना है—**

- (a) शुक्ल की (b) प्रसाद की  
(c) पन्त की (d) निराला की

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'हृदय का मधुभार' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखी काव्य रचना है। इसमें प्रकृति का मनोहारी चित्रण हुआ है। इनकी अन्य प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं— बुद्ध चरित (लाइट ऑफ एशिया के आधार पर ब्रजभाषा काव्य), मनोहर छटा इत्यादि।

**137. 'रस-मीमांसा' नामक आलोचना पुस्तिका के लेखक हैं—**

- (a) डॉ. नगेन्द्र (b) डॉ. नामवर सिंह  
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) डॉ. रामविलास शर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'रस-मीमांसा' के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। इनकी अन्य कृतियाँ हैं— तुलसी, जायसी की ग्रन्थावलियाँ, भ्रमर गीतसार, हिन्दी साहित्य का इतिहास और चिन्तामणि इत्यादि।



138. निम्नलिखित में से किस आलोचना-ग्रन्थ के लेखक नाम सही नहीं है?

- (a) रस-मीमांसा : हजारीप्रसाद द्विवेदी  
(b) कबीर मीमांसा : रामचन्द्र तिवारी  
(c) तुलसी काव्य-मीमांसा : उदयभानु सिंह  
(d) निराला की साहित्य-साधना भाग-1,2 : रामविलास शर्मा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

साहित्य के प्रमुख सैद्धान्तिक चिन्तक आचार्य शुक्ल जी द्वारा सन् 1939 में 'रस-मीमांसा' लिखी गई और 1949 ई. में प्रकाशित हुई।

139. समीक्षात्मक कृति : 'आलोचना का पक्ष' के लेखक हैं—

- (a) डॉ. रमेशकुंतल मेघ (b) डॉ. धर्मवीर भारती  
(c) रमेशचन्द्र शाह (d) नन्दकिशोर आचार्य

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

समीक्षात्मक कृति : 'आलोचना का पक्ष' के लेखक रमेशचन्द्र शाह हैं। पद्मश्री रमेशचन्द्र शाह ने हिन्दी साहित्य की गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में लिखा है। इनकी अन्य रचनाएँ निम्न हैं—  
उपन्यास—गोबर गणेश, किस्सा गुलाम, पूर्वापर, आखिरी दिन आदि।  
कहानी संग्रह—जंगल में आग, मुहल्ले का रावण, मानपत्र, थिएटर, आदि।

140. इनमें कौन-सा समूह आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की रचनाओं को दर्शाता है?

- (a) कल्पवृक्ष, पृथ्वीपुत्र, भारत की एकता, मातृभूमि  
(b) हिन्दी साहित्य का इतिहास, चिन्तामणि, रस-मीमांसा, त्रिवेणी  
(c) आकाश के तारे, धरती के फूल, भूले-बिसरे चेहरे, जिन्दगी मुस्कई  
(d) सदाचार का ताबीज, रानी नागमती की कहानी, भोलाराम का जीव, जैसे उनके दिन फिरे

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य का इतिहास, चिन्तामणि, रस-मीमांसा, त्रिवेणी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की रचनाओं को दर्शाता है।

141. 'वोला से गंगा' किसकी रचना है?

- (a) श्यामसुन्दर दास की (b) सरदार पूर्णसिंह की  
(c) राहुल सांकृत्यायन की (d) डॉ. नगेन्द्र की

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'वोला से गंगा' राहुल सांकृत्यायन की रचना है। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—कनैला की कथा, सतमी के बच्चे, बहुरंगी, मधुपुरी (कहानी संग्रह) जय यौधेय, दिवोदास, सिंह सेनापति, विस्मृत यात्री, मधुर स्वप्न और सप्तसिन्धु (उपन्यास) इत्यादि।

142. 'स्त्री-विमर्श' पर आधारित 'औरत की बोली' कृति की रचनाकार हैं—

- (a) अनीता भारती (b) गीताश्री  
(c) महुआ मांझी (d) कावेरी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

स्त्री-विमर्श पर आधारित 'औरत की बोली' कृति की रचनाकार सुप्रतिष्ठित पत्रकार गीताश्री हैं। यह पुस्तक किसी भी मामले में शोध पुस्तक से कम नहीं है। यद्यपि लेखिका ने इस पुस्तक को शोध तो नहीं मगर शोध जैसा ही कुछ मानती हैं। हिन्दी में वर्णित विषय पर यह पुस्तक देश-विदेश में फैले देह व्यापार का एक विहंगम सर्वेक्षण है। 'औरत की बोली' के माध्यम से लेखिका ने देश के भौगोलिक सीमाओं से परे, जाल की तरह स्त्रियों को अपनी जद में लिए हुए देह व्यापार की यह व्यवस्था अलग-अलग भावों की एक अत्यन्त दुरुह, सुनिश्चित मगर निर्णायक सर्वेक्षण का दस्तावेज प्रस्तुत किया है।

143. 'वह सफर था कि मुकाम था' - कृति की लेखिका हैं :

- (a) मैत्रेयी पुष्पा (b) मृदुला गर्ग  
(c) ऊषा प्रियंवदा (d) प्रभा खेतान

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'वह सफर था कि मुकाम था' की लेखिका मैत्रेयी पुष्पा हैं।

144. 'शृंखला की कड़ियाँ' की मुख्य वस्तु है—

- (a) स्वाधीनता-आन्दोलन (b) दलित-विमर्श  
(c) आदिवासी-विमर्श (d) स्त्री-विमर्श

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'शृंखला की कड़ियाँ' महादेवी वर्मा के समस्या मूलक निबन्धों का संग्रह है। स्त्री-विमर्श इनमें प्रमुख है। डॉ. हृदयनारायण उपाध्याय के शब्दों में "आज स्त्री-विमर्श की चर्चा हर ओर सुनाई पड़ रही है। महादेवी वर्मा ने इसके लिए पृष्ठभूमि बहुत पहले तैयार कर दी थी। सन् 1942 में प्रकाशित उनकी कृति 'शृंखला की कड़ियाँ' सही अर्थों में स्त्री-विमर्श की प्रस्तावना है, जिसमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में नारी की दशा, दिशा एवं संघर्षों पर महादेवी ने अपनी लेखनी चलायी है।"

145. हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य विमर्श' के लेखक हैं—

- (a) वियोगी हरि (b) सूर्यकान्त शास्त्री  
(c) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

T.G.T. परीक्षा, 2010, 2005

उत्तर—(d)

हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य विमर्श' के लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—विश्व साहित्य, बिखरे पन्ने, तुम्हारे लिए, कुछ और कुछ, यात्री, हिन्दी कथा साहित्य और कथानक इत्यादि। हम-मेरी अपनी कथा, मेरा देश, वे दिन, मेरे प्रिय निबन्ध, समस्या और समाधान, नवरात्र, जिन्हें नहीं भूलूंगा, हिन्दी साहित्य एक ऐतिहासिक समीक्षा इनके प्रमुख निबन्ध संग्रह हैं।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी को हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा सन् 1949 में वाचस्पति की उपाधि से अलंकृत किया गया।
- ये मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति निर्वाचित हुए।
- इन्होंने 1920 से 1927 ई. तक 'सरस्वती' का सम्पादन किया।

#### 146. 'हिन्दी साहित्य विमर्श' के लेखक हैं-

- (a) बालमुकुन्द गुप्त (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी  
(c) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (d) श्यामसुन्दर दास

P.G.T. परीक्षा, 2002

#### उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

#### 147. 'हिन्दी साहित्य की इतिहास भूमिका' साहित्येतिहास ग्रन्थ इनमें से किसके द्वारा लिखा गया है?

- (a) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी  
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी  
(c) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी  
(d) डॉ. मोहन अवस्थी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

#### उत्तर—(\*)

'हिन्दी साहित्य की इतिहास भूमिका' नामक साहित्येतिहास ग्रन्थ किसी इतिहासकार ने नहीं लिखा है। हिन्दी साहित्येतिहास की परम्परा में सर्वोच्च स्थान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (1929) को प्राप्त हुआ, जो मूलतः नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया था तथा जिसे आगे परिवर्द्धित एवं विस्तृत करके स्वतंत्र पुस्तक का रूप दे दिया गया। 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखी गई। तदनन्तर उनकी इतिहास सम्बन्धी कुछ और रचनाएँ भी प्रकाशित हुई हैं 'हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' आदि।

#### 148. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' प्रथमतः

'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका में किस शीर्षक से प्रकाशित हुआ था?

- (a) हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका  
(b) हिन्दी साहित्य की भूमिका

(c) हिन्दी साहित्य का विकास

(d) हिन्दी साहित्य का सागर

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

#### उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' प्रथमतः 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया, जिसे आगे परिवर्द्धित एवं विस्तृत करके स्वतंत्र पुस्तक का रूप दे दिया गया। इसके आरंभ में ही आचार्य शुक्ल ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए उद्घोषित किया, "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य-परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।" इससे स्पष्ट है कि आचार्य शुक्ल ने साहित्येतिहास के प्रति एक निश्चित व सुस्पष्ट दृष्टिकोण का परिचय देते हुए युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में साहित्य के विकास क्रम की व्याख्या करने का प्रयास किया।

#### 149. 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' के लेखक हैं-

- (a) श्री ब्रज रत्नदास (b) डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त  
(c) डॉ. श्रीकृष्ण लाल (d) डॉ. दयानन्द श्रीवास्तव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

#### उत्तर—(b)

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास', 'साहित्य सन्देश' में प्रकाशित लेख तथा 'हिन्दी साहित्य समस्याएँ और समाधान' नामक पुस्तक में पर्याप्त तर्कों और प्रमाणों के आधार पर सिद्ध किया है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में, जिसे आदिकाल कहते हैं, उसका कोई अस्तित्व नहीं है। स्वभावतः हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत भक्ति-साहित्य को ही आदिकालीन स्वीकारने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है।

#### 150. समीक्षा के क्षेत्र में हजारी प्रसाद द्विवेदी का आगमन कब हुआ?

- (a) 1920 (b) 1930  
(c) 1940 (d) 1950

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

#### उत्तर—(b)

हजारी प्रसाद द्विवेदी की समीक्षा के क्षेत्र में प्रवेश सन् 1930 के आस-पास हुआ। उनकी प्रथम प्रकाशित कृति 'सूर साहित्य' है, जो 1934 ई. में प्रकाशित हुई।

151. 'मध्यकालीन बोध का स्वरूप' के लेखक हैं—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) राहुल सांकृत्यायन  
(c) नामवर सिंह (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'मध्यकालीन बोध का स्वरूप' के लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं—सूर-साहित्य, साहित्य सहचर, कालिदास की लालित्य योजना, हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, आधुनिक हिन्दी साहित्य पर विचार, साहित्य का मर्म, लालित्य मीमांसा इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वर्ष 1957 में इन्हें पद्म विभूषण पुरस्कार प्रदान किया गया।
- वर्ष 1973 में साहित्य अकादमी अवॉर्ड, निबन्ध संग्रह 'आलोक' के लिए दिया गया।
- उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा मानद उपाधि दी गयी।

152. 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' हिन्दी का एक इतिहास ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के रचनाकार का नाम है—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) नलिन विलोचन शर्मा  
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) रामविलास शर्मा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

153. निम्न में से कौन-सी कृति आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की नहीं है?

- (a) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास  
(b) हिन्दी साहित्य की भूमिका  
(c) हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास  
(d) हिन्दी साहित्य का आदिकाल

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की कृति नहीं, बल्कि रामकुमार वर्मा की कृति है। शेष कृतियाँ हजारी प्रसाद द्विवेदी की हैं।

154. 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' के लेखक कौन हैं?

- (a) डॉ. नगेन्द्र (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी  
(c) डॉ. राजकुमार वर्मा (d) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास लेखन के लगभग एक दशब्दी बाद आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इस क्षेत्र में अवतरित हुए। उनकी 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' क्रम और पद्धति की दृष्टि से इतिहास के रूप में प्रस्तुत नहीं है, किन्तु उसमें प्रस्तुत विभिन्न स्वतन्त्र लेखों में कुछ ऐसे तथ्यों और निष्कर्षों का प्रतिपादन किया गया है, जो हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन के लिए नई दृष्टि नई सामग्री और नई व्याख्या प्रदान करते हैं।

155. 'प्रयाग रामागमन' के लेखक हैं—

- (a) बालकृष्ण भट्ट (b) प्रतापनारायण मिश्र  
(c) प्रेमघन (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'प्रयाग रामागमन' के लेखक बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—जीर्ण जनपद, आनन्द अरुणोदय, हार्दिक हर्षादर्श, मयंक महिमा, अलौकिक लीला, वर्षा बिन्दु, भारत सौभाग्य, संगीत सुधा, सरोवर, भारत भाग्योदय काव्य आदि।

156. 'हिन्दी कोविद रत्नमाला' के लेखक हैं—

- (a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) श्यामसुन्दर दास  
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

श्यामसुन्दर दास ने हिन्दी के उत्थान में काफी कार्य किए, इनके सम्बन्ध में मैथिलीशरण गुप्त की यह उक्ति है—

हिन्दी के हुए जो विगत वर्ष पचास।

नाम उनका एक ही है श्यामसुन्दर दास।।

इनकी कृतियों को निम्न वर्गों में रखा जा सकता है—

(क) मौलिक रचनाएँ—हिन्दी कोविद रत्नमाला भाग-1 और 2, साहित्यालोचन भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा का विकास, गद्य कुसुमावली, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हिन्दी भाषा और साहित्य, गोस्वामी तुलसीदास, रूपक रहस्य, भाषा रहस्य भाग-1, हिन्दी गद्य के निर्माता भाग-1 और 2 तथा मेरी आत्म कहानी।

(ख) सम्पादित ग्रन्थ—चन्द्रावली अथवा नासिकेतोपाख्यान, छत्रप्रकाश, रामचरितमानस, पृथ्वीराज रासो, हिन्दी वैज्ञानिक कोष, वनिता-विनोद, इन्द्रावती, शकुन्तला नाटक, हम्मीर रासो, हिन्दी शब्दसागर, मेघदूत, दीनदयालगिरि ग्रन्थावली, परमाल रासो, सरस्वती, अशोक की धर्मलिपियाँ, रानी केतकी की कहानी, भारतेन्दु नाटकावली, कबीर ग्रन्थावली, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, रत्नाकर, सतसई सप्तक, त्रिधारा, मनोरंजन पुस्तकमाला।

(ग) संकलित ग्रन्थ एवं पाठ्य पुस्तकें—मानस सुक्तावली, संक्षिप्त रामायण, हिन्दी निबन्धमाला, भाषासारसंग्रह, भाषा पत्रबोध, प्राचीन लेख मणिमाला, आलोक चित्राण, हिन्दी संग्रह, सरल संग्रह, नूतन संग्रह, हिन्दी कुसुमावली गद्य रत्नावली, साहित्य प्रदीप, हिन्दी की पहली पुस्तक आदि।

157. 'हिन्दी शब्द सागर' सम्पादित ग्रन्थ है—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) श्यामसुन्दर दास  
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) डॉ. नगेन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

158. 'साहित्यालोचन' कृति के रचनाकार हैं—

- (a) श्यामसुन्दर दास (b) लक्ष्मीकान्त वर्मा  
(c) रामकुमार वर्मा (d) अशोक वाजपेयी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

159. 'पुरानी हिन्दी' ग्रन्थ के लेखक हैं—

- (a) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (b) नलिनविलोचन शर्मा  
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) हजारीप्रसाद द्विवेदी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'पुरानी हिन्दी' ग्रन्थ के लेखक चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' हैं। निबन्धकार के रूप में चन्द्रधर जी बड़े प्रसिद्ध रहे हैं। इन्होंने सौ से अधिक निबन्ध लिखे हैं। सन् 1903 में जयपुर से जैन वैद्य के माध्यम से 'समालोचक पत्र' प्रकाशित होना शुरू हुआ था, जिसके वे सम्पादक रहे। इनके निबन्धों के अधिकतर विषय इतिहास, दर्शन, धर्म, मनोविज्ञान और पुरातत्व सम्बन्धी ही हैं। 'शैशुनाक की मूर्तियाँ, देवकुल, पुरानी हिन्दी, संगीत, कच्छुआ धर्म, आँख, मोरेसि मोहिं कुठाऊं' जैसे निबन्धों पर उनकी विद्वता की अमिट छाप मौजूद है।

160. 'पुरानी हिन्दी' ग्रन्थ के लेखक हैं—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'  
(c) विश्वनाथप्रसाद मिश्र (d) श्यामसुन्दर दास

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

161. निम्नांकित में से विद्यानिवास मिश्र की कृति नहीं है—

- (a) तुम चन्दन हम पानी (b) रस आखेटक  
(c) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (d) शिरीष की याद आयी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'रस आखेटक' निबन्ध कुबेरनाथ राय का है। शेष रचनाएँ विद्यानिवास मिश्र की हैं।

162. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी को 'सौष्ठववादी आलोचक' किसने कहा?

- (a) विजय देव नारायण साही (b) डॉ. नामवर सिंह  
(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) डॉ. भगवत स्वरूप मिश्रा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

डॉ. भगवत स्वरूप मिश्र ने आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी को 'सौष्ठववादी आलोचक' कहा है। डॉ. शिवकुमार शर्मा ने आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी को 'समन्वयवादी एवं सौन्दर्यवादी आलोचक' कहा है।

163. हिन्दी आलोचना से सम्बन्धित पहली पुस्तक है—

- (a) नैषध चरित चर्चा  
(b) विक्रमांक देव चरित चर्चा  
(c) देव बड़े कि बिहारी  
(d) हिन्दी कालिदास आलोचना

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

हिन्दी आलोचना से सम्बन्धित पहली पुस्तक 'हिन्दी कालिदास की आलोचना' है जिसके लेखक पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी थे, जो द्वितीय उत्थान (1893-1918) के आरम्भ में निकली।

164. यदि मैं कामायनी लिखता.....इस समीक्षात्मक ग्रन्थ के लेखक हैं—

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल  
(b) सुमित्रानन्दन पन्त  
(c) डॉ. नगेन्द्र  
(d) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'यदि मैं कामायनी लिखता' समीक्षात्मक ग्रन्थ सुमित्रानन्दन पन्त ने लिखा है, जिसमें उन्होंने स्वीकार किया कि "कामायनी इस युग का एक अपूर्व, अद्वितीय महान काव्य कृति है, इसमें मुझे सन्देह नहीं। वह हमारे युग-प्रवर्तक प्रसाद के शुभ्रशान्त सौन्दर्य का पवित्र यश-काव्य है, जिसे हिन्दी साहित्य में और सम्भवतः विश्व साहित्य में भी जरा-मरण का भय नहीं है। यदि मैं कामायनी लिखने की असम्भव बात सोचता भी, तो मैं उसे इतना भी सफल तथा पूर्ण नहीं बना सकता, जितना कि उसे महान क्षमता तथा प्रतिभाशाली प्रसाद बना गए हैं।"

165. 'महाकवि सूरदास' किसकी आलोच्य कृति है?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल  
(c) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी (d) डॉ. नगेन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)



‘महाकवि सूरदास’ आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी की आलोच्य कृति है। सूरदास की आलोचना में वाजपेयी जी लिखते हैं-‘स्थिति-विशेष का पूरा दिग्दर्शन भी करें, घटनाक्रम का आभास भी दें और साथ ही समुन्नत कोटि के रूप-सौन्दर्य और भाव-सौन्दर्य की परिपूर्ण झलक भी दिखते जायें, यह विशेषता हमें कवि सूरदास में मिलती है।’ इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं-हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी की भूमिका, आधुनिक साहित्य की भूमिका, नया साहित्य : नये प्रश्न, समाज और साहित्य, साहित्य और सामाजिक जीवन, नयी कविता, रस सिद्धान्त साहित्य का आधुनिक युग, आधुनिक साहित्य सृजन और समीक्षा, रीति और शैली।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- नन्ददुलारे वाजपेयी ने ‘सूर’, ‘प्रसाद’, ‘निराला’ और ‘पन्त’ आदि की व्यावहारिक समीक्षाएँ प्रस्तुत की।
- वाजपेयी जी की मान्यताएँ ‘प्रसाद’ से प्रभावित हैं। प्रसाद जी रसवादी (आनन्दवादी) कलाकार थे, तो वाजपेयी जी रसवादी समीक्षक।

166. ‘पन्त जी और पल्लव’ शीर्षक से इनमें से किस साहित्यकार ने प्रसिद्ध समीक्षा लिखी है?

- (a) रामविलास शर्मा
- (b) नामवर सिंह
- (c) विजयदेव नारायण साही
- (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

‘पन्त जी और पल्लव’ शीर्षक से सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ ने प्रसिद्ध समीक्षा लिखी है। इसमें निराला जी ने पन्त की कविताओं के उदाहरण देकर उनकी त्रुटियों को निर्दिष्ट किया है।

167. ‘जायसी’ नामक समीक्षा कृति के लेखक हैं—

- (a) शिवसहाय पाठक
- (b) विजयदेव नारायण साही
- (c) वासुदेवशरण अग्रवाल
- (d) रामचन्द्र शुक्ल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

‘जायसी’ नामक समीक्षा कृति के लेखक विजयदेव नारायण साही हैं। ये ‘तीसरे सप्तक’ के चर्चित प्रयोगवादी कवि हैं। मछलीघर, साखी, संवाद तुमसे, आवाज हमारी जाएगी इनके कविता संग्रह हैं। ये ‘आलोचना’ एवं ‘नई कविता’ पत्रिकाओं के सम्पादक मण्डल में शामिल थे।

168. ‘उर्मिला’ किसका प्रबन्ध काव्य है?

- (a) नरेन्द्र शर्मा
- (b) रामेश्वर शुक्ल अंचल
- (c) बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’
- (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

मैथिलीशरण गुप्त तथा बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ दोनों ने ‘उर्मिला’ शीर्षक प्रबन्ध काव्य लिखकर उपेक्षिता उर्मिला के चरित्र को विशेष रूप से उभारा। ‘नवीन’ के अन्य काव्य ग्रन्थ हैं—अपलक, रश्मिरेखा, क्वासि तथा हम विषपायी जनम के आदि।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ ने ‘प्रभा’ और ‘प्रताप’ का भी सम्पादन किया था।
- कुमुकुम (1939 ई.) इनका पहला कविता-संग्रह है।

169. हम विषपायी जनम के’ इस काव्यकृति के रचनाकार हैं—

- (a) सुभद्रा कुमारी चौहान
- (b) रामनरेश त्रिपाठी
- (c) बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’
- (d) गोपाल सिंह नेपाली

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

170. ‘नूरजहां प्रबन्धकाव्य के रचयिता हैं :

- (a) कुतुबन
- (b) सियारामशरण गुप्त
- (c) गुरुभक्त सिंह
- (d) अयोध्यासिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

‘नूरजहां’ और ‘विक्रमादित्य’ गुरुभक्त सिंह का प्रबन्धकाव्य है, जो ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रची गई है।

171. कौन-सी कृति मोहन राकेश की नहीं है?

- (a) आषाढ़ का एक दिन
- (b) कन्यादान
- (c) लहरों के राजहंस
- (d) आधे-आधूरे

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

‘कन्यादान’ मोहन राकेश की कृति नहीं है, बल्कि सरदार पूर्णसिंह की है।

172. डॉ. सम्पूर्णानन्द की रचना का नाम है—

- (a) हिन्दी भाषा की उत्पत्ति
- (b) आचरण की सभ्यता
- (c) गेहूँ बनाम गुलाब
- (d) भाषा की शक्ति

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

‘भाषा की शक्ति’ के रचनाकार डॉ. सम्पूर्णानन्द हैं। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं—जीवन और दर्शन, चिद्विलस, ज्योतिर्विनोद, अन्तरिक्ष यात्रा, समाजवाद, अन्तरराष्ट्रीय विधान इत्यादि। देशबन्धु चितरंजनदास तथा महात्मा गाँधी की जीवनी भी इन्होंने लिखी।



### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- डॉ. सम्पूर्णानन्द को उनकी कृति 'समाजवाद' पर 'मंगला प्रसाद' पारितोषिक प्राप्त हुआ।
- उन्हें सर्वोच्च उपाधि 'साहित्य-वाचस्पति' भी प्राप्त हुई।
- उन्होंने 'मर्यादा' (मासिक) और 'टुडे' (अंग्रेजी दैनिक) का सम्पादन किया।

### 173. 'ध्रुवचरित' के रचयिता हैं—

- (a) रसखान (b) स्वामी हरिदास  
(c) नरोत्तमदास (d) भिखारीदास

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

### उत्तर—(c)

नरोत्तमदास भक्तिकाल के कृष्णाश्रयी शाखा के रचनाकार माने जाते हैं। इनके उपलब्ध ग्रन्थों में एकमात्र 'सुदामाचरित' ही उपलब्ध है। 'ध्रुवचरित' आंशिक रूप से उपलब्ध है।

### 174. दलित साहित्य का चर्चित लेखक हैं—

- (a) निराला (b) कुँआर बेचैन  
(c) ओम प्रकाश वाल्मीकि (d) नगेन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2003

### उत्तर—(c)

दलित साहित्य के चर्चित लेखक ओम प्रकाश वाल्मीकि हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र (आलोचना), सदियों का संताप, बस ! बहुत हो चुका (कविता संग्रह), सलाम (कहानी संग्रह) तथा जूठन (आत्मकथा) आदि।

### 175. 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' पुस्तक किसने लिखी है?

- (a) ओम प्रकाश वाल्मीकि (b) कैवल भारती  
(c) मोहनदास नैमिशराय (d) श्यौराज सिंह 'बेचैन'

P.G.T. परीक्षा, 2010

### उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

### 176. 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' के लेखक हैं—

- (a) श्यौराज सिंह 'बेचैन' (b) शरण कुमार लिम्बाले  
(c) सूरजपाल चौहान (d) मोहनदास नैमिशराय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

### उत्तर—(b)

'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' शरण कुमार लिम्बाले की समीक्षा है। इसी शीर्षक के नाम से ओम प्रकाश वाल्मीकि ने आलोचना ग्रन्थ लिखा है। शरण कुमार लिम्बाले की कृतियों में 'अक्करमाशी' (आत्मकथा), 'छूआछूत' 'देवता आदमी', दलित ब्राह्मण' (कहानी संग्रह), 'नरवानर', 'हिन्दू', 'बहुजन' (उपन्यास) शामिल हैं।

### 177. किस रचनाकार ने पौराणिक आख्यानों को अपने उपन्यासों में सर्वथा नए और विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत किया है?

- (a) नरेन्द्र कोहली (b) जयशंकर प्रसाद  
(c) वृन्दावनलाल वर्मा (d) मोहन राकेश

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

### उत्तर—(a)

नरेन्द्र कोहली ने 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' नामक उपन्यासों के माध्यम से रामकथा को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित करने का उल्लेखनीय प्रयास किया है। नरेन्द्र कोहली का उपन्यास 'अभिज्ञान' कृष्ण सुदामा आख्यान के आधार पर कर्म सिद्धान्त की आधुनिक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

### 178. 'कबीर : बाज भी, कपोत भी, पपीहा भी' के रचनाकार हैं—

- (a) धर्मवीर (b) मुद्राराक्षस  
(c) धूमिल (d) प्रेमचन्द

P.G.T. परीक्षा, 2009

### उत्तर—(a)

डॉ. धर्मवीर 'दलित धर्म' के समर्थक हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक 'कबीर : बाज भी, कपोत भी, पपीहा भी' में लिखा है कि "ब्राह्मण अपनी बात ब्राह्मण धर्म के रूप में कहता है। क्षत्रियों ने अपनी बात बौद्ध धर्म के रूप में रखी है। इसमें कुछ भी बुराई नहीं है। बुराई तब पैदा होती है जब दलित को अपनी बात दलित धर्म के रूप में नहीं रखने दी जाती।" डॉ. धर्मवीर का ही यह 'बौद्धिक व्यायाम' है कि कबीर ने जो बातें नहीं कही, उन्हें मुख से बुलवा दिया गया। वे लिखते हैं "दलित धर्म की पृथक्ता के लिए यही जरूरी नहीं है कि सिद्ध किया जाय कि ब्राह्मण धर्म बुरा है। ब्राह्मण धर्म अच्छा या बुरा है, इससे कबीर के धर्म को कोई सरोकार नहीं है।"

### 179. 'निशा-निमन्त्रण' के रचनाकार हैं—

- (a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) हरिवंशराय बच्चन  
(c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (d) वीरेन्द्र मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2005

### उत्तर—(b)

'निशा-निमन्त्रण' के रचनाकार हरिवंशराय बच्चन हैं। इनकी ख्याति 'मधुशाला' की रचना के साथ हुई। इनकी कविताओं का प्रथम संग्रह 'तेरा हार' है।

### 180. 'अमन का राग' के लेखक हैं—

- (a) भवानी प्रसाद मिश्र (b) मुक्तिबोध  
(c) शमशेर बहादुर सिंह (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

### उत्तर—(c)

‘अमन का राग’ के लेखक शमशेर बहादुर सिंह हैं। यह एक कालजयी कविता है। इसका प्रकाशन 1952 ई. में हुआ।

181. ‘मौर्य विजय’ किसकी रचना है?

- (a) मैथिलीशरण गुप्त (b) सियारामशरण गुप्त  
(c) श्यामनारायण पाण्डेय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

‘मौर्य विजय’ सियारामशरण गुप्त द्वारा सन् 1914 में लिखी गयी प्रथम रचना है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—अनाथ, आर्द्रा, विषाद, दूर्वादल, बापू, आत्मोत्सर्ग, मृणाषी, नकुल, सुनन्दा और गोपिका इत्यादि।

182. ‘हल्दी घाटी’ वीर रस प्रधान प्रबन्ध काव्य है—

- (a) श्यामनारायण पाण्डेय (b) नवीन  
(c) सोहन लाल द्विवेदी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

‘हल्दी घाटी’ 1937-39 ई. में श्यामनारायण पाण्डेय द्वारा लिखा गया वीर रस प्रधान प्रबन्ध काव्य है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—जौहर (1939-44), तुमुल (1948), रूपान्तर (1948), आरती (1945-46) और जय हनुमान (1956)।

183. ‘भविष्यत् कहा’ के रचनाकार हैं—

- (a) पुष्पदन्त (b) स्वयंभू  
(c) धनपाल (d) सरहपा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

‘भविष्यत् कहा’ (भविष्यत् कथा) धनपाल की रचना है। इसकी रचना दसवीं शती में की गयी है। धनपाल अपभ्रंश के प्रमुख कवि हैं। इसमें एक वणिक की कथा है।

184. ‘भविष्यत् कहा’ किसकी रचना है?

- (a) रामसिंह (b) देवसेन  
(c) धनपाल (d) पुष्पदन्त

आश्रम पद्धति (प्रवृत्ति) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

185. अब्दुल रहमान कृत ‘सन्देशरासक’ है—

- (a) महाकाव्य (b) खण्डकाव्य  
(c) प्रबन्ध काव्य (d) मुक्तक काव्य

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

अपभ्रंश साहित्य के समर्थ कवियों में अब्दुल रहमान का नाम आता है, जिसने ‘सन्देशरासक’ लिखकर हिन्दी काव्य के लिए एक स्थायी प्रेरणा का काम किया। ‘सन्देशरासक’ एक खण्डकाव्य है, जिसमें विक्रमपुर की वियोगिन के विरह की कथा है। कवि ने उसका नख-शिख वर्णन तथा पति के लिए सन्देश अत्यन्त सहज भावभूमि पर चित्रित करके काव्य को मार्मिक बना दिया है।

186. ‘सन्देशरासक’.....की श्रेणी में आता है।

- (a) खण्डकाव्य (b) महाकाव्य  
(c) चम्पूकाव्य (d) गीतिकाव्य

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

187. ‘सन्देशरासक’ के रचयिता हैं—

- (a) अमीर खुसरो (b) अब्दुल रहमान  
(c) लक्ष्मीधर (d) हेमचन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

188. ‘बाँधो न नाव इस ठाँव’ के लेखक हैं—

- (a) उपेन्द्रनाथ अशक (b) निराला  
(c) जयशंकर प्रसाद (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

‘बाँधो न नाव इस ठाँव’ एक उपन्यास है। इसके लेखक उपेन्द्रनाथ अशक हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं—सितारों के खेल, गिरती दीवारें, गर्मराख, बड़ी-बड़ी आँखें, पत्थर अल पत्थर, शहर में घूमता आईना, एक नन्हीं किन्दील आदि।

189. ‘साखी’ किस कवि का काव्य-संग्रह है?

- (a) केदारनाथ सिंह (b) कुँवर नारायण  
(c) मलयज (d) विजयदेव नारायण साही

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

‘साखी’ विजयदेव नारायण साही का काव्य संग्रह है। ‘जमीन पक रही’, ‘यहाँ से देखो’ केदारनाथ सिंह का काव्य संग्रह है। ‘आमने-सामने’ कुँवर नारायण का तथा ‘जख्म पर धूल’ मलयज का काव्य संग्रह है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- विजयदेव नारायण साही का पृथक काव्य संग्रह ‘मछलीघर’ नयी कविता की दुरुह परम्परा से प्रभावित जान पड़ता है।
- केदारनाथ सिंह के ‘बाघ’ (1986), अकाल में सारस (1988), उत्तर कबीर (1995), टालस्टाय और साइकिल (2005) कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं।
- कुँवर नारायण का ‘कोई दूसरा नहीं’ (1993) कविता संग्रह है।

190. 'मछलीघर' नामक काव्य-संग्रह के सम्पादक हैं-

- (a) दूधनाथ सिंह (b) विजयदेव नारायण साही  
(c) लक्ष्मीकान्त वर्मा (d) धर्मवीर भारती

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

191. चिन्तामणि द्वारा रचित 'प्रबन्ध काव्य' है—

- (a) कृष्ण चरित्र (b) काव्य प्रकाश  
(c) शृंगार मंजरी (d) रसविलास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

चिन्तामणि द्वारा विरचित 'कृष्ण चरित्र' प्रबन्ध काव्य है। इसके अतिरिक्त दो प्रबन्ध काव्य हैं—रामायण और रामाश्वमेध।

192. लक्षण ग्रन्थ 'कविकुल कल्पतरु' के रचयिता हैं—

- (a) आचार्य केशवदास (b) आचार्य चिन्तामणि  
(c) आचार्य श्रीपति मिश्र (d) आचार्य भिखारीदास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'चिन्तामणि' को रीतिकाल के आरम्भकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं। वस्तुतः रीतिकाल की जो अविच्छिन्न धारा बही उसकी शुरुआत चिन्तामणि से ही होती है। चिन्तामणि के द्वारा लिखे गये कुल 4 ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है—कविकुल कल्पतरु, काव्य-प्रकाश, रस मंजरी, पिंगल और रामायण।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- चिन्तामणि कृत 'कविकुल कल्पतरु' में आठ प्रकरण हैं। जिनमें काव्य वेद, काव्य लक्षण, काव्य, स्वरूप, गुण, अलंकार, दोष, ध्वनि, आदि पर विचार किया गया है।
- 'कविकुल कल्पतरु' में लक्षण प्रायः दोहा-सोरठा छन्द में हैं और उदाहरण कवित्त सवैया में लक्षण निरूपण में चिन्तामणि ने प्रायः मम्मट का अनुसरण किया है।

193. 'सबसे बड़ा सिपहिया' के रचनाकार हैं—

- (a) वीरेन्द्र जैन (b) वीरेन्द्र कुमार  
(c) मिथिलेश्वर (d) गोविन्द मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'सबसे बड़ा सिपहिया' के रचनाकार वीरेन्द्र जैन हैं। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं—मुक्तिदूत, सुखफरोश, हास्य कथा बत्तीसी इत्यादि। मुक्तिदूत, भारतीय ज्ञानपीठ के 'मूर्तिदेवी' पुरस्कार से सम्मानित कथा कृति है।

194. सीता को प्रधानता देकर लिखा गया काव्य 'सीतायन' के रचयिता हैं—

- (a) नाभादास (b) पोलंकि राममूर्ति  
(c) जानकी रसिक शरण (d) रामप्रिया शरण

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

शृंगार रस-प्रधान प्रबन्ध काव्यों में रामप्रिया शरण कृत 'सीतायन' परम प्रख्यात कृति है। यह प्रबन्ध 'रामचरितमानस' के ढंग पर सात काण्डों में सीता का चरित अंकित करता है। भाषा अवधी तथा छन्द दोहा-चौपाई है।

195. 'रामरक्षा स्त्रोत' रचना के लेखक हैं—

- (a) केशवदास (b) नाभादास  
(c) ईश्वरदास (d) रामानन्द

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'रामरक्षा स्त्रोत' के लेखक रामानन्द हैं। रामानन्द, संस्कृत के विद्वान थे। 'वैष्णव मताब्द भास्कर' और 'रामार्जुन-पद्धति' इनके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। रामानन्दी सम्प्रदाय को रामानुज सम्प्रदाय से पृथक् सिद्ध करने के लिए 'ब्रह्मसूत्र' और 'गीता' पर इनके नाम से भाष्यों का प्रचार किया गया है।

196. 'उपदेशरसायन' के रचयिता कौन हैं?

- (a) जिनदत्त सूरि (b) जिनधर्म सूरि  
(c) शालिभद्र सूरि (d) धनपाल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

अपभ्रंश में चरितकाव्यों की परम्परा से भिन्न एक रासकाव्य परम्परा भी आरम्भ हुई थी। बारहवीं शताब्दी के 'जिनदत्त सूरि' का 'उपदेशरसायन रास' इस दृष्टि से उल्लेख्य है। 80 पद्यों का नृत्य गीतकाव्य रासलीला के उस मूल रूप की ओर ले जाता है, जिसमें हिन्दी के आदिकालीन रासोकाव्य लिखे गये होंगे और बाद में विकसित होकर अगेय बन गये।

197. 'संशय की एक रात' के लेखक हैं—

- (a) मुक्तिबोध (b) श्रीकांत वर्मा  
(c) धूमिल (d) नरेश मेहता

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

'संशय की एक रात' के लेखक नरेश मेहता हैं। यह नाटक शैली में लिखी गयी लम्बी कविता है। इनके अन्य प्रमुख काव्य-संग्रह हैं—वनपाखी सुनो, बोलने दो चीड़, मेरा समर्पित एकान्त आदि।

198. 'आकाश गंगा' काव्य-संग्रह है—

- (a) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (b) भगवती चरण वर्मा  
(c) रामकुमार वर्मा (d) उदय शंकर भट्ट

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'आकाश गंगा' काव्य-संग्रह रामकुमार वर्मा का है। इनके अन्य प्रमुख कविता संग्रह हैं—अंजलि, अभिषाप, रूपराशि, चित्ररेखा, चन्द्रकिरण, एकलव्य, हिमहास, निशीथ, जौहर तथा चित्तौड़ की चिन्ता इत्यादि।

199. निम्नलिखित में से किस कृति के रचनाकार दुष्यन्त कुमार हैं?

- (a) अपनी केवल धार (b) खूंटियों पर टंगे लोग  
(c) साये में धूप (d) युगधारा

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

'साये में धूप' (गजल-संग्रह) काव्य-कृति के रचनाकार दुष्यन्त कुमार हैं। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं— सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का वसन्त (सभी कविता-संग्रह), एक कण्ठ, विषपायी (काव्य-नाटिका) इत्यादि।

200. 'साये में धूप' काव्य-कृति के रचयिता हैं—

- (a) रघुवीर सहाय (b) दुष्यन्त कुमार  
(c) नरेश मेहता (d) धर्मवीर भारती

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

201. निम्नलिखित में से कौन सी काव्य-कृति 'रामकथा' पर आधारित नहीं है?

- (a) शम्बूक (b) अग्निलीक  
(c) संशय की एक रात (d) महाप्रस्थान

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

नरेश मेहता कृति 'महाप्रस्थान' का कथानक 'महाभारत' पर आधारित है। यह प्रबन्ध काव्य महाभारत कथा में 'स्वर्गारोहण' की घटना को समकालीन यथार्थ-बोध से सम्बद्ध कर नयी अर्थवत्ता प्रदान की है। 'महाप्रस्थान' का प्रकाशन 1975 ई. में हुआ, किन्तु युग चित्रण की दृष्टि से यह चिरंतन है। नाट्य-प्रबन्ध 'महाप्रस्थान' का सम्पूर्ण कथ्य तीन पर्वों में सुगुम्फित है—यात्रा पर्व, स्वाहा पर्व तथा स्वर्ग पर्व। शेष कृतियाँ 'रामकथा' पर आधारित हैं।

202. निम्नलिखित काव्यकृतियों में से एक रामकथा पर आधारित नहीं है—

- (a) शम्बूक (b) अग्निलीक  
(c) महाप्रस्थान (d) संशय की एक रात

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

203. 'दिनकर' की प्रसिद्ध काव्यकृति 'रश्मिरथी' की कथावस्तु कहाँ से ली गई है?

- (a) पूर्णतया कल्पित है (b) भागवत पुराण  
(c) रामायण (d) महाभारत

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'रश्मिरथी' काव्य के रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। रश्मिरथी का अर्थ होता है वह व्यक्ति, जिसका रथ, रश्मि अर्थात् सूर्य की किरणों का हो। इस काव्य में रश्मिरथी नाम कर्ण का है, क्योंकि उसका चरित्र सूर्य के समान प्रकाशमान है। कर्ण, महाभारत महाकाव्य का अत्यंत यशस्वी पात्र है।

204. 'अग्निलीक' काव्यनाटक (कृति) के रचनाकार हैं :

- (a) लक्ष्मीनाराण लाल (b) सेठ गोविंददास  
(c) भारतभूषण अग्रवाल (d) नरेश मेहता

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

भारतभूषण अग्रवाल कृत 'अग्निलीक' एक काव्यनाटक है। इस कृति में रामकथा को मिथकीय आयाम प्रदान करके आधुनिक युग परिवेशानुसार चित्रित किया गया है। इस रचना में राम को सामन्तवादी प्रवृत्तियों के समर्थक और राज्य-लोभी के रूप वर्णित कर राम के चरित्र के अंतर्विरोधों की खोज की है। उन्होंने 'चारण' नामक पात्र की आदिवासी समूह के प्रतीक के रूप में नवीन सृष्टि और सीता परित्याग की घटना की मुक्त कंठ से निंदा की है।

205. शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिखित 'दो-आब' किस विधा की कृति है?

- (a) कहानी (b) समीक्षा  
(c) उपन्यास (d) काव्य

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिखित 'दो आब' गद्य काव्य का निबन्ध संग्रह है, जिसका प्रकाशन वर्ष 1948 में हुआ। इनकी अन्य रचनाएँ इस प्रकार से हैं— प्लाट का मोर्चा कहानियाँ व स्केच (1952), शमशेर की डायरी, इतने पास अपने (1980), चुका भी हूँ नहीं मैं (1981), बात बोलेगी (1981) एवं कल तुझसे होड़ है मेरी (1988) आदि।



206. वह कौन-सा विकल्प है, जिसमें दिए गए सभी लेखकों ने कवि एवं नाटककार दोनों रूपों में प्रसिद्धि प्राप्त की है?

- (a) मोहन राकेश, सुमित्रानन्द पन्त, लक्ष्मीनारायण लाल  
(b) जयशंकर प्रसाद, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, रामकुमार वर्मा  
(c) चिरंजीत, महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त  
(d) केदारनाथ अग्रवाल, श्रीधर पाठक, अज्ञेय

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत लेखक कवि एवं नाटककार दोनों रूपों में प्रसिद्धि प्राप्त की है। विकल्प (d) में केवल कवि के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले लोग हैं।

207. रेडियो नाटककार के रूप में कौन-सा लेखक अधिक प्रसिद्ध है?

- (a) चिरंजीत (b) मोहन राकेश  
(c) जयशंकर प्रसाद (d) सेठ गोविन्ददास

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

वर्तमान में नाट्य सम्प्रेषण के तीन माध्यम हमारे सामने विद्यमान हैं। प्राचीन काल से चला आ रहा रंगमंच का माध्यम तो है ही। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई विज्ञान एवं टेक्नोलोजी की प्रगति से नाट्य-सम्प्रेषण के दो और माध्यम आविष्कृत हुए—माइक्रो फोन और कैमरा। माइक्रोफोन ने रेडियो-नाटक को जन्म दिया और कैमरा ने सिनेमाई नाटक को। सिनेमाई नाटक का ही आधुनिक रूप है टेलीविजन नाटक। चिरंजीत हिन्दी के पहले नाटककार हैं, जिन्होंने अपनी नाट्याभिव्यक्ति के लिए तीनों माध्यमों का बड़ी सफलता से उपयोग किया है। परन्तु इसके साथ ही यह भी निश्चित है कि उन्हें सर्वप्रथम एवं सर्वाधिक ख्याति रेडियो-नाटककार के रूप में ही मिली, नाटक 'रतजगा' में उनके राष्ट्र प्रेम एवं काव्य गुण बेहतर दिखाई पड़ता है।

208. 'मंगलेश डबराल' की रचना है—

- (a) जख्म पर धूल (b) पहाड़ पर लालटेन  
(c) सुनो कारीगर (d) सुदामा पाण्डेय का प्रजातन्त्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

मंगलेश डबराल की प्रमुख रचनाएँ हैं—पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं, आवाज भी एक जगह है आदि।

209. 'कविता की तीसरी आँख' के रचनाकार हैं—

- (a) शेरजंग गर्ग (b) मृदुला गर्ग  
(c) प्रभाकर श्रोत्रिय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'कविता की तीसरी आँख' के रचनाकार प्रभाकर श्रोत्रिय प्रख्यात आलोचक, नाटककार, निबन्धकार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—रचना एक यातना है, जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता, संवाद (नई कविता-आलोचना), कालयात्री है कविता, अतीत के हंस : मैथिलीशरण गुप्त, मेघदूत एक अंतयात्रा, श्री नरेश मेहता रचनावली आदि।

210. 'मैंने स्मृति के दीप जलाये' किसकी रचना है?

- (a) राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन (b) रामवृक्ष बेनीपुरी  
(c) लक्ष्मी नारायण सुधांशु (d) रामनाथ सुमन

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'मैंने स्मृति के दीप जलाये' (1976) रामनाथ सुमन की रचना है। इनकी एक अन्य रचना 'छायावादयुगीन स्मृतियाँ' (1975) हैं।

211. 'भाषाभूषण' के रचनाकार हैं—

- (a) जसवन्त सिंह (b) भूषण  
(c) मतिराम (d) चिन्तामणि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

महाराज जसवन्त सिंह कृत 'भाषाभूषण' अलंकार विवेचन सम्बन्धी ग्रन्थ है, जिसमें 212 छन्द हैं। प्रारम्भ में 10 दोहों में भूमिका है, शेष 202 छन्दों में 116 अलंकारों का विवेचन है।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- महाराज जसवन्त सिंह हिन्दी साहित्य के प्रधान आचार्यों में माने जाते हैं और इनका 'भाषाभूषण' ग्रन्थ अलंकारों पर बहुत प्रचलित पाठ्य ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ को इन्होंने वास्तव में आचार्य के रूप में लिखा है, कवि के रूप में नहीं। उन्होंने अपना 'भाषाभूषण' बिल्कुल 'चन्द्रालोक' की छाया पर बनाया और उसी की संक्षिप्त प्रणाली का अनुसरण किया।
- भाषाभूषण के अतिरिक्त जो और ग्रन्थ इन्होंने लिखे हैं, वे तत्व ज्ञान सम्बन्धी हैं। जैसे—अपरोक्ष सिद्धान्त, अनुभव प्रकाश, आनन्द विलास, सिद्धान्तबोध, सिद्धान्तसार, प्रबोध चन्द्रोदय नाटक।

212. भाषाभूषण के रचयिता हैं—

- (a) भूषण (b) देव  
(c) कुलपति मिश्र (d) जसवन्त सिंह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

213. इनमें कौन-सा ग्रन्थ 'चन्द्रालोक' की छाया है?

- (a) काव्य विवेक (b) कविकुल कल्पतरु  
(c) भाषाभूषण (d) काव्य प्रकाश

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

214. 'तुलसी : आधुनिक वातायन से' पुस्तक के लेखक हैं—

- (a) रमेशकुन्तल मेघ (b) माताप्रसाद गुप्त  
(c) अशोक वाजपेयी (d) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'तुलसी : आधुनिक वातायन से' पुस्तक के लेखक रमेशकुन्तल मेघ हैं। आधुनिक रचनावृत्त में 'तुलसी' को सबसे पहले बाबू शिवनन्दन सहाय ने देखा था। बाद में सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने 'तुलसीदास' (1939) की रचना द्वारा तादात्म्यीकरण किया। रमेशकुन्तल मेघ की प्रमुख रचनाएँ हैं—मिथक और स्वप्न, आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण, मध्ययुगीन रस दर्शन और समकालीन सौन्दर्य बोध, क्योंकि समय एक शब्द है, अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा, वाग्मी हो लो ! मनखंजन किनके? आदि।

215. 'अरस्तू का काव्यशास्त्र' किसकी रचना है?

- (a) बाबू गुलाब राय (b) डॉ. नामवर सिंह  
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) रामचन्द्र शुक्ल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'अरस्तू का काव्यशास्त्र' (1957) डॉ. नगेन्द्र द्वारा लिखा गया है। इनकी मौलिक तथा सम्पादित 50 पुस्तकें हैं—मौलिक ग्रन्थों में—सुमित्रानन्दन पन्त (1938), साकेत : एक अध्ययन (1939), आधुनिक हिन्दी नाटक (1940), विचार और विवेचन (1944), रीति काव्य की भूमिका (1949), देव और उनकी कविता (1949), विचार और अनुभूति (1949), भारतीय काव्य-शास्त्र की भूमिका (1953), काव्य में उदात्त तत्व (1938), अनुसंधान और आलोचना (1961), कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ (1962), रस सिद्धान्त (1964), आलोचक की आस्था (1966), काव्य बिम्ब (1967), आस्था के चरण (1968), तन्त्रालोक से यन्त्रालोक तक (1968), नई समीक्षा : नए सन्दर्भ (1970), समस्या और समाधान (1971), अप्रवासी की यात्राएँ (1972), भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका।

सम्पादित ग्रन्थों में—हिन्दी ध्वन्यालोक (1952), कविभारती (1953), हिन्दी काव्यालंकार सूत्र (1934), रीति शृंगार (1954), भारतीय नाट्यशास्त्र (1955), भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा (1956), हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, भाग-6, भारतीय वाङ्मय (1958) तथा हिन्दी अभिनव भारती (1960)।

216. 'नई समीक्षा नए सन्दर्भ' किसकी आलोचना कृति है?

- (a) नन्दकिशोर आचार्य (b) रमेशकुन्तल मेघ  
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) डॉ. रामविलास शर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

217. 'अप्रवासी की यात्राएँ' नामक कृति के रचनाकार कौन हैं?

- (a) डॉ. नगेन्द्र (b) अभिमन्यु अनत  
(c) डॉ. धर्मवीर भारती (d) कन्हैयालाल नन्दन

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

218. 'सुमित्रानन्दन पन्त' नामक ग्रन्थ के लेखक हैं—

- (a) डॉ. नामवर सिंह (b) डॉ. नगेन्द्र  
(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

219. 'यदि कहा जाए कि 'शब्दसागर' की उपयोगिता और सर्वांगपूर्णता का श्रेय पं. रामचन्द्र शुक्ल को प्राप्त है, तो इसमें कोई अत्युक्ति न होगी। एक प्रकार से यह उन्हीं के परिश्रम, विद्वता और विचारशीलता का फल है। कोश ने शुक्ल जी को बनाया और शुक्ल जी ने कोश को।' युग-प्रवर्तक लेखक रामचन्द्र शुक्ल तथा प्रसिद्ध कृति 'शब्दसागर' के सम्बन्ध में यह मूल्यपरक कथन इनमें से किस साहित्यकार का है?

- (a) डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) चन्द्रशेखर शुक्ल  
(c) बाबू श्यामसुन्दर दास (d) डॉ. रामविलास शर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

बाबू श्यामसुन्दर दास ने हिन्दी शब्दसागर की 31 जनवरी, 1929 को प्रकाशित भूमिका में लिखा है कि 'इस कोश के कार्य में आरम्भ से लेकर अन्त तक पं. रामचन्द्र शुक्ल का सम्बन्ध रहा है और उन्होंने इसके लिए जो कुछ किया है, वह विशेष रूप से उल्लिखित होने योग्य है। 'यदि यह कहा जाय कि शब्दसागर की उपयोगिता और सर्वांगपूर्णता का अधिकांश श्रेय पं. रामचन्द्र शुक्ल को प्राप्त है, तो इसमें कोई अत्युक्ति न होगी। एक प्रकार से यह उन्हीं के परिश्रम, विद्वता और विचारशीलता का फल है। इतिहास, दर्शन, भाषा विज्ञान, व्याकरण, साहित्य आदि के सभी विषयों का समीचीन विवेचन प्रायः उन्हीं का किया हुआ है।'

220. 'दूसरी परम्परा की खोज' किस विधा की रचना है?

- (a) आलोचना (b) खोज एवं सर्वेक्षण  
(c) कहानी (d) ललित निबन्ध

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'दूसरी परम्परा की खोज' (1982 ई.) आलोचना विधा है। इसके लेखक नामवर सिंह हैं। यह कृति हजारी प्रसाद द्विवेदी पर केन्द्रित है। इनकी अन्य आलोचनात्मक कृतियाँ हैं- हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग (1952 ई.), छायावाद (1955 ई.), इतिहास और आलोचना (1957 ई.), आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ (1962 ई.), कहानी : नई कहानी (1965 ई.) तथा कविता के नये प्रतिमान (1968 ई.) आदि।

221. डॉ. नामवर सिंह की पुस्तक 'दूसरी परम्परा की खोज' किस पर केन्द्रित है?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) जयशंकर प्रसाद  
(c) जगदीश गुप्त (d) प्रेमचन्द

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

222. 'दूसरी परम्परा की खोज' के लेखक हैं—

- (a) रामविलास शर्मा (b) शिवदान सिंह चौहान  
(c) नामवर सिंह (d) देवीशंकर अवस्थी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

223. निम्नांकित में से किस कृति के लेखक नामवर सिंह हैं?

- (a) आलोचना और काव्य (b) दूसरी परम्परा की खोज  
(c) आस्था और सौन्दर्य (d) भाषा और समाज

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

224. 'कविता के नये प्रतिमान' के लेखक कौन हैं?

- (a) डॉ. नगेन्द्र (b) डॉ. नामवर सिंह  
(c) डॉ. देवराज (d) डॉ. रामविलास शर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

225. नामवर सिंह का यह कथन इनमें से किस पुस्तक के लिए है कि "पूर्ववर्ती व्यक्तिवादी इतिहास प्रणाली के स्थान पर सामाजिक अथवा जातीय ऐतिहासिक प्रणाली का आरम्भ करने वाली यह पहली हिन्दी पुस्तक है"?

- (a) हिन्दी साहित्य की भूमिका  
(b) हिन्दी साहित्य की सामाजिक भूमिका  
(c) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास  
(d) हिन्दी साहित्य का नया इतिहास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

नामवर सिंह ने हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित पुस्तक 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' के लिए कहा है, "व्यक्तिवादी इतिहास प्रणाली के स्थान पर सामाजिक अथवा जातीय ऐतिहासिक प्रणाली का आरम्भ करने वाली यह पहली पुस्तक है।"

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ नामवर सिंह ने जोर देकर कहा है कि हिन्दी साहित्य के अध्ययन के लिए द्वन्द्वात्मक प्रणाली से काम लेना चाहिए और इस प्रणाली का सही उपयोग 'भौतिकवादी दृष्टिकोण' से ही हो सकता है। नामवर सिंह ने हजारी प्रसाद द्विवेदी की पुस्तक 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' के बारे में लिखा है। यह पुस्तक 'नवीन युग की भूमिका' बनकर प्रकाश में आयी।

226. 'प्रगतिवाद' किसकी कृति है?

- (a) शिवदान सिंह चौहान (b) अमृतराय  
(c) प्रकाशचन्द्र गुप्त (d) डॉ. देवराज

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'प्रगतिवाद' एवं 'साहित्य की समस्याएँ' शिवदान सिंह चौहान की रचनाएँ हैं, जबकि डॉ. रामविलास शर्मा ने 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ', हंसराज रहबर ने 'प्रगतिवाद पुनर्मूल्यांकन', अमृतराय ने 'साहित्य में संयुक्त मोर्चा' नामक पुस्तकें लिखीं।

227. निम्नलिखित में से किसने हिन्दी साहित्य का इतिहास नहीं लिखा?

- (a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी  
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) डॉ. लक्ष्मीसागर वाष्णीय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

डॉ. रामकुमार वर्मा ने हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास, डॉ. नगेन्द्र ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा है, जबकि डॉ. लक्ष्मीसागर वाष्णीय ने हिन्दी साहित्य का इतिहास नहीं लिखा।

228. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास-दर्शन' के लेखक हैं :

- (a) रामविलास शर्मा (b) डॉ. नलिनविलोचन शर्मा  
(c) डॉ. केसरीनारायण शुक्ल (d) श्री कृष्णलाल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2016

उत्तर—(b)

'हिन्दी साहित्य का इतिहास-दर्शन' के लेखक डॉ. नलिनविलोचन शर्मा हैं।

229. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ के लेखक रामविलास शर्मा हैं?

- (a) संस्कृति के चार अध्याय (b) कविता के नये प्रतिमान  
(c) भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद (d) राग दरबारी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

डॉ. रामविलास शर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध आलोचक, निबन्धकार, विचारक एवं कवि थे। इन्होंने 'निराला' पर एक आलोचनात्मक लेख इसी नाम से लिखा तथा निराला की साहित्य साधना (तीन भागों में, 1962, 72, 76 ) भी इनकी एक आलोचनात्मक कृति है।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

➤ डॉ. रामविलास शर्मा की प्रमुख कृतियाँ हैं- गाँधी, अम्बेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ, भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, पश्चिमी एशिया और ऋग्वेद, नयी कविता और अस्तित्ववाद, भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा, भारत में अंग्रेजी राज्य और मार्क्सवाद, भारतीय साहित्य और हिन्दी जाति के साहित्य की अवधारणा, भारतेन्दु युग, भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी आदि।

➤ प्रेमचन्द और उनका युग, परम्परा का मूल्यांकन, निराला की साहित्य साधना, भाषा और समाज तथा भाषा, साहित्य और संस्कृति इनके प्रमुख आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं।

230. 'निराला की साहित्य-साधना' आलोचना कृति के कितने भाग हैं?

- (a) दो (b) एक  
(c) तीन (d) चार

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

231. इनमें से किस ग्रन्थ के लेखक रामविलास शर्मा हैं?

- (a) हिन्दी साहित्य की भूमिका  
(b) निराला : आत्महन्ता आस्था  
(c) मध्यकालीन बोध का स्वरूप  
(d) भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

232. निम्नलिखित में से किस कृति के लेखक रामविलास शर्मा हैं?

- (a) हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योगदान  
(b) दूसरी परम्परा की खोज  
(c) छायावाद  
(d) भाषा और समाज

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

233. 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' के लेखक हैं-

- (a) रामविलास शर्मा (b) नामवर सिंह  
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) नन्ददुलारे वाजपेयी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

234. 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' कृति के लेखक हैं-

- (a) डॉ. रामविलास शर्मा (b) डॉ. नगेन्द्र  
(c) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी (d) डॉ. नामवर सिंह

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

235. 'भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा' के लेखक हैं?

- (a) डॉ. नामवर सिंह (b) लक्ष्मीकान्त वर्मा  
(c) विजयदेव नारायण साही (d) रामविलास शर्मा

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

236. निम्नांकित में से किस ग्रन्थ के लेखक रामविलास शर्मा नहीं हैं?

- (a) भाषा और समाज  
(b) नयी कविता और अस्तित्ववाद  
(c) भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद  
(d) कविता के नये प्रतिमान

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

कविता के नये प्रतिमान के लेखक रामविलास शर्मा नहीं, बल्कि नामवर सिंह हैं।



237. 'भारतीय साहित्य की भूमिका' के लेखक हैं :

- (a) दूधनाथ सिंह (b) रामदरश मिश्र  
(c) रामविलास शर्मा (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

'भारतीय साहित्य की भूमिका' के लेखक रामविलास शर्मा हैं। इस पुस्तक में भारतीय साहित्य और उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कुछ पक्षों पर विचार किया गया है। उनके अनुसार, जिसे हिन्दुस्तानी संगीत कहते हैं, वह हिन्दी भाषी जनता का जातीय संगीत है और हिन्दुस्तानी संगीत में मुसलमानों का योगदान महत्वपूर्ण था।

238. निम्नलिखित में से एक रचना 'पत्र-साहित्य' के अन्तर्गत नहीं है, वह है—

- (a) मेरे सन्धि-पत्र (b) फाइल और प्रोफाइल  
(c) बच्चन : पत्रों में (d) पन्त के दो सौ पत्र बच्चन के नाम

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा सम्पादित 'फाइल और प्रोफाइल' (1970), जीवन प्रकाश जोशी द्वारा सम्पादित 'बच्चन : पत्रों में' (1970) तथा हरिवंशराय बच्चन द्वारा सम्पादित 'पन्त के दो सौ पत्र बच्चन के नाम' (1971) 'पत्र-साहित्य' है, जबकि 'मेरे सन्धि-पत्र' सूर्यवाला द्वारा लिखित उपन्यास है।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➔ कुछ प्रमुख पत्र-साहित्य तथा उनके सम्पादक इस प्रकार हैं—

पत्र-साहित्य	सम्पादक
पद्मसिंह शर्मा के पत्र (1956)	बनारसीदास चतुर्वेदी तथा हरिशंकर शर्मा
यूरोप के पत्र (1944)	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा
बंदी चेतना (1962)	कमलापति त्रिपाठी
बापू के पत्र	काका कालेलकर
निराला के पत्र (1971)	जानकी वल्लभ शास्त्री

➔ हरिवंशराय बच्चन द्वारा प्रणीत 'कवियों में सौम्य सन्त' (1960) के परिशिष्ट भाग में सुमित्रानन्दन पन्त के 126 मूल्यवान पत्र संकलित हैं।

➔ डॉ. शिवप्रसाद सिंह द्वारा सम्पादित 'शांतिनिकेतन से शिवालक' (1967) में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा विभिन्न साहित्यकारों को लिखे गये पत्रों का संकलन किया गया।

➔ नेमिचंद्र जैन द्वारा उनके और मुक्तिबोध के बीच हुए पत्राचार का संकलन 'पाया पत्र तुम्हारा' (1984), चंद्रदेव सिंह द्वारा सम्पादित 'बच्चन के विशिष्ट पत्र' (1984), जगमोहन सिंह तथा चमनलाल द्वारा सम्पादित 'शहीद भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज' (1986) प्रमुख पत्र-साहित्य हैं।

239. 'चिटिया हो तो हर कोई बाँचे' किसके पत्रों का संग्रह है?

- (a) धर्मवीर भारती (b) फणीश्वर नाथ 'रेणु'  
(c) देवीशंकर अवस्थी (d) राम विलास शर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'चिटिया हो तो हर कोई बाँचे' फणीश्वरनाथ 'रेणु' के पत्रों का संग्रह है।

240. 'चिटिया हो तो हर कोई बाँचे' - इनमें से किसके पत्रों का संग्रह है?

- (a) केदारनाथ अग्रवाल (b) धर्मवीर भारती  
(c) फणीश्वरनाथ 'रेणु' (d) बिन्दु अग्रवाल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

241. 'लालतारा' के रचनाकार हैं—

- (a) रामवृक्ष बेनीपुरी (b) उदयशंकर भट्ट  
(c) निराला (d) हरिऔध

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'लालतारा' के रचनाकार रामवृक्ष बेनीपुरी जी हैं। इनकी अन्य कृतियाँ हैं— चिता के फूल, गेहूँ और गुलाब, कैदी की पत्नी, जंजीरें और दीवारें आदि।

242. 'कैदी की पत्नी' कृति के लेखक हैं—

- (a) जैनेन्द्र कुमार (b) रामवृक्ष बेनीपुरी  
(c) धर्मवीर भारती (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

243. 'अपनी केवल धार' काव्य-संकलन के रचनाकार हैं—

- (a) केदारनाथ अग्रवाल (b) केदारनाथ सिंह  
(c) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (d) अरुण कमल

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

'अपनी केवल धार' काव्य संकलन के रचनाकार अरुण कमल हैं। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं— सबूत, नए इलाके में, पुतली में संसार, मैं वो शंख महाशंख (हिन्दी में), वायसेज (अंग्रेजी में) इत्यादि।

244. निम्नलिखित काव्य-संकलनों में से किसके कवि अरुण कमल हैं?

- (a) चाँद का मुँह टेढ़ा है (b) मगध  
(c) सागर मुद्रा (d) अपनी केवल धार

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

245. 'नए इलाके में' किसकी काव्य कृति है?

- (a) बोधिसत्व (b) विनोद कुमार शुक्ल  
(c) उदय प्रकाश (d) अरुण कमल

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

246. 'मुक्तिबोध की आत्मकथा' के लेखक हैं—

- (a) विष्णु चन्द्र शर्मा (b) विष्णु प्रभाकर  
(c) नेमिचन्द्र जैन (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'मुक्तिबोध की आत्मकथा' के लेखक विष्णु चन्द्र शर्मा हैं।

247. समय के आरोही क्रम में कौन-सी रचना पहले आई?

- (a) अंधेर नगरी (b) त्यागपत्र  
(c) आत्मनेपद (d) तुम चन्दन हम पानी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

रचनाएँ एवं उनके प्रकाशन वर्ष निम्नानुसार हैं—		
रचना	प्रकाशन वर्ष	रचनाकार
1. अंधेर नगरी	1881	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
2. त्यागपत्र	1937	जैनेन्द्र कुमार
3. आत्मनेपद	1960	अज्ञेय
4. तुम चन्दन हम पानी	1976	विद्यानिवास मिश्र

248. "रचना यदि जीवन के अर्थ का विस्तार करती है, तो आलोचना रचना के अर्थ का"। यह कथन इनमें से किस आलोचक का है?

- (a) रामचन्द्र शुक्ल का (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी का  
(c) रामस्वरूप चतुर्वेदी का (d) मैथ्यू आर्नल्ड का

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

रामस्वरूप चतुर्वेदी 'मधुमती' (संस्करण, 2005) में 'हिन्दी सर्जना एवं आलोचना : बिखराव के संदर्भ' शीर्षक के अंतर्गत लिखते हैं, "आधुनिक दृष्टि से, रचना जीवन के अर्थ का विस्तार करती है, तो आलोचना रचना के अर्थ का।"

249. "काव्य संसार के प्रति कवि की भावप्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना के ढांचे में ढली हुई श्रेय की प्रेमरूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।" काव्य की यह परिभाषा देने वाले विद्वान हैं—

- (a) बाबू श्यामसुन्दर दास (b) बाबू गुलाबराय  
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) जयशंकर प्रसाद

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

बाबू गुलाबराय की मान्यता है कि "काव्य संसार के प्रति कवि को भावप्रधान (किंतु क्षुद्र वैयक्तिक संबंधों से मुक्त) मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना के ढांचे में ढली हुई श्रेय की प्रेमरूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।"

250. 'जिस तरह हम बोलते हैं उस तरह तू लिख, और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिखा'

उपर्युक्त पंक्तियों के रचनाकार हैं—

- (a) धूमिल (b) केदारनाथ सिंह  
(c) गिरिराज माथुर (d) भवानीप्रसाद मिश्र

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'जिस तरह हम बोलते हैं उस तरह तू लिख, और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिखा' पंक्तियों के रचनाकार भवानीप्रसाद मिश्र हैं। यह पंक्तियाँ सन् 1930 में प्रकाशित 'कवि' शीर्षक कविता की हैं।

251. 'मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किंतु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।' यह किसका कथन है?

- (a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) डॉ. नगेन्द्र  
(c) नंददुलारे वाजपेयी (d) नामवर सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने छायावाद को परिभाषित करते हुए लिखा है—'मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किंतु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।'

252. 'छायावाद और उत्तर-छायावाद के बीच कुछ वैसा ही सम्बन्ध दिखता है, जैसा मध्यकाल में भक्ति काव्य और रीति काव्य के बीच था'-पंक्तियों के लेखक हैं—

- (a) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी (b) डॉ. बच्चन सिंह  
(c) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी (d) डॉ. नगेन्द्र

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास' में लिखते हैं कि "छायावाद और उत्तर-छायावाद के बीच कुछ वैसा ही सम्बन्ध दिखता है, जैसा मध्यकाल में भक्तिकाव्य और रीतिकाव्य के बीच था।"

253. हिन्दी आलोचना में शुक्ल जी की चिंतनात्मक मान्यताओं को सबसे प्रबल समर्थन किसने दिया?

- (a) डॉ. नगेन्द्र (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र  
(c) मुक्तिबोध (d) रामविलास शर्मा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

रीतिकाल की आलोचना करते हुए इस संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ही अपने इतिहास ग्रंथ में एक टिप्पणी इस प्रकार की है-“वास्तव में शृंगार और वीर इन्हीं दो रसों की कविता इस काल में हुई। प्रधानता शृंगार की रही। इससे इस काल को रस के विचार से कोई शृंगार काल कहे तो कह सकता है।” पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग-2) इस विषय पर व्यापक ढंग से विचार करते हुए अपनी मान्यताएं देते हैं कि “जिसने शृंगार काल नाम प्रस्तावित किया उसका सौभाग्य है कि इस नामोल्लेख के अनन्तर जितने हिन्दी साहित्य के इतिहास हाट में बिकने आए, उन्होंने किसी-न-किसी रूप में उसकी उसके लिए युग के विभाजन की अर्हता स्वीकार ली।” आचार्य मिश्र प्रकारांतर भाव से यह स्वीकृति देते हैं कि इस नामकरण के पीछे आचार्य शुक्ल का नामकरण विषयक अभिमत मूल में अवश्य है। रीति नामकरण विषयक अनौचित्य तथा शृंगार काल के औचित्य की चिंतन विषयक अवधारणा के मूल में स्वयं आचार्य शुक्ल ही हैं और उनके द्वारा निर्दिष्ट रीतिकाल के लिए शृंगार काल शब्द की स्थापना के सटीक तर्क शुक्ल जी के न होकर आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के ही हैं। अतः इस नामकरण की अवधारणा शुक्ल जी से न जोड़कर पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र से ही जोड़ी जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिन्दी आलोचना में शुक्ल जी की चिंतनात्मक मान्यताओं को सबसे प्रबल समर्थन विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने किया।

254. ‘यदि द्विवेदी जी न उठ खड़े होते, तो जैसी अव्यवस्थित, व्याकरणविरुद्ध और ऊटपटांग भाषा चारों ओर दिखाई पड़ी थी, उसकी परंपरा जल्दी न रुकती। यह कथन किसका है?

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) श्यामसुन्दर दास  
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) गणपतिचन्द्र गुप्त

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है कि ‘यदि द्विवेदी जी न उठ खड़े होते, तो जैसी अव्यवस्थित, व्याकरण-विरुद्ध और ऊटपटांग भाषा चारों ओर दिखाई पड़ती थी, उसकी परंपरा जल्दी न रुकती। उनके प्रभाव से लेखक सावधान हो गए और जिनमें भाषा की समझ और योग्यता थी, उन्होंने अपना सुधार किया।’

255. “विख्यात जीवन-व्रत हमारा लोक-हित एकान्त था, ‘आत्मा अमर है, देह नश्वर’ यह अटल सिद्धान्त था।” उपर्युक्त पंक्तियाँ किस कृति में संगृहीत हैं?

- (a) साकेत (b) भारत-भारती  
(c) सिद्धराज (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

“विख्यात जीवन-व्रत हमारा लोक-हित एकान्त था, ‘आत्मा अमर है, देह नश्वर’ यह अटल सिद्धान्त था।” उपर्युक्त पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित ‘भारत-भारती’ में संगृहीत हैं।

256. ‘दुख ही जीवन की कथा रही,

क्या कहूँ आज जो नहीं कही’-काव्य-पंक्तियाँ किस कृति की हैं?

- (a) आँसू (b) सरोज स्मृति  
(c) राम की शक्ति पूजा (d) निर्झरिणी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

‘दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही।’ उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ मुक्त छन्द के प्रवर्तक महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ द्वारा रचित ‘सरोज स्मृति’ नामक कविता की हैं। आर्थिक चिन्ताओं के बीच पुत्री सरोज का देहान्त हो जाता है, तब निराला जी ने ‘सरोज स्मृति’ नामक कविता लिखी।

257. “सच्चा प्रेम वही है, जिसकी तृप्ति आत्मवलि पर हो निर्भर। त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर।” इन पंक्तियों के रचयिता हैं :

- (a) माखनलाल चतुर्वेदी  
(b) बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’  
(c) रामनरेश त्रिपाठी  
(d) श्रीधर पाठक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

निजी सुख और स्वार्थ को छोड़कर देश पर जीवन बलिदान की प्रेरणा रामनरेश त्रिपाठी की रचनाओं में मिलती है। कवि की दृष्टि में वास्तविक प्रेम, देश-प्रेम है—

सच्चा प्रेम वही है, तृप्ति आत्मवलि पर हो निर्भर।

त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर॥

देश-प्रेम व पुण्य क्षेत्र है, अमल असीम त्याग से विलसित।

आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित॥

यह अद्भुत है कि रामनरेश त्रिपाठी की कविता में मानवीय-प्रेम और प्रकृति-प्रेम भी देश-प्रेम बन जाते हैं।

258. “रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त, तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त।”

‘राम की शक्तिपूजा’ कविता में यह कथन किसका है?

- (a) लक्ष्मण (b) जाम्बवान  
(c) सुग्रीव (d) विभीषण

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

निराला की 'राम की शक्तिपूजा' में नव्यवेदांत के शक्तिवाद और गांधी की आत्मशक्ति का रचनात्मक रूपांतरण देखा जा सकता है। पराजय-बोध और शक्ति से आहत राम को जाम्बवान का यह परामर्श राष्ट्रीय उद्बोधन में बदल जाता है-

बोले विश्वस्त कंठ से जाम्बवान-"रघुवर,  
विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,  
हे पुरुष-सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,  
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,  
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर,  
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त  
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त,  
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन  
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनंदन।

259. भीतर-भीतर सब रस चूसै

हंसि-हंसि के तन-मन-धन मूसै- पंक्ति किस कवि की है?

- (a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बालकृष्णभट्ट  
(c) ठाकुर (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर-(d)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अंग्रेजों की शोषण-नीति का उल्लेख अपने कविता के माध्यम से इस प्रकार किया है-

भीतर-भीतर सब रस चूसै, हंसि-हंसि के तन-मन-धन मूसै।  
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन! नहिं अंगरेज।।

260. 'इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती।

क्यों हाहाकार स्वरो में वेदना असीम गरजती।।'

इस पंक्तियों के रचनाकार हैं-

- (a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) महादेवी वर्मा  
(c) जयशंकर प्रसाद (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(c)

प्रेम की अनुपलब्धि किस सीमा तक निराश, हताश और उदास कर देती है, इसका साक्षी है-जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'औसू' काव्य। इस कृति को पढ़कर कीट्स और कॉलरिज के असफल प्रणय-प्रसंगों का स्मरण हो जाता है। औसू की विशिष्टता उसकी तीव्र अनुभूति प्रवणता तथा गहन मार्मिकता में है। प्रसाद जी प्रारम्भ में ही अपने उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से हृदय में घोर गरजना करने वाली और हाहाकार करती हुई वेदना का परिचय देते हैं।

261. 'ओम जय जगदीश हरे' की आरती की रचना किसने की है?

- (a) श्रद्धाराम फिल्लौरी (b) राजा शिवप्रसाद

(c) शिवानन्द

(d) हरिहर स्वामी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर-(a)

'ओम जय जगदीश हरे' आरती की रचना श्रद्धाराम फिल्लौरी ने की है।  
इनके द्वारा रचित उपन्यास 'भाग्यवती' है।

262. "दुःख की पिछली रजनी बीच

विकसता सुख का नवल प्रभात।" यह काव्यपंक्ति किस कृति की है?

- (a) चौद का मुँह टेढ़ा है (b) साकेत  
(c) कामायनी (d) यामा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर-(c)

उपर्युक्त काव्यपंक्ति जयशंकर प्रसाद की रचना कामायनी के श्रद्धा सर्ग से लिया गया। यहाँ कवि दुःख की अपेक्षा सुख चाहता है, क्योंकि वह आनन्दवादी दर्शन से प्रभावित है।

263. 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में'—किस रचनाकार की पंक्ति है?

- (a) जयशंकर प्रसाद (b) सुमित्रानन्दन पन्त  
(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (d) महादेवी वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर-(a)

प्रस्तुत पंक्ति के रचनाकार जयशंकर प्रसाद हैं। यह पंक्ति कामायनी के 'लज्जा' परिच्छेद से लिया गया है, जिसमें नारी के गुणों का बखान किया गया है।

264. 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' - पंक्ति किस रचना में है?

- (a) कामायनी (b) साकेत  
(c) चन्द्रगुप्त (d) भारत-भारती

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर-(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

265. "कविता में कहने की आदत नहीं, पर कह दूँ

वर्तमान समाज में मैं चल नहीं सकता

पूँजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता।"

-ये पंक्तियाँ इनमें से किस कवि की हैं?

- (a) नागार्जुन (b) मुक्तिबोध  
(c) त्रिलोचन शास्त्री (d) सुदामा प्रसाद पाण्डेय 'धूमिल'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर-(b)

"कविता में कहने की आदत नहीं, पर कह दूँ। वर्तमान समाज में चल नहीं सकता। पूँजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता।" ये पंक्तियाँ मुक्तिबोध द्वारा रचित 'अंधेरे में' शीर्षक से ली गई हैं।



266. “करते तुलसीदास भी कैसे मानस नाद ?  
महावीर का यदि उन्हें मिलता नहीं प्रसाद।”

उक्त पंक्तियों के रचनाकार हैं-

- (a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय  
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) सियारामशरण गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पंक्तियों के रचनाकार मैथिलीशरण गुप्त हैं। यह उन्होंने महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रशंसा में कही है।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- निराला ने मैथिलीशरण गुप्त को ‘सुकवि’ कहा है, तो दिनकर ने ‘पुरुत्थान के कवि’ और प्रभाकर श्रोत्रिय ने ‘नव शास्त्रीय अथवा नव अभिजात्यवादी युग’ के कवि के रूप में जानना चाहा है।
- कुछ आलोचक उन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद के गायक कवि ‘नेहरू-युग के सरकारी कवि गुप्त’, ‘अभिधा का कवि’ कहकर गुप्त जी की महानता को कमतर आँकने का प्रयास करते हैं।

267. “गिरा हो जाती है सनयन, नयन करते नीरव भाषण”.....जैसे विरोधाभासी चमत्कार का सौंदर्य किसकी कविता में प्राप्त है?

- (a) निराला (b) पन्त  
(c) प्रसाद (d) महादेवी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्तियाँ सुमित्रानन्दन पन्त की कविता ‘उच्छ्वास’ से ली गई है।

268. “उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है।” तुलसीदास के सम्बन्ध में यह कथन इनमें से किसका है?

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) नगेन्द्र  
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) नन्ददुलारे वाजपेयी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

तुलसीदास जी की अक्षय कीर्ति का आधार उनके द्वारा रचित महाकाव्य ‘रामचरितमानस’ है। इसकी रचना अवधी भाषा में दोहा-चौपाई शैली में हुई है। रामचरितमानस में भृंगार रस का शिष्ट एवं मर्यादित वर्णन है। इसमें तुलसीदास जी का व्यक्तित्व एक श्रेष्ठ कवि के साथ-साथ उपदेशक के रूप में भी सामने आता है। ‘रामचरितमानस’ समन्वय की विराट् चेष्टा का महाकाव्य है। निर्गुण और सगुण, शैव और वैष्णव, ज्ञान और भक्ति, राजा और प्रजा, लोक और शास्त्र आदि के समन्वय का प्रयास इस ग्रन्थ में किया गया है। समन्वय के इसी प्रयास को देखकर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है—“लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है।”

269. ‘लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके’ यह कथन किसका है?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी  
(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) डॉ. नगेन्द्र

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

270. ‘तुलसी के वचनों के समान रहीम के वचन भी हिन्दी भाषी भूभाग में सर्वसाधारण के मुँह पर रहते हैं।’ यह किसका कथन है?

- (a) नगेन्द्र (b) नन्ददुलारे वाजपेयी  
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) बच्चन सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ‘हिन्दी साहित्य का इतिहास’ में लिखा है—‘तुलसी के वचनों के समान रहीम के वचन भी हिन्दी भाषी भूभाग में सर्वसाधारण के मुँह पर रहते हैं। भाषा पर तुलसी का सा ही अधिकार हम रहीम का भी पाते हैं।’

271. ‘अधिकार खोकर बैठना यह महादुष्कर्म है।’ इस पंक्ति के रचयिता हैं—

- (a) रामधारी सिंह दिनकर (b) मैथिलीशरण गुप्त  
(c) निराला (d) सुभद्रा कुमारी चौहान

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्ति राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित जयद्रथ वध के प्रथम सर्ग के प्रथम भाग से अवतरित है।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- गाँधीजी ने इन्हें राष्ट्र कवि की संज्ञा प्रदान की।
- सन् 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत जेल गये।
- सन् 1952 में राज्य सभा के सदस्य मनोनीत हुए।
- तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने सन् 1962 में ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’ भेंट किया।
- मैथिलीशरण गुप्त साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सन् 1954 में सम्मानित हुए।

272. ‘वह हृदय नहीं है, पत्थर है,  
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।’

यह प्रसिद्ध काव्यपंक्ति निम्नलिखित में से किस कवि द्वारा रचित है?

- (a) गयाप्रसाद शुक्ल ‘सनेही’ (b) मैथिलीशरण गुप्त  
(c) माखनलाल चतुर्वेदी (d) पं. रामनरेश त्रिपाठी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

‘वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।’ यह प्रसिद्ध काव्यपंक्ति मैथिलीशरण गुप्त की है।

273. "मैं उनका आदर्श नहीं जो व्यथा न खोल सकेंगे,  
पूछेगा जग किन्तु पिता का नाम न बोल सकेंगे।  
जिनका निखिल विश्व में कोई कहीं न अपना होगा,  
मन में लिए उमंग जिन्हें चिरकाल कल्पना होगा।"  
उपर्युक्त पंक्तियाँ 'दिनकर' की किस रचना की हैं?

- (a) कुरुक्षेत्र (b) रश्मिरथी  
(c) सामधेनी (d) परशुराम की प्रतीक्षा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना 'रश्मिरथी' से ली गई हैं। इस रचना में कर्ण के जीवन में घटित प्रसंगों के संदर्भ में कवि ने आज के जीवन के अनेक प्रश्नों और संवेदनाओं को, दृष्टियों और चिंतन-पद्धतियों को, मूल्यों और आकांक्षाओं को उद्घाटित किया है।

274. "मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ  
लेकिन मुझे फेंको मत" - ये किस कवि की पंक्तियाँ हैं?

- (a) धर्मवीर भारती (b) कुंवरनारायण  
(c) नरेश मेहता (d) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

"मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ लेकिन मुझे फेंको मत" ये पंक्तियाँ धर्मवीर भारती के 'टूटा पहिया' शीर्षक से लिया गया है।

275. 'मिलन का मत नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ।' यह पंक्ति किस रचनाकार की है?

- (a) महादेवी वर्मा (b) मीराबाई  
(c) सहजोबाई (d) सुभद्रा कुमारी चौहान

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

महादेवी वर्मा ने अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणय-निवेदन किया है, किन्तु उनका प्रणय दुःख प्रधान है। वे प्रिय से मिलन की कामना नहीं करती, क्योंकि मिलन में तो व्यक्तित्व का ही नाश हो जाता है। प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से वे यही दर्शाने का प्रयास कर रही हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- महादेवी वर्मा को 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है।
- उनके काव्य में विरह की प्रधानता है जो लौकिक न होकर अलौकिक विरह है।
- महादेवी वर्मा के काव्य में रहस्यवादी प्रकृति विद्यमान है।
- 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' इनकी प्रसिद्ध पंक्ति है।

276. 'माधव हम परिनाम निरासा' - यह काव्य पंक्ति किस कवि की है?

- (a) सुन्दरदास (b) विद्यापति  
(c) सूरदास (d) रसखान

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

ग्रियर्सन ने कहा था कि "हिन्दू धर्म के सूर्य का अस्त भले ही हो जाये, राधा और कृष्ण में मनुष्य की श्रद्धा व विश्वास भले ही न रहे और कृष्ण की प्रेमलीलाओं के प्रति भक्तों का जो अनुराग है, वह भले ही न रहे, तब भी विद्यापति के गीतों के प्रति जो प्रेम है, वह पाठकों के हृदय से कभी न हटेगा।" जीवन के अन्तिम क्षणों में उन्हें निराशा होती है। उनका लौकिक स्नेह आध्यात्मिक अनुराग बन जाता है। वे कहते हैं कि अपने कर्मों के कारण अगले जन्म में मनुष्य, पशु, पक्षी अथवा कीट-पतंग जो भी बनें; पर तुम्हारे ही कीर्तन - गायन में उसकी मति लगी रहे। भक्त को भगवान के गुणगान में जो आनन्द आता है, वह मुक्तावस्था तक में नहीं मिलता। भक्तों ने उसके सामने वैकुण्ठ को भी तुच्छ समझा है। इसी सुखानुभूति की कामना विद्यापति करते हैं-

तत्तल सैकते वारि बिन्दु-सम  
सुत मिल रमनि-समाज।  
तोहे बिसरि मन ताहि समर्पिमु  
अब मझु हब कोन काज  
माधव, हम परिनाम निरासा॥

अर्थात्, पुत्र, मित्र और प्रेमिकाओं से मिलने वाला सुख तप्त बालू पर गिरने वाले जलबिन्दु के समान क्षणस्थायी और नश्वर हैं। हे प्रभो! मैंने आपको भूलकर अपना मत इन्हें समर्पित कर दिया था, किन्तु अब मेरा क्या हाल होगा? हे माधव! लगता है, जैसे यह निराशा हमारे सारे जीवन का एकमात्र परिणाम है।

277. 'माधव हम परिनाम निरासा' पंक्ति है—

- (a) सूरदास की (b) नन्ददास की  
(c) विद्यापति की (d) तुलसीदास की

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

278. राष्ट्रगीत में भला कौन वह भारत भाग्य विधाता है।

फटा सुथन्ना पहने जिसका गुन हरचरना गाता है।

उपर्युक्त पंक्तियों के रचनाकार हैं—

- (a) रघुवीर सहाय (b) नागार्जुन  
(c) केदारनाथ सिंह (d) दिनकर

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्तियों के रचनाकार रघुवीर सहाय हैं। यह पंक्तियाँ 'अधिनायक' नामक शीर्षक से हैं। रघुवीर सहाय दूसरा सप्तक के कवि हैं। इन्होंने 'दिनमान' (1979-1982) का सम्पादन किया।

279. 'अब लौं नसानी अब न नसैहों' पद के रचयिता हैं—

- (a) सूरदास (b) कुम्भनदास  
(c) तुलसीदास (d) गोविन्दस्वामी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'अब लौं नसानी अब न नसैहों' पद के रचयिता तुलसीदास हैं।

280. निम्नलिखित पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

खने-खन नयनकोन अनुसरई।

खने-खन वसन धूलि-तन भरई॥

- (a) विद्यापति (b) वल्लभाचार्य  
(c) विट्ठलनाथ (d) निम्बार्काचार्य

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्ति आदिकालीन कवि विद्यापति द्वारा रचित 'पदावली' से उद्धृत है। इस प्रसंग में नायिका के नखशिख-सौन्दर्य को विद्यापति ने जिस ढंग से अंकित किया है, वह अपूर्व है।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- विद्यापति द्वारा रचित 'पदावली' की सरसता को लक्षित कर लोकहृदय और पण्डित समाज ने इन्हें अभिनव जयदेव, मैथिल कोकिल, नवकविशेखर आदि उपाधियों से विभूषित किया।
- विद्यापति ने शैवसर्वस्वसार, गंगावाक्यावली, भूपरिक्रमा, पुरुष परीक्षा आदि संस्कृत ग्रन्थों की रचना की।
- उन्होंने अवहट् में कीर्तिलता और कीर्तिपताका तथा देशभाषा मैथिली में पदावली की रचना की।

281. 'कीर्तिपताका के रचनाकार का नाम है—

- (a) विद्यापति (b) रामानन्द  
(c) सूरदास (d) विष्णुदास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

282. 'देसिल बअना सब जन मिट्ठा।

ते तैसन जंपओं अवहट्ठा॥'

यह पंक्ति किस कवि की है?

- (a) कबीरदास (b) विद्यापति  
(c) अमीर खुसरो (d) मलिक मुहम्मद जायसी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्तियाँ विद्यापति की कृति कीर्तिलता से ली गई हैं। जिसका अर्थ है संस्कृत लोकरुचि अनुकूल भाषा नहीं है, प्राकृत लोगों के सही मर्म को स्पर्श नहीं कर सकती, परन्तु देसी भाषा सबको माधुर्यपूर्ण लगती है। इसलिए मैं ग्राम बोली को 'अवहट्ट' कहता हूँ।

283. 'लोगन कवित कीबो खेल करि जानो है।' इस काव्य पंक्ति के रचयिता हैं :

- (a) ठाकुर (b) भिखारीदास  
(c) चिन्तामणि (d) द्विजदेव

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

ठाकुर कहते हैं—

सीखि लीनों मीन मृग खंजन कमल नैन  
सीखि लीनों जग औ प्रताप को कहानो है  
सीखि लीनों कल्पवृक्ष, कामधेनु चिन्तामणि  
सीखि लीनों मेरु और कुबेरगिरि आनो है  
ठाकुर कहत याकी बड़ी है कठिन बात  
याको नहिं भूलि कहूँ बाधियत बानो है  
डेल से बनाय आय मेलत सभा के बीच  
लोगन कवित कीबो खेल करि जानो है।

इस रचना में बार-2 'सीखि' (शिक्षा-व्युत्पत्ति) को, उसके बल पर अंतः प्रेरणा के अभाव में मर-पचकर कविता करने वालों को कोसा जा रहा है और कहा जा रहा है कि कविता की बात बड़ी कठिन है, यह खेल नहीं है। मतलब वह असिधार-व्रत है। वह रचनाकार हो ही नहीं सकता, जो अपने जीवन में रचनाकार नहीं है। जीवन में रचनाकार वही होता है, जो मानवता से प्रतिबद्ध होकर मूल्यों को जीता है-अपमूल्यों से जूझता है, संघर्ष की आँच में तपती धूप में कहीं से आस्था का रस खींचकर हरा-भरा बना रहता है। यह खेल नहीं है। ठाकुर इस 'खेल' की ओर इशारा कर रहे हैं। कविता बाहर की प्रलोभना से नहीं भीतर की प्रेरणा से लिखी जाती है।

284. "सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै।"

सूरदास के संबंध में यह प्रशस्तिकथन किसका है?

- (a) ब्रजस्तनदास (b) पं. परशुराम चतुर्वेदी  
(c) विट्ठलनाथ (d) नाभादास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

सूरदास के संबंध में नाभादास का कथन है—

सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै।  
उक्ति, चीज, अनुप्रास वरन अवस्थिति, अति भारी॥  
वचन प्रीति निर्वाह अर्थ अद्भुत तुक धारी॥  
प्रतिबिंबित दिवि दिष्टि हृदय हरि लीला भासी॥

285. 'भाषा निबन्ध मति मंजुल मातनोति' किस कवि द्वारा रचित श्लोक का अंश है?

- (a) वाल्मीकि (b) कालिदास  
(c) तुलसीदास (d) जयदेव

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

तुलसीदास ने अपने साहित्य को 'स्वान्तः सुखाय' कहा है। वे लिखते हैं—  
"स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा, भाषा निबन्ध, मति मंजुल मातनोति।"

286. 'पायौजी मैंने राम रतन धन पायौ'

-प्रस्तुत पद के रचयिता का नाम है—

- (a) सूरदास (b) कुम्भनदास  
(c) मीराबाई (d) तुलसी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पद की रचयिता मीराबाई हैं। इनके प्रमुख संग्रह हैं—बरसी का मायरा, गीत गोविन्द टीका, राग गोविन्द तथा राग सोरठ का पद इत्यादि।

287. 'प्रेम को पंथ कराल महा, तरवारि की धार पै धावनो है।' इस पंक्ति के रचयिता हैं—

- (a) आलम (b) मतिराम  
(c) घनानन्द (d) बोधा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पंक्ति के रचयिता बोधा हैं। इसमें प्रेम के निर्वाह पक्ष पर सहज भाषा में बड़े प्रभावकारी भाव प्रस्तुत किये गये हैं। 'विरह वारीश' और 'इश्कनामा' इनकी दो कृतियाँ उपलब्ध हैं। बोधा का वास्तविक नाम बुद्धिसेन था। इन्होंने पन्ना दरबार की सुजान नामक वेश्या के विरह में 'विरह वारीश' लिखी।

288. विरह वारीश किसकी रचना है?

- (a) बोधा (b) ठाकुर  
(c) आलम (d) घनानन्द

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

289. 'सगुण अलंकारन सहित दोषरहित जो होया

शब्द अरथ ताको कवित बिबुध कहत सब कोया।'

'काव्य-विषयक यह परिभाषा इनमें से किस आचार्य कवि की है?

- (a) चिन्तामणि (b) केशवदास  
(c) भिखारीदास (d) मतिराम

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

आचार्य चिन्तामणि ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कविकुल कल्पतरु' के प्रथम प्रकरण में ही गुणों के सम्बन्ध में विशद विवेचन किया है। उन्होंने अपने ग्रन्थ के आरम्भ में ही काव्य का लक्षण प्रस्तुत करते हुए गुणों के महत्व का ज्ञापन इस प्रकार किया था—

"सगुण अलंकारन सहित दोषरहित जो होया

शब्द अरथ ताको कवित बिबुध कहत सब कोया।"

अर्थात् विद्वान लोग उस शब्दार्थ को कविता कहते हैं, जो सगुण सालंकार और निर्दोष हो। यहाँ उन्होंने 'गुणों' को ही काव्य में प्राथमिकता दी है।

290. "प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी" पंक्ति किस सन्त कवि की है?

- (a) कबीरदास (b) दादूदयाल  
(c) धर्मदास (d) रैदास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

प्रस्तुत पंक्ति सन्त रैदास की 'रविदास की बानी' शीर्षक से उद्धृत है। इनकी रचनाओं में उपमा तथा रूपक अलंकार दिखायी पड़ता है।

291. "प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी" इस पंक्ति के रचनाकार हैं?

- (a) चन्दनदास (b) मलूकदास  
(c) नानक (d) सन्त रैदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

292. निम्नलिखित काव्यपंक्ति किस रचनाकार की है?

"प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।"

- (a) नानकदेव (b) कबीर  
(c) रैदास (d) दादूदयाल

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

"प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।" यह काव्य पंक्ति रैदास की है। अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने सरल व्यावहारिक ब्रजभाषा को अपनाया, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है।

293. 'केशव कहि न जाइ का कहिये' यह पंक्ति किस कवि की है?

- (a) केशवदास (b) कबीरदास  
(c) तुलसीदास (d) नरहरिदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'केशव कहि न जाइ का कहिये' पद तुलसीदास कृत विनयपत्रिका का है।



294. 'केशव कहि न जाइ का कहिये' पंक्ति के रचनाकार हैं—

- (a) आचार्य केशवदास (b) सूरदास  
(c) तुलसीदास (d) रहीम

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

295. 'केशव कहि न जाइ का कहिये' यह पंक्ति किस रचनाकार की है?

- (a) कबीर (b) रहीम  
(c) केशव (d) तुलसी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

296. 'केशव कहि न जाइ का कहिये' यह प्रसिद्ध पद किस काव्यकृति से उद्धृत है?

- (a) सूरसागर (b) सूर सारावली  
(c) कृष्ण गीतावली (d) विनयपत्रिका

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

297. 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाही' पंक्ति लिखी गई है—

- (a) रहीमदास द्वारा (b) कबीरदास द्वारा  
(c) मलूकदास द्वारा (d) तुलसीदास द्वारा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी रचना में नारी की निन्दा भी काफी की है, किन्तु विभिन्न सन्दर्भों में उन्होंने नारी के प्रति अपार करुणा का भाव भी दिखाया है। मध्यकाल में शायद ही किसी अन्य कवि ने नारी की पराधीनता का उल्लेख इतने स्पष्ट तौर से किया हो, जिसे इन पंक्तियों के माध्यम से देखा जा सकता है—

कत बिधि सृजी नारि जग मँही।

पराधीन सपनेहुँ सुख नाही।।

298. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- |                                   |                             |
|-----------------------------------|-----------------------------|
| <b>सूची-I</b><br>(काव्यपंक्तियाँ) | <b>सूची-II</b><br>(रचनाकार) |
| A. मोरपखा सिर ऊपर रखिहैं          | 1. रसखान                    |
| B. बसौ म्हारे नैनन में नंदलाल     | 2. मीरा                     |
| C. भक्तन को कहा सीकरी सों काम     | 3. सूरदास                   |
| D. प्रीति कर दीन्हीं गऐ छुरी      | 4. कुम्भनदास                |

कूट :

- |     |   |   |   |   |
|-----|---|---|---|---|
| (a) | A | B | C | D |
|     | 1 | 2 | 3 | 4 |
| (b) | A | B | C | D |
|     | 4 | 2 | 3 | 1 |
| (c) | A | B | C | D |
|     | 1 | 2 | 4 | 3 |
| (d) | A | B | C | D |
|     | 2 | 4 | 1 | 3 |

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

सुमेलित है—

सूची-I

(काव्यपंक्तियाँ)

मोरपखा सिर ऊपर रखिहैं

बसौ म्हारे नैनन में नंदलाल

भक्तन को कहा सीकरी सों काम

प्रीति कर दीन्हीं गऐ छुरी

सूची-II

(रचनाकार)

रसखान

मीरा

कुम्भनदास

सूरदास

299. उर में माखन चोर गड़े।

अब कैसेहुँ निकसत नहि ऊधौ, तिरछे हवै जु अड़े।।

ये पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

- (a) सूरदास (b) तुलसीदास  
(c) मीराबाई (d) कबीर

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

भगवत्कृपा की प्राप्ति के लिए सूर की भक्ति पद्धति में अनुग्रह का ही प्राधान्य है— ज्ञान, योग, कर्म, यहाँ तक कि उपासना भी निरर्थक समझी जाती है। उन्होंने भगवदासक्ति के एकादश रूपों का वर्णन किया है। 'नारद भक्ति सूत्र' के अनुसार, आसक्ति के एकादश रूप इस प्रकार हैं— गुणमाहात्म्यासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति स्मरणासक्ति, दास्यासक्ति सख्यासक्ति, कान्तासक्ति, वात्सल्यासक्ति, सात्यनिवेदनासक्ति, तन्मयासक्ति ओर परम विरहासक्ति। यद्यपि सूर ने इन सभी का वर्णन किया है। किन्तु उनका मन सख्य, वात्सल्य, रूप, कान्त और तन्मयासक्ति में अधिक रमा है। इसका उदाहरण निम्न है—

उर में माखन चोर गड़े।

अब कैसेहुँ निकसत नहि ऊधौ, तिरछे हवै जु अड़े।।

# काव्यशास्त्र

## 1. काव्य-सम्प्रदायों का सही विकास-क्रम क्या होगा?

- (a) रस-ध्वनि-अलंकार-रीति-वक्रोक्ति-औचित्य
- (b) रस-अलंकार-रीति-वक्रोक्ति-ध्वनि-औचित्य
- (c) अलंकार-रस-रीति-वक्रोक्ति-ध्वनि-औचित्य
- (d) रस-रीति-ध्वनि-अलंकार-वक्रोक्ति-औचित्य

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास भरतमुनि (200 ई. पू.) से प्रारम्भ होता है। ये रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। आचार्य भामह भारतीय अलंकार के आचार्य माने जाते हैं। इन्होंने अपने ग्रन्थ में बौद्ध दार्शनिक सिद्धान्तों से अपना परिचय दिखलाया है। इस आधार पर भी इनको पाँचवीं-छठीं शताब्दी के मध्यकाल का ठहराया जाता है। संस्कृत के काव्यशास्त्रियों में वामन का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने 'रीति' को काव्य की आत्मा माना है और साहित्य-जगत में रीति-सम्प्रदाय नामक एक नवीन सम्प्रदाय को जन्म दिया है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के मत में वामन का समय 800 ई. के आस-पास रखा जाना चाहिए। कुन्तक काव्यशास्त्र के इतिहास में वक्रोक्ति जीवितकार के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनको दशम शताब्दी ईस्वी के अन्तिम भाग में रखा जाता है। आनन्दवर्धन को ध्वनि सम्प्रदाय का प्रवर्तक और जन्मदाता माना जाता है। इनका समय नवम शताब्दी ईस्वी का मध्यभाग सुनिश्चित किया गया है। औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक क्षेमेन्द्र हैं।

## 2. 'औचित्य' को काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले आचार्य कौन हैं?

- (a) आचार्य भामह
- (b) आचार्य क्षेमेन्द्र
- (c) भट्टतैत्ति
- (d) भट्ट लोल्लट

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'औचित्य' को काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले आचार्य क्षेमेन्द्र हैं। आचार्य क्षेमेन्द्र ने काव्य में रस को महत्व दिया, परन्तु उनका विचार है कि औचित्य के अभाव में रसानुभूति असम्भव है। इसी कारण उन्होंने औचित्य को सर्वाधिक महत्व देते हुए ही काव्य की आत्मा माना। 'औचित्य रससिद्धस्थ स्थिर काव्य जीवतम्' अर्थात् औचित्य रसपूर्ण काव्य का स्थिर जीवन होता है। अपने विचारों को अधिक स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा- "औचित्य के द्वारा रस और अधिक आस्वादीय बनकर सहृदय में व्याप्त हो जाता है। मधुमास जैसे-अशोक को अंकुरित कर देता है, उसी प्रकार यह भी भावुक हृदयों को अंकुरित कर देता। मधुर आदि रसों को चतुराई से मिलाने पर जिस प्रकार एक विचित्र आस्वाद उत्पन्न

होता है, उसी प्रकार शृंगार आदि रसों को परस्पर समन्वित करने पर एक विलक्षण रसानुभूति होती है।" इस प्रकार आचार्य क्षेमेन्द्र ने औचित्य पर पर्याप्त बल दिया। औचित्य सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य क्षेमेन्द्र हैं। क्षेमेन्द्र ने औचित्य को इस प्रकार परिभाषित किया है-अनुरूप वस्तुओं के योग को आचार्य ने 'उचित' माना है एवं उचित के भाव को औचित्य कहते हैं- 'औचित्यं प्राहुराचार्याः सदृशं किम यस्य यत्।  
उचितस्य च यो भावः तदौचित्यं प्रचक्षते॥'

## 3. ध्वनि को काव्य की आत्मा मानकर ध्वनि सम्प्रदाय का प्रतिपादन किसने किया?

- (a) दण्डी
- (b) मम्मट
- (c) विश्वनाथ
- (d) आनन्दवर्धन

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

भारतीय काव्यशास्त्र में विभिन्न सिद्धान्तों या सम्प्रदायों का जन्म काव्य की आत्मा की खोज से जुड़ा हुआ है। 'ध्वनि सिद्धान्त' भी काव्य की आत्मा का अनुसंधान करने वाला सिद्धान्त है। उसका केन्द्र-बिन्दु है—'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' अर्थात् काव्य की आत्मा 'ध्वनि' है। ध्वनि सम्प्रदाय के प्रवर्तक आनन्दवर्धन माने जाते हैं। उनकी मान्यताएँ 'ध्वन्यालोक' में उपलब्ध हैं। ध्वनि तत्त्व के विरोधी भी भट्ट, आनन्दवर्धन के समकालीन थे। मुकुल, भट्टनायक, कुन्तक, धनंजय, महिम भट्ट आदि ध्वनि के विरोधी आचार्य थे। ध्वनि की परम्परा आनन्दवर्धन से पूर्व भी विद्यमान थी। अलंकारवादी आचार्यों ने ध्वनि शब्द का प्रयोग नहीं किया, फिर भी अनेक अलंकारों के लक्षणों अथवा उदाहरणों में, स्पष्ट अथवा प्रकारांतर से ध्वनि के संकेत मिल जाते हैं। आनन्दवर्धन ने ध्वनि सिद्धान्त की प्रथम बार व्यवस्थित व्याख्या की, किन्तु उनका प्रबल विरोध हुआ। बाद में आचार्य मम्मट ने अपने विवेचन द्वारा ध्वनि सिद्धान्त की पुनः स्थापना की। ये कश्मीर के महाराज अवन्ति वर्मा के आश्रित कवि थे।

### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ध्वन्यालोक के अतिरिक्त आनन्दवर्धन के और भी ग्रन्थ हैं। जैसे- देवीशतक, अर्जुन चरित, सविक्रमबाण लीला, विनिश्चय टीका विवृति और तत्वालोक।

## 4. मम्मट किस सम्प्रदाय के आचार्य हैं?

- (a) औचित्य
- (b) अलंकार
- (c) ध्वनि
- (d) रीति

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. काव्य के विशिष्ट तत्व के रूप में 'ध्वनि' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया-

- (a) भामह ने (b) दण्डी ने  
(c) आनन्दवर्धन ने (d) कुन्तक ने

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'ध्वनि सम्प्रदाय' के संस्थापक आचार्य हैं—

- (a) आचार्य भामह (b) आचार्य आनन्दवर्धन  
(c) आचार्य वामन (d) आचार्य कुन्तक

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. ध्वनि सम्प्रदाय को व्यवस्थित करने का श्रेय किसे जाता है?

- (a) आनन्द वर्धन (b) आचार्य कुन्तक  
(c) अभिनव गुप्त (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (c) माना है, जबकि बलदेव उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'संस्कृत आलोचना' (संस्करण 1957) में स्पष्ट लिखा है कि ध्वनि के सिद्धान्त को व्यवस्थित करने का श्रेय आचार्य आनन्दवर्धन को प्राप्त है।

8. "जहाँ शब्द प्रत्यक्ष अर्थ को त्याग कर किसी और ही अर्थ की प्रतीति कराए, जो उसके प्रत्यक्ष अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कार पूर्ण हो" काव्य शास्त्र के अनुसार यह किसका लक्षण है?

- (a) रस का (b) अलंकार का  
(c) ध्वनि का (d) इनमें से किसी का नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

"जहाँ शब्द प्रत्यक्ष अर्थ को त्याग कर किसी और ही अर्थ की प्रतीति कराए, जो उसके प्रत्यक्ष अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कार पूर्ण हो" काव्य शास्त्र के अनुसार, यह ध्वनि अथवा उत्तम काव्य का लक्षण है। ध्वनिकार ने इसकी परिभाषा इस प्रकार लिखी है—'जहाँ अर्थ अथवा शब्द स्वयं को और अपने अर्थ को गौण बनाकर व्यंग्यार्थ को अभिव्यक्त करते हैं, विद्वानों के द्वारा वह ध्वनि काव्य कहा गया है।' 'ध्वन्यालोक' का खण्डन करने वाले व्यक्ति विवेककार महिमभट्ट ने इस लक्षण की शब्द योजना में अनेक

दोष दिखलाये हैं। अतएव मम्मट ने इसी लक्षण को शब्द भेद से इस प्रकार कहा है—'विद्वानों का कहना है कि वाच्य से व्यंग्य के अधिक होने पर ध्वनि नामक उत्तम काव्य होता है।' उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना है।

9. किस आचार्य ने गुणों को रस-आश्रित माना है?

- (a) भामह (b) दण्डी  
(c) रुद्रट (d) आनन्द वर्धन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

गुणों को रस-आश्रित मानने वाले आचार्य आनन्दवर्धन हैं। रीति और गुणों से सम्बद्ध आनन्दवर्धन की मान्यता को जिस प्रकार परवर्ती काव्यशास्त्र में सिद्धान्त स्वीकार किया गया, उसी प्रकार गुणों और रसों के पारस्परिक सम्बन्ध की मान्यता को विद्वान आज तक उसी रूप में स्वीकार करते हैं।

10. काव्य के अर्थ-वैज्ञानिक विवेचन का शुभारम्भ किसने किया?

- (a) वामन (b) महिमभट्ट  
(c) मम्मट (d) आनन्द वर्धन

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

वामन काव्यांगों में व्यवस्था लाने के लिए सर्वप्रथम प्रयत्न करते दिखाई पड़ते हैं। वामन के अनुसार, काव्यों के द्रव्य गुण की उत्पत्ति देश विशेष से नहीं होती। वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली रीतियों का विवेचन वह काव्य गुणों की उत्कृष्टता के आधार पर करते हैं। ओज, प्रसाद, माधुर्य, सौकुमार्य, उदारता, श्लेष, कान्ति, समता, समाधि और अर्थव्यक्ति नामक शब्द और अर्थगुणों से युक्त शैली उत्कृष्टतम होती है, यह एक सार्वभौमिक सत्य वामन प्रस्तुत करते हैं। इसका उदाहरण वैदर्भी रीतिपरक काव्य है। वामन ने कहा है कि जिस प्रकार रेखाओं में चित्र समा जाता है, उसी प्रकार इन रीतियों में काव्य समाविष्ट हो जाता है। वामन ने गुणों को अधिक महत्व देकर, एक सीमा तक, कवि की चित्तवृत्ति के योग को स्वीकार किया है। अर्थ गुणों में कवि की नूतन कल्पना को समाधि नाम से, रसों की उद्भावना कान्ति के नाम से तथा अर्थ की प्रौढ़ता ओज नाम से स्वीकार की गई है। जब तक मन स्थिर होता, तब तक पद का रखना और हटाना ही होता रहता है। अलंकारों के विवेचन में भी वामन की दृष्टि में नवीनता मिलती है। वामन के अनुसार, यमक के पश्चात् सभी शब्दालंकारों को उपमा का ही प्रपंच स्वीकार किया गया है। अतः स्पष्ट है कि काव्य में अर्थ वैज्ञानिक विवेचन का शुभारम्भ वामन ने किया है।

11. आचार्य वामन ने 'काव्य हेतु' के स्थान पर किस शब्द का व्यवहार किया है?

- (a) तात्पर्य (b) लक्षणा  
(c) अभिधा (d) काव्यांग

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. बिम्ब का काम है-

- (a) काव्य में सौन्दर्य लाना (b) काव्य को सजीव बनाना  
(c) काव्य को छन्दमुक्त करना (d) उपर्युक्त सभी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (PGT) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

आधुनिक युग में पाठक और आलोचक कविता की सजीवता को अधिक मान्यता देते हैं। मोटे रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिक कवि का दृष्टिकोण सौन्दर्यवादी की अपेक्षा जीवनवादी अधिक है। यही कारण है कि कविता में बिम्ब का महत्व बढ़ गया है। ऐसा माना जाता है कि बिम्ब संवेदन से जुड़े होते हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता 'ऐन्द्रियता' होती है। यही वजह है कि सुन्दरता से अधिक सजीवता बिम्ब का प्रधान गुण है। अलंकार में सजीवता हो सकती है, लेकिन उसके प्रयोग का प्रधान उद्देश्य कविता में सौन्दर्य लाना होता है। ठीक उसी प्रकार बिम्ब में सौन्दर्य हो सकता है, लेकिन उसका काम कविता को सजीव बनाना है। बिम्ब कई प्रकार के होते हैं—दृश्य, श्रव्य, घ्राण, स्पर्श, स्वाद आदि।

13. निम्नलिखित में से कौन भरतमुनि के रससूत्र का एक व्याख्याकार नहीं है?

- (a) भट्ट लोल्लट (b) क्षेमेन्द्र  
(c) शंकुक (d) अभिनव गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

भारतीय काव्यशास्त्रीय परम्परा में रस-सिद्धान्त पर सबसे प्रामाणिक एवं चर्चित रचना 'भरतमुनि' के नाट्यशास्त्र के रूप में मिलती है। रस की निष्पत्ति का सर्वप्रथम उल्लेख इसी रचना में किया गया। भरतमुनि के 'रससूत्र' की व्याख्या में ही उत्तरवर्ती आचार्यों ने अपनी शक्ति लगायी है और उसके परिणामस्वरूप उत्पत्तिवाद, अनुमितिवाद, भुक्तिवाद और अभिव्यक्तिवाद इन चार सिद्धान्तों का विकास हुआ है। विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इस भरतसूत्र में जो 'निष्पत्ति' शब्द आया है, उसके भी चार अर्थ होते हैं। भट्ट लोल्लट के मत में 'निष्पत्ति' का अर्थ 'उत्पत्ति', शंकुक के मत में 'अनुमिति', भट्ट नायक के मत में 'भुक्ति' और अभिनवगुप्त के मत में 'अभिव्यक्ति' का ग्रहण होता है। अतः भरतमुनि के 'रससूत्र' के व्याख्याकार क्षेमेन्द्र नहीं हैं, परन्तु क्षेमेन्द्र अपने औचित्य सम्प्रदाय के संस्थापक के रूप में प्रसिद्ध हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'नाट्यशास्त्र' नाट्य कला पर व्यापक ग्रन्थ एवं टीका है, जिसे पञ्चम वेद भी कहा जाता है।
- वर्तमान 'नाट्यशास्त्र' प्रायः 6000 श्लोकों का ग्रन्थ है। इसलिए उसको 'षट्साहस्री संहिता' भी कहा जाता है।
- नाट्यशास्त्र के उपलब्ध संस्करण 'षट्साहस्री संहिता' में 36 अध्याय हैं, जबकि निर्णयसागर द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण में 37 अध्याय दिये गए थे।
- वैसे नाट्यशास्त्र के प्राचीन टीकाकार आचार्य अभिनवगुप्त ने इसमें 36 अध्यायों का ही उल्लेख किया है।

14. 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता हैं—

- (a) आचार्य भरतमुनि (b) आनन्द वर्धन  
(c) वामन (d) मम्मट

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'नाट्यशास्त्र' के प्रणेता हैं—

- (a) भट्टलोल्लट (b) भरतमुनि  
(c) भट्टनायक (d) अभिनव गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. इनमें से भरतमुनि द्वारा विरचित ग्रंथ का नाम है—

- (a) दशरूपक  
(b) साहित्यदर्पण  
(c) नाट्यशास्त्र  
(d) नाट्य लक्षण रत्नकोश

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. भरतमुनि के रससूत्र की 'भुक्तिवाद' के आधार पर व्याख्या करने वाले आचार्य हैं—

- (a) श्रीशंकुक (b) भट्ट नायक  
(c) अभिनवगुप्त (d) विश्वनाथ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।



18. रस के सम्बन्ध में 'भुक्तिवाद' के प्रतिपादक आचार्य हैं-

- (a) भट्ट लोल्लट (b) श्री शंकुक  
(c) भट्ट नायक (d) अभिनव गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. भरत के रस-सूत्र के व्याख्यात आचार्य शंकुक का सिद्धान्त कहलाता है-

- (a) उत्पत्तिवाद (b) अभिव्यंजनावद  
(c) अनुमितिवाद (d) भुक्तिवाद

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर-(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. रस-सूत्र की 'अनुमितिवादी' व्याख्या करने वाले आचार्य हैं-

- (a) भट्ट नायक (b) अभिनव गुप्त  
(c) लोल्लट (d) शंकुक

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर-(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. आचार्य शंकुक द्वारा रस निष्पत्ति की व्याख्या का स्वरूप है-

- (a) अभिव्यक्तिवादी (b) अनुमितिवादी  
(c) उत्पत्तिवादी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. रस-निष्पत्ति सूत्र की समीक्षा में अनुमितिवाद किसके मंतव्य पर आधारित है?

- (a) भट्ट नायक (b) विश्वनाथ  
(c) शंकुक (d) अभिनव गुप्त

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर-(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. रसनिष्पत्ति के सम्बन्ध में भट्ट लोल्लट का मत है :

- (a) अनुमितिवाद (b) उत्पत्तिवाद  
(c) भुक्तिवाद (d) अभिव्यक्तिवाद

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2016

उत्तर-(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. 'भट्ट लोल्लट' द्वारा प्रतिपादित मत कौन-सा है?

- (a) उत्पत्तिवाद (b) अभिव्यक्तिवाद  
(c) भोगवाद (d) अनुमितिवाद

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर-(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. रसानुभूति के सन्दर्भ में 'उत्पत्तिवाद' सम्प्रदाय के जनक हैं-

- (a) अभिनव गुप्त (b) पाणिनि  
(c) भरत मुनि (d) भट्ट लोल्लट

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर-(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही नहीं है?

- (a) भट्ट लोल्लट - उत्पत्तिवाद  
(b) शंकुक - अनुमितिवाद  
(c) आचार्य मम्मट - भुक्तिवाद  
(d) अभिनव गुप्त - अभिव्यक्तिवाद

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर-(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. रस-निष्पत्ति के सम्बन्ध में 'चित्रतुरंगन्याय' की मान्यता किस आचार्य की है?

- (a) अभिनव गुप्त (b) शंकुक  
(c) भट्ट लोल्लट (d) भट्ट नायक

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर-(b)

रस निष्पत्ति के सम्बन्ध में 'चित्रतुरंगन्याय' की मान्यता आचार्य शंकुक की है। भट्ट नायक ने रस सिद्धान्त के अन्तर्गत साधारणीकरण व्यापार का सर्वप्रथम उल्लेख किया है।

28. रस-विवेचन में 'चित्रतुरंगन्याय' की कल्पना इनमें से किस आचार्य ने की?

- (a) शंकुक (b) अभिनव गुप्त  
(c) भरतमुनि (d) विश्वनाथ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर-(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिये -

सूची-I

(आचार्य)

- A. भट्ट लोल्लट  
B. शंकुक  
C. भट्ट नायक  
D. अभिनव गुप्त

कूट :

- (a) A-1, B-2, C-3, D-4  
(b) A-4, B-3, C-2, D-1  
(c) A-3, B-4, C-1, D-2  
(d) A-2, B-1, C-4, D-3

सूची-II

(सिद्धान्त)

1. अभिव्यक्तिवाद  
2. भुक्तिवाद  
3. अनुमितिवाद  
4. उत्पत्तिवाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

सूची-I

(आचार्य)

- भट्ट लोल्लट  
शंकुक  
भट्ट नायक  
अभिनव गुप्त

सूची-II

(सिद्धान्त)

- उत्पत्तिवाद  
अनुमितिवाद  
भुक्तिवाद  
अभिव्यक्तिवाद

30. भारतीय रस सिद्धान्त में 'साधारणीकरण' का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था?

- (a) आ. विश्वनाथ ने (b) आ. जगन्नाथ ने  
(c) आ. भट्ट नायक ने (d) आ. अभिनव गुप्त ने

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

भारतीय रस सिद्धान्त में 'साधारणीकरण' का प्रयोग सर्वप्रथम भट्ट नायक ने किया था। साधारणीकरण शब्द का प्रयोग भट्ट नायक ने रस-निष्पत्ति-सम्बन्धी भरत-सूत्र की व्याख्या के लिए किया। उनके अनुसार, काव्य और नाटक में अभिधा से भिन्न दूसरी भावकत्व शक्ति अपने व्यापार से विभावादि को साधारणीकृत रूप में प्रस्तुत कर स्थायी भाव को भाव्यमान बनाती है। ध्वनिवादियों ने लक्षणा और व्यंजना को स्वीकार करते हुए साधारणीकरण में भावकत्व शक्ति का निषेध किया।

31. भट्ट नायक का 'भुक्तिवाद' किस दर्शन पर आधारित है?

- (a) मीमांसा दर्शन (b) न्याय दर्शन  
(c) शैव दर्शन (d) सांख्य दर्शन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

भट्ट नायक का 'भुक्तिवाद' सांख्य दर्शन पर आधारित है। शंकुक का 'अनुमितिवाद' न्याय दर्शन, भट्ट लोल्लट का 'उत्पत्तिवाद' मीमांसा दर्शन और अभिनव गुप्त का 'अभिव्यक्तिवाद' पर आधारित हैं।

32. महिम भट्ट द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त है—

- (a) अनुमानवाद  
(b) तात्पर्यवाद  
(c) लक्षणवाद  
(d) अभिव्यंजनावाद

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

महिम भट्ट ने अपने अनुमान सिद्धान्त को प्रतिपादित करते हुए अपने 'व्यक्तिविवेक' नामक ग्रन्थ में ध्वनि सिद्धान्त के विरुद्ध लिखा। उनका मत है कि ध्वनि सिद्धान्त के विशाल भवन का जिस व्यंजना के मूलाधार पर निर्माण किया गया है, वह व्यंजना कोई स्वतन्त्र पदार्थ नहीं, किन्तु पूर्व-सिद्ध 'अनुमान' ही है। अनुमान में साधन से साध्य का 'अनुमान' किया जाता है। जैसे पर्वत पर धुआँ होने पर वहाँ अग्नि का अनुमान किया जाता है। उसमें पर्वत पर अग्नि होना सिद्ध करने में धुआँ ही साधन है अर्थात् कारण है, क्योंकि जहाँ धुआँ होता है, वहाँ अग्नि अवश्य होती है। महिम भट्ट का कहना है कि इसी प्रकार जिसे 'व्यंजक' कहा जाता है (जिसके द्वारा व्यंग्य अर्थ की प्रतीति होना बताया जाता है)। वह उसी प्रकार व्यंग्यार्थ की प्रतीति का कारण है, जिस प्रकार 'धुआँ' अग्नि के अनुमान का कारण है और जिसे 'व्यंग्यार्थ' कहा जाता है, वह उसी प्रकार अनुमान का विषय है, जिस प्रकार अग्नि। इसी युक्ति के आधार पर महिम भट्ट ने ध्वनिकार द्वारा प्रदर्शित ध्वनि के अनेक उदाहरणों में 'अनुमान' का प्रतिपादन किया है।

33. आचार्य भरतमुनि के बाद 'रस निष्पत्ति' को लेकर मुख्य रूप से किन विद्वानों ने रस के विषय में अपने विचार दिये हैं उनके नामों का कौन-सा क्रम सही है?

- (a) भट्ट लोल्लट, भट्ट शंकुक, भट्ट नायक, अभिनव गुप्त  
(b) अभिनव गुप्त, भट्ट नायक, भट्ट शंकुक, भट्ट लोल्लट  
(c) भट्टनायक, भट्ट शंकुक, भट्ट लोल्लट, अभिनव गुप्त  
(d) भट्ट शंकुक, भट्ट लोल्लट, भट्ट नायक, अभिनव गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

आचार्य भरतमुनि के 'रस निष्पत्ति' को लेकर मुख्य रूप से जिन विद्वानों ने रस के विषय में अपने विचार दिए उनके नामों का सही क्रम है—भट्ट लोल्लट, भट्ट शंकुक, भट्ट नायक, अभिनव गुप्त।

34. रस निष्पत्ति की विवेचना में 'भावकत्व और भोजकत्व' की कल्पना किस आचार्य ने की है?

- (a) भट्ट लोल्लट (b) भट्ट नायक  
(c) शंकुक (d) अभिनव गुप्त

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

रस निष्पत्ति की विवेचना में 'भावकत्व और भोजकत्व' की कल्पना सांख्यशास्त्री आचार्य भट्ट नायक की है। वे रस प्रक्रिया में 'भुक्तिवाद' को मानते हैं। उन्होंने शब्द की तीन शक्तियाँ माना है— अभिधा, भावकत्व तथा भोजकत्व।

35. रस सिद्धान्त की व्याख्या करके सबसे पहले दर्शक की महत्ता किसने स्वीकार की?

- (a) भट्ट नायक (b) अभिनव गुप्त  
(c) भट्ट लोल्लट (d) शंकुक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

अभिनव गुप्त ने भट्ट नायक की अनेक मान्यताओं का खण्डन करते हुए भी साधारणीकरण को स्वीकार किया है, किन्तु अब तक रस निष्पत्ति के सभी व्याख्याताओं द्वारा काव्य के पाठक या श्रोता के व्यक्तित्व की उपेक्षा होती रही, किसी का भी ध्यान इस तथ्य की ओर नहीं गया कि रसानुभूति में काव्य-वस्तु के अतिरिक्त स्वयं पाठक का भी थोड़ा-बहुत योगदान रहता है। अभिनव गुप्त ने इस ओर ध्यान देते हुए अभिव्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा की। उनके मतानुसार, काव्यास्वादन से पाठक के हृदय में किसी नये तत्व की सृष्टि नहीं होती, अपितु उसकी जन्मजात वासनाएँ ही उद्बलित होकर व्यक्त हो जाती हैं।

36. रस को नाट्य तक सीमित रखने का सर्वप्रथम विरोध किसने किया?

- (a) भामह (b) रुद्रट  
(c) आनन्द वर्धन (d) अभिनव गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

रस को नाटक तक सीमित रखने का सर्वप्रथम विरोध अभिनव गुप्त ने किया था।

## □ काव्यगुण

1. काव्य-गुणों के सम्बन्ध में जो कथन सही नहीं है, उसे छाँटिए—

- (a) गुण काव्य के आंतरिक सौन्दर्य हैं, अलंकार बाह्य शोभा मात्र।  
(b) गुण रस के उत्कर्षक और काव्य के शोभाकारक तत्व हैं।  
(c) काव्यशास्त्र में काव्य-गुणों का विवेचन नहीं मिलता है।  
(d) माधुर्य, प्रसाद, ओज सर्वमान्य काव्य-गुण हैं।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

काव्यशास्त्र में काव्य-गुणों एवं काव्य-दोषों दोनों का विवेचन मिलता है। अतः विकल्प (c) कथन सही नहीं है। शेष कथन सही हैं।

2. आचार्य भरतमुनि ने काव्यगुणों की संख्या बतायी है—

- (a) 3 (b) 5  
(c) 10 (d) 8

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

काव्य के सौन्दर्य की वृद्धि करने वाले और उसमें अनिवार्य रूप से नित्य विद्यमान रहने वाले धर्म को गुण कहते हैं। गुण की अवधारणा भरतमुनि के समय से ही मान्य है। आचार्य भरतमुनि ने काव्यगुणों की संख्या 10 मानी है। वे इस प्रकार हैं—1. श्लेष, 2. प्रसाद, 3. समता, 4. समाधि, 5. माधुर्य, 6. ओज, 7. सौकुमार्य, 8. अर्थव्यक्ति, 9. उदारता एवं 10. कान्ति।

### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आचार्य भरत के अनुसार, काव्यदोष भी 10 ही होते हैं। वे इस प्रकार हैं— 1. गूढार्थ, 2. अर्थान्तर, 3. अर्थहीन, 4. भिन्नार्थ, 5. एकार्थ, 6. अभिलुप्तार्थ, 7. न्यायापेक्ष, 8. विषम, 9. विसंधि और 10. शब्दच्युत।
- वामन ने गुणों को काव्य का नित्य धर्म मानकर अलंकारों से अलग किया है।
- आनन्दवर्धन ने गुणों को 'रस' का अंग माना है और इनकी संख्या तीन-ओज, प्रसाद तथा माधुर्य तक ही सीमित कर दी।
- देव और भिखारीदास ने गुणों की संख्या 10 मानी है।

3. इनमें से किस आचार्य ने काव्यगुणों की संख्या दस मानी है?

- (a) क्षेमेंद्र (b) वामन  
(c) भोजराज (d) भरतमुनि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. आचार्य भरत के अनुसार गुण होते हैं—

- (a) 5 (b) 10  
(c) 9 (d) 8

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. आचार्य भरतमुनि ने गुणों की संख्या कितनी मानी है?

- (a) सात (b) दस  
(c) तेरह (d) अठारह

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. भरतमुनि ने गुणों की संख्या बतायी है-

- (a) दस (b) आठ  
(c) नौ (d) सात

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. आचार्य मम्मट ने काव्यगुण माने हैं-

- (a) 10 (b) 3  
(c) 15 (d) 8

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

गुण कितने प्रकार के होते हैं और उनमें से कौन-से गुण आवश्यक हैं? इस विषय पर काव्याचार्यों में मतभेद रहा है। कोई तो गुण की संख्या दस मानता है (यथा-भरतमुनि, दण्डी, वामन आदि)। कोई चौबीस गुण मानता है (यथा-भोज) और कोई तीन गुण ही मानता है (यथा-मम्मट)। इन सब पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि गुण की संख्या के भेद के सम्बन्ध में विभेद अधिकतर दस गुणों को मानने का अथवा तीन गुणों को मानने का है, क्योंकि अग्निपुराणकार ने भी मुख्य रूप से तीन गुण, यथा- शब्द गुण, अर्थगुण और शब्दार्थ गुण माने हैं और इन्हीं के भेदोपभेद किये हैं। इसी प्रकार भोज ने वामन के दस गुणों के अतिरिक्त चौदह अन्य गुण भी माने हैं, लेकिन आचार्य मम्मट ने तीन गुण माने हैं-माधुर्य, ओज और प्रसाद।

8. सही युग्म चिह्नित कीजिये-

- (a) वैदर्भी - माधुर्य  
(b) गौड़ी - माधुर्य  
(c) पांचाली - ओज  
(d) गौड़ी - प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

वैदर्भी रीति के सम्बन्ध में आचार्य विश्वनाथ का कथन है-

**माधुर्य व्यंजक वर्णः रचना ललितात्मका।**

**आवृत्तिरत्यवृत्तिर्या वैदर्भी रीतिरिष्यते।**

अर्थात् माधुर्य व्यंजक वर्णों से युक्त, समास रहित पद रचना को 'वैदर्भी' रीति कहते हैं। यह रीति शृंगार, करुण एवं शान्त रस के लिए अधिक अनुकूल होती है। इसका प्रयोग विदर्भ देश के कवियों ने अधिक किया है। इसी से इसका नाम वैदर्भी रीति पड़ा। इसका एक अन्य नाम 'ललिता' भी है। मम्मट ने इसे 'उपनागरिका' कहा है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ गौड़ी रीति को 'परुषा' भी कहते हैं। आचार्य मम्मट इसे परिभाषित करते हुए कहते हैं-'ओजः प्रकाशकैस्तुपरुषा' अर्थात् जहाँ ओज गुण का प्रकाश होता है, वहाँ गौड़ी (परुषा) रीति होती है। इसमें दीर्घ समास-युक्त पदावली का प्रयोग उचित माना जाता है।  
☛ 'पांचाली' रीति के सम्बन्ध में कहा गया है-'माधुर्य सौकुमार्यो प्रपन्ना पांचाली' अर्थात् पांचाली में मधुरता और सुकुमारता होती है।

9. जब द्रास, बटालिक, टाइगर हिल की, सीमा लगी गरजने।

जब शहादत लेते हिमगिरि की, चट्टानें लगीं गरजने।

तब जाग उठे ये शेर बबर, पौरुष हुंकार उठा था।

मातृ भूमि की बलिवेदी पर, लहू पुकार उठा था।।

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कौन-सा काव्य गुण व्यंजित हो रहा है?

- (a) माधुर्य (b) ओज  
(c) प्रसाद (d) उपर्युक्त तीनों

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में ओज गुण है। ओज वह गुण है, जिससे चित्त में स्फूर्ति आ जाए, मन में तेज उत्पन्न हो जाए। ओज गुण से युक्त रस के आस्वादन से चित्त दीप्त हो उठता है, उसमें आवेग उत्पन्न हो जाता है। ओज गुण का क्रमशः वीर से वीभत्स में और वीभत्स से रौद्र में अधिक्य रहता है। जहाँ द्वित्व वर्णों, संयुक्त वर्णों र के संयोग और ट, ठ, ड, ढ की अधिकता हो, समासाधिक्य हो और कठोर वर्णों की रचना हो, वहाँ ओज गुण होता है।

10. काव्य का वह गुण जो चित्त में तेज और स्फूर्ति का संचार करता है, कौन-सा गुण कहलाता है?

- (a) ओज गुण  
(b) माधुर्य गुण  
(c) प्रसाद गुण  
(d) इनमें से कोई नहीं।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. वीर रस प्रधान रचना में कौन-सा गुण प्रधान होता है?

- (a) ओज (b) प्रसाद  
(c) माधुर्य (d) ये सभी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।



12. “चिकरहिं मर्कट भालु छलबल करहिं जेहि खल छीजहीं”—पंक्ति में काव्यगुण है-

- (a) प्रसाद
- (b) ओज
- (c) माधुर्य
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्ति में ओज गुण है। इस पंक्ति में द्वित्व वर्ण तथा संयुक्त वर्ण ‘र’ का प्रयोग किया गया है।

13. ‘मैं जो नया ग्रंथ विलोक्ता हूँ

भाता मुझे सो नव मित्र-सा है।

देखूँ उसे मैं नित बार-बार

मानो मिला मित्र मुझे पुराना॥”

उपर्युक्त काव्यांश में प्रयुक्त काव्य गुण का नाम है—

- (a) प्रसाद
- (b) ओज
- (c) माधुर्य
- (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त काव्यांश में माधुर्य काव्य गुण प्रयुक्त हुआ है। माधुर्य गुण की परिभाषा कुलपति मिश्र ने इस प्रकार दी है।

“द्रवै चित्त जाके सुनत, अति आनन्द प्रधान।

सु है मधुरता रसुन क्रम, प्रथम सरस की आना॥”

चित्त को पिघलाने वाला जो आनन्द प्रधान गुण है, उसको माधुर्य कहते हैं। यह संयोग शृंगार, करुण, विप्रलम्भ और शान्त में क्रमशः बढ़ता जाता है। मधुर रचना की आवश्यकताएँ इस प्रकार बतलाई गयी हैं—ट, ठ, ड, ढ से भिन्न वर्ण, आदि में अपने वर्गों के अन्तिम वर्णों (ड, ज, न, म) से युक्त होने पर जैसे—(मञ्च, कञ्च, पुञ्ज, लुञ्ज, चम्पक इत्यादि) माधुर्य के व्यंजक होते हैं।

14. ‘कंकन किंकिन नुपूर धुनि सुनि।

कहत लखन सन राम हृदय, गुनि॥’

में कौन-सा काव्य गुण है?

- (a) माधुर्य
- (b) प्रसाद
- (c) ओज
- (d) इनमें से कोई नहीं

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

जिस रचना को पढ़ते-पढ़ते अन्तःकरण द्रवित हो उठे, वह रचना माधुर्य गुण वाली होती है। यह गुण संयोग शृंगार से करुण में, करुण से वियोग में, वियोग से शान्त में अधिक अनुभूत होता है। कठोर वर्णों (ट, ठ, ड, ढ) को छोड़कर मधुर एवं कोमल रचना माधुर्य गुण के मूल हैं। जैसे ‘क’ से ‘म’ तक के वर्ण ज, ड, ण, न, म के युक्त वर्ण, ह्रस्व ‘र’ और ‘ण’ आदि। उपर्युक्त पंक्तियों में घुँघुरू की आवाज सुनकर श्रीराम के मन में अनुराग पैदा होता है। इसलिए यहाँ माधुर्य गुण है।

15. निरख सखी ये खंजन आये।

फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर मन भाये॥

इन पंक्तियों में कौन-सा गुण है?

- (a) ओज गुण
- (b) माधुर्य गुण
- (c) प्रसाद गुण
- (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

माधुर्य वह गुण है, जिससे अन्तःकरण आनन्द से द्रवीभूत हो जाय। जब चित्तवृत्ति स्वाभाविक अवस्था में होती है, तब रति आदि के रूप से उत्पन्न आनन्द के कारण माधुर्य गुण युक्त रस के आस्वादन से स्वभावतः चित्त द्रवीभूत हो जाता है, पिघल जाता है। क्रमशः माधुर्य गुण संयोग से करुण में, करुण से विप्रलम्भ में, विप्रलम्भ से शान्त में अधिकधिक अनुभूत होता है। ट, ठ, ड, ढ को छोड़कर क से म तक के वर्ण ड, ज, ण, न, म से युक्त वर्ण, ह्रस्व र और ण, समास का अभाव या अल्प समास के पद और कोमल, मधुर रचना माधुर्य गुण के मूल हैं।

उपर्युक्त पदों में नियमानुसार ट, ठ, ड, ढ रहित स्पर्श वर्ण हैं, सानुसार पद हैं और समासाभाव है। अतः माधुर्य की व्यंजना है।

16. ‘बिंदु में थी तुम सिंधु अनंत, एक सुर में समस्त संगीत।

एक कतिका में अखिल वसंत, धरा पर थी तुम स्वयं पुनीत॥’

पन्त इस उद्धरण में काव्यगुण है—

- (a) ओज
- (b) प्रसाद
- (c) माधुर्य
- (d) इनमें से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियाँ पन्त जी के काव्यकृति ‘पल्लव’ से ली गई हैं। उपर्युक्त उद्धरण में ‘प्रसाद’ काव्यगुण है। जिस प्रकार सूखे ईंधन में अग्नि के समान अथवा स्वच्छ धुले हुए वस्त्र में जल के समान जो रचना पाठक के चित्त में सहसा व्याप्त हो जाती है, वह प्रसाद गुण युक्त कहलाती है।

## □ काव्यदोष

1. अनुभावों और विभावों की कष्ट-कल्पना किस प्रकार का दोष है?

- (a) समास दोष (b) रस दोष  
(c) पद दोष (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

रसगत काव्यदोष हैं—(i) स्वशब्दवाच्य (ii) विभाव-अनुभाव की कष्ट कल्पना (iii) प्रतिकूल विभाव ग्रहण का (iv) रस की बार-बार दीप्ति (v) बिना अवसर रस का प्रतिपादन (vi) अंग की अतिविस्तृति (vii) प्रकृति विपर्यया

2. 'पांडव की प्रतिमा सम लेखो।

अर्जुन भीम महामति देखो॥'

इसमें काव्य का कौन-सा दोष है?

- (a) शब्द दोष (b) रस दोष  
(c) अर्थ दोष (d) कोई भी नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पंक्तियाँ केशवदास की रचना 'रामचन्द्रिका' से ली गई हैं। वह पंचवटी का वर्णन करते हुए उपर्युक्त पंक्तियों का उल्लेख करते हैं। इस काव्य में काल दोष है, क्योंकि राम कथा त्रेता युग की है, उसमें पांडव कहीं थे।

3. कंकण क्वणित रणित नूपुर थे, हिलते थे छाती पर हार।

मुखरित था कलरव गीतों में, स्वर लय का होता अभिसार॥

बिछुड़े तेरे सब आलिंगन, पुलक स्पर्श का पता नहीं।

मधुमय चुम्बन कातरताये, आज न मुख को सता रहि॥

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कौन-सा काव्यदोष लक्षित हो रहा है?

- (a) काल दोष (b) वचन दोष  
(c) लिंग दोष (d) च्युत संस्कृति दोष

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

जिस काव्य में शब्द सुनने पर कठोर और अप्रिय या बुरे लगे, वहाँ वचन दोष या श्रुतिकटुत्व दोष होता है। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में **रसापकर्षकाः दोषाः** कहकर रस का अपकर्ष करने वाले तत्त्वों को दोष कहा है। मुख्य रूप से दोष तीन प्रकार के होते हैं—शब्द दोष, अर्थ दोष, रस दोष। शृंगार, करुण, शान्त जैसे रसों के प्रसंग में कठोर वर्णों या शब्दों का प्रयोग करने पर वचन दोष होता है। उपर्युक्त पंक्तियों में यही काव्यदोष है।

4. 'सब कोऊ जानत तुम्हें सारे जगत जहान'- में काव्य का कौन-सा दोष है?

- (a) पुनरुक्ति दोष (b) अश्लीलत्व दोष  
(c) ग्राम्यत्व दोष (d) श्रुति कटुत्व दोष

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्ति में पुनरुक्ति काव्यदोष है। यहाँ पर जगत और जहान दोनों का प्रयोग हुआ है, जबकि दोनों का अर्थ संसार होता है।

5. 'तरु-रिपु-रिपु-धर देखि के विरहिनि तिय अकुलाय' में कौन-सा काव्यदोष है?

- (a) च्युत संस्कृति (b) न्यून पदत्व  
(c) अधिक पदत्व (d) क्लिष्टत्व

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

क्लिष्टत्व का अर्थ है— कठिनाई। अर्थ को दुरुह बनाने वाले शाब्दिक चमत्कारों के प्रयोग से यह दोष काव्य में आ जाता है। प्रस्तुत पंक्ति में 'तरु-रिपु-रिपु-धर' शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिसका तात्पर्य वृक्ष का शत्रु अग्नि, अग्नि का शत्रु जल और उस जल को धारण करने वाला बादल। ऐसे प्रयोगों के कारण अर्थबोध में कठिनाई होती है। अतः यहाँ क्लिष्टत्व काव्यदोष है।

6. 'सुन्दर हैं विहग सुमन सुन्दर मानव तुम सबसे सुन्दरतम' में कौन-सा काव्यदोष है?

- (a) अधिक पदत्व (b) अप्रतीतत्व  
(c) दुष्क्रमत्व (d) क्लिष्टत्व

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

जहाँ वाक्य में अनावश्यक अर्थ का सूचक पद प्रयुक्त होता है, वहाँ अधिक पदत्व दोष होता है। प्रस्तुत पंक्ति में 'सबसे सुन्दरतम' का प्रयोग हुआ है। यहाँ 'सबसे' शब्द का प्रयोग अनावश्यक है, क्योंकि 'सुन्दरतम' का अर्थ ही 'सबसे सुन्दर' होता है।

## □ शब्दशक्तियाँ

1. अर्थबोध कराने के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

- (a) अभिधा शब्दशक्ति लक्षणा पर आश्रित होती है।  
(b) लक्षणा शब्दशक्ति व्यंजना पर आश्रित होती है।  
(c) अभिधा शब्दशक्ति लक्षणा व व्यंजना दोनों पर आश्रित होती है।  
(d) लक्षणा एवं व्यंजना दोनों शब्द शक्तियाँ अभिधा पर आश्रित होती हैं।

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

शब्द और अर्थ का शाश्वत सम्बन्ध है। गोस्वामी तुलसीदास ने शब्द और अर्थ को जल-बीच के समान अभिन्न बताया है। शब्द उच्चारण के साथ ही हमारे मन, कल्पना और अनुभूति पर प्रभाव डालता है। स्वादिष्ट व्यंजन का नाम लेते ही मुँह में पानी भर आना, शेर या साँप का नाम लेते ही मन में भय का संचार होना शब्दशक्ति है। अतः जिस शक्ति के द्वारा शब्द का अर्थगत प्रभाव पड़ता है, उसे शब्दशक्ति कहते हैं। शब्दशक्तियाँ तीन होती हैं—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। ये तीन शब्दशक्तियाँ जिन शब्दों से अर्थ की अभिव्यक्ति कराती हैं, उन्हें क्रमशः वाचक, लक्षक और व्यंजक कहा जाता है। अभिधा ही मुख्य शक्ति है। इसकी प्रतीति सबसे पहले हुआ करती है। कवि देव ने इसकी पुष्टि इस प्रकार की है—

**“अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।**

**अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।”**

इससे स्पष्ट है कि लक्षणा और व्यंजना, अभिधा पर ही अश्रित रहती हैं। लक्षणा में भी अभिधार्थ से योग रहता है और व्यंजना भी अभिधा के आधार पर ही चलती है, जो व्यंजना लक्षणा मूला रहती है अथवा जो व्यंजना पर चलती रहती है वह भी अन्त में अभिधा के ही आश्रय में कही जाएगी, किन्तु चमत्कार की दृष्टि से व्यंजना ही मुख्य है। ये जिन अर्थों का बोध कराते हैं, उन्हें क्रमशः वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ कहा जाता है। जिस शक्ति द्वारा साक्षात् संकेतित अर्थ, जिसे मुख्यार्थ भी कहा जाता है, का बोध हो, उसे अभिधा कहते हैं। मुख्य अर्थ का बोध कराने के कारण यह मुख्या भी कहलाती है। अभिधा शक्ति द्वारा जिन शब्दों के अर्थ की अभिव्यक्ति होती है, उन्हें वाचक कहा जाता है।

#### **अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- मुख्यार्थ की बाधा होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के कारण जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ लक्षित हो, उसे लक्षणा कहते हैं।
- अभिधा और लक्षणा से भिन्न अर्थ शक्ति को व्यंजना कहा जाता है। साहित्यदर्पणकार के शब्दों में “अपना-अपना अर्थ बोधन कर अभिधा आदि वृत्तियों के शान्त होने पर जिससे अन्य अर्थ बोधन होता है, वह शब्द में तथा अर्थादिक में रहने वाली वृत्ति व्यंजना कहलाती है।”
- व्यंजना के द्वारा व्यक्त अर्थ को व्यंग्यार्थ या प्रतीयमान अर्थ कहते हैं।
- आनन्दवर्धन ने अपने ग्रन्थ में प्रतीयमान अर्थ की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उसे ही काव्य की आत्मा स्वीकार किया है।
- भिखारीदास ने लिखा है कि व्यंजना या तो अभिधा पर आश्रित रहती है या लक्षणा पर। वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ पात्र के समान हैं, जिन पर व्यंग्यार्थ रूपी जल टिकता है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, अभिधा तथा वाच्यार्थ का विशेष महत्व है। असमर्थ वाच्यार्थ में लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ निहित होने पर अधिक प्रभावकारक होता है। वास्तव में व्यंग्यार्थ या लक्ष्यार्थ के कारण चमत्कार आता है, परन्तु वह चमत्कार होता है वाच्यार्थ में ही।
- शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ प्रकट होता है, अभिधा कहलाती है। पं. जगन्नाथ के अनुसार, ‘शब्द एवं अर्थ’ के परस्पर सम्बन्ध को अभिधा कहते हैं।

2. “अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।  
अधम व्यंजना रस-विरस, उलटी कहत नवीन।”  
यह मान्यता निम्नलिखित में से किसकी है?  
(a) मतिराम (b) भिखारीदास  
(c) कुलपति मिश्र (d) देव

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. “अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।  
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।”  
उपर्युक्त किसकी उक्ति है?

- (a) केशवदास (b) ब्रजनाथ दास  
(c) भिखारीदास (d) देव

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. “अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।  
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।”  
किसका कथन है?

- (a) घनानन्द (b) बिहारी  
(c) देव (d) ठाकुर

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. “अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।  
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।”  
शब्दशक्ति के विषय में निम्नलिखित कथन किसका है?

- (a) केशवदास (b) भिखारीदास  
(c) देव कवि (d) चिन्तामणि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ प्रकट होता है, कहलाती है—  
(a) लक्षणा (b) व्यंजना  
(c) शब्दशक्ति (d) अभिधा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. मुख्यार्थ का बोध कराने वाले व्यापार को कहते हैं—

- (a) अभिधा शक्ति
- (b) व्यंजना शक्ति
- (c) लक्षणा शक्ति
- (d) उपर्युक्त सभी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. किस शब्दशक्ति की प्रतीति सबसे पहले हुआ करती है?

- (a) व्यंजना
- (b) लक्षणा
- (c) अभिधा
- (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. व्यंजना शब्द-शक्ति का संबंध किससे है?

- (a) मुख्यार्थ
- (b) वाच्यार्थ
- (c) लक्ष्यार्थ
- (d) व्यंग्यार्थ

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'रस की अनुभूति कराने में अभिधा शब्द-शक्ति ही प्रधान है।' यह मान्यता है—

- (a) आचार्य भामह की
- (b) आचार्य भट्ट नायक की
- (c) आचार्य कुन्तक की
- (d) आचार्य दण्डी की

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

भट्ट नायक ने रस की स्थिति न तो नायक-नायिका से मानी और न नट-नटी में। रस की स्थिति उन्होंने सीधे सहृदय में मानी। उनके अनुसार, काव्य में तीन शक्तियाँ रहती हैं—अभिधा, भावकत्व और भोजकत्व। अभिधा वह शक्ति है, जिसके द्वारा पाठक या दर्शक काव्य के शब्दार्थ को ग्रहण करता है। दूसरी शक्ति है भावकत्व जिसके द्वारा उसे उस अर्थ का भावन होता है। भाव का भावन होने पर भाव की वैयक्तिकता का नाश होकर साधारणीकरण हो जाता है और भाव विशिष्ट न रहकर साधारण बन जाता है। अतः इस आधार पर भट्ट नायक की मान्यता है कि 'रस' की अनुभूति कराने में अभिधा शब्द शक्ति ही प्रधान है।

11. 'सिन्धु सेज पर धरा-वधू अब तनिक संकुचित बैठी सी'-इस अवतरण में कौन-सी शब्दशक्ति है?

- (a) अभिधा
- (b) व्यंजना
- (c) तात्पर्य
- (d) लक्षणा

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

अभिधा और लक्षणा के द्वारा अपने अर्थ का बोध कराकर विरत हो जाने पर जिस शब्द और अर्थ की शक्ति के द्वारा कवि के अभिप्रेत अर्थ की प्रतीति होती है, उसे व्यंजना कहते हैं। व्यंजति अर्थ को व्यंग्यार्थ अथवा ध्वन्यर्थ भी कहा जाता है। प्रस्तुत पंक्ति में व्यंजना शब्दशक्ति है। इसमें सिन्धु और धरा के लिए क्रमशः सेज और वधू के बिम्ब प्रस्तुत हुए हैं। इनमें प्रमुख बिम्ब वधू का है और सेज का बिम्ब उसका अंगमात्र है। कवि ने वधू के बिम्ब को ही उभारने का विशेष प्रयास किया है। तनिक संकुचित, बैठी सी-इस विशेषण की सहायता से उसकी मुद्रा को साकार किया गया है।

12. "जब सिंह तलवार लेकर उतरा तो गीदड़ भाग गए"- इस वाक्य में कौन-सी शब्दशक्ति है?

- (a) अभिधा
- (b) लक्षणा
- (c) व्यंजना
- (d) कोई नहीं

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त वाक्य में 'लक्षणा' शब्द शक्ति है। इसका अर्थ है जब सिंह (वीर) तलवार लेकर उतरा तो गीदड़ (कायर) भाग गए। यहाँ सिंह का लक्षण वीर में तथा गीदड़ के लक्षण कायर से है।

13. 'लक्षणा' शब्दशक्ति द्वारा शब्द के जिस अर्थ का बोध होता है- उसे क्या कहेंगे?

- (a) व्यंग्यार्थ
- (b) परार्थ
- (c) लक्ष्यार्थ
- (d) अभिधार्थ

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. "मनुँ उमगि अंग-अंग छवि छलैक" -तुलसी की इस पंक्ति में कौन-सी शब्द शक्ति है?

- (a) अभिधा
- (b) लक्षणा
- (c) व्यंजना
- (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)



प्रस्तुत पंक्तियों में, राम की शोभा का वर्णन करते हुए कवि कहता है। इस 'छलकै' शब्द में कितनी शक्ति है। व्यापार को कैसा गोचर रूप प्रदान करता है। इसका वाच्यार्थ अत्यन्त तिरस्कृत है। लक्षणा से इसका अर्थ होता है— 'प्रभूत परिमाण में प्रकट होना।' पर अभिधा द्वारा इस प्रकार कहने से वैसी अनुभूति नहीं उत्पन्न हो सकती।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'अभिधेयार्थ' स्पष्टतः कहा जाता है, 'लक्ष्यार्थ' सूचित कराया जाता है और 'व्यंग्यार्थ' का ध्वनन ही सम्भव है, जो कथित या लक्षित न होने पर भी सहृदय द्वारा समझ लिया जाता है। व्यंजना के दो भेद-शाब्दी एवं आर्थी व्यंजना हैं।

15. बनन में बागन में बगरो बसंत है-पद्माकर की इस पंक्ति का अर्थ शब्द की किस शक्ति से ग्रहण किया जा सकेगा?

- (a) अभिधा से  
(b) लक्षणा से  
(c) व्यंजना से  
(d) इन सभी से

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

पद्माकर की प्रस्तुत पंक्ति में लक्षणा शक्ति है। लक्षणा में शब्द का सीधा-साधा अर्थ नहीं निकलता। यह वह शब्द शक्ति है, जिससे शब्द के लाक्षणिक अर्थ का बोध होता है। इसके तीन प्रमुख तत्व होते हैं—I. शब्द के मुख्य अर्थ के ज्ञान में अवरोध, II. मुख्यार्थ व लक्ष्यार्थ का उचित सम्बन्ध, III. रुढ़ि या प्रयोजन में एक होना आवश्यक।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ रीतिकाल के आचार्य चिन्तामणि ने कहा है-जो सुनि परे सो शब्द है समुझि परे सो अर्थ। इससे स्पष्ट होता है की सुनने और समझने के बीच कोई एक कड़ी है, जो सुनने के बाद शब्द के अर्थ को व्यंजित करती है और यह कड़ी इतनी सूक्ष्म है कि शब्द और उसका अर्थ कहने भर को पृथक् है। इसे हम शक्ति कहते हैं।

16. चिरजीवौ जोरी जुँरै, क्यों न सनेह गंभीर।  
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।।  
उपर्युक्त दोहे में कौन-सी शब्दशक्ति है?

- (a) अभिधा  
(b) लक्षणा  
(c) व्यंजना  
(d) उपर्युक्त सभी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त दोहे में शाब्दी व्यंजना है। इस दोहे में 'वृषभानुजा' और 'हलधर' शब्दों के दो-दो अर्थ हैं लेकिन यहाँ 'वृषभानुजा' का राधा (वृषभदेव की पुत्री) और 'हलधर के वीर' को बलराम (श्रीकृष्ण के भाई) के एक ही अर्थ में निश्चिन्त कर दिया जाता है, किन्तु इन अर्थों के साथ 'गाय' और 'बैल' का व्यंग्यार्थ भी निकलता है और यही अर्थ इस दोहे को सुन्दर बनाये हुये है।

17. 'चिरजीवौ जोरी जुँरै, क्यों न सनेह गंभीर।

को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।।'

- (a) अभिधा (b) लक्षणा  
(c) व्यंजना (d) इनमें से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. 'को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर' में कौन-सी व्यंजना है?

- (a) शाब्दी व्यंजना  
(b) आर्थी व्यंजना  
(c) रस व्यंजना  
(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (a) सही माना है।

19. 'बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से'-'प्रसाद' की इस पंक्ति का अर्थ किस शब्दशक्ति से ग्रहण होगा?

- (a) अभिधा से  
(b) लक्षणा से  
(c) व्यंजना से  
(d) इन सभी से

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जयशंकर प्रसाद की प्रस्तुत काव्य पंक्ति में लक्षणा शब्दशक्ति है। यहाँ केवल आरोप्यमान 'विधु' (उपमान) का कथन है। जहाँ केवल उपमान का वर्णन हो और उपमेय लुप्त हो वहाँ साध्यवासना गौणि प्रयोजनवती लक्षणा होती है।

# रस

1. 'रस-सामग्री' किस विकल्प में दी गयी है?

- (a) छन्द, अलंकार, गुण, रीति
- (b) विभाव, अनुभाव, संचारी, स्थायीभाव
- (c) अभिधा, लक्षणा, उत्प्रेक्षा, प्रतीक
- (d) बिम्ब, वृत्ति, रसाभास, काव्य-दोष

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

रस के चार अंग हैं- स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारीभाव। संचारीभाव को व्यभिचारीभाव भी कहते हैं। नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने 'रस' की व्याख्या करते हुए कहा है- 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' अर्थात् विभाव, अनुभाव, व्यभिचारीभाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

2. काव्यशास्त्र के सन्दर्भ में 'नवरस' से क्या अभिप्राय है?

- (a) नवीन रस
- (b) नव वर्ष
- (c) शृंगार रस
- (d) नौ रस

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

काव्यशास्त्र के सन्दर्भ में 'नवरस' से अभिप्राय 'नौ रस' से है। ये नौ रस इस प्रकार हैं- शृंगार रस, हास्य रस, करुण रस, रौद्र रस, वीर रस, भयानक रस, वीभत्स रस, अद्भुत रस तथा शान्त रस।

3. 'रसो वै सः' रस से सम्बन्धित इस कथन का उल्लेख इनमें से किस ग्रन्थ में हुआ है?

- (a) ऋग्वेद
- (b) अग्निपुराण
- (c) तैत्तिरेय उपनिषद्
- (d) नाट्यशास्त्र

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

रस से सम्बन्धित कथन का उल्लेख 'तैत्तिरेय उपनिषद्' ग्रन्थ में इस प्रकार से हुआ है- 'रसो वै सः'।

4. 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' को प्रतिपादित किया है-

- (a) दण्डी ने
- (b) भरतमुनि ने
- (c) वामन ने
- (d) अभिनव गुप्त ने

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने 'रस' की व्याख्या करते हुए कहा है- 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इनके इस सूत्र में स्थायी भाव का उल्लेख नहीं है। भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र के अनुसार, अनुभावों का विशेष उपयोग अभिनय की दृष्टि से ही होता है। भरतमुनि ने शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और अद्भुत सहित कुल आठ रस को नाट्य प्रयोग में स्वीकारा है। नवें रस शान्त का इसमें वर्णन नहीं है।

5. 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'-सूत्र किस आचार्य का है?

- (a) भट्ट लोल्लट
- (b) आचार्य भरतमुनि
- (c) भट्ट नायक
- (d) अभिनव गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. भरतमुनि ने 'रस सूत्र' का विवेचन अपने किस ग्रन्थ में किया है?

- (a) नाट्यदर्पण
- (b) नाट्यशास्त्र
- (c) हृदयदर्पण
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है' किसका कथन है?

- (a) भामह
- (b) भरत
- (c) मम्मट
- (d) जगन्नाथ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. नाटक के सन्दर्भ में भरतमुनि के अनुसार रसों की संख्या है—

- (a) नौ
- (b) ग्यारह
- (c) दस
- (d) आठ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. रस की संख्या 8 किसने मानी है?

- (a) मम्मट (b) विश्वनाथ  
(c) भरतमुनि (d) अभिनव गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. आचार्य भरत ने किस रस को नाट्य प्रयोग में स्वीकार नहीं किया है?

- (a) शान्त (b) करुण  
(c) भयानक (d) अद्भुत

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. रस-निरूपण के प्रथम व्याख्याता थे—

- (a) भरतमुनि (b) दण्डी  
(c) भामह (d) भट्ट लोल्लट

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

रस-निरूपण के प्रथम व्याख्याता भरतमुनि थे। नाट्यशास्त्र भरतमुनि का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है। आचार्य भरतमुनि के रस सूत्र के प्रमुख चार व्याख्याता हैं— भट्ट लोल्लट-उत्पत्तिवाद, शंकुक-अनुमितिवाद, भट्ट नायक-भुक्तिवाद तथा अभिनव गुप्त-अभिव्यक्तिवाद।

12. विशेष रूप से जो भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें कहते हैं—

- (a) अनुभाव (b) संचारी भाव  
(c) विभाव (d) स्थायी भाव

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

विशेष रूप से जो भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें विभाव कहते हैं। रसानुभूति के कारण अथवा रसों को उदित करने वाली सामग्री विभाव कहलाती है। विभाव के दो भेद हैं—1. आलम्बन और 2. उद्दीपन।

13. भाव शान्ति, भाव सन्धि और भाव सबलता का सम्बन्ध भाव के किस भेद से है?

- (a) अनुभाव (b) स्थायी भाव  
(c) विभाव (d) संचारी भाव

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

आश्रय के वित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं, जैसे—रस्सी से भयभीत व्यक्ति के मन में उत्पन्न चिन्ता, शंका, जड़ता, उन्माद आदि भाव संचारी भाव हैं। संचारी भाव पानी के बुलबुलों की भाँति बनते और बिगड़ते हैं। अतः स्पष्ट है कि भाव शान्ति, भाव सन्धि और भाव सबलता का सम्बन्ध संचारी भाव से है।

14. वाणी और अंगों के अभिनय द्वारा जिनसे प्रकट हो, वे हैं—

- (a) संचारी भाव (b) विभाव  
(c) अनुभाव (d) भाव

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

वाणी और अंगों के अभिनय द्वारा जिनसे प्रकट हो वे 'अनुभाव' हैं। मानव मन में स्थायी भाव के जागृत होने पर कुछ शारीरिक चेष्टाएँ भी उत्पन्न होती हैं, जिन्हें अनुभाव कहा जाता है; जैसे—साँप को देखकर व्यक्ति चिल्लाये या भागने लगे, तो उसकी यह शारीरिक चेष्टा 'अनुभाव' कहलाएगी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अनुभावों के भेद के विषय में आचार्यों में मतभेद है। भरत ने अनुभावों के तीन भेद किये हैं—वाचिक, आंगिक और सात्विक।
- भानुदत्त ने इनके चार भेद माने हैं और उनके नाम भी आचार्य भरत से कुछ भिन्न दिये हैं। ये हैं—कायिक, मानसिक, आहार्य और सात्विक।
- तन की चेष्टाओं को कायिक अनुभाव माना जाता है। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में आश्रय द्वारा भूसंचालन, कटाक्षपात आदि क्रियाएँ करना कायिक अनुभाव हैं। इन अनुभावों को उत्पन्न करने के लिए आश्रय को यत्न करना पड़ता है, इसलिए इन्हें 'यत्नज' अनुभाव भी कहते हैं। इनकी संख्या अनिश्चित है।
- मन की चेष्टाएँ मानसिक अनुभाव कहलाती हैं। अंतःकरण की भावना के अनुकूल मन में हर्ष, विषाद आदि के उद्वेलन को मानसिक अनुभाव कहते हैं।
- मन के भाव के अनुकूल भिन्न-भिन्न प्रकार की कृत्रिम वेशभूषा धारण करने को आहार्य अनुभाव कहा जाता है।
- सात्विक अनुभाव वे होते हैं, जो सहज स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होते हैं। इनके उत्पन्न होने में आश्रय को कोई यत्न नहीं करना पड़ता है। अतः इन्हें 'अयत्नज' अनुभाव भी कहते हैं। इनकी संख्या आठ है—स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, प्रकम्प (वेपथु), वैवर्ण्य (रंगहीनता) अश्रु, प्रलय (मूर्च्छा)।

15. 'रोमांच' किस तरह का अनुभाव है?

- (a) सात्विक (b) कायिक  
(c) आहार्य (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. वेश-भूषा से जो भाव प्रदर्शित किये जाते हैं, उन्हें.....कहा जाता है।

- (a) कायिक
- (b) मानसिक
- (c) आहार्य
- (d) सात्विक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'वेपथु' कैसा अनुभाव है?

- (a) आंगिक
- (b) वाचिक
- (c) सात्विक
- (d) बौद्धिक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. आलम्बन और उद्दीपन विभावों के कारण उत्पन्न भावों को बाहर प्रकाशित करने वाले कार्य कहलाते हैं—

- (a) विभाव
- (b) अनुभाव
- (c) संचारीभाव
- (d) स्थायीभाव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. अनुभावों के कितने भेद होते हैं?

- (a) 2
- (b) 3
- (c) 4
- (d) 6

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(\*)

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) बताया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है, सम्भवतः विभिन्न विद्वानों में मतभेद के कारण ऐसा किया गया।

20. अनुभाव के दो भेद होते हैं—

- (a) कायिक और वाचिक
- (b) सात्विक और वाचिक
- (c) कायिक और सात्विक
- (d) सात्विक और मानसिक

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

डॉ. हरदेव बाहरी (शब्द-अर्थ-प्रयोग) के अनुसार, अनुभाव के दो भेद होते हैं—कायिक या इच्छित तथा सात्विक या अनिच्छित। इच्छित अनुभाव को साधारण अनुभाव भी कहा जाता है।

21. ज्यों ज्यों पटु झटकति, हठति, हँसति नचावति नैन।

त्यों-त्यों निपट उदारहु फगुवा देत वनै ना।

पंक्ति में कौन-सा अनुभाव है?

- (a) वाचिक अनुभाव
- (b) कायिक अनुभाव
- (c) मानसिक अनुभाव
- (d) सात्विक अनुभाव

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियों में पट (वस्त्र) का झटकना, हँसना तथा आँखों का नचाना यह इंगित करता है कि यह सारी क्रिया शरीर के अंगों द्वारा हो रही है। अतः यह कायिक अनुभाव है।

22. आचार्य देव ने किस भाव को चौतीसवाँ संचारी भाव कहा है?

- (a) छल
- (b) स्मृति
- (c) पुलक
- (d) रोमांच

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

आश्रय के हृदय में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। ये संचारी इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि यह स्थिर नहीं रहते और बीच-बीच में प्रकट होकर विलीन हो जाते हैं। इनसे स्थायी भाव की पुष्टि होती है। इनको व्यभिचारी भाव भी कहते हैं। ये तैंतीस हैं। देव कवि ने 'छल' नामक एक और संचारी भाव ढूँढ़ निकाला है, जिसे वे चौतीसवाँ संचारी भाव कहते हैं।

23. रसों के संचारी भावों की कुल संख्या होती है—

- (a) 23
- (b) 27
- (c) 33
- (d) 37

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

संचारी भावों की कुल संख्या 33 मानी गयी है। वे इस प्रकार हैं—हर्ष, चिन्ता, गर्व, जड़ता, बिबोध (चैतन्य लाभ), मोह, स्मृति, मरण, व्याधि (रोग), मद, श्रम, आवेग, दीनता, शंका, उत्सुकता, विषाद, त्रास (भय या व्यग्रता), मति, असूया, उग्रता, निर्वेद, आलस्य, उन्माद, व्रीडा (लज्जा), ग्लानि, स्वप्न, चपलता, धृति, अमर्ष (असहनशीलता), निद्रा, अवहित्था (भाव का छिपाना), अपरस्मार (मूर्छा) तथा वितर्क।



24. संचारी भावों की संख्या मानी गयी है-

- (a) 32 (b) 30  
(c) 34 (d) 33

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. संचारी भावों की संख्या कितनी होती है?

- (a) दस (b) नौ  
(c) तैंतीस (d) पच्चीस

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. अपस्मार क्या है?

- (a) एक प्रकार का उपमान जिसमें, उपमेय की हेयता सिद्ध की जाती है  
(b) संचारी भाव का एक प्रकार  
(c) आधुनिक रसाचार्यों द्वारा खोजा गया एक रस  
(d) एक प्रकार का काव्य दोष

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिये -

सूची-I (रस)	सूची-II (स्थायी भाव)
A. शृंगार	1. उत्साह
B. अद्भुत	2. निर्वेद
C. शान्त	3. विस्मय
D. वीर	4. रति

कूट :

- (a) A-3, B-4, C-1, D-2  
(b) A-1, B-2, C-3, D-4  
(c) A-4, B-3, C-2, D-1  
(d) A-2, B-1, C-4, D-3

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सही सुमेलित है-

सूची-I (रस)	सूची-II (स्थायी भाव)
शृंगार	रति
अद्भुत	विस्मय
शान्त	निर्वेद
वीर	उत्साह

28. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

सूची-I (रस)	सूची-II (स्थायी भाव)
A. अद्भुत	1. क्रोध
B. वीर	2. शोक
C. रौद्र	3. विस्मय
D. करुण	4. उत्साह

कूट :

(a)	A	B	C	D
	1	2	3	4
(b)	A	B	C	D
	4	3	2	1
(c)	A	B	C	D
	3	4	1	2
(d)	A	B	C	D
	2	4	1	3

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

सुमेलित है-

सूची-I (रस)	सूची-II (स्थायी भाव)
अद्भुत	विस्मय
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध
करुण	शोक

29. निम्नलिखित में से किस विकल्प में स्थायीभाव दिये गये हैं?

- (a) निर्वेद, आलस्य, रत्नानि, चिन्ता  
(b) रति, शोक, उत्साह, भय  
(c) उत्प्रेक्षा, प्रदीप, सोरठा, इन्द्रवज्रा  
(d) शृंगार, वीर, अद्भुत, शान्त

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत शब्द स्थायीभाव है। ये क्रमशः शृंगार, करुण, वीर तथा भयानक रस के स्थायी भाव हैं।

30. निम्नलिखित में से कौन-सा स्थायीभाव नहीं है?

- (a) विषाद (b) जुगुप्सा  
(c) निर्वेद (d) हास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(a)

विषाद किसी भी रस का स्थायीभाव नहीं है। जुगुप्सा, वीभत्स रस, निर्वेद, शान्त रस तथा हास, हास्य रस का स्थायी भाव है।

31. वीर रस का स्थायीभाव है-

- (a) शोक (b) भय  
(c) उत्साह (d) निर्वेद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

वीर रस का स्थायीभाव उत्साह होता है। वीर रस के चार भेद होते हैं- युद्धवीर, दानवीर, धर्मवीर तथा दयावीर। करुण रस का स्थायी भाव शोक होता है। भयानक रस का स्थायीभाव भय तथा शान्त रस का स्थायी भाव शम/निर्वेद होता है।

32. 'वीर रस' का स्थायीभाव है—

- (a) स्फूर्ति (b) युद्ध  
(c) उत्साह (d) विरक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. 'निर्वेद' किस रस का स्थायीभाव है?

- (a) करुण रस (b) शान्त रस  
(c) अद्भुत रस (d) भयानक रस

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'वीरों का कैसा हो बसन्त' में किस रस की सृष्टि हुई है?

- (a) वीर रस (b) शृंगार रस  
(c) अद्भुत रस (d) वीभत्स रस

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

डॉ. दुर्गेश नंदिनी ने 'क्रान्ति की गायिका : सुभद्रा कुमारी चौहान' नामक लेख में सुभद्रा जी की कविताओं के परिप्रेक्ष्य में लिखा है "सुभद्रा जी की राष्ट्रीय कविताएँ क्रान्ति के जयघोष से गुंजरित हो रही हैं। 'वीरों का कैसा हो बसन्त' कविता में भारतीय इतिहास के वीर पुरुषों एवं घटनाओं का नाम लेकर लंका और कुरुक्षेत्र का स्मरण कर त्रेता एवं द्वापर युग की वीरता के महत्व का वर्णन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि बसन्त पर्व को रक्त पर्व के रूप में मनाया जाना चाहिए"। अतः स्पष्ट है कि उपर्युक्त पंक्ति में वीर रस है।

35. किस रस का संचारीभाव उग्रता, गर्व, हर्ष आदि हैं?

- (a) शृंगार (b) वीर  
(c) वात्सल्य (d) रौद्र

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

वीर रस का स्थायीभाव उग्रता, गर्व, हर्ष आदि होता है। यही परिपक्व होकर 'उत्साह' बनता है।

36. वीभत्स रस का स्थायीभाव है-

- (a) शोक (b) विस्मय  
(c) जुगुप्सा (d) अद्भुत

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

वीभत्स रस का स्थायीभाव 'जुगुप्सा' होता है। जब जुगुप्सा नामक स्थायी भाव, विभाव आदि भावों की परिपक्वता होती है, तब यह रस उत्पन्न होता है। शोक, करुण रस का स्थायी भाव है। इसी प्रकार विस्मय, अद्भुत रस का स्थायीभाव है।

37. किस रस का स्थायीभाव 'जुगुप्सा' है?

- (a) भयानक (b) वीभत्स  
(c) अद्भुत (d) वीर

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. 'वीभत्स' रस का स्थायीभाव है-

- (a) विस्मय (b) विशेषोक्ति  
(c) जुगुप्सा (d) निर्वेद

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'जुगुप्सा' किस रस का स्थायीभाव है?

- (a) वीभत्स (b) करुण  
(c) अद्भुत (d) शान्त

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. 'जुगुप्सा' का स्थायीभाव होता है-

- (a) वीर रस का (b) रौद्र रस का  
(c) अद्भुत रस का (d) वीभत्स रस का

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. अद्भुत रस का स्थायीभाव है-

- (a) जुगुप्सा (b) क्रोध  
(c) विस्मय (d) निर्वेद

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

अद्भुत रस का स्थायीभाव विस्मय/आश्चर्य होता है। जुगुप्सा, वीभत्स रस का स्थायीभाव है। इसी प्रकार क्रोध तथा निर्वेद क्रमशः रौद्र एवं शान्त रस के स्थायीभाव हैं।

42. 'अद्भुत रस' का स्थायीभाव क्या है?

- (a) विस्मय (b) क्रोध  
(c) उत्साह (d) जुगुप्सा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. विस्मय या आश्चर्य किस रस का स्थायीभाव है?

- (a) वीर रस (b) हास्य रस  
(c) अद्भुत रस (d) रौद्र रस

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'शान्त रस' का स्थायीभाव है-

- (a) रति (b) शोक  
(c) निर्वेद (d) विस्मय

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

शान्त रस का स्थायीभाव शम/निर्वेद होता है। रति, शोक तथा विस्मय क्रमशः शृंगार, करुण तथा अद्भुत रस के स्थायी भाव हैं।

45. 'निर्वेद' स्थायीभाव है-

- (a) रौद्र रस का (b) शान्त रस का  
(c) करुण रस का (d) भयानक रस का

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. "राम को रूप निहारति जानकी कंकन के नग की परिछाँहि।"

उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा रस है?

- (a) हास्य (b) करुण  
(c) शान्त (d) शृंगार

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

प्रस्तुत पंक्तियों में शृंगार रस है। यहाँ राम आलम्बन, सीता आश्रय, कंकन के नग में परछाई देखना उद्दीपन, राम की परछाई को देखना आदि अनुभाव, स्तम्भ, हर्ष आदि संचारीभाव स्थायीभाव रति हैं, जो इन सबसे पुष्ट होकर संयोग शृंगार रस का परिपाक करता है।

47. शृंगार रस का स्थायीभाव है-

- (a) शोक (b) रति  
(c) हास (d) उत्साह

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

शृंगार रस का स्थायीभाव रति/प्रेम होता है। जहाँ नायक तथा नायिका के सौन्दर्य तथा प्रेम सम्बन्धी वर्णन किया जाता है, वहाँ शृंगार रस होता है। इसके दो भेद हैं-संयोग शृंगार तथा वियोग अथवा विप्रलम्भ शृंगार।

48. शृंगार रस का स्थायीभाव है-

- (a) रति (b) हास  
(c) शोक (d) निर्वेद

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. "मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई

जा के सिर सौर मुकुट मेरो पति सोई॥"

उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा रस है?

- (a) शृंगार रस (b) हास्य रस  
(c) करुण रस (d) शान्त रस

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्तियों में शृंगार रस का वर्णन है। यह पंक्ति मीराबाई द्वारा रचित है। जिन्होंने श्रीकृष्ण को पति के रूप में स्वीकार करते हुए इन पंक्तियों की रचना की है।

50. विप्रलम्भ शृंगार में वियोग की कितनी दशाएँ मानी गयी हैं?

- (a) 10 (b) 12  
(c) 14 (d) 16

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

विप्रलम्भ शृंगार में वियोग की 10 दशाएँ मानी गयी हैं, जो इस प्रकार हैं—  
1. अभिलाषा, 2. चिन्ता, 3. गुणकथन, 4. स्मृति, 5. उद्वेग, 6. प्रलाप, 7. उन्माद, 8. व्याधि, 9. जड़ता और 10. मरण।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- 'अग्निपुराण' में अन्य रसों को शृंगार रस का भेद माना गया है।
- केशव, देव आदि आचार्यों ने शृंगार रस को 'रसरराज' माना है।
- देव ने शृंगार में सभी रसों को बिम्बित माना है।

51. किस रस को 'रसरराज' की संज्ञा दी गई है?

- (a) करुण (b) वात्सल्य  
(c) शृंगार (d) रौद्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

52. किस रस का संचारी उद्दीपन विभाव बादल की घटाएँ, कोयल का बोलना, बसन्त ऋतु आदि होते हैं?

- (a) शृंगार (b) वात्सल्य  
(c) अद्भुत (d) शान्त

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

शृंगार रस का उद्दीपन विभाव बादल की घटाएँ, कोयल का बोलना, बसन्त ऋतु, उद्यान, कुंज, चन्द्रिका, नायक-नायिका की प्रेम चेष्टाएँ आदि हैं। आलम्बन हर्ष, लज्जा, उत्सुकता आदि संचारीभाव हैं।

53. 'फाड़ि नखन शव आंतड़िन, रुधिर मवाद निकारि।

लेपति अपने मुखनि पै, हरसि प्रेतगन नारि॥'

उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा स्थायीभाव है?

- (a) भय (b) जुगुप्सा  
(c) विस्मय (d) निर्वेद

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्तियों में वीभत्स रस है, जिसका स्थायीभाव जुगुप्सा (घृणा) है। जहाँ किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान या दृश्य को देखकर घृणा (जुगुप्सा) मन में उत्पन्न हो, वहाँ वीभत्स रस होता है।

54. 'विंध्य के वासी उदासी तपोव्रत धारी महाबिनु नारि दुखारें।

उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा रस है?

- (a) शृंगार (b) करुण  
(c) हास्य (d) वीर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पंक्ति में हास्य रस है। इस पंक्ति का अर्थ है कि विंध्य के तपस्वी वासी नारी के बिना काफी दुःखी हैं।

55. आधा पात बबूल का, तामें तनिक पिसाना

लाला जी करने लगे, छटे छमासे दान।।

उपर्युक्त दोहे में कौन-सा रस है?

- (a) शृंगार (b) वीर  
(c) करुण (d) हास्य

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त दोहे में हास्य रस है। जहाँ किन्हीं विचित्र स्थितियों या परिस्थितियों द्वारा हँसी उत्पन्न होती हो, वहाँ हास्य रस होता है। इसका स्थायीभाव 'हास' होता है।

56. जौ तुम्हार अनुशासन पावौं।

कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठावौं।।

काँचो घट डारौं फोरी।

रोकों मेरु मुलक जिमि तोरी।।

उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?

- (a) वीर रस (b) रौद्र रस  
(c) हास्य रस (d) अद्भुत रस

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध है। अपना शत्रु, दुष्ट व्यक्ति, समाजद्रोही, खलनायक आदि इसमें आलम्बन विभाव होते हैं तथा उनके कार्य या चेष्टाएँ उद्दीपना आँखें लाल होना, दाँत पीसना, आँठ काटना, अस्त्र-शस्त्र उठाना आदि इस रस में अनुभाव होते हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में लक्ष्मण के क्रोध के भाव को प्रकट किया गया है। अतः यहाँ रौद्र रस है।



57. “राग है कि, रूप है कि  
रस है कि, जस है कि  
तन है कि, मन है कि  
प्राण है कि, प्यारी है”  
उपर्युक्त पंक्तियों में रस है—

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

- (a) शृंगार (b) वात्सल्य  
(c) अद्भुत (d) शान्त

उपर्युक्त पंक्तियों में अद्भुत रस है। जहाँ सुनी अथवा अनसुनी वस्तु/व्यक्ति/स्थान के विचित्र एवं आश्चर्यजनक रूप को देखकर विस्मय हो, वहाँ अद्भुत रस होता है। इसका स्थायीभाव विस्मय होता है।

58. केसव कहि न जाय का कहिये।

देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिये।

उपर्युक्त पंक्तियों में है—

- (a) भक्ति रस (b) शान्त रस  
(c) करुण रस (d) अद्भुत रस

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

जहाँ किसी असाधारण अपूर्व अलौकिक वस्तु, जीव इत्यादि को देखकर हृदय में विशेष प्रकार का सुखद, कौतूहल (विस्मय) आश्चर्य का भाव उत्पन्न हो, तो वहाँ अद्भुत रस होता है। उपर्युक्त पंक्तियाँ तुलसीदास दास कृत ‘विनय पत्रिका’ से उद्धृत हैं, जिसमें यह भाव प्रतीत होता है। अतः इन पंक्तियों में अद्भुत रस है।

59. “समरस थे जड़ या चेतन सुन्दर साकार बना था।

चेतनता एक विलसती आनन्द अखंड घना था।”

इन पंक्तियों में कौन-सा रस है?

- (a) शृंगार रस (b) करुण रस  
(c) शान्त रस (d) भयानक रस

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

मन में संयम, शान्ति या वैराग्य को जागृत करने वाले प्रसंगों के चित्रण में शान्त रस होता है। शान्त रस का स्थायी भाव निर्वेद या वैराग्य है।

60. दुःख ही जीवन की कथा रही,  
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।  
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा रस है?

- (a) करुण रस (b) शृंगार रस  
(c) अद्भुत रस (d) वीभत्स रस

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्तियों में करुण रस है। इन पंक्तियों के माध्यम से सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ ने अपनी पुत्री ‘सरोज’ की मृत्यु के उपरान्त पूरी करुणा को उड़ेल दिया है।

61. “अभी तो मुकुट बंधा था माथ,

हुए कल ही हल्दी के हाथ,

खुले भी न थे लाज के बोल,

खिले थे चुम्बन-शून्य कपोल,

हाय रुक गया यहीं संसार

बना सिन्दूर अनल अंगार

वातहत लतिका वह सुकुमार

पड़ी है छिन्नाधार।”

में निहित रस है—

- (a) शान्त (b) संयोग शृंगार  
(c) करुण (d) वियोग शृंगार

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

अत्यन्त दुःखद घटना या प्रसंग के निरूपण से करुण रस की उत्पत्ति होती है। करुण रस का स्थायीभाव ‘शोक’ है। मूर्च्छित होकर गिर पड़ना, रोना, आँहें भरना आदि इसके अनुभाव होते हैं। कवि सुमित्रानन्दन पन्त की उपर्युक्त पंक्तियों में सुखमय संसार के अचानक नष्ट हो जाने से जन्मी गहरी निराशा व्यक्त हुई है। इन पंक्तियों में नववधू का प्रियतम विवाह के बाद पहले ही दिन काल-कवलित हो जाता है। यहाँ नववधू-आश्रय, दिवंगत पति-विषय, नायिका का दुःख में मौन रह जाना-अनुभाव है। विषाद, विन्ता, लज्जा आदि संचारी भाव हैं। उनके संयोग से यहाँ करुण रस व्यक्त हुआ है।

62. मन की उत्तप्त वेदना, मन ही मन में बहती थी।

चुप रहकर अन्तर्मन में, कुछ मौन व्यथा कहती थी।।

दुर्गम पथ पर चलने का, वो सम्बल छूट गया था।

अविचल, अविचल वह प्राणी, भीतर से टूट गया था।।

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कौन-सा रस अभिव्यंजित हो रहा है?

- (a) शान्त (b) वियोग शृंगार  
(c) करुण (d) वात्सल्य

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में दुःखद घटना का प्रसंग है, अतः करुण रस है।

63. निम्न पंक्तियों में किस रस का निरूपण हुआ है?

एक ओर अजगरहिं लखि एक ओर मृगराया  
बिकल बटोही बीच ही परयो मूरछा खाया।

- (a) भयानक रस
- (b) अद्भुत रस
- (c) हास्य रस
- (d) वीभत्स रस

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

भानुदत्त ने 'रसतरंगिणी' में भयानक रस के दो भेद किये हैं—स्वनिष्ठ और परनिष्ठ। स्वनिष्ठ भयानक रस वहाँ होता है, जहाँ भय का आलम्बन स्वयं आश्रय में रहता है और परनिष्ठ भयानक रस वहाँ होता है, जहाँ भय का आलम्बन आश्रय में वर्तमान न होकर उससे बाहर, पृथक् होता है अर्थात् आश्रय स्वयं अपने किये अपराध से ही डरता है। प्रस्तुत पंक्तियों में अजगर और सिंह आलम्बन हैं। उन दोनों जीवों की भयानक आकृति तथा चेष्टाएँ उद्दीपन हैं, स्वेद, कम्प, रोमांच आदि संचारी भाव हैं और मूर्छा आदि अनुभाव हैं। इन सबसे भय स्थायी पुष्ट होकर भयानक रस की प्रतीति कराता है। यहाँ परनिष्ठ भयानक रस का उदाहरण है।

64. 'सोहत कर नवनीत लिये

घुटुरुन चलत रेनु तन मण्डित, मुख दधि लेप किये।  
उपर्युक्त पंक्तियों में रस है—

- (a) शृंगार
- (b) रौद्र
- (c) शान्त
- (d) वात्सल्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

जब अपने या पराये बालक को देखकर या सुनकर उसके प्रति मन में एक सहज आकर्षण या बाल-रति का भाव उमड़ता है, तो वहाँ वात्सल्य रस होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में श्रीकृष्ण के रूप का वर्णन करते हुए यह कहा गया है कि वे घुटनों के बल चलने लगे हैं, उनके हाथों में मक्खन है, मुँह पर दही लगा है, शरीर मिट्टी से लिपटा है। यहाँ पर उनके आकर्षक रूप का वर्णन है। अतः वात्सल्य रस है।

65. मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोई।

जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होई॥  
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा रस है?

- (a) भक्ति रस
- (b) शृंगार रस
- (c) अद्भुत रस
- (d) वीर रस

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्तियों में भक्ति रस है। बिहारी मूलतः शृंगारी कवि हैं। उनकी भक्ति भावना राधा-कृष्ण के प्रति है और वह जहाँ-तहाँ ही प्रकट हुई है। सतसई के आरम्भ में मंगला-चरण का उपर्युक्त दोहा राधा के प्रति उनके भक्ति-भाव का ही परिचायक है। उ. प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है, जबकि कई पुस्तकों एवं कृतियों में उपर्युक्त पंक्ति को भक्ति विषयक माना गया है।

66. 'भारती वृत्ति' का सम्बन्ध किस रस से है?

- (a) शृंगार
- (b) वीर
- (c) करुण
- (d) अद्भुत

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(\*)

'भारती वृत्ति' का सामान्य अर्थ है-वाग्व्यापार। प्रस्तावना में भारती वृत्ति होती है। इसका आशय यही है कि प्रस्तावना में वाग्व्यापार की प्रधानतः प्रयोजनीय होता है। भरतमुनि ने वृत्तियों को काव्य-माताएँ की संख्या दी है। विश्वनाथ ने भी इसका समर्थन किया है। ये वृत्तियाँ चार प्रकार की हैं—सात्वती, भारती, कैशिकी और आरभटी।

(I) कैशिकी वृत्ति- यह बड़ी मनोहर वृत्ति है। इसका सम्बन्ध शृंगार और हास्य से है। इसकी उत्पत्ति सामवेद से मानी गई है।

(II) सात्वती वृत्ति- इस वृत्ति का सम्बन्ध शौर्य, दान, दया, दाक्षिण्य से है। इसमें वीरोचित कार्य रहते हैं। इसका सम्बन्ध वीर रस है और इसमें थोड़ा रौद्र और अद्भुत का भी समावेश रहता है।

(III) आरभटी वृत्ति-माया इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध, संघर्ष, आघात-प्रतिघात और बंधनादि से युक्त यह वृत्ति रौद्र रस के वर्णन में काम आती है। इस वृत्ति की उत्पत्ति अथर्ववेद से बतालाई गई है।

(IV) भारती वृत्ति- इसमें स्त्रियाँ वर्जित रहती हैं। इसका सम्बन्ध पुरुष नटों या भरतों से है। इसलिए भी यह भारती कहलाती है। इसका सम्बन्ध शब्दों से है। साहित्यदर्पणकार का मत है कि सब रसों में भारती वृत्ति काम आती है। भरतमुनि ने उसका सम्बन्ध करुण और अद्भुत से बतलाया है। इसके विषय में भारतेन्दु जी लिखते हैं कि यह केवल वीभत्स में ही काम आती है। भारती वृत्ति का सम्बन्ध नाटक के आरंभिक कृत्यों से भी रहता है। भरतमुनि ने इस वृत्ति की उत्पत्ति ऋग्वेद से बतलाई है। वृत्तियों का रसों से सम्बन्ध बतलाने वाला श्लोक इस प्रकार है—

'शृंगारे, कैशिकी, वीरे सात्त्वत्यारभटी पुनः।'  
रसे रौद्रे च वीभत्से, वृत्तिः सर्वत्र भारती॥'

# छन्द

## 1. 'छन्दशास्त्र' के प्रणेता आचार्य माने जाते हैं—

- (a) पतंजलि (b) पिंगल  
(c) पाणिनि (d) मनु

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

छन्दशास्त्र के प्रणेता आचार्य पिंगल माने जाते हैं। छन्द का दूसरा नाम पिंगल है। पिंगलाचार्य के 'छन्दसूत्र' में छन्द का सुसम्बद्ध वर्णन होने के कारण इसे 'छन्दशास्त्र' का आदि ग्रन्थ माना जाता है। इसी आधार पर 'छन्दशास्त्र' को 'पिंगलशास्त्र' भी कहते हैं। छन्दशास्त्र आठ अध्यायों का एक सूत्र ग्रन्थ है। अग्निपुराण में भी पिंगल पद्धति पर आधारित छन्दशास्त्र का पूर्ण विवरण है।

## 2. इनमें से कौन-सी छन्दशास्त्र की प्रथम पुस्तक है?

- (a) काव्य प्रकाश (b) छन्द सूत्र  
(c) रसिक प्रिया (d) छन्द प्रभाकर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## 3. अपभ्रंश काव्य का सुप्रसिद्ध छन्द कौन-सा है?

- (a) कडवक (b) पद्धरि  
(c) रास (d) इहा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

अपभ्रंश काव्य के बहुप्रचलित पञ्चटिका, अरिल्ल और उनसे बने कडवक आदि थे, जो हिन्दी के आदिकालीन साहित्य में दोहे के समान लोकप्रिय नहीं हुए। अरिल्ल के स्थान पर हिन्दी में चौपाई का प्रयोग बढ़ा। कथाकाव्यों में इसकी प्रतिष्ठा देखी जा सकती है। इसकी लोकप्रियता को देखकर ही भक्तिकाल में जायसी और तुलसीदास ने आदिकाल का ऋण स्वीकार किया है। चौपाई के साथ दोहा रख कर 'कडवक' बनाने की जो प्रथा सिद्धों ने अपनी रचनाओं में आरम्भ की, उसी को आगे चलकर उक्त दोनों महाकवियों ने अपने काव्यों की मुख्य शैली बना लिया। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (a) सही माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

## अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आदिकालीन रासो काव्यों में वीर रस की व्यंजना के लिए छप्पय, तोटक, तोमर, पद्धरि और नाराच का प्रयोग अधिक किया गया। इनमें से कुछ छन्द अपभ्रंश में भी प्रयुक्त हो रहे थे।
- आदिकाल में छन्द के अतिरिक्त कथा कहने के ढंग की कुछ शिल्प-पद्धतियाँ प्रचलित रहीं। इनमें कथानक-रुद्धियों का महत्व है। रासो ग्रन्थों में इस प्रकार की रुद्धियों का विशेष प्रयोग मिलता है। शुक, दूती, दैवी, शक्तियाँ आदि इन रुद्धियों के साधन रहे हैं। ये रुद्धियाँ अपभ्रंश-साहित्य में भी मिलती हैं।
- अपभ्रंश और हिन्दी दोनों में दोहा-शैली का प्रयोग एक ही स्रोत से आरम्भ हुआ। दोहा छन्द अपभ्रंश में जनभाषा से ही लिया गया था, इसलिए इस छन्द को हिन्दी का मुख्य छन्द मानना चाहिए।

## 4. मात्रा की दृष्टि से दोहा के ठीक विपरीत होता है—

- (a) रोला (b) छप्पय  
(c) चौपाई (d) सोरठा

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

मात्रा की दृष्टि से दोहा के ठीक विपरीत सोरठा होता है। सोरठा अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इस छन्द में दोहे के द्वितीय चरण को प्रथम और प्रथम को द्वितीय तथा तृतीय को चतुर्थ और चतुर्थ को तृतीय कर देने से बन जाता है। इस छन्द के विषम चरणों में 11 मात्राएँ और सम चरणों में 13 मात्राएँ होती हैं। तुक प्रथम और तृतीय चरणों में होती है।

जैसे—

IIII S I S I IIII I I I I S I II  
रघुपति बानकृसानु, निसिचर निकर पतंग सम।  
I S I S I I S I I I S S I I S I I  
जरे निसाचर जानु, जननी हृदय धीर धरु ॥

## 5. किस अर्द्धसम मात्रिक छन्द के विषम पदों में 11-11 तथा सम पदों में 13-13 मात्राएँ होती हैं?

- (a) सोरठा (b) रोला  
(c) चौपाई (d) दोहा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।





14. निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल  
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल॥  
इस पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?

- (a) दोहा (b) रोला  
(c) चौपाई (d) बरवै

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्तियों में दोहा छन्द है। दोहा में प्रथम एवं तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

15. जिस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में 12-12 मात्राएँ एवं द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं, साथ ही सम चरणों के अन्त में जगण (I S I) होता है, वह छन्द है—

- (a) मालिनी (b) बरवै  
(c) रोला (d) इन्द्रवज्रा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

बरवै अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इस छन्द के विषम चरणों (प्रथम और तृतीय) में 12-12 मात्राएँ और सम चरणों (द्वितीय और चतुर्थ) में 7-7 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में जगण या तगण आने से इस छन्द में मिठास बढ़ती है। यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है। इसके प्रत्येक चरण में 19 मात्राएँ होती हैं। जैसे—

S I S I I I S I I I S I S I  
वाम अंग शिव शोभित, शिवा उदार।  
I I I I S I I S I I I I I S I  
सरद सुवारिद में जनु, तड़ित बिहार॥

16. किस छन्द में बारह और सात की यति से कुल उन्नीस मात्राएँ होती हैं?

- (a) सोरठा (b) दोहा  
(c) चौपाई (d) बरवै

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. अवधी का निजी छन्द है—

- (a) बरवै (b) कवित्त  
(c) रोला (d) छप्पय

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

अवधी का प्राणप्रिय छन्द 'बरवै' है। बरवै बड़ा सुन्दर छन्द है, किन्तु आधुनिक कविता में इसका प्रयोग बहुत कम हो गया है। यह एक मात्रिक छन्द है, जिसमें चार चरण होते हैं। इसके विषम यानी कि पहले और तीसरे चरणों में 12 मात्राएँ और सम यानी दूसरे और चौथे चरणों में 7 (सात) मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में जगण यानी लघु, दीर्घ, लघु मात्राएँ होती हैं। रहीम के एक बरवै द्वारा इसे समझा जा सकता है। जैसे—

आगि लाग घरु बरिगा, अति भल कीना

साजन हाथ घैलना, भरि-भरि दीना॥

अर्थात् आग लग गई, घर जल गया। यह बड़ा अच्छा हुआ, क्योंकि साजन के हाथों में पानी भर-भर के घड़े देने का मौका मिला।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- बरवै छन्द के प्रणेता अकबर के नवरत्नों में से एक महाकवि अब्दुरहीम खानखाना 'रहीम' कहे जाते हैं।
- किंवदन्ती है कि रहीम का कोई सेवक अवकाश लेकर विवाह करने गया। वापस आते समय उसकी विरहाकुल नवोदा पत्नी ने उसके मन में अपनी स्मृति बनाये रखने के लिए दो पंक्तियाँ लिखकर दीं। रहीम का साहित्य प्रेम सर्व विदित था, सो सेवक ने वे पंक्तियाँ रहीम को सुनायी। सुनते ही रहीम चकित रह गये। पंक्तियों में उन्हें ज्ञात छन्दों से अलग गति-यति का समायोजन था। सेवक को ईनाम देने के बाद रहीम ने पंक्ति पर गौर किया और मात्रा गणना कर उसे 'बरवै' नाम दिया। मूल पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

प्रेम प्रीति कौ बिरवा, चले लगाइ

सीजन की सुधि लीज्यौ, मुरझि न जाइ....।

- रहीम ने बरवै छन्द का प्रयोग कर 'बरवै नायिका भेद' नामक ग्रन्थ की रचना की।
- रहीम के समकालिक महाकवि तुलसीदास को भी बरवै छन्द प्रिय था, जिसका प्रयोग उन्होंने अपनी अमर काव्यकृति 'बरवै रामायण' में किया है।
- बरवै के विषम चरण (प्रथम तथा तृतीय) में 13 तथा सम चरण (द्वितीय तथा चतुर्थ) में 7 मात्राएँ रखने का विधान है। विषम चरण में 12 मात्राएँ (भोजपुरी में बरवै मात्राएँ) होने से सम्भवतः यह छन्द बरवै कहलाया।

18. 'अवधि-शिला का उर पर, था गरु भार।

तिल-तिल काट रही थी, दृग जल धार॥

इस उद्धरण में प्रयुक्त छन्द है—

- (a) दोहा (b) सोरठा  
(c) बरवै (d) गीतिका

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

||| | S S || || S || S |

'अवधि-शिला का उर पर, था गरु भार।

|| || S | | S S || || S |

तिल-तिल काट रही थी, दृग जल धार।।

उपर्युक्त पंक्तियों के प्रथम एवं तृतीय चरण में 12-12 तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 7-7 मात्राएँ हैं। अतः यह 'बरवै' है।

19. 'अराति-सैन्य सिन्धु में सुबाडवाग्नि से जलो,  
प्रवीर हो जयी बना, बड़े चलो, बड़े चलो।।' में कौन-से गण हैं?

- (a) जगण रगण जगण रगण जगण गुरु
- (b) रगण जगण तगण तगण जगण गुरु
- (c) रगण रगण जगण जगण मगण गुरु
- (d) मगण भगण नगण तगण तगण गुरु

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्तियों में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण, गुरु नामक गण हैं। जगण में मध्य 'गुरु' होता है, रगण में मध्य लघु होता है और अन्त में 'गुरु' होता है। गुरु का चिह्न 'S' तथा लघु का चिह्न 'I' होता है।

20. चौपाई के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं-

- (a) 11
- (b) 13
- (c) 16
- (d) 15

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

चौपाई मालिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त में जगण (ISI) और तगण (SSI) का आना वर्जित है। तुक पहले चरण की दूसरे से और तीसरे की चौथे से मिलती है। जैसे-  
|| S || S || || S S || || || || S || S S  
नित नूतन मंगल पुर माहीं। निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं ||  
| S S | S || || S S S || || || S || S S  
बड़े भोर भूपतिमनि जागे। जाचक गुनगन गावन लागे ||

21. चौपाई छन्द में कितनी मात्रा होती है?

- (a) ग्यारह
- (b) बारह
- (c) सोलह
- (d) अठारह

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'चौपाई' छन्द में मात्राओं की संख्या होती है-

- (a) 13
- (b) 11
- (c) 16
- (d) 24

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. मंगल भवन अमंगल हारी।

द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी।।

इस पंक्तियों में किस छन्द का प्रयोग हुआ है?

- (a) दोहा
- (b) चौपाई
- (c) सोरठा
- (d) सवैया

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियों में चौपाई छन्द है। चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं और अन्त में 'गुरु' के बाद लघु नहीं होता अर्थात् पाद के अन्त में ऐसा लघु वर्ण न आवे जिसके पूर्व का वर्ण गुरु हो।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ अरिल्ल, सममात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं और 8-8 पर विराम होता है। अन्त में दो लघु या एक लघु के बाद दो गुरु होते हैं।

24. 'मंगल करनि, कलि मल हरनि, तुलसी कथा, रघुनाथ की।' उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा छन्द है?

- (a) चौपाई
- (b) हरि गीतिका
- (c) रोला
- (d) मालिनी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

S || || || || || || || S | S | S | S | S  
'मंगल करनि, कलि मल हरनि, तुलसी कथा, रघुनाथ की।' पंक्ति में हरिगीतिका छन्द है। यह एक सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16 और 12 अथवा 14 और 14 पर यति से 28 मात्राएँ होती हैं। अंतिम में गुरु होते हैं।

25. हम जो कुछ देख रहे हैं,

सुन्दर है सत्य नहीं है।

यह दृश्य जगत भासित है,

बिन कर्म शिवत्व नहीं है।।

उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में निम्नलिखित में से कौन-सा छन्द है?

- (a) चौदह-चौदह मात्राओं की यति से 28 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द।
- (b) दस-दस वर्णों की यति से 20 वर्णों वाला वार्णिक छन्द है।

(c) तेरह-तेरह मात्राओं की यति से 26 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द।

(d) पन्द्रह-पन्द्रह मात्राओं की यति से 30 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द।

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में हरिगीतिका मात्रिक छन्द है। इसमें 14-14 मात्राओं की यति पर कुल 28 मात्राओं के सम चरण और चरणान्त में लघु-गुरु का प्रयोग ही प्रचलित है। जैसे-

II S II SI IS S ISI S IS IS S  
हम जो कुछ देख रहे हैं, सुन्दर है सत्य नहीं है।  
II IS III SII S II IS IIS IS S  
यह दृश्य जगत भासित है, बिन कर्म शिवत्व नहीं है॥

26. निम्न में से कौन वार्णिक छन्द है?

(a) दोहा

(b) चौपाई

(c) सवैया

(d) रोला

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

सवैया एक वार्णिक समवृत्त छन्द है। इसके एक चरण में 22 से लेकर 26 तक अक्षर होते हैं। इसके कई भेद हैं। यथा-मत्तगयन्द, सुन्दरी, मदिरा दुर्मिल, सुमुखि, किरिट गंगोदक, मुक्तहरा, वाम, अरविन्द, मानिनी, महाभुजंगप्रयात तथा सुखी आदि।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- वर्ण और मात्रा के विचार से छन्द के चार भेद होते हैं- (1) वार्णिक छन्द, (2) मात्रिक छन्द, (3) वार्णिक वृत्त और (4) मुक्तक छन्द।
- केवल वर्ण गणना के आधार पर रचा गया छन्द वार्णिक छन्द कहलाता है। इसके दो भेद होते हैं- (1) साधारण और (2) दण्डक। 1 से 26 वर्ण तक के चरण रखने वाले वार्णिक छन्द साधारण तथा इससे अधिक वर्ण रखने वाले दण्डक कहलाते हैं।
- वार्णिक वृत्त उस सम छन्द को कहते हैं, जिसमें चार समान चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में आने वाले वर्णों का लघु-गुरु क्रम सुनिश्चित होता है।
- मात्रा और गणना पर आधारित छन्द मात्रिक छन्द कहलाता है।

27. वार्णिक छन्दों में किसका विचार होता है?

(a) वर्ण का

(b) मात्रा और वर्ण का

(c) मात्रा का

(d) वर्ण की गुरुता का

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. वार्णिक छन्दों में गण कितने प्रकार के होते हैं?

(a) चार

(b) सात

(c) आठ

(d) दस

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

तीन वर्णों को मिलाकर एक 'गण' बनता है। गणों की कुल संख्या आठ मानी गई है। इसे आसानी से याद करने का प्रसिद्ध सूत्र पिंगल के छन्दशास्त्र का है-यामाताराजभानसलगा। इस सूत्र में प्रथम आठ गणों-यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण के नाम आ गए हैं। अंतिम दो वर्ण 'ल' और 'ग' छन्दशास्त्र में 'दशाक्षर' कहलाते हैं।

29. गणों की सही संख्या है -

(a) आठ

(b) नौ

(c) दस

(d) ग्यारह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. निम्नलिखित में से कौन-सा वार्णिक छन्द है?

(a) छप्पय

(b) सौरठा

(c) उपेन्द्रवज्रा

(d) रोला

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

जिन छन्दों की पहचान हेतु वर्णों के क्रम का विचार कर उसी आधार पर वर्णों की गणना की जाती है और वर्णों की संख्या क्रम तथा स्थान इत्यादि निश्चित रहते हैं। वार्णिक छन्द कहलाते हैं। इस श्रेणी में हरिगीतिका, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा तथा सवैया इत्यादि आते हैं। वार्णिक छन्द के तीन प्रकार होते हैं- सम, अर्ध-सम तथा विषम।

31. "मैं राज्य की चाह नहीं करूंगा।

है जो तुम्हें इष्ट वहीं करूंगा।

संतान जौ-सत्यवती जनेगी।

राज्याधिकारी वह ही बनेगी॥"

—पंक्तियों में प्रयुक्त छन्द है

(a) इन्द्रवज्रा

(b) उपेन्द्रवज्रा

(c) वसंततिलका

(d) हरिगीतिका

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

इन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, तगण एवं एक जगण के साथ दो गुरु के क्रम में कुल 11 वर्ण होते हैं।

मैं राज्य की चाह नहीं करुंगा।

है जो तुम्हें इष्ट वहीं करुंगा।

संतान जो सत्यवती जनेगी।

राज्याधिकारी वह ही बनेगी।

प्रस्तुत छन्द के प्रत्येक पंक्ति में 11 वर्ण हैं। अतः यह इन्द्रवज्रा है।

32. मात्रिक छन्दों में मात्रा कितने प्रकार की होती है?

- (a) तीन (b) दो  
(c) चार (d) पाँच

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

किसी स्वर के उच्चारण में लगने वाले समय की अवधि को मात्रा कहा जाता है। 'कल', 'कला', 'मन्ता' और 'मन्त' मात्रा के पर्यायवाचक शब्द हैं। इसके भी दो प्रकार हैं—ह्रस्व या लघु तथा दीर्घ या गुरु। लघु मात्रा में 1 मात्रा मानी जाती है। इसका संकेत चिह्न (l) है। दीर्घ मात्रा में 2 मात्रा मानी जाती है। इसका संकेत चिह्न (S) होता है, जिन्हें अवग्रह चिह्न भी कहते हैं।

33. निम्न में कौन मात्रिक छन्द है?

- (a) दोहा (b) चौपाई  
(c) रोला (d) ये सभी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, कुण्डलियाँ, छप्पय, हरिगीतिका, उल्लाहा, गीतिका, बरवै इत्यादि मात्रिक छन्द हैं।

34. केवल मात्रिक छन्द किस विकल्प में हैं, छाँटिए—

- (a) दोहा, द्रुतविलम्बित, सवैया (b) सोरठा, इन्द्रवज्रा, मन्दाक्रान्ता  
(c) चौपाई, दोहा, रोला (d) मन्दाक्रान्ता, सवैया, चौपाई

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. “या लकुटी अरु कामरिया पुर राज तिहूँ, पुर को तजि डारौ” में प्रयुक्त छन्द है—

- (a) कवित्त (b) सवैया  
(c) बरवै (d) दोहा

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्ति में सवैया छन्द है। यह एक वार्णिक समवृत्त छन्द है। इसके एक चरण में 22 से लेकर 26 तक अक्षर होते हैं।

36. “नेही महा ब्रजभाषा प्रवीन’

और सुन्दरतानि के भेद को जाने।

.....

भाषा प्रवीन सुछन्द सदा रहै,

सो घनजी के कवित्त बखाने।’

कवि प्रशस्ति में लिखा गया उक्त सवैया किसका है?

- (a) ब्रजनाथ का (b) घनानन्द का  
(c) ठाकुर का (d) बोधा का

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

घनानन्द और उनकी रचना की प्रशस्ति में ब्रजनाथ ने बखान करते हुए कहा है—

“नेही महा ब्रजभाषा प्रवीन और सुन्दरतानि के भेद को जाने।

जोग-वियोग की रीति में कोवि भवना-भेद स्वरूप को ठाने।।

चाह के रंग में भीज्यो हियौ, बिछुरे-मिले प्रीतम सातिन माने।

भाषा प्रवीन सुछन्द सदा रहे, सो घनजी के कवित्त बखाने।”

37. मात्रिक विषम संयुक्त छन्द है—

- (a) छप्पय (b) कुण्डलियाँ  
(c) हरिगीतिका (d) सोरठा

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

कुण्डलियाँ मात्रिक विषम छन्द है। इसमें छः चरण होते हैं। दोहा और रोला छन्दों को मिलाने से यह छन्द बनता है। इस छन्द के प्रथम चरण की रचना दोहे के प्रथम और द्वितीय चरण को मिलाकर होती है। फिर दोहे के तृतीय और चतुर्थ चरण को मिलाने से इसका द्वितीय चरण बनता है। अन्त में रोले के चरण क्रमशः इसके तृतीय, चतुर्थ, पंचम और षष्ठम चरण बनते हैं। दोहे का चतुर्थ चरण रोले के प्रथम चरण में दुहराया जाता है और दोहे के प्रारम्भ का शब्द रोले के अन्त में आता है।

38. इनमें से किस छन्द में प्रथम व अन्तिम शब्द समान होता है?

- (a) छप्पय (b) कुण्डलिनी  
(c) इन्द्रवज्रा (d) उपजाति

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

‘कुण्डलियाँ’ विषम मात्रिक संयुक्त छन्द है। दोहा और रोला छन्दों को मिलाने से यह छन्द बनता है। इसमें 6 चरण होते हैं। इस छन्द में प्रथम दो पंक्तियाँ दोहा की एवं अन्तिम चार पंक्तियाँ रोला की होती हैं। दोहे का अन्तिम चरण अर्थात् चौथा चरण रोले के प्रथम चरण में दुहराया जाता है तथा दोहे के प्रारम्भ का शब्द रोले के अन्त में आता है। प्रत्येक पंक्ति में 24-24 मात्राएँ होती हैं।



39. 'सरसी' छन्द में होता है-

- (a) 27 मात्राएँ, 16, 11 पर यति, अन्त में लघु-गुरु  
(b) 28 मात्राएँ, 16, 12 पर यति, अन्त में लघु-गुरु  
(c) 28 मात्राएँ, 16, 12 पर यति, अन्त में गुरु-लघु  
(d) 27 मात्राएँ, 16, 11 पर यति, अन्त में गुरु-लघु

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'सरसी' छन्द के प्रत्येक चरण में 27 मात्राएँ होती हैं। 16 और 11 पर यति होती है और छन्द के अन्त में (सम चरणान्त) गुरु-लघु होता है। पहली 16 मात्राओं की लय चौपाई की तरह तथा शेष 11 मात्राओं की लय दोहे के दूसरे चरण की तरह होती है।

40. अनुष्टुप है-

- (a) एक छन्द (b) एक अलंकार  
(c) एक रस (d) एक गुण

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'अनुष्टुप' एक छन्द है। जिस छन्द में पंचम अक्षर प्रत्येक चरण में लघु हो, परन्तु सप्तम अक्षर केवल दूसरे तथा चौथे चरण में लघु हो, षष्ठम अक्षर प्रत्येक चरण में गुरु हो, उसे पद्य कहते हैं। पद्य को ही श्लोक या अनुष्टुप भी कहते हैं।

41. घनाक्षरी छन्द है-

- (a) मात्रिक (b) वार्णिक  
(c) आक्षरिक (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

घनाक्षरी वार्णिक छन्द है। घनाक्षरी में 30 से लेकर 33 वर्णों का एक चरण होता है और 16-15 वर्णों पर प्रधान यति तथा समस्त चरण में 8, 8, 8, 7 वर्णों पर साधारण यति होता है। अन्तिम वर्ण गुरु और चारों चरणों में समान तुक आवश्यक है।

42. छप्पय में होते हैं-

- (a) प्रथम चार चरण रोला के और अन्तिम दो चरण उल्लाला के  
(b) प्रथम दो चरण रोला के और अन्तिम चार चरण उल्लाला के  
(c) प्रथम चार चरण चौपाई के और अन्तिम दो चरण दोहा के  
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

छप्पय मात्रिक विषम और संयुक्त छन्द है। इस छन्द के छह चरण होते हैं। प्रथम चार चरण रोला के और शेष दो चरण उल्लाला के। प्रथम-द्वितीय और तृतीय-चतुर्थ के योग होते हैं। छप्पय में उल्लाला के सम-विषम चरणों का योग है। यह योग  $15+13=28$  मात्राओं वाला ही अधिक प्रचलित है। जैसे—

जहाँ स्वतन्त्र विचार न बदले मन में मुख में,  
जहाँ न बाधक बनें सबल निबलों के सुख में।  
सबको जहाँ समान निजोन्नति का अवसर हो,  
शान्तिदायिनी निशा, हर्षसूचक वासर हो॥  
सब भौँति सुशासित हो जहाँ, समता के सुखकर नियम॥  
बस उसी स्वशासित देश में, जगें हे जगदीश हम॥

43. किस छन्द में चार से अधिक चरण होते हैं?

- (a) रोला (b) बरवै  
(c) छप्पय (d) सोरठा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. निराला के अनुसार, 'हिन्दी में मुक्तकाव्य किस छन्द की बुनियादी पर सफल हो सकता है?

- (a) रोला (b) दोहा  
(c) चौपाई (d) कवित्त

डायट (प्रावक्त) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

निराला जी कवित्त छन्द को हिन्दी का जातीय छन्द मानते हैं—'हिन्दी में मुक्त काव्य कवित्त-छन्द की बुनियाद पर सफल हो सकता है। निराला के अनुसार, यह छन्द चिरकाल से इस जाति के कण्ठ का हार हो रहा है। यदि हिन्दी का 'जातीय छन्द' चुना जाय, तो वह यही होगा।

45. 'रामचरितमानस' नामक महाकाव्य की रचना-शैली है-

- (a) दोहा-चौपाई शैली (b) बरवै शैली  
(c) मसनवी शैली (d) उपर्युक्त सभी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'रामचरितमानस' नामक महाकाव्य की रचना दोहा-चौपाई शैली में की गयी है। दोहा अर्द्ध मात्रिक छन्द है। दोहा छन्द के विषम चरणों में 13 मात्राएँ और सम चरणों में 11 मात्राएँ होती हैं। चौपाई सम मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।

# अलंकार

1. अलंकारों की महत्ता के सम्बन्ध में इनमें से कौन-सा कथन सही नहीं है?

- (a) अलंकारों से काव्य-सौन्दर्य में वृद्धि होती है।
- (b) अलंकारों के बिना काव्य-रचना सम्भव नहीं है।
- (c) अलंकार काव्य-सौन्दर्य उत्पन्न करते हैं।
- (d) अलंकारों से काव्य में रोचकता और प्रभविष्णुता आती है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

अलंकार काव्य सौन्दर्य उत्पन्न नहीं करते हैं, बल्कि काव्य-सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं। अन्य विकल्प अलंकारों की महत्ता के सम्बन्ध में सही हैं।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा अलंकार-भेद नहीं है?

- (a) शब्दालंकार
- (b) छन्दालंकार
- (c) अर्थालंकार
- (d) उभयालंकार

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

अलंकार के तीन भेद माने जाते हैं- शब्दालंकार, अर्थालंकार तथा उभयालंकार। छन्दालंकार, अलंकार का भेद नहीं है।

## □ अनुप्रास अलंकार

1. इनमें से जो अनुप्रास अलंकार का लक्षण न हो, उसे छाँटिए।

- (a) शब्द के प्रारम्भ अथवा अन्त में वर्णों की आवृत्ति
- (b) एक या अनेक वर्णों की क्रमानुसार आवृत्ति
- (c) पंक्ति की सम्पूर्णतया आवृत्ति
- (d) एक ही उच्चारण स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

पंक्ति की सम्पूर्णतया आवृत्ति अनुप्रास अलंकार का लक्षण नहीं है। अन्य विकल्पों में अनुप्रास अलंकार के लक्षण हैं।

2. 'सो सुख सुजस सुलभ मोहि स्वामी' में कौन-सा अलंकार है?

- (a) उत्प्रेक्षा
- (b) रूपक
- (c) अनुप्रास
- (d) व्यतिरेक

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

अनुप्रास शब्द 'अनु' तथा 'प्रास' शब्दों से मिलकर बना है। 'अनु' शब्द का अर्थ है-बार-बार तथा 'प्रास' का अर्थ है-वर्ण। जहाँ स्वर की समानता के बिना भी वर्णों की बार-बार आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्ति में 'स' तथा 'म' वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो रही है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

☞ अनुप्रास के पाँच भेद होते हैं-

1. छेकानुप्रास, 2. वृत्यानुप्रास, 3. लाटानुप्रास, 4. श्रुत्यानुप्रास और 5. अन्त्यानुप्रास। इनमें तीन महत्वपूर्ण हैं-छेकानुप्रास, वृत्यानुप्रास और लाटानुप्रास।

☞ जहाँ कोई वर्ण केवल दो बार आये, वहाँ छेकानुप्रास होता है।

☞ जहाँ किसी वर्ण की आवृत्ति वृत्तियों के अनुसार हो, वहाँ वृत्यानुप्रास होता है। वृत्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं-1. कोमला, 2. परुषा तथा 3. उपनागरिका।

☞ जिस रचना में य,र,ल,व, स आदि कोमल अक्षरों की प्रधानता हो, वहाँ कोमला, जहाँ ओज की व्यंजना करने वाले कठोर शब्द आएँ, जैसे 'ट' वर्ण के वर्ण अथवा द्वित्य वर्ण वहाँ परुषा वृत्ति होती है। उपनागरिका वृत्ति में सानुनासिक वर्ण आते हैं।

☞ लाटानुप्रास में ऐसे शब्द या वाक्य दुबारा आते हैं, जिनका सामान्य अर्थ तो एक ही होता है, किन्तु अन्वय करने से पूरी उक्ति का अर्थ बदल जाता है।

3. 'जहाँ वर्णों की आवृत्ति बार-बार होती है' उसमें कौन-सा अलंकार होता है?

- (a) यमक
- (b) श्लेष
- (c) अनुप्रास
- (d) उत्प्रेक्षा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'पराधीन जो जन, नहीं स्वर्ग, नरक ता हेतु।

पराधीन जो जन नहीं, स्वर्ग, नरक ता हेतु॥'

उपर्युक्त पंक्तियों में अलंकार है-

- (a) अनुप्रास
- (b) यमक
- (c) श्लेष
- (d) उपमा

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्ति में वाक्य दुबारा आ रहा है, जिसका सामान्य अर्थ तो एक ही है, किन्तु अन्वय करने से पूरी उक्ति का अर्थ बदल जा रहा है। प्रस्तुत पंक्ति के पूर्वार्द्ध का अर्थ है कि जो मनुष्य पराधीन है, उसके लिए स्वर्ग नरक है और उत्तरार्द्ध का अर्थ है कि जो मनुष्य पराधीन नहीं, उसके लिए नरक भी स्वर्ग है। यह लाटानुप्रास अलंकार के अन्तर्गत आता है।

5. “राम हृदय जाके नहीं, विपति सुमंगल ताहि।  
रामहृदय जाके, नहीं विपति सुमंगल ताहि।”  
इसमें कौन-सा अनुप्रास है?

- (a) श्रुत्यानुप्रास (b) वृत्यानुप्रास  
(c) लाटानुप्रास (d) छेकानुप्रास

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पंक्ति के पूर्वार्द्ध का अर्थ है कि जिनके हृदय में ‘राम’ नहीं हैं, उन्हें विपति आती है और उत्तरार्द्ध का अर्थ है कि जिनके हृदय में राम हैं, उन्हें किसी प्रकार की विपति नहीं आती है। अतः यह लाटानुप्रास अलंकार है।

6. ‘जन्मी तू जन्मी भई, विधि सन कछु न बसाय’ में कौन-सा अलंकार है?

- (a) छेकानुप्रास (b) वृत्यानुप्रास  
(c) लाटानुप्रास (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

जब एक शब्द या वाक्यखण्ड की आवृत्ति उसी अर्थ में हो, पर तात्पर्य या अन्वय में भेद हो, तो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्ति लाटानुप्रास का उदाहरण है।

7. “तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।  
झुके कूल सो जल परसन हित मनहुँ सुहाए॥”  
उपर्युक्त पंक्तियों में अलंकार है-

- (a) उत्प्रेक्षा (b) वृत्यानुप्रास  
(c) शब्दार्थालंकार (d) स्वभावोक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

जहाँ एक अथवा एक से अधिक वर्ण समूह की एक से अधिक बार आवृत्ति हो, वहाँ वृत्यानुप्रास होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में कई बार ‘त’ की आवृत्ति हुई है। अतः वृत्यानुप्रास अलंकार है।

8. जहाँ एक व्यंजन की आवृत्ति एक या अनेक बार हो, वहाँ होता है-

- (a) छेकानुप्रास (b) वृत्यानुप्रास  
(c) लाटानुप्रास (d) तीनों

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## □ यमक अलंकार

1. ‘सूर-सूर तुलसी ससी उडगन केशवदास  
अब के कवि खद्योत सम जहँ-तहँ करत प्रकास॥  
इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है?

- (a) अनुप्रास (b) यमक  
(c) उत्प्रेक्षा (d) विरोधाभास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

यहाँ एक सूर का तात्पर्य सूरदास से तथा दूसरे सूर का तात्पर्य सूर्य से है। अतः प्रस्तुत पंक्तियों में यमक अलंकार है।

सूर-सूर तुलसी ससी, उडगन केशवदास।  
अब के कवि खद्योत सम, जहँ-तहँ करत प्रकास॥

अर्थात् सूर सूर्य हैं, तुलसी चन्द्रमा हैं और केशवदास नक्षत्र हैं और आधुनिक कवि जुगनुओं के समान जहाँ-तहाँ प्रकाश फैलाते हैं। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को गलत माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना।

2. ‘कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय’ में कौन-सा अलंकार है?

- (a) अनुप्रास (b) रूपक  
(c) यमक (d) श्लेष

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पंक्ति में ‘कनक’ शब्द दो बार आया है, दोनों का अर्थ अलग-अलग है। पहले शब्द का अर्थ है ‘धतूरा’ और दूसरे शब्द का अर्थ है ‘सोना’। जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आये अर्थात् उसकी आवृत्ति हो और प्रत्येक स्थान पर भिन्न-भिन्न अर्थ दे, वहाँ यमक अलंकार होता है।

3. ‘कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय’ में कौन-सा अलंकार है?

- (a) यमक (b) अनुप्रास  
(c) श्लेष (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. जहाँ शब्दों, शब्दांशों या वाक्यांशों की आवृत्ति हो, किन्तु उनके अर्थ भिन्न हों, वहाँ निम्न अलंकार होता है-

- (a) श्लेष (b) वक्रोक्ति  
(c) यमक (d) रूपक

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'तरणि के ही संग तरल तरंग में, तरणि डूबी थी हमारी ताल में।' इसमें प्रयुक्त अलंकार है-

- (a) श्लेष (b) यमक  
(c) रूपक (d) उत्प्रेक्षा

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

पद्यांश में 'तरणि' का प्रयोग दो बार हुआ है एवं दोनों का अर्थ अलग-अलग है। इसमें पहले तरणि का अर्थ सूर्य है, जबकि दूसरे तरणि का अर्थ नाव है। अतः यहाँ पर यमक अलंकार है।

6. 'खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा' रेखांकित शब्दों का अलंकार है-

- (a) यमक (b) श्लेष  
(c) उपमा (d) रूपक

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पद्यांश में प्रथम 'कुल' शब्द का अर्थ समूह है। द्वितीय, तृतीय कुल-कुल शब्द पक्षियों के कुल-कुल कलरव के सूचक हैं। कुल शब्द के भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होने के कारण यहाँ यमक अलंकार है।

7. तो पर वारैं उरबसी, सुन राधिके सुजान।

तू मोहन की उर बसी कै हवै उरबसी सुजान॥

उपर्युक्त दोहे में कौन-सा अलंकार है?

- (a) यमक (b) अनुप्रास  
(c) श्लेष (d) वक्रोक्ति

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

प्रस्तुत दोहे में पहले उरबसी का अर्थ अप्सरा नाम की एक उर्वशी, दूसरे उरबसी का अर्थ हृदय में बसी तथा तीसरे उरबसी का अर्थ एक आभूषण के लिए प्रयुक्त हुआ है। अतः यहाँ यमक अलंकार है।

## □ श्लेष अलंकार

1. "चिरजीवौ जोरी जुरे, क्यों न सनेह गँगीर।  
को घटि ये वृषभानुजा,वे हलधर के वीर॥"

- (a) वक्रोक्ति (b) यमक  
(c) श्लेष (d) अनुप्रास

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों के कथन को 'श्लेष' कहते हैं। इनमें दो बातें आवश्यक हैं—(क) एक शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, (ख) एक से अधिक अर्थ प्रकरण में अपेक्षित हों। श्लेष का अर्थ होता है—चिपका हुआ। श्लिष्ट शब्द में एक से अधिक अर्थ चिपके रहते हैं। प्रस्तुत पंक्ति में श्लेष अलंकार है। यहाँ 'वृषभानुजा' और 'हलधर' श्लिष्ट शब्द हैं, जिनसे बिना आवृत्ति के ही भिन्न-भिन्न अर्थ निकलते हैं। 'वृषभानुजा' से 'वृषभानु की बेटी' (राधा) और 'वृषभ की बहन' (गाय) का तथा 'हलधर के वीर' से बलदेव (कृष्ण के भाई) और साँड़ (बैल के भाई) का अर्थ निकलता है।

2. जिस काव्य-पंक्ति में प्रयुक्त किसी एक ही शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, उस पंक्ति में अलंकार होता है-

- (a) रूपक (b) अनुप्रास  
(c) यमक (d) श्लेष

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. श्लेष अलंकार होता है-

- (a) शब्दालंकार (b) अर्थालंकार  
(c) उभयालंकार (d) उपर्युक्त सबसे अलग

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

जहाँ शब्दों के कारण कविता में सौन्दर्य या चमत्कार आ जाता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं। इनमें अनुप्रास, यमक, श्लेष तथा वक्रोक्ति प्रमुख अलंकार हैं।

4. निम्नांकित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइये-  
रनित भुंग घंटावली झरित दान मधुनीर।  
मंद-मंद आवत चाल्यो कुंजरु कुंज समीर॥

- (a) उत्प्रेक्षा (b) रूपक  
(c) यमक (d) श्लेष

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)



उपर्युक्त पंक्ति में श्लेष अलंकार है। जब काव्य में एक शब्द एक बार प्रयोग हो, और उसका अर्थ भिन्न-2 हो, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियाँ बिहारी द्वारा रचित हैं। यहाँ समीर का दो अर्थ हैं। पहले 'समीर' शब्द का अर्थ मदमस्त हाथी तथा दूसरे 'समीर' शब्द का अर्थ कुंज में प्रवाहित मंद वायु।

5. 'अजौ तरयौना ही रह्यो श्रुति सेवत इक रंग' में अलंकार है-

- (a) श्लेष (b) रूपक  
(c) उपमा (d) उत्प्रेक्षा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

तरयौना (पार न लगना) के टुकड़े करके, भिन्न-भिन्न अर्थ निकाले गये हैं। अतः यहाँ श्लेष अलंकार है।

## □ रूपक अलंकार

1. निम्न में से कौन अर्थालंकार है?

- (a) श्लेष (b) यमक  
(c) वक्रोक्ति (d) रूपक

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

जहाँ अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है। इसमें उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, द्रष्टान्त, संदेह, अतिशयोक्ति, प्रतीप, भ्रान्तिमान, दीपक, व्यतिरेक, अपहृति, अनन्वय, उल्लेख, मानवीकरण इत्यादि अलंकार हैं।

2. उदित उदय गिरि-मंच पर रघुवर बाल पतंग।

विकसे सन्त सरोज सब, हरषे लोचन-भृंग।

उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

- (a) उपमा (b) रूपक  
(c) उत्प्रेक्षा (d) दृष्टान्त

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जहाँ उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाय, वहाँ रूपक अलंकार होता है। रूपक के तीन भेद होते हैं—निरंग, सांग तथा परम्परित। निरंग में केवल उपमेय और उपमान का अभेद रहता है। जहाँ उपमेय में उपमान के अंगों का भी आरोप हो, वहाँ सांग रूपक होता है। परम्परित रूपक में एक रूपक के द्वारा दूसरे रूपक की पुष्टि होती है। उपर्युक्त पंक्तियों में सांग रूपक अलंकार है। प्रस्तुत पंक्तियों में जनक सभा में रखे गए धनुष का वर्णन है, जिसे तोड़ने के लिए श्री राम मंच पर चढ़ गए हैं। इसमें मंच, रघुवर (राम), संत, लोचन (नेत्र) उपमेय तथा उपमान उदय गिरि, बाल पतंग (सूर्य), सरोज और भृंग (भ्रमर) उपमान हैं।

3. 'उदित उदय गिरि-मंच पर रघुवर बाल पतंग' में कौन-सा अलंकार है?

- (a) उपमा (b) रूपक  
(c) उत्प्रेक्षा (d) व्यतिरेक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'चरण कमल बन्दौ हरि राई' में कौन-सा अलंकार है?

- (a) यमक (b) रूपक  
(c) श्लेष (d) अनुप्रास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियों में रूपक अलंकार है। इस पंक्ति का अर्थ है 'कमल रूपी चरण वाले हरि की मैं वन्दना करता हूँ। जहाँ रूपी शब्द का प्रयोग हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है। उपमेय और उपमान में कोई भेद नहीं होता। दोनों की स्थिति समान होती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

इन पंक्तियों में भी रूपक अलंकार है—

- मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।
- पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
- आए महंत वसंत।
- तुलसी मन मन्दिर में बिहरें।

5. 'चरण कमल बन्दौ हरि राई' में कौन-सा अलंकार है?

- (a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा  
(c) रूपक (d) श्लेष

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'मुख रूपी चाँद पर राहु भी घोखा खा गया' पंक्तियों में अलंकार है-

- (a) श्लेष (b) वक्रोक्ति  
(c) उपमा (d) रूपक

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

जिस काव्य पंक्ति या वाक्य में उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाये, उस अलंकार को रूपक कहा जाता है। यानी उपमेय उपमान में कोई अन्तर न दिखाई पड़े। प्रस्तुत पंक्तियों में इसी का वर्णन किया गया है।

7. मुख-कमल समीप सजे थे, दो किसलय दल पुराइन के।  
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

- (a) रूपक (b) अतिशयोक्ति  
(c) उत्प्रेक्षा (d) उपमा

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद के 'आँसू' नामक रचना से ली गयी हैं।  
यहाँ उपमेय में उपमान का आरोप किया गया है। अतः यहाँ रूपक  
अलंकार है।

8. 'सखि नील नभस्सर से उतरा, यह हंस अहा तिरता-तिरता।  
अब तारक मौक्तिक शेष नहीं, निकला जिनको चरता-चरता।'  
में रूपक अलंकार का कौन-सा प्रकार प्रयुक्त हुआ है?

- (a) सांग रूपक (b) निरंग रूपक  
(c) परम्परित रूपक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पद्यांश का अर्थ है कि तारागणरूपी मोती इसलिए समाप्त हो गये,  
क्योंकि आकाशरूपी सरोवर से निकले सूर्यरूपी हंस ने उन्हें चुग लिया  
है। यहाँ तारागणरूपी मोतियों में सूर्यरूपी हंस का आरोप किया गया है।  
अतः यहाँ परम्परित रूपक है।

## □ उत्प्रेक्षा अलंकार

1. "नील परिधान वीच सुकुमार,  
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।  
खिला हो ज्यों बिजली का फूल  
मेघ बन वीच गुलाबी रंग"।  
इस पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

- (a) उत्प्रेक्षा (b) श्लेष  
(c) रूपक (d) उपमा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(\*)

ओमप्रकाश शर्मा द्वारा रचित 'काव्यालोचना : भारतीय काव्यशास्त्र की  
आधुनिकतम कृति' में उपर्युक्त पंक्ति में वस्तुत्प्रेक्षा अलंकार दर्शित है,  
जबकि हरिश्चन्द्र वर्मा द्वारा रचित 'साहित्य-चिन्तन के नये आयाम' में  
काव्य बिम्ब प्रदर्शित किया गया है। किन्हीं-किन्हीं पुस्तकों में इन पंक्तियों  
को उपमा अलंकार बताया गया है। अतः उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा  
चयन बोर्ड ने अपनी संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से  
बाहर कर दिया है।

2. जब उपमेय में उपमान की संभावना प्रकट की जाय, तब होता है—

- (a) उपमा अलंकार (b) रूपक अलंकार  
(c) दीपक अलंकार (d) उत्प्रेक्षा अलंकार

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

जब उपमेय में उपमान की सम्भावना प्रकट की जाय, तब उत्प्रेक्षा अलंकार  
होता है। मानो, मानहुँ, मनहुँ, मनु, जानो, जानहुँ, जनु, निश्चय आदि  
उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द हैं।

### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ उत्प्रेक्षा अलंकार तीन प्रकार का होता है—(1) वस्तुत्प्रेक्षा, (2) हेतुत्प्रेक्षा  
और (3) फलोत्प्रेक्षा।
- ☛ जहाँ एक वस्तु में दूसरी वस्तु के आरोप की सम्भावना की जाय, वहाँ  
वस्तुत्प्रेक्षा होती है।
- ☛ जहाँ सम्भावना के मूल में कोई कारण या हेतु हो, वहाँ हेतुत्प्रेक्षा होती है।
- ☛ जहाँ किसी क्रिया के मूल में किसी फल की सम्भावना हो, वहाँ  
फलोत्प्रेक्षा होती है।

## □ उपमा अलंकार

1. 'पीपर पात सरिस मन डोला' में मन क्या है?

- (a) उपमेय (b) उपमान  
(c) वाचक (d) धर्म

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्ति में उपमा के चारों अंगों के उपस्थित होने के कारण 'पूर्णोपमा  
अलंकार' है, जिसका वर्णन इस प्रकार है— पीपरपात - उपमान, मन -  
उपमेय, डोला - साधारण धर्म और सरिस - वाचक शब्द। जब दो भिन्न  
वस्तुओं में साधर्म्य अर्थात् धर्म की समानता दिखायी जाए, तो वहाँ उपमा  
अलंकार होता है। संस्कृत साहित्य में इस अलंकार का विशेष महत्व है।  
यहाँ तक कि आचार्यों ने इसे संपूर्ण अलंकारों की जननी तक कहा है।  
इसके चार अंग हैं—उपमेय, उपमान, वाचक शब्द और धर्म। उपमा अलंकार  
के दो भेद हैं—I. पूर्णोपमालंकार और II. लुप्तोपमालंकार। जब उपमा के  
चारों अंग उपस्थित रहते हैं, तब 'पूर्णोपमा' तथा जब इनमें से किसी एक  
की कमी हो, तो लुप्तोपमालंकार होता है।

2. 'मोम-सा तन घुल चुका  
अब दीप-सा मन जल चुका है।'  
उपर्युक्त पंक्तियों में अलंकार है—

- (a) रूपक (b) पूर्णोपमा  
(c) दृष्टान्त (d) उपमा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

जिस उपमा में चारों अंग विद्यमान हो। वहाँ पूर्णोपमा अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में मोम तथा दीप उपमान, तन तथा मन उपमेय, वाचक शब्द-सा दोनों में साधारण धर्म-धुल चुका तथा जल चुका है। अतः यहाँ पूर्णोपमा अलंकार है।

3. जिस धर्मसाम्य को आधार बनाकर उपमेय-उपमान में एकता स्थापित की जाती है, उसे कहते हैं
- (a) साधारण धर्म  
(b) वाचक  
(c) उपमान  
(d) उपमेय

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

जिस धर्मसाम्य को आधार बनाकर उपमेय-उपमान में एकता स्थापित की जाती है, उसे वाचक कहते हैं। उपमेय तथा उपमान में उपस्थित वह गुण जो दोनों में समान रूप से पाया जाता है, साधारण धर्म कहलाता है। जिससे उपमा दी जाय, उसे उपमान तथा जिसको उपमा दी जाय उसे उपमेय कहते हैं।

## □ भ्रान्तिमान अलंकार

1. “पायें महावर देन को नाइन बैठी आया  
फिर फिर जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाया”  
में कौन-सा अलंकार है?
- (a) अतिशयोक्ति  
(b) भ्रान्तिमान  
(c) संदेह  
(d) प्रतीप

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

इस पंक्ति में भ्रान्तिमान अलंकार है, जहाँ सादृश्य के कारण किसी वस्तु में दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाता है, वहाँ ‘भ्रम’ या भ्रान्तिमान अलंकार होता है। उपर्युक्त दोहे में नाइन को नायिका की एड़ी में महावर की गोली का भ्रम हो गया है। एड़ी इतनी लाल है कि नाइन उसे महावरी की गोली समझकर बार-बार मीड़कर रंग निकालना चाहती है। यहाँ भ्रान्तिमान अलंकार है।

2. निम्न पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?  
नाक का मोती अधर की कान्ति से,  
बीज दाड़िम का समझ कर भ्रान्ति से,

देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,  
सोचता है अन्य शुक यह कौन है।

- (a) सन्देह  
(b) भ्रान्तिमान  
(c) प्रतीप  
(d) निदर्शना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्ति में भ्रान्तिमान अलंकार है। यहाँ घर में पाले शुक को, नायिका की नाक और मोती में अनार का दाना पकड़े शुक का भ्रम हो रहा है। जहाँ समता के कारण किसी वस्तु में (उपमेयों में) अन्य वस्तु का (उपमान का) भ्रम हो जाय, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है।

## □ विभावना अलंकार

1. ‘बिनु पद चलै सुनै बिनु काना’ इसमें कौन-सा अलंकार है?
- (a) असंगति  
(b) श्लेष  
(c) रूपक  
(d) वक्रोक्ति

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(\*)

जहाँ बिना कारण के ही कार्य हो जाय, वहाँ विभावना अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में बिना पैर चलना, बिना कान सुनना तथा बिना हाथ के कार्य होना, बिना कारण ही सम्पादित हो रहे हैं। अतः यहाँ विभावना अलंकार है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (a) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया।

2. ‘बिनु पद चलै सुनै बिनु काना’  
कर बिनु कर्म करै विधि नाना’ में कौन-सा अलंकार है?
- (a) विभावना  
(b) विशेषोक्ति  
(c) असंगति  
(d) दृष्टान्त

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. जहाँ कारण बिना कार्य की उत्पत्ति होती हो, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?
- (a) विभावना  
(b) विशेषोक्ति  
(c) असंगति  
(d) दीपक

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'कारण के बिना कार्य के होने का वर्णन' होने पर कौन-सा अलंकार होता है?

- (a) असंगत (b) विभावना  
(c) विशेषोक्ति (d) व्यतिरेक

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## □ असंगति अलंकार

1. दृग उरझत दूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।

परत गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति।।

उक्त दोहे में प्रयुक्त अलंकार है—

- (a) विषम (b) असंगति  
(c) व्यतिरेक (d) निदर्शना

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्ति में असंगति अलंकार है। इस दोहे में उलझते हैं दृग (कारण), दूटता है कुटुम अर्थात् कुटुम्ब (कार्य) तथा दूटता है कुटुम (कारण) और जुड़ती है चतुरों के चित में प्रीति (कार्य)। इसी प्रकार जुड़ती है चतुरों के चित में प्रीति (कारण) और गाँठ पड़ती है दुर्जनों के हृदय में (कार्य)। अतः कारण और कार्य में संगति न होने से यहाँ असंगति अलंकार है।

2. दृग उरझत, दूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।

परत गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति।।

में कौन-सा अलंकार है?

- (a) निदर्शना (b) दृष्टान्त  
(c) असंगति (d) विभावना

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'दृग उरझत दूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति' में कौन-सा अलंकार है?

- (a) विरोधाभास (b) असंगति  
(c) विभावना (d) निदर्शना

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## □ दृष्टान्त अलंकार

1. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

एक म्यान में दो तलवारें कभी नहीं रह सकती हैं।

किसी और पर प्रेम नारियाँ पति का क्या सह सकती हैं?

- (a) दृष्टान्त (b) समासोक्ति  
(c) विभावना (d) विरोधाभास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

जहाँ पहले कोई बात कहकर उससे मिलती-जुलती बात द्वारा दृष्टान्त दिया जाय, लेकिन समानता किसी शब्द द्वारा प्रकट न हो, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ है कि एक म्यान में दो तलवारों का रहना वैसे ही असंभव है, जैसे कि एक पति का दो नारियों पर अनुरक्त रहना पत्नी सहन नहीं कर सकती। अतः यहाँ दृष्टान्त अलंकार है।

## □ व्यतिरेक अलंकार

1. सम सुबरन सुखमाकर, सुखद न थोर।

सीय अंग सखि कोमल, कनक कठोर।।

इस छन्द में प्रयुक्त अलंकार है—

- (a) निदर्शना  
(b) व्यतिरेक  
(c) समासोक्ति  
(d) अर्थान्तरन्यास

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जब किसी विशेष गुण के कारण उपमेय को उपमान की अपेक्षा अधिक ऊँचा दिखाया जाय अर्थात् उपमान की अपेक्षा उपमेय का उत्कर्ष वर्णन हो, तो व्यतिरेक अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में व्यतिरेक अलंकार है।

2. 'सम सुबरन सुखमाकर सुखद न थोर।

सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर।।'

इस उद्धरण में अलंकार है—

- (a) उपमा  
(b) परिसंख्या  
(c) अतिशयोक्ति  
(d) व्यतिरेक

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।



3. 'रघुवर जस प्रताप के आगे।

चन्द मन्द, रवि तापहिं त्यागे'॥

उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

- (a) उल्लेख (b) विभावना  
(c) उत्प्रेक्षा (d) व्यतिरेक

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

प्रस्तुत पंक्तियों में व्यतिरेक अलंकार है। यहाँ पर राम का गुण (उपमेय) चन्द्रमा तथा सूर्य के गुण (उपमान) से आधिक्य (उत्कर्ष) दिखाया गया है।

4. "जन्म सिंधु पुनि बंधु विष, दिन मलीन सकलंक।

सिय मुख समता पाव किमि चन्द बापुरो रंका।"

पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

- (a) अनन्वय (b) रूपक  
(c) उत्प्रेक्षा (d) व्यतिरेक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

जहाँ उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ विशेषता दिखायी जाय, वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है। समुद्र मंथन के 14 रत्नों में से चन्द्रमा का भी जन्म हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों में चन्द्रमा के बारे में कहा गया है कि खारे समुद्र में इसका जन्म हुआ, विष इसका भाई है, दिन में यह तेजस हो जाता है और कलंक से भी भरा हुआ है। बेचारा गरीब चन्द्रमा सीता के मुख की बराबरी कैसे कर सकता है। यहाँ उपमान से सकारण उत्कर्ष दिखाया जा रहा है। अतः व्यतिरेक अलंकार है।

5. "जन्म सिंधु पुनि बंधु विष, दिन मलीन सकलंक।

सिय मुख समता पाव किमि चन्द बापुरो रंका।"

इस उद्धरण में अलंकार है:

- (a) असंगति (b) व्यतिरेक  
(c) अनन्वय (d) प्रतीप

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## □ अतिशयोक्ति अलंकार

1. 'नितप्रति पून्यो ही रहे आन्न ओप उजास' में अलंकार है—

- (a) उत्प्रेक्षा (b) उपमा  
(c) अनुप्रास (d) अतिशयोक्ति

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ है नायिका के मुख पर व्याप्त उजाले से वहाँ रोज पूर्णिमा ही रहती है। मुख सौन्दर्य का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया गया है, अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

## □ विशेषोक्ति अलंकार

1. 'नीर भरे नित प्रति रहैं तरु न प्यास बुझाई'

पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

- (a) अतिशयोक्ति (b) विशेषोक्ति  
(c) विभावना (d) उपमा

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्ति में विशेषोक्ति अलंकार है। यहाँ कारण के रहते हुए भी कार्य सम्पन्न नहीं हो पा रहा है अर्थात् नयनों में नीर भरा हुआ बताये जाने पर भी प्यास नहीं बुझ रही।

## □ अर्थान्तरन्यास

1. जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग।

चन्दन विष व्याप्त नहीं लपटे रहत भुजंग।

इस दोहे में कौन-सा अलंकार है?

- (a) निदर्शना (b) अनुप्रास  
(c) अर्थान्तरन्यास (d) सन्देह

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

जहाँ सामान्य कथन का विशेष से या विशेष कथन का सामान्य से समर्थन किया जाय वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है। प्रस्तुत दोहे में यही उक्ति दुहरायी जा रही है। अतः यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

## □ अत्युक्ति अलंकार

1. जहाँ किसी वस्तु का लोक-सीमा से इतना बढ़ कर वर्णन किया जाय

कि वह असम्भव की सीमा तक पहुँच जाय, वहाँ अलंकार होता है—

- (a) अतिशयोक्ति (b) विरोधाभास  
(c) अत्युक्ति (d) उत्प्रेक्षा

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

जहाँ किसी वस्तु का लोक-सीमा से इतना बढ़ कर वर्णन किया जाय कि वह असम्भव की सीमा तक पहुँच जाय, वहाँ अत्युक्ति अलंकार होता है। जैसे—

लखन सकोप वचन जब बोले।

डगमगानि महि दिग्गज डोले।

यहाँ लक्ष्मण के क्रोधित होकर बोलने से पृथ्वी डगमगा उठी और दिग्गज काँप उठे। अतः मिथ्यात्वपूर्ण वर्णन होने से अत्युक्ति अलंकार है। अतिशयोक्ति और अत्युक्ति मिलते-जुलते अलंकार हैं। दोनों में केवल अन्तर यह है कि उक्ति यदि सम्भव हो, तो अतिशयोक्ति और असम्भव हो, तो अत्युक्ति होगी।

## □ काकु वक्रोक्ति अलंकार

1. “में सुकुमारि नथ बन जोगू”-इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

- (a) सभंग श्लेष (b) अभंग श्लेष  
(c) श्लेष वक्रोक्ति (d) काकु वक्रोक्ति

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

“में सुकुमारि नथ बन जोगू। तुमहि उचित तप मो कहँ भोगू।” में ‘काकु वक्रोक्ति’ अलंकार है। जहाँ कहे हुए वाक्य का कंठ की ध्वनि की विशेषता से दूसरा अर्थ ग्रहण किया जाता है, वहाँ काकु वक्रोक्ति होता है। इसमें केवल वाणी प्रस्तुतीकरण होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ वक्रोक्ति का शाब्दिक अर्थ है वक्र (टेढ़ी) उक्ति (कथन)। अर्थात् कथन को सीधे न कहके टेढ़ा कहने वाला। वक्रोक्ति के दो भेद हैं- (i) श्लेष और (ii) काकु।

## □ अक्रमातिशयोक्ति अलंकार

1. “वह शर इधर गाण्डीव गुण से भिन्न जैसे ही हुआ।  
धड़ से जयद्रथ का उधर सिर छिन्न वैसे ही हुआ।”  
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सी अतिशयोक्ति है?

- (a) असम्बन्धातिशयोक्ति (b) सम्बन्धातिशयोक्ति  
(c) अक्रमातिशयोक्ति (d) अत्यन्तातिशयोक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

जहाँ कारण और कार्य का एक साथ होना वर्णित हो, वहाँ अक्रमातिशयोक्ति होती है। प्रस्तुत पंक्ति में शर (कारण) का गाण्डीव से छूटना और सिर का छिन्न होना (कार्य) दोनों का एक साथ कथन किया गया है। इसलिए यहाँ कारण और कार्य में क्रम का निषेध होने से ‘अक्रमातिशयोक्ति’ है। सामान्यतः कार्य कारण के बाद होता है, किन्तु यदि कवि कारण से पहले कार्य का होना वर्णन करे, तो वहाँ अत्यन्तातिशयोक्ति होगा।

## □ मानवीकरण अलंकार

1. अलंकार के सन्दर्भ में ‘मानवीकरण’ से क्या अभिप्राय है?

- (a) जीवात्मा का मानव बन जाना।  
(b) मनुष्य द्वारा करने योग्य।  
(c) वशीकरण द्वारा अन्य जीवों को मानव बना देना।  
(d) वह अलंकार जिसमें भावनाओं में मानव-गुण व कार्य का आरोप किया जाये।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

जिस अलंकार में भावनाओं में मानवगुण व कार्य का आरोप किया जाय, वहाँ ‘मानवीकरण’ अलंकार होता है।

## □ काव्यलिंग अलंकार

1. किसी युक्ति से समर्थित की गयी बात में कौन-सा अलंकार होता है?

- (a) व्यतिरेक (b) प्रतिवस्तूपमा  
(c) दृष्टान्त (d) काव्यलिंग

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

जहाँ किसी युक्ति से समर्थन का कारण बताया जाय वहाँ ‘काव्यलिंग’ अलंकार होता है। जैसे—

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाया

वा खाये बौराय नर, या पाये बौराया।

धतूरा खाने से नशा होता है, पर स्वर्ण पाने से भी नशा होता है। यहाँ इसी बात का समर्थन किया गया है कि स्वर्ण में धतूरे से ज्यादा नशा होता है। दोहे के उत्तरार्द्ध में कथन की पुष्टि हुई है।

## □ प्रतीप अलंकार

1. ‘उतरि नहाये जमुन जल जो सरीर सम स्याम’-पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

- (a) उपमा (b) प्रतीप  
(c) विशेषोक्ति (d) विभावना

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जहाँ प्रसिद्ध ‘उपमान’ को ‘उपमेय’ बना दिया जाय, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। ‘प्रतीप’ का अर्थ है उलटा। उपमान को उपमेय बना देना क्रम का उलट देना हुआ। इसीलिए जब प्रसिद्ध उपमान को उपमेय बना देते हैं तब ‘प्रतीप’ अलंकार होता है। यह उपमा अलंकार का उलटा होता है। प्रस्तुत पंक्ति में जमुना जल (जो श्यामता का प्रसिद्ध उपमान है) को उपमेय और श्याम शरीर को उपमान बना दिया, इसलिए यहाँ प्रतीप अलंकार है। जहाँ कारण के होने पर भी कार्य न हो, वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होते हैं।

2. ‘उतरि नहाये जमुन जल जो शरीर सम स्याम’ इस उद्धरण में अलंकार है—

- (a) व्यतिरेक (b) विभावना  
(c) प्रतीप (d) असंगति

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. तरनि-तनूजा-नीर सोहत स्याम-शरीर सम' में अलंकार है—

- (a) परिसंख्या (b) व्यतिरेक  
(c) असंगति (d) प्रतीप

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(d)

प्रस्तुत पंक्ति में तरनि-तनूजा (यमुना) के जल को उपमेय तथा श्याम शरीर को उपमान बना दिया गया है। अतः यहाँ प्रतीप अलंकार है।

4. माँ के शुचि उपकारों का, जीवन में अन्त नहीं है।

निस्वार्थ साधना पथ पर, माँ जैसा सन्त नहीं है॥

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में मुख्य रूप से कौन-सा अलंकार लक्षित हो रहा है?

- (a) विभावना (b) विशेषोक्ति  
(c) प्रतीप (d) अनन्वय

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में प्रतीप अलंकार है। उपमेय से उपमान की हीनता का जहाँ वर्णन होता है, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। इन पंक्तियों में उपमेय (माँ के शुचि उपकारों का) से उपमान (निःस्वार्थ साधना) की हीनता का वर्णन किया गया है।

## □ अपह्नुति अलंकार

1. 'मैं जो कह रघुवीर कृपाला।

बंधु न होइ मोर यह काला॥'

इस उद्धरण में कौन-सा अलंकार है?

- (a) भ्रान्तिमान (b) सन्देह  
(c) प्रतीप (d) अपह्नुति

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

जहाँ उपमेय का निषेध करके उपमान का आरोप किया जाय अर्थात् प्रस्तुत का निषेध कर अप्रस्तुत की स्थापना की जाय। वहाँ पर अपह्नुति अलंकार होता है। अपह्नुति का अर्थ है-छिपाना, निषेध करना, गोपन करना, अस्वीकृत करना इत्यादि। प्रस्तुत पंक्तियों में अपह्नुति अलंकार है। यहाँ पर सुग्रीव ने बालि के बारे में श्रीराम से कहा है कि हे कृपालु राम, यह मेरा बन्धु नहीं है, काल है।

## □ उदाहरण अलंकार

1. 'बूँद अघात सहै गिरि कैसे।

खल के बचन सन्त सह जैसे।'

में अलंकार है-

- (a) उपमा (b) उदाहरण

(c) उत्प्रेक्षा

(d) रूपक

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

जहाँ किसी बात के समर्थन में उदाहरण किसी वाचक शब्दों के साथ दिया जाय, वहाँ उदाहरण अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्ति में उदाहरण वाची शब्द 'जैसे' शब्दों द्वारा प्रथम पंक्ति के अर्थ को और प्रभावशाली बनाया जा रहा है। अतः यहाँ उदाहरण अलंकार है।

## □ स्मरण अलंकार

1. 'सघन कुंज छाया सुखद सीतल मंद समीर।

मन है जात अजौं वहे, वा जमुना के तीर॥

इस उद्धरण में अलंकार है—

- (a) भ्रान्तिमान अलंकार (b) स्मरण अलंकार  
(c) उल्लेख अलंकार (d) सन्देह अलंकार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

जब किसी वस्तु को देखकर या उसके विषय में सुनकर उसके सदृश पूर्व में देखी-सुनी किसी वस्तु का स्मरण आना वर्णित होता है, वहाँ स्मरण अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में घने बगीचे की छाया और शीतल धीरे-धीरे बहने वाली हवा को देखकर नायिका को अपने पूर्व की बातें याद आ जाती हैं। अतः यहाँ पर स्मरण अलंकार है।

## □ तद्गुण अलंकार

1. "अधर धरत हरि के परत, ओठ दीटि पट जोति।

हरित बांस की बांसुरी, इंद्रधनुष रंग होती॥"

उपर्युक्त दोहे में अलंकार है

- (a) विभावना (b) विशेषोक्ति  
(c) अतद्गुण (d) तद्गुण

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

प्रस्तुत दोहे में तद्गुण अलंकार है। इन दोहों में श्रीकृष्ण का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उनके होठों पर रखी बांसुरी ओंठ, दृष्टि, पट की ज्योति पड़ने के कारण अपने असली रंग को छोड़कर, इंद्रधनुष के रंग को ग्रहण कर लेती है। जब कोई वस्तु स्वयं का गुण त्याग कर अपने समीप की किसी अन्य वस्तु का गुण ग्रहण कर लेती है, तब वहाँ तद्गुण अलंकार होता है।

# भाषा विज्ञान

1. आधुनिक भाषा-विज्ञान का जनक कौन है?

- (a) ब्लूमफील्ड (b) जेस्पर्सन  
(c) सोस्यूर (d) ग्लीसन

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

फर्देनेद द सोस्यूर (1857-1913) का नाम आधुनिक भाषा विज्ञान के जनक के रूप में लिया जाता है, क्योंकि उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत 'भाषायी क्रांति' के रूप में उभरे।

2. भाषा विज्ञान की दृष्टि में 'प्रयत्न लाघव' का अर्थ है—

- (a) शीघ्र बोलना  
(b) कम समय में अधिक बोलना  
(c) बोलने की मितव्ययिता  
(d) उच्चारण की सुविधा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

भाषा विज्ञान की दृष्टि में 'प्रयत्न लाघव' का अर्थ उच्चारण की सुविधा है। इसे 'मुख-सुख' भी कहा जाता है।

3. 'वाराणसी' का 'बनारस' रूप में विकास उदाहरण है—

- (a) व्यंजन विपर्यय का (b) व्यंजनागम का  
(c) व्यंजन लोप का (d) स्वर-व्यंजनागम का

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

विपर्यय किसी शब्द के स्वर, व्यंजन या अक्षर एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं और दूसरे के पहले स्थान पर आ जाते हैं। इसके कई भेद हैं—स्वर विपर्यय, व्यंजन विपर्यय तथा अक्षर विपर्यय। 'वाराणसी' का 'बनारस' रूप व्यंजन विपर्यय विकास का उदाहरण है।

4. 'टकसाली भाषा' कहते हैं—

- (a) संस्कृतनिष्ठ भाषा को (b) ग्रामीण भाषा को  
(c) परिनिष्ठित भाषा को (d) कृत्रिम भाषा को

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

भाषा विज्ञान के अनुसार, मानक भाषा को आदर्श भाषा, टकसाली भाषा तथा परिनिष्ठित भाषा भी कहते हैं। किसी भी भाषा का उसके विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति के माध्यम के लिए उसका मानक रूप ही प्रयुक्त होता है। इसीलिए हिन्दी को प्रयोजनमूलक प्रयुक्ति के माध्यम के परिप्रेक्ष्य में उसके मानक रूप पर विचार करना आवश्यक हो जाता है।

5. निम्नलिखित में भाषा की प्रमुख प्रकृति कौन-सी है?

- (a) सरलता से क्लिष्टता की ओर  
(b) जटिलता से सरलता की ओर  
(c) भावों से विचारों की ओर  
(d) विचारों से भावों की ओर

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

भाषा वैचारिक और मानस पटल पर उद्बलित होने वाली भावनाओं का प्रतिबिम्ब है। विश्व में कई भाषाएँ बोली जाती हैं और सम्भवतः सभी भाषाएँ आपस में संवेदना के स्तर पर जुड़ाव रखती हैं, परन्तु हिन्दी भाषा अपनी सहजता और लचीलेपन के कारण संवेदनशीलता की इस विशेषता के अत्यन्त निकट है। हिन्दी शब्द पूर्व में भारतीयता या भारत से सम्बन्ध का द्योतक था जो कि प्रायः अभारतीयों द्वारा प्रयोग में लाया जाता था अर्थात् वे लोग जो भारत से आये हैं या भारतीय हैं उन्हें और उनकी बोली को 'हिन्दवी' कहते थे। कालान्तर में यह शब्द हिन्दी प्रदेश की उपभाषाओं एवं बोलियों के लिए प्रयुक्त होने लगा। हिन्दी के इतिहास पर नजर डालें, तो पाते हैं कि इसका इतिहास हजार वर्ष से भी पुराना है तथा यह भाषा अपनी विकास प्रक्रिया में एक गतिशील नदी की तरह बहती हुई निरन्तर जटिलता से सरलता की ओर अग्रसर होती गई।

6. न्यायालयीय भाषा में शब्द और उसके अर्थ में.....रहती है।

- (a) निश्चितता (b) अनिश्चितता  
(c) कुशलता (d) कोमलता

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

न्यायालयी भाषा में शब्द और उसके अर्थ में निश्चितता रहती है, जिससे शब्द का अर्थ समझने में किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न हो।

7. कोई भी बोली या भाषा मानकता प्राप्त करने पर हो जाती है—

- (a) दुरुह (b) सरल  
(c) भावपूर्ण (d) सरस

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

किसी भी बोली या भाषा की एक मानकता होती है, जिसे प्राप्त कर लेने पर वह बोली या भाषा सरल हो जाती है।

8. एकक्षरी भाषा-परिवार से तात्पर्य है—

- (a) रोमिटिक-हेमेटिक परिवार (b) चीनी भाषा परिवार  
(c) कॉकेशियन परिवार (d) ऑस्ट्रो-एशियाटिक परिवार

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)



चीनी एवं तिब्बती भाषा परिवार को एकक्षर परिवार की भाषा कहा जाता है। यह उसकी आकृतिगत विशेषताओं को प्रभावित करता है। इस परिवार की भाषाओं का मुख्य क्षेत्र चीन, तिब्बत एवं बर्मा है। भूटान एवं भारत के उत्तर-क्षेत्र में भी इस परिवार के बोलने वाले हैं। इस परिवार की मुख्य भाषा चीनी है।

9. ज्ञान-विज्ञान के तत्वों को व्यक्त करने वाली विशेष शब्दावली को क्या कहते हैं?

- (a) सामान्य शब्दावली (b) साहित्यिक शब्दावली  
(c) बोलचाल की शब्दावली (d) पारिभाषिक शब्दावली

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

ज्ञान-विज्ञान के तत्वों को व्यक्त करने वाली विशेष शब्दावली को पारिभाषिक शब्दावली कहते हैं। उदाहरणस्वरूप जीव विज्ञान के सन्दर्भ में 'कोशिका' का विशेष अर्थ है और उससे एक ही अर्थ लिया जाता है।

10. पारिभाषिक शब्दावली किसके लिए है?

- (a) छात्रों के लिए  
(b) जन-साधारण के लिए  
(c) ज्ञान की किसी एक शाखा के जिज्ञासु के लिए  
(d) बहुसंख्यक व्यक्तियों के लिए

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

पारिभाषिक शब्दावली ज्ञान की किसी एक शाखा के जिज्ञासु के लिए है। ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों यथा विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, भूगोल, चिकित्सा, वाणिज्य, विधि, दर्शन इत्यादि क्षेत्रों में होने वाले विकास के कारण अलग-अलग प्रकार के पारिभाषिक शब्द विकसित होते जाते हैं, जो विषय-विशेष के सन्दर्भ में एक निश्चित अर्थ को प्रकट करते हैं।

11. पारिभाषिक शब्दावली का निर्धारण कौन करता है?

- (a) भाषा वैज्ञानिक (b) राष्ट्रपति  
(c) कवि व साहित्यकार (d) समाज

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

पारिभाषिक शब्दावली का निर्धारण भाषा वैज्ञानिक करते हैं।

12. वैज्ञानिक शैली का तात्पर्य किस शैली से है?

- (a) आलंकारिक शैली (b) वस्तुनिष्ठ शैली  
(c) समास शैली (d) लाक्षणिक शैली

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

वैज्ञानिक शैली का तात्पर्य वस्तुनिष्ठ शैली से है।

13. हिन्दी की वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली मूलतः किस भाषा की शब्दावली का अनुवाद है?

- (a) फारसी (b) अंग्रेजी  
(c) संस्कृत (d) उर्दू

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

हिन्दी की वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली मूलतः अंग्रेजी भाषा की शब्दावली का अनुवाद है। जैसे-मीटर (Meter), रेडियो (Radio), किलोग्राम (Kilogram), थर्मामीटर (Thermometer) इत्यादि।

14. कार्यालयी हिन्दी की भाषा कैसी होनी चाहिए?

- (a) अभिधात्मक (b) लक्षणा से युक्त  
(c) व्यंजनात्मक (d) अभिधा-लक्षणा मिश्रित

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ प्रकट होता है, अभिधा कहलाती है। कार्यालयी हिन्दी की भाषा 'अभिधात्मक' होनी चाहिए। इसे अत्यन्त सरल तथ्यों का सीधा और स्पष्ट कथन होना चाहिए।

निर्देश (प्रश्न 15 से 20 के लिए) : दिए गए अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी पारिभाषिक शब्द छाँटिए।

15. OFFICIAL LANGUAGE

- (a) राष्ट्रभाषा (b) लोकभाषा  
(c) राजभाषा (d) सम्पर्क भाषा

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

OFFICIAL LANGUAGE को हिन्दी में कार्यालयी भाषा कहते हैं, जो सरकारी काम-काज हेतु प्रयोग होते हैं। इसका हिन्दी पारिभाषिक शब्द राजभाषा होगा। राष्ट्रभाषा को NATION LANGUAGE, लोकभाषा को PUBLIC LANGUAGE तथा सम्पर्क भाषा को CONTACT LANGUAGE कहते हैं।

16. EDITOR

- (a) राजदूत (b) अभियन्ता  
(c) संशोधक (d) सम्पादक

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

EDITOR शब्द का हिन्दी पारिभाषिक शब्द सम्पादक होता है। राजदूत का ENVOY, अभियन्ता का ENGINEER, संशोधक का अंग्रेजी अनुवाद MODIFIER होगा।

## 17. TRAINING

- (a) प्रशिक्षण (b) परीक्षण  
(c) परिवीक्षा (d) रेल का चालन

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

TRAINING शब्द का हिन्दी परिभाषिक शब्द प्रशिक्षण होगा। परीक्षण का TEST, परिवीक्षा का PROBATION होगा।

## 18. RESERVATION

- (a) अनुसंधान (b) आरक्षण  
(c) स्थिरीकरण (d) आरोपण

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

RESERVATION शब्द का हिन्दी परिभाषिक शब्द आरक्षण होगा। अनुसंधान का RESEARCH, स्थिरीकरण का STABILIZATION तथा आरोपण का अंग्रेजी अनुवाद ALLEGATION होगा।

## 19. APPOINTMENT

- (a) नियुक्ति (b) विज्ञप्ति  
(c) आदेश (d) अनुमोदन

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

APPOINTMENT शब्द का हिन्दी परिभाषिक शब्द नियुक्ति होगा। विज्ञप्ति का ADVERTISEMENT, आदेश का ORDER, अनुमोदन का APPROVAL होगा।

## 20. REGISTRATION

- (a) नामांकन (b) संशोधन  
(c) पंजीकरण (d) आरक्षण

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

REGISTRATION शब्द का हिन्दी परिभाषिक शब्द पंजीकरण होगा। नामांकन का ENROLLMENT, संशोधन का AMENDMENT, आरक्षण का अंग्रेजी अनुवाद RESERVATION होगा।

## 21. निम्नलिखित में से कौन भाषा वैज्ञानिक नहीं है?

- (a) सुनीति कुमार चटर्जी (b) धीरेन्द्र वर्मा  
(c) भोलानाथ तिवारी (d) जयशंकर प्रसाद

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

सुनीति कुमार चटर्जी, धीरेन्द्र वर्मा, भोलानाथ तिवारी, उदय नारायण तिवारी, देवेन्द्रनाथ शर्मा इत्यादि भाषा वैज्ञानिक हैं, जबकि जयशंकर प्रसाद महान कवि एवं नाटककार हैं।

## 22. राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

- (a) बालगंगाधर तिलक (b) मुंशी आर्यगर  
(c) बालगंगाधर खेर (d) काका साहब कालेलकर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष बालगंगाधर खेर थे। राजभाषा आयोग, संसदीय समिति और उसके प्रतिवेदन के अनुसार, संविधान में प्रदत्त आठवीं अनुसूची की तत्कालीन भाषाओं के 20 प्रतिनिधियों वाले आयोग का गठन बम्बई प्रान्त के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री बालगंगाधर खेर की अध्यक्षता में 7 जून, 1955 को राष्ट्रपति के आदेश के अन्तर्गत हुआ।

## 23. राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष थे—

- (a) पं. जवाहरलाल नेहरू (b) बालगंगाधर खेर  
(c) पुरुषोत्तमदास टंडन (d) सी. राजगोपालाचारी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## 24. भाषा की सार्थक लघुतम इकाई है—

- (a) शब्द (b) पद  
(c) ध्वनि (d) वाक्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। 'शब्द' भाषा की लघुतम सार्थक इकाई है। 'शब्द' सार्थक इकाई होते हुए भी वाक्य में इसका प्रयोग ज्यों-का त्यों नहीं कर सकते। शब्दों को प्रयोग में लाने के लिए शब्दों में व्याकरणिक परिवर्तन करना पड़ता है। सार्थक अर्थ प्राप्ति के लिए शब्दों का विशेष क्रम होना जरूरी होता है तथा उनमें प्रत्यय, विभक्ति आदि को भी देखना आवश्यक होता है। जब सारी प्रक्रियाओं के बाद शब्द वाक्य में प्रयोग करने योग्य बन जाये, तभी सही अर्थ की प्राप्ति होती है। एक ही शब्द के अनेक वाक्य भी बन सकते हैं। 'शब्द' को जब वाक्य के अनुकूल बनाते हैं तब वह 'पद' कहलाता है। भाषा विज्ञान में पद को 'रूप' भी कहा गया है। जितना महत्व भाषा का है उतना ही महत्व 'शब्द' का है, क्योंकि भाषा बिना शब्दों के नहीं बन पाती और 'शब्द' भाषा के अस्तित्व की निशानी होती है। उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में विकल्प (c) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना है।

## 25. भाषा की लघुतम, स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई को क्या कहते हैं?

- (a) वर्ण (b) वाक्य  
(c) शब्द (d) ध्वनि

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. भारत की सम्पर्क भाषा कौन-सी है?

- (a) संस्कृत (b) अंग्रेजी  
(c) हिन्दी (d) उर्दू

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः हिन्दी भारत की सम्पर्क भाषा है।

27. हिन्दी भाषा की उत्पत्ति हुई है—

- (a) वैदिक संस्कृत (b) लौकिक संस्कृत  
(c) शौरसेनी अपभ्रंश (d) प्राकृत

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

डॉ. नगेन्द्र ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि हिन्दी भाषा का उद्भव अपभ्रंश के शौरसेनी, अर्द्धमागधी और मागधी रूपों से हुआ है।

28. निम्नलिखित में से किसे हिन्दी की शैली नहीं मानेंगे?

- (a) संस्कृतनिष्ठ हिन्दी (b) हिन्दुस्तानी  
(c) दक्खिनी (d) मसनवी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

आजकल हिन्दी भाषा की मुख्यतः तीन शैलियाँ प्रचलित हैं—हिन्दुस्तानी, उर्दू तथा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी। इनके अलावा एक चौथी शैली अंग्रेजी मिश्रित भी मिलती है। दक्खिनी हिन्दी शैली दक्षिण राज्यों के मुस्लिम बाहुल्य राज्यों के क्षेत्रों में बोली जाती है। मनसवी शैली हिन्दी की शैली नहीं है। यह प्रेममार्गी काव्यों की रचना के लिए प्रयुक्त हुई, जो फारसी की शैली है।

29. नीचे भाषा की चार विशेषताएँ दी गई हैं। इनमें से जो एक गलत विशेषता है उसे चुनिए—

- (a) भाषा परिवर्तनशील होती है  
(b) भाषा पैतृक सम्पत्ति होती है  
(c) भाषा सामाजिक सम्पत्ति होती है  
(d) भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है

T.G.T. परीक्षा, 2001, 2010

उत्तर—(b)

भाषा की विशेषताएँ हैं—(1) भाषा प्रतीकात्मक है। (2) भाषा ध्वनिमय है। (3) भाषा का सम्बन्ध मनुष्य से है। (4) भाषा कठिनाता से सरलता की ओर गतिशील रहती है। (5) भाषा की क्षेत्रीय सीमा होती है। (6) भाषा परिवर्तनशील होती है। (7) समाज के सांस्कृतिक विकास एवं पतन के साथ भाषा के विकास एवं पतन भी सीधे जुड़े होते हैं। (8) भाषा सामाजिक सम्पत्ति होती है। (9) भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। अतः स्पष्ट है कि भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं होती है।

## □ हिन्दी की बोलियाँ

1. किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा को कहते हैं—

- (a) राष्ट्रीय भाषा (b) राजभाषा  
(c) बोली (d) उपभाषा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा को बोली कहते हैं। उपभाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है, इसके अन्तर्गत बोलियाँ आती हैं।

2. इनमें से कौन-सी राजस्थान की बोली नहीं है?

- (a) मारवाड़ी (b) बुन्देली  
(c) मेवाती (d) मालवी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

पश्चिमी राजस्थानी के अन्तर्गत मारवाड़ी, उत्तरी राजस्थानी के अन्तर्गत मेवाती तथा दक्षिणी राजस्थानी के अन्तर्गत मालवी बोली आती है। बुन्देली मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश की सीमा से सटे बुन्देलखण्ड में बोली जाती है।

3. मैथिली बोली के लोकप्रिय कवि हैं—

- (a) तुलसी (b) जायसी  
(c) विद्यापति (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

मैथिली बोली के लोकप्रिय कवि विद्यापति हैं। विद्यापति मिथिला निवासी थे। मैथिल-कोकिल उपाधि से विभूषित विद्यापति ने 'पदावली' में राधाकृष्ण की प्रेमलीलाओं का वर्णन किया है। उन्होंने संस्कृत में शैवसर्वस्वसार, गंगावाक्यावली, भूपरिक्रमा, पुरुष परीक्षा आदि, अवहट्ट में रचित कीर्तिलता तथा कीर्तिपताका तथा देशभाषा मैथिली में 'पदावली' का गान किया।

4. 'अंगिका' किस राज्य की बोली है?

- (a) बंगाल (b) छत्तीसगढ़  
(c) मध्य प्रदेश (d) बिहार

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

अंगिका बिहार राज्य की बोली है। यह नेपाल के तराई वाले प्रदेश में बोली जाती है। अंग जनपद के कारण इस बोली का नाम 'अंगिका' पड़ा। बिहार में मैथिली और मगही भी बोली जाती है।

5. 'ग्वालियर' की बोली है-

- (a) बुन्देली (b) ब्रजभाषा  
(c) खड़ी बोली (d) कन्नौजी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

बुन्देली, बुन्देलखण्ड की बोली है। झाँसी, जालौन, हमीरपुर और ग्वालियर जिले के पूर्वी क्षेत्रों में यह बोली जाती है। मध्य प्रदेश के दमोह, सागर, सिवनी, नरसिंहपुर जिलों की भी बोली बुन्देली ही है। छिंदवाड़ा और होशंगाबाद तक के कुछ हिस्सों में यह बोली जाती है। ब्रजभाषा, कन्नौजी और बुन्देली आपस में एक-दूसरे से बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं।

6. झाँसी, जालौन, हमीरपुर में कौन-सी बोली प्रचलित है?

- (a) बुन्देली (b) कन्नौजी  
(c) ब्रजभाषा (d) मालवी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. पश्चिमी हिन्दी की सर्वाधिक प्रमुख बोली इनमें से कौन है?

- (a) ब्रजभाषा (b) खड़ी बोली  
(c) बुन्देली (d) बाँगरू

T.G.T. परीक्षा, 2003

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

पश्चिमी हिन्दी की सर्वाधिक प्रमुख बोली ब्रजभाषा है। ब्रज का पुराना अर्थ है- 'पशुओं या गौओं का समूह' या 'चरागाह'। पशुपालन के प्राधान्य के कारण यह क्षेत्र ब्रज कहलाया और इसी आधार पर इसकी बोली ब्रजभाषा कहलायी। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से हुआ है। ब्रजभाषा आगरा, मथुरा-वृन्दावन, अलीगढ़, धौलपुर, मैनपुरी, एटा, बदायूँ, बरेली तथा आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है। साहित्य और लोक साहित्य दोनों ही दृष्टियों से ब्रजभाषा बहुत सम्पन्न है। हिन्दी प्रदेश के बाहर भी भारत के अनेक क्षेत्रों में ब्रजभाषा में साहित्य रचना होती रही है। सूरदास, नन्ददास, रहीम, रसखान, बिहारी, देव, घनानन्द, रत्नाकर आदि इसके प्रमुख कवि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➔ अर्द्धमागधी अपभ्रंश के दक्षिणी रूप में छत्तीसगढ़ी का विकास हुआ है। इसका क्षेत्र सरगुजा, कोरिया, बिलासपुर, रायगढ़, खैरागढ़, रायपुर, दुर्ग, कांकर आदि में है।

8. ब्रजभाषा का क्षेत्र कौन नहीं है?

- (a) धौलपुर (b) सरगुजा

(c) मथुरा

(d) आगरा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'ब्रजभाषा' है-

- (a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी  
(c) बिहारी हिन्दी (d) पहाड़ी हिन्दी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'खसखुरा' या 'गुरखाली' भाषा है-

- (a) नेपाल की राजभाषा  
(b) गढ़वाल की लोकभाषा  
(c) कुमायूँ की साहित्यिक भाषा  
(d) इनमें से कोई नहीं

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (PGT) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

नेपाल की राज्यभाषा, 'नेपाली' को, पर्वतिया, 'गुरखाली', 'खसखुरा' आदि नामों से भी अभिहित किया जाता है।

11. उकार बहुला बोली मानी जाती है-

- (a) अवधी (b) भोजपुरी  
(c) बघेली (d) छत्तीसगढ़ी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

कृष्णदत्त वाजपेयी जी ने 'ब्रज का इतिहास' में मथुरा जिले की जातियों की भाषागत विशेषताओं का अध्ययन किया है। आहीरों की भाषा 'उकार बहुला' है। नाज, काम, रास को वे नाजु, कामु, रासु कहेंगे। वाजपेयी जी ने इस उकार बहुलता को भरत द्वारा निर्दिष्ट आभीरोक्ति (अपभ्रंश) से सम्बद्ध किया है। यह उकार बहुलता अवधी की भी विशेषता है।

12. "ताले के पानी पताले गये बेटी

पुरइनि गई कुम्हिलाइ हो।

गंगा जमुना बिच रेती परतु है

कइसे के रचउं बिआह रे।"

उक्त गीत किस बोली का है?

- (a) अवधी (b) ब्रज  
(c) भोजपुरी (d) कन्नौजी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

प्रस्तुत गीत अवधी बोली का है। यह एक विवाह गीत है।



13. ध्रुपद गायन का सम्बन्ध किस भाषा से है?

- (a) ब्रजभाषा (b) अवधी  
(c) राजस्थानी (d) खड़ी बोली

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

ध्रुपद गायन का सम्बन्ध ब्रजभाषा से है। अधिकांश विद्वानों का मत है कि पन्द्रहवीं शताब्दी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर ने इसकी रचना की। इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि राजा मानसिंह तोमर ने ध्रुपद के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अकबर के समय में तानसेन और उनके गुरु स्वामी हरिदास नायक बैजू और गोपाल आदि प्रख्यात गायक ध्रुपद ही गाते थे।
- नाट्यशास्त्र के अनुसार वर्ण, अलंकार, गान-क्रिया, यति, वाणी, लय आदि जहाँ ध्रुव रूप में परस्पर सम्बद्ध रहें, उन गीतों को ध्रुवा कहा गया है।
- शास्त्रीय संगीत के पद, ख्याल, ध्रुपद आदि का जन्म ब्रजभूमि में होने के कारण इन सबकी भाषा ब्रज है, ध्रुपद का विषय समग्र रूप से ब्रज का रास ही है।
- तानसेन के नाम से 'संगीतसार' और 'रागमाला', कृष्णलीला नामक ग्रन्थ मिलते हैं।

14. सही युग्म चुनिए—

- (a) पश्चिमी हिन्दी - खड़ी बोली (कौरवी)  
(b) बिहारी हिन्दी - मारवाड़ी  
(c) पूर्वी हिन्दी - गढ़वाली  
(d) पहाड़ी हिन्दी - बघेली

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

पश्चिमी हिन्दी-खड़ी बोली (कौरवी) युग्म सही है। पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत प्रमुख पाँच बोलियाँ हैं, जो इस प्रकार हैं—खड़ी बोली या कौरवी, ब्रजभाषा, हरियाणी (बाँगरू), बुन्देली तथा कन्नौजी। बिहारी हिन्दी के अन्तर्गत हैं—भोजपुरी, मगही तथा मैथिली। पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत अवधी, बघेली एवं छत्तीसगढ़ी। पहाड़ी हिन्दी के अन्तर्गत कुमायूँनी, गढ़वाली तथा नेपाली बोलियाँ आती हैं।

15. खड़ी बोली व ब्रजभाषा किस उपभाषा के अन्तर्गत आती हैं?

- (a) पूर्वी हिन्दी (b) राजस्थानी हिन्दी  
(c) पश्चिमी हिन्दी (d) पहाड़ी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. इनमें से बिहारी हिन्दी का रूप नहीं है—

- (a) भोजपुरी (b) अवधी  
(c) मगही (d) मैथिली

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. निम्नलिखित बोलियों में से 'पूर्वी हिन्दी' की बोली नहीं है—

- (a) अवधी (b) छत्तीसगढ़ी  
(c) भोजपुरी (d) बघेली

P.G.T. परीक्षा, 2002

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. हिन्दी भाषा की बोलियों के वर्गीकरण के आधार पर छत्तीसगढ़ी बोली है—

- (a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी  
(c) पहाड़ी हिन्दी (d) राजस्थानी हिन्दी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत कौन-सी बोली नहीं है?

- (a) बघेली (b) ब्रज  
(c) कन्नौजी (d) खड़ी बोली

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. निम्नलिखित में से कौन-सी पश्चिमी हिन्दी में नहीं है?

- (a) बाँगरू (b) बुन्देली  
(c) बघेली (d) कन्नौजी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. इनमें से कौन 'पश्चिमी हिन्दी' की बोली नहीं है?

- (a) बघेली (b) ब्रजबोली  
(c) बुन्देली (d) कन्नौजी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. निम्नलिखित में कौन-सी पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है?

- (a) ब्रज (b) बाँगरू  
(c) कन्नौजी (d) डोगरी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. निम्नलिखित में से एक पश्चिमी हिन्दी वर्ग की बोली नहीं है—

- (a) कन्नौजी (b) छत्तीसगढ़ी  
(c) ब्रज (d) खड़ी बोली

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत कौन-सी बोली नहीं आती है?

- (a) छत्तीसगढ़ी (b) कौरवी  
(c) बुन्देली (d) छत्तीसगढ़

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. पश्चिमी हिन्दी की कितनी बोलियाँ हैं?

- (a) 3 (b) 5  
(c) 4 (d) 2

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. पश्चिमी हिन्दी में कौन बोली है?

- (a) मगही (b) कन्नौजी  
(c) मैथिली (d) अवधी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. इनमें से कौन-सी बोली पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत नहीं आती?

- (a) खड़ी बोली (b) ब्रजभाषा  
(c) कन्नौजी (d) अवधी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. 'कन्नौजी' हिन्दी की किस उपभाषा की एक बोली है?

- (a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी  
(c) राजस्थानी हिन्दी (d) पहाड़ी हिन्दी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. निम्नलिखित में से कौन-सी बोली पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत नहीं पड़ती है?

- (a) ब्रजभाषा (b) अवधी  
(c) बुन्देली (d) कन्नौजी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. इनमें से पश्चिमी हिन्दी की बोली कौन-सी नहीं है?

- (a) ब्रज भाषा (b) बघेली  
(c) कन्नौजी (d) बुन्देली

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा युग्म गलत है?

- (a) अवधी - पूर्वी हिन्दी (b) ब्रजभाषा - पश्चिमी हिन्दी  
(c) भोजपुरी - पूर्वी हिन्दी (d) खड़ी बोली - पश्चिमी हिन्दी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'भोजपुरी-पूर्वी हिन्दी' का युग्म गलत है। भोजपुरी, मगही तथा मैथिली बिहारी हिन्दी की प्रमुख उपभाषाएँ हैं। 'अवधी' पूर्वी हिन्दी, जबकि ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ हैं।

32. खड़ी बोली हिन्दी की उत्पत्ति हुई है—

- (a) मागधी अपभ्रंश से (b) अर्द्धमागधी अपभ्रंश से  
(c) शौरसेनी अपभ्रंश से (d) पैशाची अपभ्रंश से

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

खड़ी बोली (पश्चिमी हिन्दी) की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से हुई। खड़ी बोली के कई अन्य नाम हैं—हिन्दुस्तानी, कौरवी, सरहिन्दी। ब्रज भाषा की तुलना में यह बोली खड़ी-खड़ी लगती है, सम्भवतः इसीलिए इसे 'खड़ी बोली' कहा गया है। राहुल सांकृत्यायन ने खड़ी बोली को 'कौरवी' का नाम दिया था। इसका क्षेत्र देहरादून का मैदानी भाग, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, दिल्ली नगर, गाजियाबाद, बिजनौर, रामपुर और मुरादाबाद है। मागधी अपभ्रंश से बिहारी हिन्दी की उत्पत्ति हुई। इसकी प्रमुख उपबोलियाँ हैं—भोजपुरी, मैथिली तथा मगही। अर्द्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी की उत्पत्ति हुई। इसकी प्रमुख उपबोलियाँ हैं—अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी।

### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अक्की बोली सीतापुर, लखीमपुर, लखनऊ, रायबरेली, उन्नाव, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, फतेहपुर, इलाहाबाद आदि स्थानों पर बोली जाती है।
- मारवाड़ी बोली की कई उपबोलियाँ हैं जिनमें ठटकी, थाली, बीकानेरी, बागड़ी, शेखावटी, मेवाड़ी, खैराड़ी, सिराही आदि हैं।
- अपभ्रंश से विकसित प्रमुख आधुनिक भाषाएँ तथा उपभाषाएँ इस प्रकार हैं—

अपभ्रंश	आधुनिक भाषाएँ तथा उपभाषाएँ
शौरसेनी	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती,
पैशाची	लहंदा, पंजाबी
ब्राह्मड़	सिन्धी
महाराष्ट्री	मराठी
मागधी	बिहारी, बांग्ला, उड़िया (ओडिया), असमिया
अर्द्धमागधी	पूर्वी हिन्दी

33. निम्नलिखित आधुनिक भाषाओं में से किसका सम्बन्ध अपभ्रंश की पैशाची बोली से है?

- (a) राजस्थानी
- (b) गुजराती
- (c) पंजाबी
- (d) बंगाली

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. यह बोली पूर्वी हिन्दी वर्ग की बोली नहीं है—

- (a) अवधी
- (b) बघेली
- (c) छत्तीसगढ़ी
- (d) बुन्देली

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. सिन्धी भाषा का विकास अपभ्रंश की किस शाखा से हुआ है?

- (a) पैशाची
- (b) शौरसेनी
- (c) ब्राह्मड़
- (d) मागधी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. पूर्वी हिन्दी वर्ग की बोलियों का विकास किससे माना गया है?

- (a) शौरसेनी अपभ्रंश
- (b) मागधी अपभ्रंश
- (c) अर्द्धमागधी अपभ्रंश
- (d) नागर अपभ्रंश

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, देहरादून (मैदानी भाग) और सहारनपुर की बोली है—

- (a) गढ़वाली
- (b) छत्तीसगढ़
- (c) खड़ी बोली
- (d) बाँगरू

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. 'पूर्वी हिन्दी' की बोलियों का विकास हुआ है—

- (a) शौरसेनी अपभ्रंश से
- (b) अर्द्धमागधी अपभ्रंश से
- (c) मागधी अपभ्रंश से
- (d) पैशाची अपभ्रंश से

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2015, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. खड़ी बोली हिन्दी का विकास किस भाषा से हुआ है?

- (a) ब्रज
- (b) अवधी
- (c) दक्खिनी हिन्दी
- (d) अपभ्रंश

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. दिल्ली व मेरठ के आस-पास की बोली का क्या नाम है?

- (a) ब्रजभाषा
- (b) पंजाबी
- (c) खड़ी बोली
- (d) अवधी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. बिहारी हिन्दी का विकास किस प्राकृत या अपभ्रंश से माना गया है?

- (a) शौरसेनी
- (b) मागधी
- (c) अर्द्धमागधी
- (d) पैशाची

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. हिन्दी खड़ी बोली किस अपभ्रंश से विकसित हुई है?

- (a) मागधी
- (b) अर्द्धमागधी
- (c) शौरसेनी
- (d) पैशाची

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. 'खड़ी बोली' का दूसरा नाम है—

- (a) हरियाणवी (b) कौरवी  
(c) मेवाती (d) राजस्थानी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. कौरवी भाषा का उदय किससे हुआ है?

- (a) पश्चिमी हिन्दी (b) राजस्थानी  
(c) पूर्वी हिन्दी (d) बिहारी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. 'कौरवी' किस बोली को कहते हैं?

- (a) मारवाड़ी (b) खड़ी बोली  
(c) अवधी (d) छत्तीसगढ़ी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. बिहारी हिन्दी की बोली का नाम है—

- (a) मगही (b) बघेली  
(c) छत्तीसगढ़ी (d) बुन्देली

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. 'मगही' किस उपभाषा की बोली है?

- (a) राजस्थानी (b) पश्चिमी हिन्दी  
(c) पूर्वी हिन्दी (d) बिहारी

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. पूर्वी हिन्दी का विकास इनमें से किस अपभ्रंश में हुआ है?

- (a) ब्राचड़ (b) अर्द्धमागधी  
(c) खस (d) मागधी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. बिहार की राजधानी 'पटना' किस बिहारी बोली क्षेत्र में स्थित है?

- (a) मैथिली (b) भोजपुरी  
(c) मगही (d) अंगिका

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

'मगही' शब्द 'मागधी' का विकसित रूप है। कुछ लोग इसे 'मागधी' भी कहते हैं। यह बोली पूरे गया जिले में तथा पटना, हजारीबाग, मुंगेर, पातमऊ, भागलपुर और राँची आदि जिलों के कुछ भागों में बोली जाती है।

50. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के उदय के पूर्व आर्यभाषा का कौन-सा रूप विद्यमान था?

- (a) संस्कृत (b) पालि  
(c) प्राकृत (d) अपभ्रंश

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

संस्कृत पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है। फिर अपभ्रंश, अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन/प्रारम्भिक हिन्दी का रूप लेती है। विशुद्धतः हिन्दी एवं अन्य आधुनिक भाषाओं का आरम्भ अपभ्रंश से माना जाता है।

51. आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास किससे हुआ है?

- (a) अपभ्रंश (b) अवधी  
(c) खड़ी बोली (d) ब्रजभाषा

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

52. सिन्धी भाषा का सम्बन्ध किससे है?

- (a) पेशाची (b) ब्राचड़  
(c) मगही (d) शौरसेनी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को गलत बताया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना है।

53. निम्नलिखित में से असत्य कथन चुनिए—

- (a) रीवा, सतना, शहडोल-बघेली के क्षेत्र हैं।  
(b) वर्धा की राष्ट्रभाषा सुधार समिति की ओर से देवनागरी में जो सुधार हुआ, वह 'स्वरखड़ी' के नाम से जाना जाता है।  
(c) खड़ी बोली का एक अन्य नाम 'कौरवी' है।  
(d) राजस्थानी उपभाषा का विकास पेशाची अपभ्रंश से हुआ है।

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

राजस्थानी उपभाषा का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। शेष कथन सत्य हैं।



**54. हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास का सही क्रम चुनिए-**

- (a) संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, शौरसेनी, पश्चिमी हिन्दी, खड़ी बोली  
(b) संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पालि, शौरसेनी, पश्चिमी हिन्दी, खड़ी बोली  
(c) संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, खड़ी बोली, शौरसेनी, पश्चिमी हिन्दी  
(d) पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, शौरसेनी, पश्चिमी हिन्दी, खड़ी बोली

**T.G.T. परीक्षा, 2005**

**उत्तर—(a)**

हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है। संस्कृत पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है। फिर अपभ्रंश, अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन/प्रारम्भिक हिन्दी का रूप लेती है। विशुद्धतः, हिन्दी भाषा के इतिहास का आरम्भ अपभ्रंश से माना जाता है। हिन्दी का विकास क्रम है—संस्कृत-पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-शौरसेनी-पश्चिमी हिन्दी-खड़ी बोली।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- हिन्दी विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में से एक है। आकृति या रूप के आधार पर हिन्दी वियोगात्मक या विशिष्ट भाषा है।
- भाषा-परिवार के आधार पर हिन्दी भारोपीय परिवार की भाषा है।
- भारत में चार भाषा-परिवार-भारोपीय, द्रविड़, आस्ट्रिक व चीनी-तिब्बती मिलते हैं।
- भारत में बोलने वालों के प्रतिशत के आधार पर भारोपीय परिवार सबसे बड़ा भाषा परिवार है।
- हिन्दी भारोपीय/भारत यूरोपीय के भारतीय-ईरानी शाखा के भारतीय-आर्य (Indo-Aryan) उपशाखा से विकसित एक भाषा है।

**55. हिन्दी में अधिकांश शब्द किस भाषा से आए हैं?**

- (a) संस्कृत (b) फ़ारसी  
(c) अंग्रेजी (d) उर्दू

**K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014**

**उत्तर—(a)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**56. हिन्दी किस परिवार की भाषा है?**

- (a) सामी हामी (b) भारोपीय  
(c) काकेसी (d) पापुई

**T.G.T. परीक्षा, 2011**

**उत्तर—(b)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**57. 'बनारसी' किसकी उपबोली है?**

- (a) बुन्देली (b) छत्तीसगढ़ी  
(c) बघेली (d) कन्नौजी

**T.G.T. परीक्षा, 2011**

**उत्तर—(\*)**

बिहार के शाहाबाद जिले के भोजपुर गाँव के नाम के आधार पर 'भोजपुरी' बोली का नाम पड़ा है। मागधी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से विकसित इस बोली का क्षेत्र बनारस, जौनपुर, मिर्जापुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती, शाहाबाद, चम्पारण, सारण तथा आस-पास का कुछ क्षेत्र है। हिन्दी प्रदेश की बोलियों में भोजपुरी बोलने वाले सबसे अधिक हैं। अतः स्पष्ट है कि 'बनारसी' भोजपुरी की उपबोली है जो कि विकल्प में नहीं है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर गलत बताते हुए मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- वर्तमान में समस्त बिहार-मैथिली, मगही तथा भोजपुरी क्षेत्रों में साहित्य भाषा के रूप में हिन्दी का ही प्रचलन है, किन्तु इससे यह परिणाम नहीं निकाला जा सकता है कि बिहारी बोलियों की उत्पत्ति उसी प्राकृत से हुई है जिससे हिन्दी की।

**58. 'भोजपुरी' बोली की उत्पत्ति हुई है-**

- (a) अर्द्धमागधी अपभ्रंश से (b) मागधी अपभ्रंश से  
(c) शौरसेनी अपभ्रंश से (d) ब्राह्मण अपभ्रंश से

**P.G.T. परीक्षा, 2004**

**U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018**

**उत्तर—(b)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**59. इनमें से कौन-सा गलत है?**

- (a) विकसित तथा प्रयोग क्षेत्र की दृष्टि से बोली का रूप भाषा से बहुत छोटा होता है।  
(b) रूप-रचना की दृष्टि से बोली पूर्णतः विकसित होती है।  
(c) बोली दैनन्दिन व्यवहृत होने वाली घरेलू अभिव्यक्ति का माध्यम है।  
(d) विभाषा बोली का विकसित रूप है।

**दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015**

**उत्तर—(b)**

विकल्प (b) का कथन गलत है। बोली भाषा का क्षेत्रीय रूप होती है, जो अपने सीमित क्षेत्र में दैनिक जीवन के नित्य व्यवहार में प्रयुक्त होती है। यह भाषा का अल्पविकसित रूप होती है।

## □ हिन्दी की उपभाषाएँ

**1. हिन्दी की कितनी उपभाषाएँ हैं?**

- (a) दो (b) तीन  
(c) चार (d) पाँच

**आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012**

**उत्तर—(d)**

हिन्दी की पाँच उपभाषाएँ हैं। जिनकी बोलियाँ इस प्रकार हैं—

उपभाषा	बोली
पश्चिमी हिन्दी	- खड़ी बोली, हरियाणवी, दक्खिनी, ब्रजभाषा, बुन्देली, कन्नौजी
राजस्थानी हिन्दी	- माखाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मात्वी
पूर्वी हिन्दी	- अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
बिहारी हिन्दी	- भोजपुरी, मगही, मैथिली
पहाड़ी हिन्दी	- कुमाऊँ, गढ़वाली

2. 'मेवाती' किस उपभाषा वर्ग की बोली है?

- (a) पूर्वी हिन्दी (b) राजस्थानी हिन्दी  
(c) बिहारी हिन्दी (d) पहाड़ी हिन्दी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'मेवाती' राजस्थानी उपभाषा वर्ग की बोली है। मेवाती को उत्तरी राजस्थानी भी कहते हैं। राजस्थानी उपभाषा के अन्तर्गत पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी), पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी), उत्तरी राजस्थानी (मेवाती) और दक्षिणी राजस्थानी (मालवी) हैं। उत्तरी राजस्थान में इसका क्षेत्र अलवर, भरतपुर तथा आस-पास के क्षेत्र हैं। मेवाती के इलाके मेवात के नाम पर इसे 'मेवाती' कहते हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत अवधी, बघेली एवं छत्तीसगढ़ी, बिहारी हिन्दी के अन्तर्गत भोजपुरी, मैथिली एवं मगधी (मगही) तथा पहाड़ी हिन्दी के अन्तर्गत पहाड़ी बोलियाँ गढ़वाली, कुमायूँनी और नेपाली आती हैं।
- बघेल राजपूतों के आधार पर रीवा तथा आस-पास का इलाका बघेलखण्ड कहलाता है और वहाँ की बोली को बघेली कहते हैं।
- बघेली का उद्भव अर्द्धमागधी अपभ्रंश के ही एक क्षेत्रीय रूप से हुआ है। इसका क्षेत्र रीवा, नागौद, शहडोल, सतना, मैहर तथा आस-पास का क्षेत्र है। कुछ अपवादों को छोड़कर बघेली में केवल लोक साहित्य है।

3. अवधी किस उपभाषा वर्ग की बोली है?

- (a) पश्चिमी हिन्दी (b) पूर्वी हिन्दी  
(c) बिहारी हिन्दी (d) राजस्थानी हिन्दी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'छत्तीसगढ़ी' बोली हिन्दी के किस उपभाषा वर्ग के अन्तर्गत आती है?

- (a) पश्चिमी हिन्दी (b) पूर्वी हिन्दी

(c) बिहारी

(d) पहाड़ी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'बघेली' हिन्दी के किस उपभाषा वर्ग की बोली है?

- (a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी  
(c) राजस्थानी हिन्दी (d) बिहारी हिन्दी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'बघेली' बोली का सम्बन्ध किस उपभाषा से है?

- (a) राजस्थानी (b) पूर्वी हिन्दी  
(c) बिहारी (d) पश्चिमी हिन्दी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'पँवारी' इनमें से किस बोली से सम्बन्धित है?

- (a) ब्रज (b) खड़ी बोली  
(c) बुन्देली (d) अवधी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

बुन्देली हिन्दी भाषा की एक बोली है, जबकि पँवारी, भदावरी, राठौरी इत्यादि उसकी उपबोलियाँ हैं।

8. बाँगरू किस उपभाषा वर्ग की बोली है?

- (a) पश्चिमी हिन्दी (b) पूर्वी हिन्दी  
(c) बिहारी (d) पहाड़ी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

बाँगरू पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की बोली के अन्तर्गत आती है। बाँगरू को हरियाणी अथवा हरियाणवी भी कहते हैं। बाँगरू (शुष्क, उच्च भूमि) भू-भाग के कारण यहाँ की बोली का नाम बाँगरू पड़ा। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। करनाल, रोहतक, दिल्ली तथा हिसार के क्षेत्र इसके अन्तर्गत आते हैं।

9. हरियाणवी या बाँगरू बोली किस अपभ्रंश से विकसित हुई है?

- (a) पश्चिमोत्तरी शौरसेनी अपभ्रंश (b) अर्द्धमागधी  
(c) नागर अपभ्रंश (d) मागधी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग न होना किस उपभाषा की प्रमुख विशेषता है?

- (a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी  
(c) राजस्थानी हिन्दी (d) पहाड़ी हिन्दी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

हिन्दी खड़ी बोली से अवधी की विभिन्नता मुख्य रूप से व्याकरणात्मक है। इसमें कर्ता कारक के परसर्ग (विभक्ति) 'ने' का नितांत अभाव है। अन्य उपसर्गों के प्रायः दो रूप मिलते हैं- ह्रस्व और दीर्घ (कर्म-सम्प्रदान-सम्बन्ध-क, का; करण-अपादान-स-त, से-ते; अधिकरण-म, मा)।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- गठन की दृष्टि से हिन्दी क्षेत्र की उपभाषाओं को दो वर्गों-पश्चिमी और पूर्वी में विभाजित किया जाता है। अवधी पूर्वी के अन्तर्गत है।
- पूर्वी की दूसरी उपभाषा छत्तीसगढ़ी है। अवधी को कभी-कभी बैसवाड़ी भी कहते हैं।
- परन्तु बैसवाड़ी अवधी की एक उपबोली मात्र है, जो उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली और फतेहपुर जिले के कुछ भागों में बोली जाती है।

11. निम्नलिखित में से किस बोली में कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न प्रयुक्त नहीं होता है?

- (a) ब्रज (b) अवधी  
(c) बुन्देली (d) खड़ी बोली

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्नलिखित में से किस बोली में 'ने' का प्रयोग नहीं होता है?

- (a) खड़ी बोली (b) दक्खिनी हिन्दी  
(c) हरियाणवी (d) अवधी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. इनमें से किस बोली में 'ने' का प्रयोग नहीं होता?

- (a) कौरवी (b) अवधी  
(c) हरियाणवी (d) मालवी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. निम्नलिखित में से किस बोली में उत्तम पुरुष बहुवचन 'हम' का प्रयोग उत्तम पुरुष एकवचन 'मैं' के अर्थ में किया जाता है?

- (a) ब्रज (b) अवधी  
(c) बाँगरू (d) खड़ी बोली

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

अवधी में उत्तम पुरुष बहुवचन 'हम' का प्रयोग उत्तम पुरुष एकवचन 'मैं' के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है।

15. गएल, भएल आदि किस बोली की किस तरह की क्रियाएँ हैं?

- (a) भोजपुरी, भूतकालिक (b) अवधी, वर्तमानकालिक  
(c) ब्रजभाषा, भूतकालिक (d) बुन्देली, भविष्यकालिक

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

गएल, भएल आदि भोजपुरी बोली की भूतकालिक क्रियाएँ हैं।

## □ हिन्दी की ध्वनियाँ

1. इनमें से कौन-सी ध्वनि अवधी में नहीं है?

- (a) क (b) ण  
(c) न (d) म

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

अवधी में संस्कृत मूर्धन्य संघर्षी 'ष' का 'ख' और तालव्य 'श' का 'स' रूप उच्चारण होता है तथा 'ण' ध्वनि 'न' में बदल जाती है। जैसे-वेष-भूख, शीतल-सीतल, रावण-नावन, हर्ष-हरख, बाण-बान इत्यादि। अवधी में 'ल' ध्वनि प्रायः 'र' हो जाती है, कभी 'ड़' ध्वनि भी 'र' हो जाती है। जैसे-तलवार-तरवारि, डाल-डारि, लड़का-लरिका, पकड़-पकरि इत्यादि।

2. 'प्रसन्नता' शब्द में कौन-सी ध्वनि है?

- (a) संयुक्त ध्वनि (b) सम्पृक्त ध्वनि  
(c) युग्मक ध्वनि (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

जब एक ही ध्वनि का द्वित्व हो जाए, तब वह युग्मक ध्वनि कहलाती है जैसे-अक्षुण्ण, उत्फुल्ल, दिक्कत, प्रसन्नता आदि। एक ध्वनि जब दो व्यंजनों से संयुक्त होती है, तब वह संपृक्त ध्वनि कहलाती है। जैसे- 'सम्बल', 'कम्पन' इत्यादि। यहाँ पर 'स' और 'ब' ध्वनियों के साथ 'म्' ध्वनि तथा 'क' और 'प' ध्वनियों के साथ 'म्' ध्वनि संयुक्त हुई है। दो या दो से अधिक व्यंजन ध्वनियाँ परस्पर संयुक्त होकर जब एक स्वर के सहारे बोली जाती हैं, तो संयुक्त ध्वनियाँ कहलाती हैं। जैसे-प्राण, घ्राण, क्वांत, म्लान, प्रकर्ष इत्यादि। संयुक्त ध्वनियाँ अधिकतर तत्सम शब्दों में मिलती हैं।

### 3. 'स्वर ध्वनि' के प्रकार हैं-

- (a) दीर्घ (b) प्लुत  
(c) ह्रस्व (d) उपर्युक्त तीनों

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

स्वर के तीन भेद होते हैं- 1. ह्रस्व स्वर, 2. दीर्घ स्वर तथा 3. प्लुत स्वर।

- ह्रस्व स्वर**-जिन स्वरों के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगता है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इन्हें एकमात्रिक कहा जाता है। इनकी संख्या चार है-अ,इ,उ और ऋ।
- दीर्घ स्वर**-जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वरों से दोगुना समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या सात है- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ और औ इन्हें द्विमात्रिक कहा जाता है।
- प्लुत स्वर**-जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वरों से तिगुना समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। ये प्रायः दूर से पुकारने के लिए प्रयुक्त होते हैं, इसीलिए उच्चारण की स्पष्टता के लिए इनके आगे 'ऽ' लगा दिया जाता है। इसका तात्पर्य है-तिगुना समय। इन्हें त्रिमात्रिक कहा जाता है। जैसे- ओऽम् !, हे राऽम्! आदि। इन सभी स्वरों का अनुनासिक उच्चारण भी होता है। जैसे-अँ,आँ,ईँ, ईँ, उँ, ऊँ, एँ, ऐँ, ओँ, औँ।

### 4. स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को कहते हैं -

- (a) मात्रा (b) अनुस्वार  
(c) ह्रस्व (d) प्लुत

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं। मात्रा या उच्चारण के आधार पर यह तीन प्रकार के होते हैं- ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर तथा प्लुत स्वर। जिनके उच्चारण में कम समय (एक मात्रा का समय) लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से भी अधिक समय (दो मात्रा का समय) लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर तथा जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। किसी को पुकारने या नाटक के संवादों में मंचन के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

### 5. सही कथन चुनिए-

- (a) 'य' और 'व' ध्वनियाँ अर्द्धस्वर कहलाती हैं।  
(b) व्यंजन का उच्चारण बिना स्वर की सहायता से हो सकता है।  
(c) अवधेश का विग्रह अव+धेश होता है।  
(d) हिन्दी में व्यंजनों की संख्या साठ है।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

य, र, ल, व को अन्तःस्थ कहते हैं, क्योंकि इनका उच्चारण व्यंजन तथा स्वरों का मध्यवर्ती-सा लगता है। स्वर व्यंजनों के ये 'अन्तःस्थिति' से जान पड़ते हैं। इनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओष्ठों के परस्पर सटाने से होता है। इन चारों वर्णों को अर्द्धस्वर भी कहा जाता है। व्यंजन का उच्चारण बिना स्वर की सहायता से नहीं हो सकता है। जब किसी व्यंजन में स्वर नहीं रहता, तब उस व्यंजन के नीचे हल् का चिह्न लगा दिया जाता है। हिन्दी के प्रत्येक शब्द के अन्तिम 'अ' लगे 'वर्ण' का उच्चारण हलन्त-सा होता है। जैसे-रात्, पुस्तक्, मन् इत्यादि। यदि अकारान्त शब्द का अन्तिम वर्ण संयुक्त हो, तो अन्त्य 'अ' का उच्चारण पूरा होता है। जैसे-सत्य, ब्रह्म, धर्म इत्यादि। व्यंजनों की संख्या 35 है जिनमें ३ तथा ४ द्विगुण व्यंजन हैं। अवधेश का विग्रह अवध + ईश होता है। अतः दिए गए कथन में केवल विकल्प (a) सही है।

### 6. इनमें से अन्तःस्थ वर्ण है-

- (a) व (b) त  
(c) ए (d) औ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

### 7. इनमें से कौन-सी ध्वनि अन्तःस्थ नहीं है?

- (a) व (b) ब  
(c) र (d) ल

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

### 8. इनमें से कौन-सा वर्ण स्पर्श व्यंजन नहीं है?

- (a) क (b) च  
(c) ट (d) य

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

### 9. कामता प्रसाद गुरु ने बाह्य प्रयत्न के अनुसार व्यंजनों के कितने भेद माने हैं?

- (a) तीन (b) पाँच  
(c) चार (d) दो

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

कामता प्रसाद गुरु ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी व्याकरण' में उद्धृत किया है कि बाह्य प्रयत्न के अनुसार व्यंजनों के दो भेद हैं-अत्यप्राण तथा महाप्राण।



10. निम्नलिखित में कण्ठ्यध्वनियाँ कौन-सी हैं?

- (a) क, ख (b) य, र  
(c) च, ज (d) ट, ण

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

कण्ठ और निचली जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण 'कण्ठ्य' कहलाते हैं। इस प्रकार की ध्वनियों को कण्ठ्यध्वनियाँ कहते हैं। इसके अन्तर्गत अ, आ, क वर्ग (क, ख, ग, घ, ङ), ह और विसर्ग आते हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- तालु और जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण 'तालव्य' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत इ, ई, च वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ), य और श आते हैं।
- मूर्ध्ना और जीभ के स्पर्श वाले वर्ण 'मूर्धन्य' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत ऋ, ए वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण), र और ष आते हैं।
- दाँत और जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण 'दंत्य' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत त वर्ग (त, थ, द, ध, न), ल और स आते हैं।
- दोनों ओष्ठों के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण 'ओष्ठ्य' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत उ, ऊ तथा प वर्ग (प, फ, ब, भ, म) आते हैं।
- कण्ठ और तालु में जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण 'कण्ठतालव्य' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत ए तथा ऐ आते हैं।
- कण्ठ द्वारा जीभ और ओष्ठों के कुछ स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण कण्ठोष्ठ्य कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत 'ओ' और 'औ' आते हैं।
- दाँत से जीभ और ओठों के कुछ योग से बोला जाने वाला वर्ण 'दंतोष्ठ्य' कहलाता है। जैसे-वा

11. उच्चारण स्थान के आधार पर 'ज' व्यंजन है—

- (a) तालव्य (b) मूर्धन्य  
(c) कण्ठ्य (d) ओष्ठ्य

U.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. हिन्दी की मूर्धन्य ध्वनियाँ हैं—

- (a) च, छ, ज, झ (b) ट, ठ, ड, ढ  
(c) प, फ, ब, भ (d) त, थ, द, ध

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. उच्चारण की दृष्टि से 'व' ध्वनि है—

- (a) दंत्य (b) दंत्योष्ठ्य  
(c) कंठतालव्य (d) तालव्य

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. निम्नलिखित ध्वनियों में कौन-सी दंत्योष्ठ्य है?

- (a) थ (b) फ  
(c) म (d) व

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. हिन्दी की ओष्ठ्य व्यंजन ध्वनि है—

- (a) अ (b) थ  
(c) भ (d) ज

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. निम्नलिखित में से हिन्दी की कण्ठ्य ध्वनि है—

- (a) ई (b) त  
(c) फ (d) ह

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. निम्नलिखित में ओष्ठ ध्वनि नहीं है—

- (a) च में (b) प में  
(c) भ में (d) म में

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. 'द' ध्वनि का उच्चारण स्थान के आधार होता है—

- (a) तालव्य (b) दंत्य  
(c) कण्ठ्य (d) ओष्ठ्य

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. निम्नलिखित में से कौन मूर्धन्य ध्वनि नहीं है?

- (a) ट (b) ठ  
(c) ढ (d) ढ

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'ओ, औ' किस प्रकार के वर्ण हैं?

- (a) तालव्य (b) मूर्धन्य  
(c) दंतोष्ठ्य (d) कण्ठोष्ठ्य

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. हिन्दी की 'श' ध्वनि है—

- (a) मूर्धन्य (b) तालव्य  
(c) दंत्य (d) ओष्ठ्य

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. निम्नलिखित में से दंत्य ध्वनि है—

- (a) क (b) छ  
(c) त (d) प

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. हिन्दी की 'व' ध्वनि है—

- (a) दंत्य ध्वनि (b) ओष्ठ्य ध्वनि  
(c) मूर्धन्य ध्वनि (d) तालव्य ध्वनि

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. इ, ढ ध्वनियों के विषय में कौन-सा कथन शुद्ध है?

- (a) ये तालव्य ध्वनियाँ हैं। (b) ये मूर्धन्य उद्दिष्ट ध्वनियाँ हैं।  
(c) इनका प्रयोग शब्द के आरंभ, मध्य तथा अंत में (सर्वत्र) किया जाता है। (d) दोनों महाप्राण हैं।

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

इ, ढ मूर्धन्य उद्दिष्ट ध्वनियाँ हैं। यह अल्पप्राण ध्वनियाँ हैं।

25. हिन्दी की अग्र अवृत्ताकार, संवृत स्वर ध्वनि है—

- (a) अ (b) इ  
(c) आ (d) ए

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

स्वरों के उच्चारण में केवल काकल में अवरोध होता है, मुख विवर से हवा निर्बाध गति से बाहर निकलती है। जिह्वा का हिस्सा विशेष कुछ ऊपर उठता है। 'इ' ह्रस्व, संवृत, अवृत्ताकार तथा अग्र स्वर है। 'अ' ह्रस्व, अर्ध विवृत, मध्य स्वर, 'आ' दीर्घ, विवृत, पश्च स्वर तथा 'ऐ' दीर्घ, अर्ध विवृत तथा अग्र स्वर है।

26. निम्नलिखित में से कौन-सा स्वर संवृत है?

- (a) आ (b) औ  
(c) इ (d) ऐ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. निम्न में अर्द्धस्वर कहलाता है—

- (a) य (b) म  
(c) र (d) ल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'म' वर्ण 'प' वर्ण के अन्तर्गत आता है, यह ओष्ठ्य स्पर्श कहलाता है। य, र, ल, व परम्परागत शब्दावली में अर्द्धस्वर के अन्तर्गत आते हैं। परम्परागत 'अर्द्धस्वर' के अधीन परिगणित चारों व्यंजन य, र, ल, व में से पहला व्यंजन 'य' विशुद्ध 'अर्द्धस्वर' है, जबकि 'व' ('जैसे—'वन' शब्दों में) वस्तुतः घोष संघर्षी है। हाँ किसी पूर्ववर्ती व्यंजन के साथ उच्चरित होकर 'अर्द्धस्वर' बन जाता है। 'जैसे—'स्वर' या 'अनुस्वार' शब्दों में 'व'।

28. निम्नलिखित में कौन-सी व्यंजन ध्वनियाँ स्पर्श संघर्षी कहलाती है?

- (a) च, छ, ज, झ (b) क, ख, ग, घ  
(c) ट, ठ, ड, ढ (d) प, फ, ब, भ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

विकल्प (a) की व्यंजन ध्वनियाँ तालव्य स्पर्शी हैं। आधुनिक पारिभाषिक शब्दावली में स्पर्श-संघर्षी व्यंजन के नाम से पुकारते हैं। इनके उच्चारण करते समय मुखवय में यथास्थिति आंशिक या पूर्ण अवरोध होता है।

29. निम्नलिखित ध्वनियों में कौन सुमेलित है—

- (a) ग - अघोष (b) फ - अल्पप्राण  
(c) स - ऊष्म (d) ठ - सघोष

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

ग, सघोष व्यंजन, फ, महाप्राण व्यंजन, ठ अघोष व्यंजन तथा स ऊष्म व्यंजन है। अतः विकल्प (c) सही है।

30. निम्नांकित में अघोष अल्पप्राण ध्वनि कौन-सी है?

- (a) झ (b) ट  
(c) ज (d) क, त

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

वायु को संस्कृत में प्राण कहते हैं। इसी आधार पर कम वायु से उच्चरित ध्वनि 'अल्पप्राण' और अधिक वायु से उत्पन्न ध्वनि 'महाप्राण' कही जाती है। प्रत्येक वर्ण का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण अल्पप्राण है। जैसे- क, च, ट, त, प, ग, ज, ड, द, ब, ङ, ञ, ण, न, म। सभी स्वर अल्पप्राण हैं। इसी प्रकार प्रत्येक वर्ण का दूसरा और चौथा वर्ण महाप्राण है। जैसे- ख, छ, ठ, थ, फ, घ, स, ढ, ध, भा। सभी ऊष्म वर्ण (श, ष, स, ह,) महाप्राण हैं। जिन वर्णों के उच्चारण में केवल नाद का उपयोग होता है, उन्हें घोष (सघोष) वर्ण कहते हैं। स्पर्श वर्णों में प्रत्येक वर्ण का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ वर्ण जैसे- ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म इत्यादि और सभी स्वर वर्ण तथा य, र, ल, व, ह घोष (सघोष) वर्ण हैं। जिन वर्णों के उच्चारण में नाद की जगह केवल श्रवण का उपयोग होता है, वे अघोष वर्ण कहलाते हैं। स्पर्श वर्णों में प्रत्येक वर्ण का पहला तथा दूसरा वर्ण यथा- क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ और श, ष, स अघोष वर्ण हैं।

31. निम्नलिखित में से कौन-सा वर्ण सघोष महाप्राण व्यंजन है?

- (a) क (b) झ  
(c) ट (d) प

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. इनमें से कौन व्यंजन अल्पप्राण है?

- (a) ख (b) थ  
(c) च (d) फ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. हिन्दी के स्पर्श व्यंजन के पाँचों वर्णों के दूसरे और चौथे वर्ण होते हैं-

- (a) अल्पप्राण व्यंजन (b) महाप्राण व्यंजन  
(c) घोष व्यंजन (d) अघोष व्यंजन

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. निम्नलिखित व्यंजनों में कौन महाप्राण है?

- (a) क (b) ग  
(c) ड (d) ट

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. महाप्राण ध्वनियाँ व्यंजन-वर्ग में किससे सम्बन्धित हैं?

- (a) पहला, दूसरा (b) दूसरा, तीसरा  
(c) दूसरा, चौथा (d) पहला, चौथा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. निम्न में से कौन एक अल्पप्राण ध्वनि है?

- (a) क (b) ख  
(c) घ (d) ध

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. श, ष, स, ..... के अन्तर्गत आते हैं।

- (a) ऊष्म (b) स्पर्श  
(c) अन्तःस्थ (d) संयुक्त

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

श, ष, स, ह ऊष्म व्यंजन के अन्तर्गत आते हैं। ऊष्म व्यंजन वे हैं, जिनका उच्चारण मुखागों के घर्षण से उत्पन्न ऊष्मा से होता है। ये महाप्राण व्यंजन के अन्तर्गत आते हैं।

38. इनमें से ऊष्म व्यंजन नहीं है-

- (a) ह (b) ष  
(c) श (d) ल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. उच्चारण की दृष्टि से 'श्, ष्, स्' व्यंजन किस प्रकार के हैं?

- (a) अंतस्थ (b) वत्स्थ  
(c) ऊष्म (d) तालव्य

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. अनुनासिक व्यंजन कौन-से होते हैं?

- (a) वर्ग के प्रथमाक्षर (b) वर्ग का तृतीयक्षर  
(c) वर्ग का चौथा व्यंजन (d) वर्ग का पंचमाक्षर

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

‘वर्ग का पंचमाक्षर’ ( , ज, ण, न, म) अनुनासिक व्यंजन होते हैं।

41. अयोगवाह कहा जाता है-

- (a) विसर्ग को (b) महाप्राण को  
(c) संयुक्त व्यंजन को (d) अल्पप्राण को

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अः) को ‘अयोगवाह’ कहते हैं। ये ध्वनियाँ न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन, फिर भी अर्थ का वहन करती हैं। पं. किशोरी दास वाजपेयी के शब्दों में इनकी स्वतंत्र गति नहीं, इसलिए ये स्वर नहीं हैं और व्यंजनों की तरह ये स्वरों के पूर्व नहीं, पश्चात् आते हैं, इसलिए व्यंजन नहीं। वर्णों की दोनों श्रेणियों में किसी के साथ इनका जातीय योग नहीं है, इसलिए इन दोनों ध्वनियों को ‘अयोगवाह’ कहते हैं।

42. हिन्दी में ‘अनुस्वार’ किस ध्वनि का सूचक नहीं है?

- (a) ङ (b) ञ  
(c) ण (d) य

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

ङ, ञ, ण ‘अनुस्वार’ ध्वनियाँ हैं, जबकि य, अंतःस्थ व्यंजन है।

43. ‘वर्णमाला’ किसे कहेंगे?

- (a) शब्द-समूह को (b) वर्णों के संकलन को  
(c) शब्द-गणना को (d) वर्णों के व्यवस्थित समूह को

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

वर्ण या अक्षर उस ध्वनि को कहते हैं जिसके टुकड़े नहीं हो सकते हैं अर्थात् भाषा की सबसे छोटी इकाई है। व्यंजन और स्वर के संयुक्त रूप को अक्षर कहते हैं। अक्षरों या वर्णों के व्यवस्थित समूह को ‘वर्णमाला’ कहते हैं। हिन्दी के लिए प्रयुक्त देवनागरी लिपि में कुल 52 वर्ण हैं, जिनमें 11 स्वर, 2 अयोगवाह, 33 व्यंजन, 2 द्विगुण (व्यंजन) तथा 4 संयुक्ताक्षर आते हैं।

44. हिन्दी भाषा में कितने व्यंजन हैं?

- (a) 21 (b) 33  
(c) 36 (d) 40

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. हिन्दी वर्णमाला में वर्ण हैं-

- (a) 50 (b) 52  
(c) 54 (d) 55

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. व्यंजन और स्वर के संयुक्त रूप को क्या कहते हैं?

- (a) वर्ण (b) ध्वनि  
(c) अक्षर (d) वाक्य

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. हिन्दी भाषा में कितने स्वर हैं?

- (a) 14 (b) 11  
(c) 13 (d) 5

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. भाषा की सबसे छोटी इकाई कौन-सी है?

- (a) शब्द (b) व्यंजन  
(c) स्वर (d) वर्ण

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. भाषा की सबसे छोटी इकाई है -

- (a) शब्द (b) मात्रा  
(c) वर्ण (d) कोई नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. मात्रा स्वर को क्या कहते हैं?

- (a) वर्ण (b) समरूप (ग्रेफीम)  
(c) रूप (d) शब्द

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)



जो स्वर न अग्र रेखा के समीप हैं, न पश्च रेखा के, केन्द्रीय स्वर कहलाते हैं—अ, आ ऐसे ही स्वर हैं। नागरी लिपि में मात्रा पद्धति है। ये मात्राएँ स्वरों के चिह्न होती हैं। जब कभी कोई व्यंजन किसी स्वर के साथ आता है, तब उसके साथ पूरा स्वर नहीं लिखा जाता, केवल स्वर की मात्रा लिखी जाती है। मात्रा स्वर की समरूप (ग्रेफीम) कही जाती है। हिन्दी स्वर ध्वनियों में प्रथम छह स्वर और उनकी मात्राएँ इस प्रकार हैं—

स्वर	विवरण	मात्रा
अ	ह्रस्व अ, जैसे अनार	- 1
आ	दीर्घ आ, जैसे-काम	( 1 )
इ	ह्रस्व इ, जैसे-जिन	( 1 )
ई	दीर्घ ई, जैसे-जीत	( 1 )
उ	ह्रस्व उ, जैसे-कुल	( 1 )
ऊ	दीर्घ ऊ, जैसे-फूल	( 1 )
<b>द्वि स्वर</b>		

नीचे दिये गये चार स्वर द्वि स्वर कहलाते हैं।

स्वर	विवरण	मात्रा
ए	(अ + इ), जैसे-मेल	( 2 )
ऐ	(अ + ए), जैसे-कैसा	( 2 )
ओ	(ऊ + उ), जैसे-गोल	( 2 )
औ	(अ + ओ), जैसे-कौन	( 2 )

51. 'श्र' एक संयुक्त व्यंजन है। इसमें किन दो वर्णों को सम्मिलित किया गया है?

- (a) स और र वर्णों को (b) ष और र वर्णों को  
(c) श और र वर्णों को (d) श्र और अ वर्णों को

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

हिन्दी में चार संयुक्त व्यंजन हैं, जिसका निर्माण दो व्यंजनों के योग से हुआ है। ये चार इस प्रकार हैं—

क्ष = क् + ष                      त्र = त् + र  
ज्ञ = ज् + ञ                      श्र = श् + र

52. लिखित भाषा में विचारों को कैसे व्यक्त करते हैं?

- (a) संकेतों द्वारा (b) बोलकर  
(c) लिखकर (d) सुनकर

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

जब व्यक्ति किसी दूर बैठे व्यक्ति को पत्र द्वारा अथवा पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं में लेख द्वारा अपने विचार प्रकट करता है, तब उसे भाषा का लिखित रूप कहते हैं।

53. हिन्दी की स्पर्श घोष, महाप्राण, ओष्ठ्य व्यंजन ध्वनि है -

- (a) भ् (b) ट्  
(c) थ् (d) ह्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'भ्' स्पर्श घोष, महाप्राण तथा ओष्ठ्य व्यंजन है।

54. 'क' व्यंजन के विषय में निम्न में से कौन-सा सही है?

- (a) अल्पप्राण, अघोष, स्पर्शी, कण्ठ्य ध्वनि  
(b) महाप्राण, घोष, स्पर्शी, कण्ठ्य ध्वनि  
(c) अल्पप्राण, घोष, संघर्षी, तालव्य ध्वनि  
(d) महाप्राण, अघोष, संघर्षी, कण्ठ्य ध्वनि

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

'क' व्यंजन अल्पप्राण, अघोष, स्पर्शी तथा कण्ठ्य ध्वनि है।

55. आधुनिक व्याकरण की दृष्टि से 'ब' वर्ण का वैशिष्ट्य है—

- (a) ओष्ठ्य, स्पर्श, अल्पप्राण, अघोष, निरनुनासिक  
(b) द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, अल्पप्राण, घोष, निरनुनासिक  
(c) द्वयोष्ठ्य, स्पर्श-संघर्षी, अल्पप्राण, अघोष, निरनुनासिक  
(d) ओष्ठ्य, स्पर्श, महाप्राण, संघोष, निरनुनासिक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

आधुनिक व्याकरण की दृष्टि से 'ब' वर्ण का वैशिष्ट्य-द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, अल्पप्राण, घोष, निरनुनासिक है।

56. पाणिनीय शिक्षा में ध्वनियों को वर्गीकृत करने के कौन से पाँच आधार स्वीकार किए गए हैं?

- (a) स्वर, काल, स्थान, संवाद, नाद  
(b) स्वर, स्थान, काल, प्राण, सुर  
(c) काल, प्रयत्न, स्थान, प्राण, अनुदात  
(d) स्वर, काल, स्थान, प्रयत्न, अनुप्रदान

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

पाणिनि ने लिखा है कि आत्मा बुद्धि के द्वारा अर्थों को जानकर दूसरों को बतलाने की इच्छा से मन को प्रेरित करता है। प्राण वायु डर स्थल में आहत होकर मन्द स्वर को उत्पन्न करता है। कण्ठ में टकराकर मध्यम स्वर, सिर में टकराकर तार स्वर बनाता है। वही मुख में आकर वर्ण बनता है। वर्णों के विभाग भी स्वर से, काल से, स्थान से, प्रयत्न से और अनुप्रदान से तय होते हैं।

# देवनागरी लिपि

1. देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग किस राज्य में हुआ माना जाता है?

- (a) महाराष्ट्र (b) उत्तर प्रदेश  
(c) राजस्थान (d) गुजरात

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

देवनागरी का नामकरण विवादास्पद है। ज्यादातर विद्वान गुजरात के नागर ब्राह्मण से इसका सम्बन्ध जोड़ते हैं। उनका मानना है कि गुजरात में सर्वप्रथम प्रचलित होने से वहाँ के पण्डित वर्ग अर्थात् नागर ब्राह्मणों के नाम से इसे नागरी कहा गया है। अपने अस्तित्व में आने के तुरन्त बाद इसने देवभाषा संस्कृत को लिपिबद्ध किया। इसीलिए 'नागरी' में देव शब्द जुड़ गया और बन गया 'देवनागरी'।

## अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- देवनागरी लिपि बायीं से दायीं ओर लिखी जाती है।
- एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण संकेत होता है।
- एक वर्ण संकेत से अनिवार्यतः एक ही ध्वनि व्यक्त होती है। जो ध्वनि का नाम वही वर्ण का नाम होता है। जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है।

2. कौन-सी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है?

- (a) बंगला (b) पंजाबी  
(c) मराठी (d) गुजराती

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

देवनागरी एक लिपि है, जिसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। देवनागरी लिपि में अनेक भारतीय भाषाएँ तथा कुछ विदेशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। संस्कृत, पालि, हिन्दी, मराठी, कोंकणी, सिन्धी, कश्मीरी, नेपाली, तामाङ भाषा, गढ़वाली, बोडो, अंगिका, मगही, भोजपुरी, मैथिली, संथाली आदि भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाती हैं।

## अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कुछ स्थितियों में गुजराती, पंजाबी, विष्णुपुरिया मणिपुरी, रोमानी और उर्दू भाषाएँ भी देवनागरी में लिखी जाती हैं।

3. हिन्दी किस लिपि में लिखी जाती है?

- (a) खरोष्ठी (b) ब्राह्मी  
(c) नागरी (d) मसन्वी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. देवनागरी लिपि में स्वर वर्णों की संख्या है—

- (a) 11 (b) 12  
(c) 13 (d) 14

P.G.T. परीक्षा, 2011

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

देवनागरी लिपि में स्वरों की संख्या 11 है। ये इस प्रकार हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

5. 'संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी' यह संविधान के किस अनुच्छेद में वर्णित है?

- (a) अनुच्छेद 343 (b) अनुच्छेद 344  
(c) अनुच्छेद 345 (d) अनुच्छेद 346

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हम लोग हिन्दी दिवस मनाते हैं। संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार, "संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।"

## अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अनुच्छेद 344 राष्ट्रपति द्वारा राजभाषा आयोग एवं समिति के गठन से सम्बन्धित है।
- अनुच्छेद 345, 346, 347 में प्रादेशिक भाषाओं सम्बन्धी प्रावधानों को रखा गया है।
- अनुच्छेद 343 (2) में किसी बात के होते हुए भी संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की कालावधि के पश्चात विधि द्वारा अंग्रेजी भाषा का अथवा अंकों के देवनागरी रूप का ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग अनुबन्धित कर सकेगी जैसे कि ऐसी विधि में उल्लेखित हो।

6. भारत में हिन्दी को संविधान की किस धारा के अन्तर्गत राजभाषा घोषित किया गया है?

- (a) धारा 343(i) (b) धारा 343(ii)  
(c) धारा 333(i) (d) धारा 334(i)

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. संविधान के किस अनुच्छेद के अन्तर्गत हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा मिला?

- (a) अनुच्छेद 343 (b) अनुच्छेद 344  
(c) अनुच्छेद 345 (d) अनुच्छेद 346

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. संविधान के किस अनुच्छेद में कहा गया है कि “संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी?”

- (a) अनुच्छेद 343 (b) अनुच्छेद 344  
(c) अनुच्छेद 345 (d) अनुच्छेद 346

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. किस तिथि को ‘हिन्दी’ को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया गया है?

- (a) 15 अगस्त, 1947 (b) 26 जनवरी, 1950  
(c) 14 सितम्बर, 1949 (d) 14 सितम्बर, 1950

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. भारत की राजभाषा-

- (a) हिन्दी (b) अंग्रेजी  
(c) हिन्दी एवं अंग्रेजी (d) भारत की सभी भाषाएँ

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. संविधान के अनुच्छेद 351 में किस विषय का वर्णन है?

- (a) संघ की राजभाषा  
(b) उच्चतम न्यायालय की भाषा  
(c) पत्राचार की भाषा  
(d) हिन्दी भाषा के विकास सम्बन्धित निर्देश

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

हिन्दी भाषा के विकास के लिए यह विशेष निर्देश अनुच्छेद 351 में दिया गया कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके एवं उसका शब्द भण्डार समृद्ध और संवर्धित हो।

## □ देवनागरी लिपि का विकास एवं विशेषता

1. देवनागरी लिपि का विकास माना जाता है—

- (a) देववाणी से (b) खरोष्ठी से  
(c) ब्राह्मी से (d) सिन्धु लिपि से

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

सभी भारतीय लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई हैं। देवनागरी लिपि का विकास भी ब्राह्मी लिपि से हुआ है। देवनागरी भारत की लगभग 10 प्रमुख लिपियों में से एक है। देवनागरी एक आक्षरिक लिपि है, जो प्रचलित लिपियों (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। अधिकतर लिपियों की तरह देवनागरी भी बायें से दायें की तरफ लिखी जाती है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों जैसे ध, भ, थ इत्यादि के ऊपर रेखा कटी होती है) जिसे ‘शिरोरेखा’ कहते हैं।

### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

→ अंग्रेजी भाषा की लिपि रोमन तथा उर्दू भाषा की लिपि ‘अरबी फारसी’ होती है।

2. ‘देवनागरी’ का विकास किस लिपि से हुआ है?

- (a) खरोष्ठी (b) ब्राह्मी  
(c) फारसी (d) रोमन

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. देवनागरी लिपि का विकास किससे हुआ है?

- (a) खरोष्ठी (b) ब्राह्मी  
(c) कीलाक्षर (d) हेरीग्लिफिक

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. देवनागरी लिपि का विकास हुआ है—

- (a) खरोष्ठी से (b) फारसी से  
(c) मराठी से (d) ब्राह्मी से

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. प्राचीन देवनागरी लिपि का विकास.....से हुआ है।  
 (a) कुटिल लिपि (b) सेमेलिट लिपि  
 (c) गुरुमुखी लिपि (d) नेपाली लिपि

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T. ) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

प्राचीन देवनागरी लिपि का विकास कुटिल लिपि से हुआ है। इस कुटिल लिपि से 8-9वीं सदी के लगभग नागरी के प्राचीन रूप का विकास हुआ, जिसे प्राचीन नागरी कहते हैं। प्राचीन नागरी का क्षेत्र उत्तरी भारत है, किन्तु दक्षिणी भारत के कुछ भागों में भी यह मिली है। दक्षिण भारत में इसका नाम 'नागरी' न होकर नंदिनागरी है। प्राचीन नागरी से ही आधुनिक नागरी, गुजराती, महाजनी, राजस्थानी, कैथी, मैथिली, असमिया, बंगला आदि लिपियाँ विकसित हुई हैं।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सर विलियम जोन्स का विश्वास है कि ब्राह्मी लिपि का विकास सेमेटिक लिपि से हुआ है। सेमेटिक लिपि को मोटे रूप से तीन शाखाओं में बाँटी जा सकती है—1. उत्तरी सेमेटिक 2. दक्षिणी सेमेटिक 3. फोइनीशियन। अंगद देव जी ने प्राचीन शारदा लिपि और सीमित उपयोग की एक स्थानीय लिपि मिलाकर 'गुरुमुखी लिपि' का विकास किया।
- इसी लिपि में उन्होंने गुरु नानकदेव की तथा अपनी भी समस्त वाणी लिखी। इससे पूर्व गुरु नानक की वाणी का बहुत-सा भाग तो केवल फारसी लिपि में उपलब्ध था।
- नेपाली भाषा ब्राह्मी लिपि से उद्भूत देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। नेपाली, नेपाल की भाषा है। यह भारत की भी एक राष्ट्रीय भाषा है। नेपाली भाषा के प्राचीन नाम पहाड़ी, रवस, पर्वती और गोर्खा व गोर्खाली रहे हैं।

6. देवनागरी लिपि की सबसे बड़ी विशेषता है—

- (a) हिन्दी भाषा की लिपि होना
- (b) प्राचीन लिपि होना
- (c) अनेक भारतीय भाषाओं की लिपि होना
- (d) सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि होना, एक ध्वनि के लिए एक संकेत होना।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

भारत की सभी लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से ही निकली हैं। ब्राह्मी लिपि का प्रयोग वैदिक आर्यों ने शुरू किया। ब्राह्मी लिपि का प्राचीनतम नमूना 5वीं सदी ई. पूर्व का है, जो कि बौद्धकालीन है। गुप्तकाल के प्रारम्भ में ब्राह्मी के दो भेद हो गये—उत्तरी ब्राह्मी व दक्षिणी ब्राह्मी। दक्षिणी ब्राह्मी से तमिल लिपि/कलिंग लिपि, तेलुगू एवं कन्नड़ लिपि, ग्रन्थ लिपि तमिलनाडु, मलयालम लिपि का विकास हुआ। देवनागरी लिपि की विशेषता है—सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि का होना तथा एक ध्वनि के लिए एक ही प्रतीक (संकेत) होना। जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। शिरोरेखा का प्रयोग सुन्दरता के लिए किया जाता है।

7. निम्नांकित में से कौन विशेषता देवनागरी में नहीं है?

- (a) इसमें जैसा उच्चारण होता है, वैसा ही लिखा जाता है।
- (b) इसमें एक ध्वनि के लिए एक ही प्रतीक है।
- (c) इसमें शिरोरेखा का प्रयोग महत्वपूर्ण है।
- (d) विकास की दृष्टि से यह लिपि ब्राह्मी एवं खरोष्ठी की समकालीन है।

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'देवनागरी लिपि' के विषय में क्या सत्य नहीं है?

- (a) यह दायें से बायें लिखी जाती है।
- (b) इसकी उत्पत्ति नागर ब्राह्मणों से मानी जाती है।
- (c) यह वर्णात्मक लिपि है।
- (d) इसमें शिरोरेखा का प्रयोग किया जाता है।

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(\*)

देवनागरी लिपि बायें से दायें लिखी जाती है, इसकी उत्पत्ति नागर ब्राह्मणों से मानी जाती है। यह अक्षर पर आधारित लिपि है, इसलिए उसे 'अक्षरात्मक लिपि' कहते हैं। इसमें शिरोरेखा का प्रयोग किया जाता है (कुछ अक्षरों यथा भ, थ, ध, आदि को छोड़कर)। अतः स्पष्ट है कि प्रश्न के दो उत्तर विकल्प (a) एवं (c) सही हैं। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (a) सही उत्तर माना, जबकि विकल्प (a) तथा (c) दोनों सही उत्तर हैं।

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- द्विवेदी जी ने देवनागरी को 'संस्कृत लिपि' भी कहा है।
- द्विवेदी जी ने कहा है "संस्कृत लिपि की सरलता और शुद्धता सबको स्वीकार करनी पड़ेगी। संसार में संस्कृत के समान शुद्ध और स्पष्ट लिपि दूसरी नहीं।"

9. 'देवनागरी लिपि' मूलतः क्या है?

- (a) वर्णात्मक (b) अक्षरात्मक
- (c) चित्रात्मक (d) प्रतीकात्मक

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यंकन से बाहर कर दिया है।



# □ लिपि त्रुटियाँ सुधार के प्रयत्न

1. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित 'लिपि सुधार-परिषद्' की 28, 29 नवम्बर, 1953 को हुई बैठक की अध्यक्षता की थी-

- (a) तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन ने
- (b) तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने
- (c) तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री वी.वी. गिरि ने
- (d) तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री वी.डी. जत्ती ने

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित 'लिपि सुधार-परिषद्' की 28, 29 नवम्बर, 1953 को हुई बैठक की अध्यक्षता तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने किया था। यह बैठक लखनऊ में आयोजित की गई थी, जिसमें अनेक प्रान्तों के मुख्यमंत्रियों, विद्वानों तथा भाषाशास्त्रियों ने हिस्सा लिया था। नागरी प्रचारिणी सभा के अनुरोध पर उत्तर प्रदेश सरकार ने 'लिपि सुधार-परिषद्' की स्थापना की थी।

2. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 1947 में गठित 'देवनागरी लिपि सुधार समिति' के अध्यक्ष थे-

- (a) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा
- (b) सम्पूर्णानन्द
- (c) आचार्य नरेन्द्र देव
- (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उ.प्र. सरकार ने वर्ष 1947 में देवनागरी लिपि में सुधार के लिए 'आचार्य नरेन्द्र देव समिति' का गठन किया जिसके अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्र देव थे।

3. नागरी लिपि सुधार समिति के संयोजक थे-

- (a) काका कालेलकर
- (b) श्रीनिवास
- (c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- (d) आचार्य नरेन्द्र देव

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

नागरी लिपि में सुधार का प्रथम प्रयास महाराष्ट्र में हुआ और वहाँ के सावरकर बंधुओं ने सभी स्वरों के लिए 'अ' में ही मात्रा लगाने का सुझाव दिया। दूसरा प्रयास वर्ष 1933 में प्रारम्भ हुआ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन में गाँधीजी के सभापतित्व में नागरी लिपि में सुधार के लिए एक लघु समिति गठित की गयी, जिसके संयोजक काका कालेलकर बनाये गये। इस समिति के द्वारा प्रस्तुत 14 सुझावों को सम्मेलन ने स्वीकार किया।

4. किस विद्वान ने देवनागरी लिपि के स्थान पर रोमन लिपि स्वीकार करने का सुझाव दिया था?

- (a) महात्मा गाँधी
- (b) काका कालेलकर
- (c) सुनीति कुमार चटर्जी
- (d) विनोबा भावे

P.G.T. परीक्षा, 2009

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि के स्थान पर रोमन लिपि का प्रस्ताव डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने रखा था।

5. देवनागरी में 'अ' के बारह खड़ी का सुझाव किसने दिया था?

- (a) नरेन्द्र देव
- (b) डॉ. श्यामसुन्दर दास
- (c) काका कालेलकर
- (d) विनोबा भावे

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

सावरकर बंधुओं और काका कालेलकर ने 'अ' की बारह खड़ी को उपयोग में लाने का सुझाव दिया, किन्तु यह स्वीकार नहीं किया जा सका। उनका सुझाव था कि 'अ' में ही मात्राओं को जोड़कर लिखा जाय।

6. पंजाबी की लिपि है-

- (a) देवनागरी
- (b) गुरुमुखी
- (c) फारसी
- (d) रोमन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

पंजाबी की लिपि गुरुमुखी है। 'पंजाबी' पंजाब क्षेत्र की भाषा है। यह दो शब्दों से बना है। पाँच + आबों। 'आबों' से तात्पर्य नदियों से है। इस क्षेत्र में पाँच नदियाँ-रावी, सतलज, व्यास, चिनाब और झेलम हैं। इसलिए इसे पंजाब कहा जाता है।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- डोगरी आदि कुछ उपभाषाएँ जम्मू क्षेत्र तक फैली हैं। माझी, डोगरी, मालबाई, पोवाधी, राठी, भट्टियानी इसकी प्रमुख बोलियाँ हैं। डोगरी की लिपि 'टाकरी' है।
- पंजाबी बोलने वाले मुख्य रूप से सिक्ख हैं, इसलिए इसे 'सिक्खी' कहते हैं।
- गुरुनानक एवं अन्य गुरुओं तथा सन्तों की वाणी का संग्रह 'गुरु ग्रन्थ साहब' पंजाबी का प्रसिद्ध प्राचीन धार्मिक एवं साहित्यिक ग्रन्थ है।
- नानक, वारिसशाह, मोहन सिंह, अमृता प्रीतम पंजाबी के प्रमुख साहित्यकार हैं।

# व्याकरण

- जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप और प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे क्या कहते हैं?  
(a) पिंगलशास्त्र  
(b) भाषाशास्त्र  
(c) व्याकरण  
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
- 'द्वार-द्वार भटकना' में प्रयुक्त द्विरुक्ति 'द्वार-द्वार' है-  
(a) पारस्परिक सम्बन्ध बताने के अर्थ में  
(b) अतिशयता प्रकट करने के अर्थ में  
(c) भेद बताने के अर्थ में  
(d) समग्रता प्रकट करने के अर्थ में

P.G.T. परीक्षा, 2000

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012 उत्तर—(d)

उत्तर—(c)

व्याकरण (वि + आ + करण) का अर्थ विशेष रूप से आख्यान करना होता है। 'व्याकरण' को किसी भाषा के लिखित और बोल-चाल के रूपों का यथार्थतः समझाने वाला शास्त्र कहते हैं। इसमें शब्दों के शुद्ध रूप और प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है।

## □ संज्ञा

- आपका घर जिस शहर में है, उस शहर का नाम संज्ञा का कौन-सा भेद सूचित करता है?  
(a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक  
(c) समूहवाचक (d) भाववाचक

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

जिस शब्द से किसी एक वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-राम, गाँधीजी, गंगा, काशी आदि। राम, गाँधीजी कहने से एक व्यक्ति का, गंगा कहने से एक नदी का, काशी कहने से एक शहर का बोध होता है।

- बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोलें बोल।  
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टके का मोल।  
रहीम द्वारा लिखित इन पंक्तियों में 'बड़े' शब्द का प्रयोग जिस रूप में हुआ है, वह है-  
(a) विशेषण (b) संज्ञा  
(c) सर्वनाम (d) क्रिया-विशेषण

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रहीम द्वारा लिखित उपर्युक्त पंक्तियों में 'बड़े' शब्द का प्रयोग संज्ञा के रूप में हुआ है। जो संज्ञा सर्वनाम की विशेषता बताए, उसे विशेषण कहते हैं। उपर्युक्त पंक्ति में बड़ाई, बोलें बोल, बड़े शब्द की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये विशेषण हुए और 'बड़े' शब्द संज्ञा।

'द्वार-द्वार' संज्ञा शब्द की द्विरुक्ति है। द्विरुक्ति का अर्थ है—दुहराना; एक उक्ति को दो बार उच्चारित करना। इसकी रचना सार्थक शब्दों की आवृत्ति से होती है। प्रस्तुत वाक्य में 'द्वार-द्वार' द्विरुक्ति का प्रयोग 'समग्रता प्रकट करने के अर्थ में' हुआ है।

### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

☞ द्विरुक्ति विभिन्न अर्थों का द्योतक है जो इस प्रकार हैं—

- पारस्परिक सम्बन्ध बताने के अर्थ में—भाई-भाई का प्रेम।
- अतिशयता प्रकट करने के अर्थ में—दाने-दाने का मोहताज, काले-काले बाल।
- भेद बताने के अर्थ में—रंग-रंग के फूल, नए-नए खेला।
- एक जाति होने के अर्थ में—छोटे-छोटे लड़के।
- अभाव के अर्थ में—छोटी-छोटी वस्तु, फीका-फीका रंग।
- निश्चय के अर्थ में—आएगा, जाएगा।

- संज्ञाओं के साथ आने वाली विभक्तियों को क्या कहा जाता है?

- (a) संश्लिष्ट (b) विश्लिष्ट  
(c) श्लिष्ट (d) उपर्युक्त में कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

हिन्दी व्याकरण में विभक्तियों के प्रयोग की विधि निश्चित है। हिन्दी में दो तरह की विभक्तियाँ हैं— 1. विश्लिष्ट, 2. संश्लिष्ट। संज्ञाओं के साथ आने वाली विभक्तियाँ विश्लिष्ट होती हैं अर्थात् अलग रहती हैं। जैसे-राम ने सर्वनाम के साथ विभक्तियाँ संश्लिष्ट या मिली होती हैं। जैसे-उसका, तुमको।

- 'हमारे देश में जयचंदों की कमी नहीं है' में 'जयचंदों' संज्ञा के किस भेद के अन्तर्गत आता है?

- (a) व्यक्तिवाचक (b) समूहवाचक  
(c) जातिवाचक (d) भाववाचक

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

कुछ व्यक्तियों में कुछ विचित्र गुण होते हैं या वे दुर्लभ गुणों के कारण उनके प्रतिनिधि माने जाते हैं। उन व्यक्तियों का नाम लेते ही उनका वह गुण दिमाग के सामने आ जाता है। ऐसी स्थिति में इनका जातिवाचक के रूप में प्रयोग होता है। **जैसे—** 'भीष्म पितामह' शब्द सुनते ही दृढ़-प्रतिज्ञा वाले व्यक्ति का चित्र सामने आता है। कुछ उदाहरण द्वारा इसे समझा जा सकता है। **जैसे—**

1. हमारे देश में जयचन्दों की कमी नहीं है।
  2. विभीषणों से बचो।
  3. कल्युग में भी हरिश्चन्द्रों की कमी नहीं है।
  4. वह तो एकलव्य है, गुरु के लिए कुछ भी कर सकता है।
- उपर्युक्त उदाहरणों में जयचन्द 'विश्वाशघात', विभीषण 'देशद्रोही', एकलव्य 'गुरुभक्ति' के प्रतिनिधि के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

6. इनमें से भाववाचक संज्ञा है -

- (a) तप (b) तीर  
(c) भरत (d) चिन्ता

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

जिस शब्द में किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के गुण, दशा, भाव, धर्म, स्वभाव, इत्यादि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - दया, क्रोध, चिन्ता, ममत्व, मनुष्यता, लड़कपन इत्यादि।

7. 'राष्ट्र' की भाववाचक संज्ञा है-

- (a) राष्ट्री (b) राष्ट्रीय  
(c) सौराष्ट्र (d) राष्ट्रीयता

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

भाववाचक संज्ञा प्रायः पाँच प्रकार के शब्दों से बनती है-जातिवाचक संज्ञा से, विशेषण से, सर्वनाम से, क्रिया से तथा अव्यय से। राष्ट्र एक जातिवाचक संज्ञा है। इसका भाववाचक संज्ञा में रूपान्तरण राष्ट्रीयता है।

8. 'सुन्दर' की भाववाचक संज्ञा है -

- (a) सुन्दरता (b) सौन्दर्य  
(c) केवल 'a' (d) 'a' व 'b' दोनों

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'सुन्दर' की भाववाचक संज्ञा 'सुन्दरता' तथा 'सौन्दर्य' दोनों होता है।

9. 'आज गणित के अध्यापक ने कक्षा नहीं ली' वाक्य में अर्थ के आधार पर वाक्य है-

- (a) आज्ञावाचक वाक्य (b) निषेधवाचक वाक्य  
(c) प्रश्नवाचक वाक्य (d) इच्छावाचक वाक्य

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जिस वाक्य से किसी बात या कार्य के न होने का बोध हो, वह निषेधात्मक वाक्य होता है। प्रस्तुत वाक्य में निषेधवाचक वाक्य है।

## □ सर्वनाम

1. कतिपय हिन्दी वैयाकरणों द्वारा 'संज्ञा प्रतिनिधि' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

- (a) क्रिया के लिए (b) विशेषण के लिए  
(c) संज्ञा के भेद के लिए (d) सर्वनाम के लिए

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

सर्वनाम को 'संज्ञा का प्रतिनिधि' भी कहा जाता है।

2. 'श्रोता' के लिए किस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है?

- (a) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम  
(b) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम  
(c) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम  
(d) उपर्युक्त सभी गलत हैं

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'पुरुषवाचक सर्वनाम' पुरुषों (स्त्री या पुरुष) के नाम के बदले आते हैं। उत्तम पुरुष में लेखक या वक्ता आता है, मध्यम पुरुष में पाठक या श्रोता और अन्य पुरुष में अन्य लोग आते हैं; इसके तीन भेद हैं—

उत्तमपुरुष - मैं, हम, मुझे, मुझको, हमारा।

मध्यमपुरुष - तू, तुम, आप, तुझे, तुझको, तुम्हारा।

अन्यपुरुष - वह, वे, यह, ये,इसे, इसको,उसे, उसको।

3. 'कोई' और 'कुछ' का प्रयोग इनमें से किस सर्वनाम में किया जाता है?

- (a) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (b) निश्चयवाचक सर्वनाम  
(c) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (d) निजवाचक सर्वनाम

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-कोई, कुछ इत्यादि।

4. 'जैसा करोगे, वैसा भरोगे'—में कौन-सा सर्वनाम है?

- (a) पुरुषवाचक सर्वनाम (b) प्रश्नवाचक सर्वनाम  
(c) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (d) निजवाचक सर्वनाम

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

प्रस्तुत वाक्य में सम्बन्धवाचक सर्वनाम है। जिस सर्वनाम से दो वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध प्रकट होता है, उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं।

5. 'यह काम मैं आप कर लूँगा' पंक्तियों में 'आप' है-

- (a) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (b) निजवाचक सर्वनाम  
(c) निश्चयवाचक सर्वनाम (d) पुरुषवाचक सर्वनाम

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

निजवाचक सर्वनाम का रूप 'आप' है। निजवाचक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग निम्न अर्थों में होता है-

1. निजवाचक 'आप' का प्रयोग किसी संज्ञा या सर्वनाम के निश्चय के लिए होता है।
2. निजवाचक 'आप' का प्रयोग दूसरे व्यक्ति के निराकरण के लिए भी होता है।
3. सर्वसाधारण के अर्थ में भी 'आप' का प्रयोग होता है।
4. अवधारण के अर्थ में कभी-कभी 'आप' के साथ 'ही' जोड़ा जाता है।

6. हिन्दी के अन्य पुरुष के निश्चयवाचक सर्वनाम का अविकारी रूप है-

- (a) वह (b) उन  
(c) उस (d) उन्हें

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

हिन्दी के अन्य पुरुष के निश्चयवाचक सर्वनाम का अविकारी रूप 'वह' है।

7. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द सर्वनाम नहीं है?

- (a) कौन (b) कोई  
(c) उसने (d) दसगुना

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

'दसगुना' विशेषण है। यह निश्चित संख्यावाचक विशेषण के अन्तर्गत आता है।

## □ क्रिया

1. निम्नलिखित वाक्यों में से एक में संयुक्त क्रिया का प्रयोग नहीं हुआ है—

- (a) मेरे हाथ से गिलास गिरा और टूट गया।  
(b) मैं अपने घर में रहूँगा।  
(c) स्वस्थ होना है, तो तुमको दवा पीनी पड़ेगी।  
(d) लड़का प्रसन्न होकर चलता बना।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं। संयुक्त क्रिया में प्रायः पहली क्रिया प्रधान होती है और दूसरी उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करती है। विकल्प (b) में संयुक्त क्रिया का प्रयोग नहीं हुआ है। अन्य विकल्पों में संयुक्त क्रिया का प्रयोग हुआ है।

2. 'चिड़िया आकाश में उड़ रही है' वाक्य में 'उड़ रही' क्रिया है—

- (a) प्रेरणार्थक क्रिया (b) अपूर्णकालिक क्रिया  
(c) सकर्मक क्रिया (d) अकर्मक क्रिया

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'चिड़िया आकाश में उड़ रही है' वाक्य में 'उड़ रही' अकर्मक क्रिया है। यहाँ पर कर्ता (चिड़िया) द्वारा स्वयं क्रिया (उड़ना) संपन्न कराया जा रहा है। अतः यह अकर्मक क्रिया हुई।

3. 'उठाना' क्रिया का अकर्मक रूप है—

- (a) उठवाया (b) उठाएगा  
(c) उठाया (d) उठना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(d)

'उठाना' क्रिया का अकर्मक रूप 'उठना' है। दौड़ना, सोना, रोना, लजाना इत्यादि अकर्मक क्रिया हैं।

4. निम्नलिखित में से एक अकर्मक क्रिया है—

- (a) काटना (b) बोना  
(c) धोना (d) रोना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. निम्नलिखित वाक्यों में से एक में सकर्मक क्रिया का प्रयोग हुआ है?

- (a) मैं चला। (b) वह नहाता है।  
(c) लड़का सो रहा है। (d) लड़की सिल रही है।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

विकल्प (d) के वाक्य में सकर्मक क्रिया का प्रयोग हुआ है। अन्य विकल्पों में अकर्मक क्रिया का प्रयोग हुआ है।

6. सकर्मक क्रिया का उदाहरण है -

- (a) दौड़ना (b) हँसना  
(c) पढ़ना (d) आना

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'पढ़ना' सकर्मक क्रिया का उदाहरण है। जिस क्रिया के व्यापार का संचालन तो कर्ता करता है, परन्तु फल दूसरे पर पड़ता है, वहाँ सकर्मक क्रिया होती है।



# □ विशेषण एवं विशेष्य

1. 'राम की गाय बहुत काली है' वाक्य में 'काली' शब्द है-

- (a) सर्वनाम (b) क्रिया  
(c) विशेषण (d) प्रविशेषण

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

जिन शब्दों से संज्ञा के गुण, दशा, स्वभाव आदि लक्षित हों, उसे गुणवाचक 'विशेषण' कहते हैं। 'राम की गाय बहुत काली है' वाक्य में 'काली' विशेषण है तथा 'बहुत' प्रविशेषण है। प्रविशेषण, विशेषण की विशेषता बताता है तथा यह विशेषण के पहले आता है।

2. सही युग्म पहचानिए-

- (a) काले - टोपी (b) सुनहरी - पत्ता  
(c) दुबला-पतला - लड़का (d) उड़ता हुआ - चिड़िया

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'दुबला-पतला' गुणवाचक विशेषण है। यह दशा का बोध कराता है। इसलिए 'दुबला-पतला-लड़का' युग्म सुमेलित है। विकल्प (a) में टोपी के साथ 'काली' विशेषण तथा विकल्प (b) में पत्ता के साथ 'सुनहरी' विशेषण का प्रयोग उचित होगा। विकल्प (d) में क्रिया का प्रयोग लिंग के अनुसार नहीं किया गया है।

3. निम्नलिखित शब्दों में से विशेषण है—

- (a) प्रपंच (b) सरपंच  
(c) पहुँच (d) पाँचवाँ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'पाँचवाँ' शब्द में क्रमवाचक विशेषण है। यह निश्चित संख्यावाचक विशेषण के अन्तर्गत आता है।

4. निम्नलिखित में से कौन समुदायवाचक विशेषण है?

- (a) चौगुना (b) चौथा  
(c) चारों (d) चार

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'चारों' में समुदायवाचक विशेषण है। इसे समूह-वाचक विशेषण भी कहते हैं। यह निश्चित संख्यावाचक विशेषण के प्रकार में आता है। इसके भेद इस प्रकार हैं-

गणनावाचक विशेषण	- एक, दो, तीन
क्रमवाचक विशेषण	- पहला, दूसरा, तीसरा
आवृत्तिवाचक विशेषण	- दूना, तिगुना, चौगुना
समुदायवाचक विशेषण	- दोनों, तीनों, चारों
प्रत्येकबोधक विशेषण	- प्रत्येक, हर एक

5. 'दूसरा लड़का कहाँ गया?' वाक्य में 'दूसरा' किस प्रकार का विशेषण है?

- (a) समुदायवाचक (b) गणनावाचक  
(c) क्रमवाचक (d) आवृत्तिवाचक

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'उत्साह' शब्द का विशेषण है-

- (a) अत्साह (b) उत्साहित  
(c) उत्साव (d) उत्साही

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'उत्साह' शब्द का विशेषण उत्साहित है।

7. निम्नलिखित वाक्यों में से एक में विशेषण का प्रयोग नहीं हुआ है?

- (a) दोनों बच्चों बहुत भूखे थे। (b) माँ ने गरमागरम खाना बनाया।  
(c) बच्चों ने खाना खाया। (d) माँ ने कहा और रोटी लो।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में विशेषण का प्रयोग नहीं हुआ है। विकल्प (a) में 'बहुत', विकल्प (b) में 'गरमागरम' तथा विकल्प (d) में 'और' विशेषण के रूप में प्रयोग हुआ है।

8. निम्नलिखित संज्ञा-विशेषण जोड़ी में कौन-सा सही नहीं है?

- (a) विष-विषैला (b) पिता-पौतक  
(c) आदि-आदिम (d) प्रांत-प्रांतिक

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'प्रांत-प्रांतिक' संज्ञा-विशेषण जोड़ी में सही नहीं है। इसका शुद्ध रूप प्रांत-प्रांतीय है। अन्य विकल्पों के युग्म सही हैं।

9. निम्नलिखित में से परिमाणबोधक विशेषण है -

- (a) भूखे लोग (b) सूखे पेड़  
(c) सूनी धरती (d) कम आमदनी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा अथवा नाप-तौल का बोध होता है, वे परिमाणबोधक विशेषण कहलाते हैं। इसके दो भेद हैं- निश्चित परिमाणबोधक तथा अनिश्चित परिमाणबोधक। विकल्प (d) में 'कम' अनिश्चित परिमाणबोधक विशेषण का उदाहरण है।

10. निम्नलिखित शब्दों में से एक विशेषण है -

- (a) शैशव (b) माधुर्य  
(c) आर्थिक (d) बचपन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'आर्थिक' शब्द विशेषण है। शैशव, माधुर्य तथा बचपन संज्ञा है।

11. निम्नांकित वाक्यों में क्रिया-विशेषण युक्त वाक्य कौन-सा है?

- (a) मैं कल नहीं जाऊँगा (b) यह फूल सुन्दर है  
(c) लड़का रोते-रोते घर पहुँचा (d) आज शाम को मत आना

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

जो उपवाक्य क्रिया विशेषण की तरह व्यवहृत हो, उसे क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहते हैं। इसमें समय, स्थान, कारण, उद्देश्य, फल, अवस्था, मात्रा इत्यादि का बोध होता है। प्रस्तुत वाक्य 'लड़का रोते-रोते घर पहुँचा' में रोते-रोते क्रिया-विशेषण उपवाक्य है।

12. विधान करने वाले शब्दों की विशेषता बतलाने वाला शब्द किसे कहते हैं?

- (a) संज्ञा (b) सर्वनाम  
(c) विशेषण (d) क्रिया-विशेषण

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विधान करने वाले शब्दों की विशेषता बतलाने वाले शब्द को 'क्रिया-विशेषण' कहते हैं।

13. निम्नलिखित मिश्र वाक्यों में से कौन-सा विशेषण उपवाक्य है?

- (a) मैं कहता हूँ कि तुम भोपाल जाओ।  
(b) लखनऊ, जो उत्तर प्रदेश की राजधानी है, एक ऐतिहासिक नगर है।  
(c) जब मैं स्टेशन पहुँचा, तभी ट्रेन आयी।  
(d) मैं चाहता हूँ कि आप यहीं रहें।

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

जो आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह व्यवहृत हो, उसे 'विशेषण-उपवाक्य' कहते हैं। इसमें 'जो', 'जैसा', 'जितना' इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। 'लखनऊ, जो उत्तर प्रदेश की राजधानी है, एक ऐतिहासिक नगर है' में 'जो उत्तर प्रदेश की राजधानी है', आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह कार्य कर रहा है। इसलिए यह विशेषण उपवाक्य है।

14. 'सीता की खोज के लिए हनुमान को अगाध सागर को पार करने के लिए पुल से नहीं, आकाश मार्ग से जाना पड़ा था।'

उपर्युक्त वाक्य में विशेष्य का चयन कीजिए।

- (a) सीता (b) हनुमान  
(c) सागर (d) आकाश

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त वाक्य में 'सागर' विशेष्य है और 'अगाध' विशेषण के रूप में प्रयोग किया गया है। जिस शब्द की विशेषता बतलायी जाती है, उसे 'विशेष्य' तथा विशेषता बताने वाले शब्द को 'विशेषण' कहते हैं।

15. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विशेषण है?

- (a) मेजपोश (b) मिठास  
(c) सौतेला (d) सरलता

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'सौतेला' शब्द विशेषण है।

□ वर्तनी

1. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध है?

- (a) पुष्पांजली (b) मंत्रीपरिषद  
(c) वाल्मीकि (d) अध्यात्मिक

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

वर्तनी की दृष्टि से 'वाल्मीकि' शब्द शुद्ध है। अन्य शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। शुद्ध वर्तनी क्रमशः इस प्रकार है - पुष्पांजलि, मंत्रीपरिषद, आध्यात्मिक।

2. इनमें से शुद्ध वर्तनी का शब्द है -

- (a) कृशांगिनी (b) कृषांगी  
(c) कृशांगी (d) कृसांगी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

कृशांगी शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध वर्तनी के शब्द हैं।

3. वर्तनी की दृष्टि से इनमें से अशुद्ध शब्द है -

- (a) ज्योत्स्ना (b) अहोरात्र  
(c) भाष्कर (d) मिष्टान्न

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

वर्तनी की दृष्टि से 'भाष्कर' अशुद्ध शब्द है। इसका शुद्ध शब्द 'भास्कर' होता है। ज्योत्स्ना, अहोरात्र तथा मिष्टान्न की वर्तनी शुद्ध है।

4. इनमें से एक शब्द की वर्तनी अशुद्ध है, वह है -

- (a) द्वारिका (b) अहल्या  
(c) आर्द्र (d) प्रव्रज्या

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'द्वारिका' अशुद्ध वर्तनी है। इसका शुद्ध वर्तनी 'द्वारका' होता है। शेष वर्तनी शुद्ध हैं।

5. निम्नलिखित में से किस शब्द की वर्तनी अशुद्ध है?

- (a) ज्योत्स्ना (b) शृंगार  
(c) उज्ज्वल (d) अध्यात्म

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'ज्योत्स्ना' शब्द की वर्तनी अशुद्ध है। इसका शुद्ध वर्तनी 'ज्योत्स्ना' होती है। अन्य विकल्पों में शुद्ध वर्तनी प्रयुक्त हुई है।

निर्देश (प्रश्न 6-8) : दिये गये विकल्पों में से शुद्ध वर्तनी वाला शब्द  
छाँटिये -

6. (a) शंशय (b) संशय  
(c) सन्शय (d) संशय

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

‘संशय’ शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है। अन्य विकल्प वर्तनी की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण हैं।

7. (a) दृष्य (b) दृश्य  
(c) द्रिष्य (d) दृश

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

‘दृश्य’ वर्तनी शुद्ध है। अन्य विकल्प अशुद्ध हैं।

8. (a) उद्योगिक (b) औद्योगिक  
(c) उद्योगिक् (d) ओद्योगिक

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

‘औद्योगिक’ शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है। अन्य विकल्प वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध हैं।

9. नीचे एक ही शब्द की चार वर्तनी दी गयी है, सही का चयन कीजिए—  
(a) छतीस (b) छतिस  
(c) छत्तिस (d) छत्तीस

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

शुद्ध वर्तनी की दृष्टिकोण से ‘छत्तीस’ सही शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

10. नीचे एक ही शब्द की वर्तनी चार तरह से लिखी गयी है, सही का चयन कीजिए—  
(a) अनुग्रहीत (b) अनुगृहीत  
(c) अनुगृहीत (d) अनुगृहिह

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘अनुगृहीत’ शुद्ध वर्तनी है, शेष त्रुटिपूर्ण हैं।

11. ‘हस्ताक्षेप’ का शुद्ध शब्द है—  
(a) हस्थोक्षेप (b) हस्तक्षेप  
(c) हस्तक्षेप (d) हस्तेक्षेप

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

‘हस्ताक्षेप’ का शुद्ध शब्द ‘हस्तक्षेप’ होता है।

12. अहेतुकी का शुद्ध रूप है—  
(a) अहितकी (b) अहैतुकी

(c) वेतुकी

(d) अभितुकी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘अहेतुकी’ का शुद्ध रूप ‘अहैतुकी’ है, शेष अशुद्ध हैं।

13. एक ही शब्द की वर्तनी चार तरह से लिखी गयी है, सही का चयन कीजिए—  
(a) उपर्लिखित (b) उपरलिखित  
(c) ऊपरलिखित (d) ऊपर्लिखित

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘उपरलिखित’ वर्तनी शुद्ध है, शेष त्रुटिपूर्ण हैं।

14. ‘हिन्दी कोश’ में सर्वप्रथम कौन-सा शब्द आयेगा?

- (a) अँकन (b) अकंट  
(c) अंकन (d) अर्क

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

‘हिन्दी कोश’ में शब्दों का क्रम आने का इस प्रकार है - अंकन, अँकन, अकंट तथा अर्क।

15. शुद्ध वर्तनी वाले शब्द का चयन कीजिये -

- (a) प्रागैतिहासिक (b) प्रागैतिहासिक  
(c) प्रागतिहासिक (d) प्रागइतिहासिक

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

‘प्रागैतिहासिक’ शब्द शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है। अन्य विकल्पों में त्रुटिपूर्ण वर्तनी प्रयुक्त है।

16. निम्नलिखित में से अशुद्ध वर्तनी का शब्द है—

- (a) ज्योत्स्ना (b) अहल्या  
(c) मिष्टान्न (d) अन्तर्धान

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

‘मिष्टान्न’ अशुद्ध वर्तनी वाला शब्द है। इसका शुद्ध वर्तनी ‘मिष्टान्न’ होगा। अन्य विकल्पों की वर्तनी शुद्ध है।

17. ‘66’ अंक का केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के अनुसार मानक उच्चारण है—

- (a) छाछट (b) छासट  
(c) छियाछट (d) छियासट

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

‘66’ अंक का केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय अनुसार मानक उच्चारण ‘छियासट’ है।

18. निम्नलिखित में से एक की वर्तनी शुद्ध है—

- (a) आधीन (b) आकंड  
(c) आकस्मात् (d) आकांड तांडव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

विकल्प (b) की वर्तनी शुद्ध है। अन्य विकल्पों की शुद्ध वर्तनी इस प्रकार है— आधीन-अधीन, आकस्मात्-अकस्मात् तथा आकांड तांडव-अकांड तांडव। अकांड तांडव का अर्थ होता है-व्यर्थ का झगड़ा।

19. इनमें से एक शब्द की वर्तनी अशुद्ध है, वह शब्द है:

- (a) प्रदर्शित (b) अहोरात्र  
(c) इकतारा (d) भाष्कर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

भाष्कर वर्तनी अशुद्ध है, शुद्ध वर्तनी भास्कर है। शेष शुद्ध वर्तनी के शब्द हैं।

20. इनमें से गलत वर्तनी का शब्द है:

- (a) आधीन (b) ज्योत्स्ना  
(c) अहर्निश (d) अनुगृहीत

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

आधीन गलत वर्तनी है, शुद्ध वर्तनी अधीन है। शेष वर्तनी शुद्ध है।

21. निम्नलिखित शब्दों में से एक की वर्तनी शुद्ध है -

- (a) आभ्यान्तरिक (b) अत्याधिक  
(c) निरोग (d) निरपराधिनी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

‘निरपराधिनी’ शुद्ध वर्तनी है। अन्य शुद्ध वर्तनी इस प्रकार हैं - आभ्यान्तरिक - आभ्यान्तर, अत्याधिक - अत्यधिक तथा निरोग - नीरोग।

22. निम्नलिखित में से वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द का चयन करें—

- (a) पूज्यनिय (b) उज्जल  
(c) परिपार्श्विक (d) जोत्यसना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

‘परिपार्श्विक’ शुद्ध शब्द है, शेष वर्तनी अशुद्ध हैं। इनके शुद्ध शब्द क्रमशः पूजनीय, उज्ज्वल तथा ज्योत्स्ना हैं।

23. कौन-सी वर्तनी ठीक है?

- (a) रचैता (b) रचइता  
(c) रचयिता (d) रचयता

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

वर्तनी की दृष्टि से रचयिता शुद्ध है, शेष अशुद्ध हैं।

24. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—

- (a) कुमुदती (b) कुमुदुनी  
(c) कुमुदिनी (d) कुमदुनी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

‘कुमुदिनी’ शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

25. ‘आलौकिक’ का शुद्ध शब्द है—

- (a) अलौकुक (b) अलोकिक  
(c) अलौकिक (d) आलोकुक

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

‘आलौकिक’ का शुद्ध शब्द ‘अलौकिक’ है।

26. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द शुद्ध है?

- (a) अधिशासी (b) अधिशाणी  
(c) अधिसाशी (d) अधिषाणी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

‘अधिशासी’ शुद्ध शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

27. निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध शब्द है—

- (a) जीजीविषा (b) जिजीविषा  
(c) जीजिविषा (d) जिजिविषा

P.G.T. परीक्षा, 2002

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

‘जिजीविषा’ शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

निर्देश प्रश्न (28-32 के लिए)— इन प्रश्नों में स्वर या मात्रा की दृष्टि से शब्द को अशुद्ध रूप में लिया गया है। नीचे दिये गये चार विकल्पों में से शुद्ध रूप चुनिए—

28. (a) निलिप्त (b) निर्लिप्त  
(c) निर्लिप्त (d) निर्लीप्त

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

शुद्ध रूप ‘निर्लिप्त’ है, शेष अशुद्ध हैं।

29. (a) इच्छादुम (b) इच्छाद्दुम  
(c) इच्छाद्रम (d) इच्छाद्म

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

इच्छाद्रम शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

30. (a) द्विरुक्ति (b) द्विरुक्ति  
(c) द्विरक्ती (d) द्विरुकती

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

द्विरुक्ति शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।



31. (a) विसमृति (b) विसमरती  
(c) विस्मृती (d) विस्मृति

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

वर्तनी की दृष्टि से 'विसमृति' शुद्ध शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

32. (a) जगतापाण (b) जगतप्राण  
(c) जगत्प्राण (d) जगत्पाण

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'जगत्प्राण' शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

33. निम्नलिखित में शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—

- (a) ज्योत्सना (b) ज्यौत्सना  
(c) ज्योतसना (d) ज्योत्सना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में प्रस्तुत 'ज्योत्सना' शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

34. वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द सही है?

- (a) ज्योतसना (b) ज्योत्सना  
(c) ज्योत्सिना (d) जोत्सना

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. निम्नलिखित में शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—

- (a) सदृश्य (b) सदृश  
(c) सदृष्य (d) सदृश

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'सदृश' वर्तनी शुद्ध है जिसका अर्थ 'समान' होता है, शेष अशुद्ध हैं।

36. निम्नलिखित में शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—

- (a) उच्छृंखल (b) उच्छृंखल  
(c) उच्छृंखल (d) उच्छृंखल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'उच्छृंखल' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

37. निम्न में शुद्ध रूप कौन-सा है?

- (a) प्रदर्शिनी (b) प्रदर्शनी  
(c) प्रर्दशिनी (d) प्रर्दिशनी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'प्रदर्शनी' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

38. निम्नलिखित की सही वर्तनी होगी—

- (a) आनुषंगिक (b) अनुषंगिक  
(c) अनुसंगिक (d) आनुसंगिक

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'आनुषंगिक' शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

39. इनमें से वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द है—

- (a) उज्जवल (b) उज्ज्वल  
(c) उज्वल (d) उजवल

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द 'उज्ज्वल' है, शेष अशुद्ध हैं।

40. निम्न में शुद्ध रूप कौन-सा है?

- (a) हतोत्साह (b) हतोत्साहित  
(c) हतोसाह (d) हतोत्साह

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'हतोत्साह' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

41. इनमें से कौन-सा शब्द शुद्ध है?

- (a) यानी (b) बाल्मिकी  
(c) उज्ज्वल (d) द्वन्द्व

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द 'यानी' है, अन्य शब्द त्रुटिपूर्ण हैं। बाल्मिकी, उज्ज्वल तथा द्वन्द्व शब्द के शुद्ध शब्द क्रमशः वाल्मीकि, उज्ज्वल तथा द्वन्द्व हैं।

42. शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—

- (a) मानविकरण (b) मानवीकरण  
(c) मानवीकरण (d) मानवीकरण

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'मानवीकरण' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

43. निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध शब्द को चुनिए—

- (a) सन्यास (b) संन्यास  
(c) सन्नयास (d) संयास

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

संन्यास शुद्ध शब्द है, शेष वर्तनी अशुद्ध हैं।

44. वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द सही है?

- (a) संन्यासी (b) सन्यासी  
(c) सनियासी (d) सनयासी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

‘संन्यासी’ शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

45. वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द सही है?

- (a) संन्यासी (b) सनयासी  
(c) सन्यासी (d) संनयासी

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. निम्नलिखित में से शुद्ध शब्द है-

- (a) पूज्यनीय (b) पुज्यनीय  
(c) पूजनीय (d) पुजनीय

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द ‘पूजनीय’ है, शेष अशुद्ध हैं।

47. इनमें से शुद्ध वर्तनी वाला शब्द कौन-सा है?

- (a) आशीवाद (b) असीवाद  
(c) आशीर्वाद (d) असीरवाद

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

शुद्ध वर्तनी की दृष्टि से ‘आशीर्वाद’ सही शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

48. इनमें से कौन-सा शब्द वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध है?

- (a) आशीवाद (b) आशीर्वाद  
(c) आशीर्वाद (d) आशीर्वाद

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. निम्नलिखित में से वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध शब्द का चयन कीजिए-

- (a) शरच्चंद्र (b) यानि  
(c) श्मश्रु (d) कवयित्री

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

‘यानि’ अशुद्ध शब्द है। इसका ‘शुद्ध रूप ‘यानी’ है। शेष शब्द शुद्ध हैं। विकल्प (a) में प्रस्तुत शब्द सन्धि के निम्न व्यंजन संधि के अनुसार सही है।

50. वर्तनी की दृष्टि से इनमें अशुद्ध शब्द है-

- (a) यानि (b) यानी  
(c) सूची (d) शुष्क

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. वर्तनी की दृष्टि से निम्नलिखित में शुद्ध शब्द है-

- (a) उपर्युक्त (b) ऊपररुक्त  
(c) उपरियुक्त (d) ऊपरोक्त

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द ‘उपर्युक्त’ है, शेष अशुद्ध हैं।

52. नीचे एक ही शब्द की वर्तनी चार तरह से लिखी गयी है, सही का चयन कीजिए-

- (a) कवियित्री (b) कवियत्री  
(c) कवयित्री (d) कवइत्री

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘कवयित्री’ शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

53. वर्तनी की शुद्धता को ध्यान में रखते हुए नीचे दिए गए विकल्पों में कौन शुद्ध है?

- (a) कवियित्री (b) कवित्री  
(c) कवीत्री (d) कवयित्री

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

54. निम्नलिखित में शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए-

- (a) कवियित्री (b) कवित्री  
(c) कवियत्री (d) कवयित्री

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. निम्नलिखित में से सही शब्द छांटिए-

- (a) कवियित्री (b) कवयित्री  
(c) कवियत्री (d) कविइत्री

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

56. निम्नलिखित में से एक शब्द की वर्तनी अशुद्ध है-

- (a) उज्ज्वल (b) कवयित्री  
(c) कवियित्री (d) मोक्ष

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

‘कवियित्री’ अशुद्ध वर्तनी है, इसका शुद्ध वर्तनी ‘कवयित्री’ है, शेष वर्तनी शुद्ध हैं।

57. शुद्ध रूप कौन-सा है?

- (a) तादात्म्य (b) तादात्मय  
(c) तदात्म्य (d) तदात्मक

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

‘तादात्म्य’ शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

58. 'कक्षा' शब्द का शुद्ध उच्चारण है—

- (a) कच्छा (b) कछ्छ  
(c) कक्छा (d) कक्छा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'कक्षा' शब्द का शुद्ध उच्चारण 'कक्छा' है।

## □ सन्धि

### स्वर सन्धि

1. 'कल्पांत' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

- (a) गुण सन्धि (b) यण सन्धि  
(c) दीर्घ सन्धि (d) व्यंजन सन्धि

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'कल्पांत' में दीर्घ सन्धि है। इसका सन्धि विच्छेद 'कल्प + अंत' होता है। यहाँ 'अ + अ' मिलकर 'आ' हो जा रहा है।

2. 'अपीक्षते' का सही सन्धि-विच्छेद है -

- (a) अपी + क्षते (b) अप + ईक्षते  
(c) अपि + ईक्षते (d) अपि + इक्षते

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'अपीक्षते' का सन्धि-विच्छेद 'अपि + इक्षते' होता है। यहाँ 'इ + इ' मिलकर 'ई' हो जा रहा है। यह दीर्घ स्वर सन्धि है।

3. 'नैतत्' में सन्धि-विच्छेद होगा—

- (a) न + ऐतत् (b) न + एतत्  
(c) ना + ऐतत् (d) ना + इतत्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'नैतत्' का सन्धि विच्छेद 'न + ऐतत्' होगा। यह वृद्धि स्वर सन्धि है।

4. 'अन्यान्य' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा-

- (a) अ + न्यान्य (b) अन्य + अन्य  
(c) अन् + यान्य (d) अन्या + आन्य

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

दीर्घ स्वर सन्धि में दो सवर्ण स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। यदि 'अ', 'आ', 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और 'ऋ' के बाद वे ही ह्रस्व या दीर्घ स्वर आये, तो दोनों मिलकर क्रमशः 'आ', 'ई', 'ऊ' और 'ऋ' हो जाते हैं। जैसे—  
अन्न + अभाव = अन्नाभाव विद्या + अर्थी = विद्यार्थी  
अन्य + अन्य = अन्यान्य विद्या + अभ्यास = विद्याभ्यास

महा + आशय = महाशय

विद्या + आलय = विद्यालय

गिरि + ईश = गिरीश

मही + इन्द्र = महीन्द्र

पृथ्वी + ईश = पृथ्वीश

भोजन + आलय = भोजनालय

भानु + उदय = भानूदय

पितृ + ऋण = पितृण

5. निम्नलिखित में से किस शब्द में स्वर सन्धि है?

- (a) नमस्कार (b) जगदीश  
(c) भानूदय (d) दुर्लभ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. सही सन्धि-विच्छेद का चयन कीजिए—

- (a) वि + द्यार्थी (b) विद्या + अर्थी  
(c) विद्या + आर्थी (d) विद्या + थीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'विद्यालय' का सही सन्धि विच्छेद कीजिए—

- (a) विद्या + आलय (b) विद्य + आलय  
(c) विद्य + ओलय (d) विद्यया + आलय

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'विद्याभ्यास' का सन्धि विच्छेद क्या होगा?

- (a) विद्या + अभयास (b) विद्य + अभ्यास  
(c) विद्या + अभ्यास (d) विद्या + भ्यास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'व्याप्त' में सन्धि है—

- (a) गुण सन्धि (b) दीर्घ सन्धि  
(c) यण सन्धि (d) अयादि सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

यण स्वर सन्धि में यदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर आये, तो 'इ' तथा 'ई' का 'य', 'उ' तथा 'ऊ' का 'व' और 'ऋ' का 'र' हो जाता है। जैसे— प्रति + अंतर = प्रत्यंतर, प्रति + अभिज्ञ = प्रत्यभिज्ञ, त्रि + अक्षर = त्र्यक्षर आदि

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

यण स्वर सन्धि के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण इस प्रकार हैं—

इ + अ = य

गति + अवरोध = गत्यवरोध  
 यदि + अपि = यद्यपि  
 अति + अंत = अत्यंत  
 अभि + अर्थी = अभ्यर्थी  
 अति + अल्प = अत्यल्प  
 आदि + अंत = आद्यंत  
 स्वस्ति + अयन = स्वस्त्ययन  
 अधि + अक्ष = अध्यक्ष  
 अभि + अंतर = अभ्यंतर  
 परि + अंत = पर्यंत  
 परि + अटन = पर्यटन  
 वि + अग्र = व्यग्र  
 प्रति + अपकार = प्रत्यपकार  
 मति + अनुसार = मत्यनुसार  
 अति + अधिक = अत्यधिक  
 रीति + अनुसार = रीत्यनुसार  
 परि + अंक = पर्यंक  
 परि + अवेक्षण = पर्यवेक्षण  
 वि + अष्टि = व्यष्टि  
 वि + अय = व्यय  
 वि + अंजन = व्यंजन  
 वि + अर्थ = व्यर्थ  
 वि + अक्त = व्यक्त  
 प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष  
 अधि + अयन = अध्ययन  
 वि + असन = व्यसन  
 वि + अक्ति = व्यक्ति  
 वि + अवहार = व्यवहार  
 वि + अस्त = व्यस्त  
 वि + अभिचार = व्यभिचार  
 प्रति + अर्पण = प्रत्यर्पण  
 प्रति + अय = प्रत्यय  
 स्वस्ति + अस्तु = स्वस्त्यस्तु  
**इ + आ = या**  
 अग्नि + आशय = अग्न्याशय  
 वि + आवर्तन = व्यावर्तन  
 प्रति + आभूति = प्रत्याभूति  
 प्रति + आशित = प्रत्याशित  
 प्रति + आख्यान = प्रत्याख्यान  
 नि + आय = न्याय  
 अति + आचार = अत्याचार  
 परि + आप्त = पर्याप्त  
 परि + आय = पर्याय

अभि + आस = अभ्यास  
 अधि + आपक = अध्यापक  
 अधि + आय = अध्याय  
 प्रति + आशी = प्रत्याशी  
 वि + आस = व्यास  
 वि + आयाम = व्यायाम  
 वि + आप्त = व्याप्त  
 वि + आकुल = व्याकुल  
 प्रति + आरोपण = प्रत्यारोपण  
 प्रति + आशा = प्रत्याशा  
 इति + आदि = इत्यादि  
 परि + आवरण = पर्यावरण  
 अधि + आदेश = अध्यादेश  
 अधि + आत्म = अध्यात्म  
 अभि + आगत = अभ्यागत  
 अति + आवश्यक = अत्यावश्यक  
 वि + आकरण = व्याकरण  
 वि + आख्यान = व्याख्यान  
**इ + उ = यु**  
 अभि + उत्थान = अभ्युत्थान  
 प्रति + उत्पन्न = प्रत्युत्पन्न  
 उपरि + उक्त = उपर्युक्त  
 अति + उक्ति = अत्युक्ति  
 प्रति + इत्तर = प्रत्युत्तर  
 प्रति + उपकार = प्रत्युपकार  
 अति + उत्तम = अत्युत्तम  
 अभि + उदय = अभ्युदय  
 वि + उत्पत्ति = व्युत्पत्ति  
**इ + ऊ = यू**  
 प्रति + ऊष = प्रत्यूष  
 वि + ऊह = व्यूह  
 प्रति + ऊह = प्रत्यूह  
 नि + ऊन = न्यून  
**इ + ए = ये**  
 प्रति + एक = प्रत्येक  
**ई + अ = य**  
 नदी + अर्पण = नद्यर्पण  
 देवी + अर्पण = देव्यर्पण  
**ई + आ = या**  
 नदी + आमुख = नद्यामुख  
 सखी + आगमन = सख्यागमन  
**ई + उ = यु**  
 नारी + उचित = नार्युचित  
 स्त्री + उचित = स्त्र्युचित

स्त्री + उपयोगी = स्त्र्युपयोगी  
**ई + औ = यौ**  
 वाणी + औचित्य = वाण्यौचित्य  
**उ + अ = व**  
 अनु + अय = अन्वय  
 मनु + अंतर = मन्वंतर  
 सु + अच्छ = स्वच्छ  
 सु + अल्प = स्वल्प  
 शिशु + अंग = शिश्वंग  
 समनु + अय = समन्वय  
 तनु + अंगी = तन्वंगी  
**उ + आ = वा**  
 साधु + आचार = साध्वाचार  
 साधु + आचरण = साध्वाचरण  
 गुरु + आदेश = गुरुर्वादेश  
 सु + आगत = स्वागत  
**उ + इ = वि**  
 धातु + इक = धात्विक  
 अनु + इष्ट = अन्विष्ट  
 अनु + इति = अन्विति  
**उ + ई = वी**  
 अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण  
 अनु + ईक्षा = अन्वीक्षा  
**उ + ए = वे**  
 अनु + एषण = अन्वेषण  
 अनु + एषक = अन्वेषक  
**उ + ओ = वो**  
 लघु + ओष्ठ = लघ्वोष्ठ  
**ऊ + अ = व**  
 वधू + अर्थ = वध्वर्थ  
**ऊ + आ = वा**  
 वधू + आगमन = वध्वागमन  
**ऊ + इ = वि**  
 पू + इत्र = पवित्र  
**ऋ + अ = र**  
 पितृ + अनुमति = पित्रनुमति  
**ऋ + आ = रा**  
 पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा  
 पितृ + आदेश = पित्रादेश  
 मातृ + आनन्द = मात्रानन्द  
 मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा  
**ऋ + इ = रि**  
 मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा  
 पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा



10. प्रति + आरोपण = ?

- (a) प्रतिआरोपण (b) प्रतिरोपण  
(c) प्रत्यारोपण (d) प्रत् आरोपण

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'यद्यपि' का सन्धि-विच्छेद है—

- (a) यदि + अपि (b) यद्य + पि  
(c) यद् + अपि (d) य + अपि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'अत्यावश्यक' का सन्धि-विच्छेद है—

- (a) अति + आवश्यक (b) अत्य + आवश्यक  
(c) अत्या + वश्यक (d) अत + आवश्यक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'अत्यावश्यक' में सन्धि-विच्छेद है—

- (a) अति + आवश्यक (b) अत्य + आवश्यक  
(c) अत्या + वश्यक (d) अत्या + आवश्यक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'इत्यादि' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद होगा—

- (a) इति + आदि (b) इत्य + आदि  
(c) इति + यादि (d) इत + आदि

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'इत्यादि' का सही सन्धि-विच्छेद है—

- (a) इत् + यादि (b) इति + यादि  
(c) इत् + आदि (d) इति + आदि

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. 'प्रत्यक्ष' में सन्धि है—

- (a) गुण (b) दीर्घ

(c) अयादि

(d) यण

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'प्रत्येक' का सन्धि-विच्छेद होगा—

- (a) प्रत्य + एक (b) प्रति + एक  
(c) प्रति + ऐक (d) प्रत्ये + एक

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. 'अन्वेषण' का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है—

- (a) अन्वेष + ण (b) अन्वे + षण  
(c) अनु + वेषणा (d) अनु + एषण

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. 'अन्वय' शब्द का सन्धि-विच्छेद है :

- (a) अनु + वय (b) अनु + अय  
(c) अन् + अय (d) अनि + वय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'अन्वीक्षा' का सन्धि-विच्छेद है—

- (a) अन + वीक्षा (b) अन् + वीक्षा  
(c) अनु + ईक्षा (d) अन्व + ईक्षा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. स्वस्त्यस्तु का सन्धि-विच्छेद होगा—

- (a) स्वस्ति + अस्तु  
(b) स्वः + अस्त्यस्तु  
(c) स्वस्त्य + अस्तु  
(d) स्व + सत्यस्तु

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. यदि इ, ई, उ, ऊ और ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो इनका परिवर्तन क्रमशः य, व और र् में हो, तो उसमें कौन-सी सन्धि होगी?

- (a) गुण स्वर सन्धि (b) यण स्वर सन्धि  
(c) वृद्धि स्वर सन्धि (d) अयादि स्वर सन्धि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. किस सन्धि में स्वरों का परिवर्तन य, र्, ल्, व् में होता है?

- (a) अयादि सन्धि (b) वृद्धि सन्धि  
(c) गुण सन्धि (d) यण सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. 'प्रत्येक' शब्द में कौन-सी स्वर सन्धि है?

- (a) गुण सन्धि (b) वृद्धि सन्धि  
(c) यण सन्धि (d) अयादि सन्धि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

'प्रत्येक' में यण स्वर सन्धि है। इसका विच्छेद 'प्रति + एक' होता है।

25. इनमें से किस शब्द में यण सन्धि है?

- (a) दंतौष्ठ (b) वसंतर्तुः  
(c) देव्यागम (d) मदोन्मत्त

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'देव्यागम' का सन्धि-विच्छेद 'देवी + आगम' है। यह यण सन्धि है। यहाँ 'ई + आ' मिलकर 'या' हो जा रहा है।

26. 'सु+आगतम्' में कौन-सी सन्धि है?

- (a) गुण सन्धि (b) अयादि सन्धि  
(c) वृद्धि सन्धि (d) यण सन्धि

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'सु + आगतम्' का सन्धि 'स्वागतम्' होता है। यह यण सन्धि के अन्तर्गत आता है।

27. 'रीति + अनुसार' से सन्धि के बाद शब्द बनेगा—

- (a) रीत्यानुसार (b) रीतिअनुसार  
(c) रीतोनुसार (d) रीत्यनुसार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. 'यण सन्धि' का सम्बन्ध किस सन्धि, विशेष से है?

- (a) व्यंजन सन्धि (b) विसर्ग सन्धि  
(c) स्वर सन्धि (d) दीर्घ सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

स्वर सन्धि के पाँच भेद हैं—(i) दीर्घ स्वर सन्धि, (ii) गुण स्वर सन्धि, (iii) वृद्धि स्वर सन्धि, (iv) यण स्वर सन्धि और (v) अयादि स्वर सन्धि। इस प्रकार स्पष्ट है कि यण सन्धि का सम्बन्ध स्वर सन्धि से है।

29. 'पवन' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

- (a) गुण सन्धि (b) यण सन्धि  
(c) अयादि सन्धि (d) वृद्धि सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

अयादि स्वर सन्धि में यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आये, तो 'ए' का 'अय्', 'ऐ' का 'आय्', 'ओ' का 'अव्' और 'औ' का 'आव्' हो जाता है। जैसे—

ने + अन = नयन    शे + अन = शयन    नै + अक = नायक  
पो + अन = पवन    पौ + अन = पावन

30. 'पावन' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा—

- (a) पा + वन (b) पो + वन  
(c) पौ + अन (d) प + वन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'नायक' का सही सन्धि विच्छेद क्या है?

- (a) ना + अक (b) नौ + अक  
(c) ने + अक (d) नै + अक

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. 'पवन' का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है—

- (a) पो+अन (b) पव+अन्  
(c) पः+अवन (d) पव+न्

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## व्यंजन सन्धि

### 1. व्यंजन सन्धि का उदाहरण नहीं है-

- (a) उत् + चारणम् = उच्चारणम्  
(b) रामस् + टीकते = रामष्टीकते  
(c) गंगा + उदकम् = गंगोदकम्  
(d) सत् + चित् = सच्चित्

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

‘गंगा + उदकम् = गंगोदकम्’ में गुण स्वर सन्धि है। शेष व्यंजन सन्धि के उदाहरण हैं।

### 2. ‘अभिन्न’ शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा-

- (a) अभि+न्न (b) अ + भिन्न  
(c) अभि+ न (d) अन् + न

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

यदि किसी वर्ण के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल किसी अनुनासिक वर्ण (वस्तुतः न, म) से हो, तो उसके स्थान पर उसी वर्ण का पाँचवाँ वर्ण (ङ्, ज्ञ्, ण्, न्, य्) हो जाता है। जैसे-अभि+ न = अभिन्ना।

### 3. ‘अनंत’ की सही सन्धि होगी-

- (a) अन्+अंत (b) अन्+अंत  
(c) अनन्+त (d) अनन्+त्

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

‘अनंत’ का सन्धि-विच्छेद अन् + अंत होगा।

### 4. ‘अनंत’ का सही सन्धि-विच्छेद होगा-

- (a) अन्+अंत (b) अन्+अंत  
(c) अ+नंत (d) अनं+त

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

### 5. ‘अनंत’ शब्द की सही सन्धि होगी-

- (a) अन्+अंत (b) अन्+अंत  
(c) अ+नंत (d) अनन्+त

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

### 6. ‘तदाकार’ का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है -

- (a) तद + आकार (b) तत् + आकार  
(c) तदा + कार (d) तदा + आकार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

‘तदाकार’ का सन्धि-विच्छेद ‘तत् + आकार’ होता है।

### 7. ‘उद्योग’ का सन्धि होगा-

- (a) उत् + योग (b) उद् + योग  
(c) उध + योग (d) उत् + अयोग

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन सन्धि कहते हैं। यदि क्, च्, ट्, त्, प्, के बाद किसी वर्ण का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आये या य, र, ल, व या कोई स्वर आये तो क्, च्, ट्, त्, प्, के स्थान पर अपने ही वर्ण का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—

दिक् + गज = दिग्गज वाक् + जाल = वाग्जाल  
अच् + अन्त = अजन्त तत् + रूप = तद्रूप  
जगत् + ईश = जगदीश उत् + योग = उद्योग  
षट् + दर्शन = षड्दर्शन ऋक् + वेद = ऋग्वेद

#### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- व्यंजन सन्धि के नियम 2 के अनुसार यदि क्, च्, ट्, त्, तथा प् के बाद ‘न’ या ‘म’ आये तो क्, च्, ट्, त् तथा प् अपने वर्ण के पंचम वर्ण में बदल जाता है। जैसे—जगत् + नाथ = जगन्नाथ, उत् + नति = उन्नति।
- यदि ‘म’ के बाद कोई स्पर्श व्यंजन वर्ण आये, तो ‘म’ का अनुस्वार या बाद वाले वर्ण के वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है। जैसे—सम् + गम = संगम, पम् + चम = पंचम, किम् + चित = किंचित, सम् + सार = संसार, गम् + गा = गंगा ।
- यदि ‘त्’ या ‘द्’ के बाद ‘ज’ अथवा ‘झ’ हो, तो ‘त्’ या ‘द्’ के स्थान पर ‘ज्’ हो जाता है। जैसे—उत् + ज्वल = उज्ज्वल, सत् + जन = सज्जन, विपद् + जाल = विपज्जाल।
- यदि ‘त्’ या ‘द्’ के बाद ‘ल’ हो, तो ‘त्’ या ‘द्’ के स्थान पर ‘ल्’ हो जाता है। जैसे—उत् + लास = उल्लास, तत् + लीन = तल्लीन, उत् + लंघन = उल्लंघन।
- यदि ‘त्’, ‘द्’ के बाद ‘श’ हो, तो ‘त्’ या ‘द्’ का ‘च्’ और ‘श’ का ‘छ’ हो जाता है। जैसे—उत् + श्वास = उच्छ्वास, उत् + शृंखल = उच्छृंखल, उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट।
- यदि ‘द’ के पहले कोई स्वर हो, तो ‘छ’ के स्थान पर ‘च्छ’ हो जाता है। जैसे—वि + छेद = विच्छेद, परि + छेद = परिच्छेद, आ + छादन = आच्छादन।

8. 'ऋग्वेद' का सही सन्धि-विच्छेद है:

- (a) ऋग + वेद (b) ऋग् + वेद  
(c) ऋक् + वेद (d) ऋ + वेद

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'दिक् + गज' की सन्धि है-

- (a) दिकगज (b) दिग्गज  
(c) दिगज (d) कोई नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'तल्लीन' शब्द में सही सन्धि-विच्छेद है-

- (a) तल् + लीन (b) तद् + लीन  
(c) तत + लीन (d) तत् + लीन

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'जगन्नाथ' शब्द में सही सन्धि है-

- (a) स्वर सन्धि (b) विसर्ग सन्धि  
(c) व्यंजन सन्धि (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'जगन्नाथ' में कौन सन्धि है?

- (a) वृद्धि सन्धि (b) यण सन्धि  
(c) स्वर सन्धि (d) व्यंजन सन्धि

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'उज्ज्वल' के चार सन्धि-विच्छेद दिये गये हैं, सही का चयन कीजिए-

- (a) उज् + ज्वल (b) उत् + ज्वल  
(c) उद् + ज्वल (d) ऊत् + ज्वल

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'उज्ज्वल' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद चुनिए-

- (a) उज् + ज्वल (b) उज्ज + वल

(c) उत् + ज्वल

(d) उज् + वल

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'उज्ज्वल' में प्रयुक्त सन्धि है-

- (a) गुण सन्धि (b) व्यंजन सन्धि  
(c) विसर्ग सन्धि (d) दीर्घ सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. 'जगदीश' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद होगा-

- (a) जगत + ईश (b) जगत् + ईश  
(c) जगद् + ईश (d) जगद + इश

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'षडानन' का सन्धि-विच्छेद होगा-

- (a) शङ् + आनन (b) षङ् + आनन  
(c) षट् + आनन (d) षडा + नन

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'षडानन' का सन्धि-विच्छेद 'षट् + आनन' होता है।

18. किस शब्द में व्यंजन सन्धि है?

- (a) सज्जन (b) परोपकार  
(c) विद्यालय (d) इत्यादि

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'सज्जन' में व्यंजन सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'सत् + जन' होता है। परोपकार का सन्धि-विच्छेद 'पर + उपकार' होता है। यह गुण स्वर सन्धि है। विद्यालय का सन्धि-विच्छेद 'विद्या + आलय' होता है। यह दीर्घ स्वर सन्धि होता है। इत्यादि का सन्धि-विच्छेद 'इति + आदि' होता है। यह यण स्वर सन्धि है।

19. भगवद्गीता का सन्धि-विच्छेद है-

- (a) भगवद् + गीता (b) भग + वद् + गीता  
(c) भगवत् + गीता (d) भग + वद्गीता

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)



अघोष व्यंजन के बाद स्वर या सघोष व्यंजन हो, तो अघोष का सघोष हो जाता है, **जैसे-**

भगवत् + गीता = भगवद्गीता  
भगवत् + भजन = भगवद्भजन  
सत् + धर्म = सद्धर्म  
जगत् + ईश = जगदीश

## 20. नवोदा का सन्धि-विच्छेद है-

- (a) नव + उदा (b) नवो + दा  
(c) नव + ऊदा (d) न + ओदा

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' और 'ऋ' आये, तो दोनों मिलकर क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं। यह गुण स्वर सन्धि कहलाती है। **जैसे-**

देव + इन्द्र = देवेन्द्र महा + इन्द्र = महेन्द्र  
चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय जल + ऊर्मि = जलोर्मि  
नव + उदा = नवोदा देव + ऋषि = देवर्षि  
सूर्य + उदय = सूर्योदय प्र + ऊढ = प्रौढ  
अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी

## 21. 'सूर्योदय' का सन्धि-विच्छेद क्या है?

- (a) सूर्यो + दय (b) सूर्य + उदय  
(c) सूर्य + उदय (d) सूर्य + उदयम

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## 22. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आये तो दोनों मिलकर 'ए' हो जाते हैं। यह स्वर सन्धि कहलाती है-

- (a) दीर्घ स्वर सन्धि (b) वृद्धि स्वर सन्धि  
(c) गुण स्वर सन्धि (d) अयादि स्वर सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## विसर्ग सन्धि

### 1. किस शब्द में विसर्ग सन्धि है?

- (a) अहंकार (b) हिमालय  
(c) दुष्कर (d) उल्लास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'दुष्कर' में विसर्ग सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'दुः + कर' होता है। अहंकार में व्यंजन सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'अहम् + कार' होता है। हिमालय में दीर्घ स्वर सन्धि है। इसका सन्धि विच्छेद 'हिम + आलय' होता है। उल्लास में व्यंजन सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'उत् + लास' होता है।

### 2. 'दुष्प्रकृति' शब्द का सन्धि-विच्छेद है-

- (a) दुस् + प्रकृति  
(b) दुः + प्रकृति  
(c) दुश्य + प्रकृति  
(d) दुसप्र + कृति

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार आये और विसर्ग के बाद का वर्ण क, ख, प, फ हो, तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है। **जैसे-**  
निः + कपट = निष्कपट निः + फल = निष्फल  
निः + पाप = निष्पाप दुः + कर = दुष्कर  
दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति

### 3. 'दुर्जन' का सन्धि-विच्छेद होगा-

- (a) दुर् + जन (b) दुः + जन  
(c) दु + अरजन (d) दु + जन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

विसर्ग सन्धि के अनुसार, यदि इः, उः के बाद सघोष ध्वनि हो, तो विसर्ग के स्थान पर र् हो जाता है। **जैसे-**  
दुः + जन = दुर्जन निः + आशा = निराशा  
दुः + बल = दुर्बल निः + मम = निर्मम  
दुः + दशा = दुर्दशा निः + भय = निर्भय  
निः + अपराध = निरपराध

### 4. किस शब्द में विसर्ग सन्धि है?

- (a) मतैक्यम् (b) महौषधि  
(c) तरोश्छाया (d) विष्णवे

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'तरोश्छाया' में विसर्ग सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'तरोः + छाया' होता है। मतैक्यम् में वृद्धि स्वर सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'मत + ऐक्यम्' होता है। 'महौषधि' में वृद्धि स्वर सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'महा + औषधि' होता है। 'विष्णवे' में अयादि स्वर सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'विष्णु + ए' होता है।

5. 'तेजोमय' का सही सन्धि-विच्छेद है-

- (a) तेज + ओमय (b) तेजः + अमय  
(c) तेजः + मय (d) तेजो + मय

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

विसर्ग सन्धि के अनुसार, यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और वर्गों के प्रथम तथा द्वितीय वर्ण को छोड़कर अन्य कोई वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह हो, तो अ और विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। जैसे-

तपः + बल = तपोबल तपः + मय = तपोमय  
तेजः + मय = तेजोमय यशः + दा = यशोदा  
मनः + ज्ञ = मनोज्ञ मनः + विज्ञान = मनोविज्ञान

6. मनोविज्ञान में कौन-सी सन्धि है?

- (a) व्यंजन सन्धि (b) विसर्ग सन्धि  
(c) यण सन्धि (d) दीर्घ सन्धि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'बृहस्पति' का सन्धि-विच्छेद है-

- (a) बृहस् + पति (b) बृहस् + पति  
(c) बृहः + पति (d) बृहश + पति

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

यदि विसर्ग के बाद क, ख, प, फ, आता है, तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता, किन्तु कुछ शब्दों में विसर्ग का 'स' हो जाता है। यहाँ दोनों उदाहरण प्रस्तुत हैं। जैसे-

प्रातः + काल = प्रातःकाल पयः + पान = पयःपान  
अन्तः + पुर = अन्तःपुर बृहः + पति = बृहस्पति  
पुरः + कार = पुरस्कार परः + पर = परस्पर  
वाचः + पति = वाचस्पति नमः + कार = नमस्कार

8. 'हरिश्चन्द्र' में प्रयुक्त किस सन्धि का नाम सही है?

- (a) स्वर सन्धि  
(b) व्यंजन सन्धि  
(c) विसर्ग सन्धि  
(d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

यदि विसर्ग के बाद च, छ हो, तो विसर्ग का श् हो जाता है। जैसे-  
दुः + चरित्र = दुश्चरित्र निः + चल = निश्चल  
हरिः + चन्द्र = हरिश्चन्द्र

निर्देश (प्रश्न 9 से 11 के लिए) : निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करते समय दिए गए विकल्पों में से सही रूप छाँटिए-

9. निष्काम

- (a) निष् + काम (b) निः + काम  
(c) निश + काम (d) निस् + काम

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'निष्काम' का सन्धि-विच्छेद 'निः + काम' होता है। यह विसर्ग सन्धि है।

10. वीरोचित

- (a) वीर + उचित (b) वीर + औचित  
(c) वीरा + चित (d) वि + उचित

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'वीरोचित' का सन्धि-विच्छेद 'वीर + उचित' होता है। यह गुण सन्धि के अंतर्गत आता है।

11. मदोन्मत्त

- (a) मदन + उन्मत्त (b) मदो + मत्त  
(c) मद + उन्मत्त (d) मदन + मत्त

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'मदोन्मत्त' का सन्धि-विच्छेद 'मद् + उन्मत्त' होता है। यह गुण स्वर सन्धि है।

## समास

### अव्ययीभाव समास

1. 'अनुरूप' में कौन-सा समास है?

- (a) कर्मधारय (b) तत्पुरुष  
(c) अव्ययीभाव (d) द्विगु

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

जिस समास में पहला पद प्रधान हो और सामासिक पद या समास पद अव्यय हो, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है। यथा—

समास	विग्रह
अनुरूप	जैसा रूप है वैसा
अनुकृति	जैसी कृति है वैसी
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
यथास्थान	जो स्थान निर्धारित है
यथोचित	जैसा उचित है वैसा
आमरण	मरण तक

आजीवन	जीवन भर
अनुसार	जैसा सार है वैसा
आपादमस्तक	पाद से लेकर मस्तक तक
प्रतिदिन	हर दिन
प्रतिक्षण	हर क्षण
प्रत्येक	हर एक
आकंट	कंट तक
यावज्जीवन	जब तक (यावत्) जीवन है
यथाविधि	जैसी विधि निर्धारित है
यथासाध्य	जितना साधा जा सके
आजन्म	जन्म से या जन्म भर

## 2. 'प्रतिदिन' में समास है—

- (a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव  
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

## उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## 3. 'यथाशक्ति' में कौन-सा समास है?

- (a) कर्मधारय (b) तत्पुरुष  
(c) द्वन्द्व (d) अव्ययीभाव

P.G.T. परीक्षा, 2011

## उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## 4. 'आजन्म' शब्द में समास है—

- (a) बहुव्रीहि (b) द्वन्द्व  
(c) अव्ययीभाव (d) कर्मधारय

T.G.T. परीक्षा, 2009

## उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## 5. निम्नलिखित में 'यथाविधि' का सही समास कौन-सा है?

- (a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष  
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

P.G.T. परीक्षा, 2010

## उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## 6. 'रातोंरात' शब्द में समास है -

- (a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व  
(c) अव्ययीभाव (d) कर्मधारय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

## उत्तर—(c)

'रातोंरात' (रात ही रात) में अव्ययीभाव समास है। जिस समास का प्रथम पद अव्यय हो या कोई उपसर्ग हो, वहाँ पर अव्ययीभाव समास होता है।

## 7. 'चक्रपाणिदर्शनार्थ' पद में मान्य समास है—

- (a) कर्मधारय (b) तत्पुरुष  
(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि

P.G.T. परीक्षा, 2009

## उत्तर—(c)

यदि एक समस्त पद में अनेक समास वाले पदों का मेल हो, तो अलग-अलग या एक साथ भी विग्रह किया जा सकता है। जैसे—चक्रपाणिदर्शनार्थ-चक्र है पाणि में जिसके = चक्रपाणि (बहुव्रीहि समास); दर्शन के अर्थ = दर्शनार्थ (अव्ययीभाव समास), चक्रपाणि के दर्शनार्थ = चक्रपाणिदर्शनार्थ (अव्ययीभाव समास)। समूचा पद क्रियाविशेषण अव्यय है, इसलिए अव्ययीभाव समास है। एक साथ विग्रह इस तरह होगा—चक्र है पाणि में जिसके, उसके दर्शन के अर्थ = चक्रपाणिदर्शनार्थ। इसी तरह, 'पीताम्बरवनमाला' का विग्रह इस प्रकार होगा—पीत है अम्बर जिसका = पीताम्बर (बहुव्रीहि समास), वन के फूलों की माला = वनमाला (मध्यमदलोपी); पीताम्बर की वनमाला = पीताम्बरवनमाला (सम्बन्धतत्पुरुष)। अथवा-वन के फूलों की माला = वनमाला, पीत है अम्बर जिसका, उसकी वनमाला। यहाँ यदि 'पीत है अम्बर जिसका उसकी वन के फूलों की माला' ऐसा विग्रह किया जाय, तो अच्छा नहीं मालूम होता।

## तत्पुरुष समास

## 1. 'रसोईघर' का समास-विग्रह है -

- (a) रसोई के लिए घर (b) रसोई का घर  
(c) घर की रसोई (d) रसोई और घर

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

## उत्तर—(a)

रसोईघर का समास- विग्रह 'रसोई के लिए घर' होता है। यह करणकारक तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आता है।

## 2. किस शब्द में तत्पुरुष समास नहीं है?

- (a) विश्वविख्यात (b) आश्चर्यचकित  
(c) विषधर (d) हिमपात

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

## उत्तर—(c)

'विश्वविख्यात' का समास विग्रह 'विश्व में विख्यात', 'आश्चर्यचकित' का समास विग्रह 'आश्चर्य से चकित' तथा 'हिमपात' का समास विग्रह 'हिम का पात' है। इन सभी में तत्पुरुष समास है, जबकि 'विषधर' में बहुव्रीहि समास है। इसका विग्रह 'विष को धारण करने वाला' अर्थात् सांप होता है।

3. अधोलिखित शब्दों में से किस शब्द में तत्पुरुष समास है?

- (a) मुनिवर (b) सुसंग  
(c) पराधीन (d) दत्तचित्त

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

‘पराधीन’ शब्द में तत्पुरुष समास है। इसका समास विग्रह- ‘पर (दूसरे) के अधीन’ होता है। यह सम्बन्धकारक तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आता है।

4. ‘ध्यानमग्न’ में कौन-सा समास है?

- (a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय  
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘ध्यानमग्न’ अधिकरण तत्पुरुष समास का उदाहरण है। इसका विग्रह है- ‘ध्यान में मग्न’।

5. जिस समास में उत्तरपद की प्रधानता है, उसे कहते हैं -

- (a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि  
(c) अव्ययीभाव (d) द्वन्द्व

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

जिस समास का प्रथम पद गौण तथा उत्तर पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इस समास में सामान्यतः प्रथम पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेषण होता है। पहले पद में द्वितीया से सप्तमी कारक तक विभक्ति का लोप होता है।

6. ‘मुँहतोड़’ शब्द में समास है -

- (a) तत्पुरुष समास (b) अव्ययीभाव समास  
(c) कर्मधारय समास (d) द्विगु समास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

‘मुँहतोड़’ शब्द में कर्म-तत्पुरुष समास है। इसका विग्रह ‘मुँह को तोड़ने वाला’ होता है।

7. ‘पर्णकुटी’ शब्द का समास है-

- (a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व  
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

‘पर्णकुटी’ में करण तत्पुरुष समास है। जिसका विग्रह है-‘पर्ण से बनी कुटी’।

8. ‘गोशाला’ शब्द में कौन-सा समास है?

- (a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व  
(c) कर्मधारय (d) द्विगु

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

‘गोशाला’ में सम्प्रदान तत्पुरुष समास है। इसका समास विग्रह होगा-‘गो के लिए शाला’।

9. ‘कठपुतली’ में कौन-सा समास है?

- (a) सम्प्रदान तत्पुरुष (b) सम्बन्ध तत्पुरुष  
(c) अधिकरण तत्पुरुष (d) कर्म तत्पुरुष

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

तत्पुरुष समास के छः भेद होते हैं- (1) कर्म तत्पुरुष, (2) करण तत्पुरुष, (3) सम्प्रदान तत्पुरुष, (4) अपादान तत्पुरुष, (5) सम्बन्ध तत्पुरुष तथा (6) अधिकरण तत्पुरुष। कठपुतली (काठ+पुतली) का विग्रह काठ की पुतली है। इसमें सम्बन्ध तत्पुरुष है।

10. ‘सिंहद्वार’ शब्द में समास है-

- (a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव  
(c) कर्मधारय (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

सिंहद्वार-किले, महल आदि का बड़ा फाटका। यह तत्पुरुष समास है।

11. ‘सद्गति’ शब्द में समास होगा-

- (a) तत्पुरुष समास  
(b) कर्मधारय समास  
(c) अव्ययीभाव समास  
(d) द्विगु समास

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

सद्गति-मरने के बाद अच्छे लोक में जाना। यह तत्पुरुष समास है।

12. धनंजय में समास है-

- (a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय  
(c) बहुव्रीहि (d) अव्ययीभाव

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(\*)

‘धनंजय’ में तत्पुरुष एवं बहुव्रीहि दोनों समास हैं। यदि इसका विग्रह धनंजय-वह जो धन का जय करता है (अर्जुन) किया जाय, तो बहुव्रीहि समास होगा, परन्तु यदि धनंजय का विग्रह ‘धन (कुबेर) को जय करने वाला’ है, तो यह तत्पुरुष समास होगा।



### 13. 'मनमाना' में कौन-सा समास है?

- (a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय  
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

तत्पुरुष समास में पहला पद गौण तथा अन्तिम पद प्रधान होता है। सामान्यतया प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। करण तत्पुरुष समास में करण कारक के चिह्न-से, के द्वारा के लोप से बने वाले समास इस प्रकार हैं—

समास	विग्रह
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
अकालपीडित	अकाल से पीडित
कष्टसाध्य	कष्ट से साध्य
रेखांकित	रेखा के द्वारा अंकित
गुणयुक्त	गुण से युक्त
ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा दिया हुआ
मदमाता	मद से मत हुआ
मनगदंत	मन से गढ़ा हुआ
प्रकाशयुक्त	प्रकाश से युक्त
मनमाना	मन से माना हुआ
शोकाकुल	शोक से आकुल
मदान्ध	मद से अन्धा

### 14. 'मदमाता' में कौन-सा समास है?

- (a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय  
(c) द्वन्द्व (d) तत्पुरुष

U.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

### 15. 'शोकाकुल' में समास है—

- (a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय  
(c) बहुव्रीहि (d) अव्ययीभाव

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

### 16. 'अकालपीडित' में समास होगा—

- (a) कर्मधारय (b) द्वन्द्व  
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## कर्मधारय समास

### 1. 'धर्मबुद्धि' में समास है—

- (a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि  
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

धर्मबुद्धि अर्थात् धर्म विषयक बुद्धि में कर्मधारय समास है। कर्मधारय समास वह समास है, जिसमें उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्व पद व उत्तर पद में उपमेय-उपमान या विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है, जैसे-चरणकमल, लालमणि, मृगनयन आदि।

### 2. निम्नलिखित में से एक में कर्मधारय समास है -

- (a) हाथो-हाथ (b) प्रत्यक्ष  
(c) आरामकुर्सी (d) भुजदंड

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

भुजदंड में कर्मधारय समास है। इसका विग्रह 'दंड (दंडे) के समान भुजा' है।

### 3. इनमें से कौन-सा शब्द कर्मधारय समास का उदाहरण है?

- (a) अन्धकूप (b) गृहप्रवेश  
(c) तिरंगा (d) सुख-दुःख

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

जिस समास के पदों में विशेष्य-विशेषण अथवा उपमेय-उपमान का सम्बन्ध होता है, उसे 'कर्मधारय समास' कहते हैं। इस समास में विशेषण पहले होता है। जैसे—

समास	विग्रह
महापुरुष	महान् है जो पुरुष
नीलोत्पल	नीला है जो उत्पल (कमल)
सज्जन	सत् है जो जन
अन्धकूप	अन्धा है जो कूप
परमानन्द	परम है जो आनन्द
मंदाग्नि	मंद है जो अग्नि
शिष्टाचार	शिष्ट है जो आचार
अन्धविश्वास	अन्ध है जो विश्वास
श्वेताम्बर	श्वेत है जो अम्बर
अधपका	आधा है जो पका
महाविद्यालय	महान् है जो विद्यालय
कापुरुष	कायर है जो पुरुष
निर्विवाद	विवाद से निवृत्त
नलकूप	नल से बना है जो कूप
प्राणप्रिय	प्रिय है जो प्राणों को

### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'गृहप्रवेश' अधिकरण तत्पुरुष समास का उदाहरण है। इसका विग्रह है- गृह में प्रवेश।
- 'सुख-दुःख' में द्वन्द्व समास है। इसका विग्रह है- सुख और दुःख

4. 'परमानन्द' शब्द में कौन-सा समास है?

- (a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व  
(c) कर्मधारय (d) अव्ययीभाव

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'नीलगाय' में कौन-सा समास है?

- (a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव  
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व

T.G.T. परीक्षा, 2011

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

जब कोई एक खण्ड विशेषण या उपमासूचक शब्द हो, तो कर्मधारय समास बनता है। इसे समानाधिकरण तत्पुरुष भी कहते हैं, क्योंकि विग्रह करने पर इसके दोनों पद एक ही कारक या विभक्ति में होते हैं। ये समास विशेषण-विशेष्य और उपमान-उपमेय की स्थिति के अनुसार बनते हैं। जैसे-महात्मा, दीर्घायु, महाराज, नीलगाय, नीलकमल, कालीमिर्च, कृष्णसर्प (सभी विशेषण और विशेष्य से मिलकर बने हैं)।

6. 'नीलकमल' में कौन-सा समास है?

- (a) द्विगु (b) कर्मधारय  
(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि

आश्रम पद्धति (प्रावत्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

नीलकमल का समास विग्रह है - नीला है जो कमला यहाँ विशेष्य का सम्बन्ध विशेषण से है। अतः कर्मधारय समास है।

### द्विगु समास

1. 'तिरंगा' शब्द में समास है-

- (a) द्वन्द्व समास (b) अव्ययीभाव समास  
(c) द्विगु समास (d) कर्मधारय समास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'तिरंगा' अर्थात् तीन रंगों वाला में द्विगु समास है। यदि इसका विग्रह 'तीन रंगों वाला भारतीय ध्वज' के रूप में किया जायेगा, तब यह बहुव्रीहि समास होगा।

2. किस समास का पूर्व पद संख्यावाची होता है?

- (a) तत्पुरुष (b) द्विगु

(c) अव्ययीभाव

(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

जिस समास में पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण हो और जिसके समस्त पद से समूह का बोध हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे—

समास

विग्रह

नवरत्न

नौ रत्नों का समाहार

अष्टपदी

अष्ट पदों का समाहार

पंचवटी

पाँच वटों (वृक्षों) का समूह

चतुर्वर्ण

चार वर्णों का समाहार

षट्कोण

छः कोण वाला

त्रिभुवन

तीन भुवनों का समाहार

त्रिफला

तीन फलों का समाहार

त्रियुगी

तीन युगों का समाहार

पंचरत्न

पाँच रत्नों का समाहार

त्रिलोक

तीनों लोकों का समाहार

सतसई

सात सौ का समाहार

चौराहा

चार राहों का समाहार

3. द्विगु समास का उदाहरण है-

- (a) राजा रानी (b) पीताम्बर  
(c) त्रिभुवन (d) भूदेव

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. पंचवटी शब्द में कौन-सा समास है?

- (a) कर्मधारय (b) द्विगु  
(c) अव्ययीभाव (d) तत्पुरुष

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'पंचवटी' शब्द में प्रयुक्त समास का नाम बताइए-

- (a) द्विगु समास (b) तत्पुरुष समास  
(c) बहुव्रीहि समास (d) अव्ययीभाव समास

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'त्रिभुज' शब्द में कौन-सा समास है?

- (a) तत्पुरुष (b) द्विगु समास  
(c) द्वन्द्व समास (d) कर्मधारय

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

जिस समास का प्रथम पद संख्यावाचक और अन्तिम पद संज्ञा हो, द्विगु समास कहलाता है। जैसे-इकतारा, इकहरा, दुगुना, दोपहर, दुधारा, दुपट्टा, त्रिदोष, त्रिभुज, त्रिकोना, त्रिगुण, चारपाई, पसेरी, षड्दर्शन, सप्तसिन्धु, अष्टभुज, अठवारा आदि।

## द्वन्द्व समास

1. जिस समास के पूर्व एवं उत्तर दोनों ही पद समान रूप से प्रधान हों, उसे कहते हैं-

- (a) तत्पुरुष समास (b) बहुव्रीहि समास  
(c) द्विगु समास (d) द्वन्द्व समास

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

जिस समास के पूर्व एवं उत्तर दोनों ही पद समान रूप से प्रधान हों, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। इस समास के तीन भेद हैं—(i) इतरेतर द्वन्द्व, (ii) समाहार द्वन्द्व और (iii) वैकल्पिक द्वन्द्व। जैसे- गाय-बैल = गाय और बैल, भाई-बहन = भाई और बहन, माँ-बाप = माँ और बाप तथा थोड़ा-बहुत = थोड़ा या बहुत।

2. द्वन्द्व समास की प्रमुख विशेषता है-

- (a) प्रथम पद प्रधान होता है (b) उत्तर पद प्रधान होता है  
(c) दोनों पद प्रधान होते हैं (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. द्वन्द्व समास में कौन-सा पद प्रधान होता है?

- (a) उत्तर पद (b) प्रथम पद  
(c) दोनों पद (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. जिस समास में सब पद अथवा उनका समाहार प्रधान रहता है, उसे क्या कहते हैं?

- (a) बहुव्रीहि समास (b) तत्पुरुष समास  
(c) द्वन्द्व समास (d) द्विगु समास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

जिस समास में सब पद अथवा उनका समाहार प्रधान रहता है, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। द्वन्द्व समास के मुख्यतः तीन भेद होते हैं, इतरेतर द्वन्द्व, समाहार द्वन्द्व तथा वैकल्पिक द्वन्द्व।

5. निम्नलिखित में द्वन्द्व समास बताइए?

- (a) शोकाकुल (b) सर्वोत्तम  
(c) वीरपुरुष (d) पाप-पुण्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। जैसे-पाप-पुण्य = पाप या पुण्य। 'पाप-पुण्य' वैकल्पिक द्वन्द्व समास का उदाहरण है। इस समास में दो पदों के बीच 'या', 'अथवा' आदि विकल्पसूचक अव्यय छिपे होते हैं। थोड़ा-बहुत (थोड़ा या बहुत), आज-कल (आज या कल) में भी द्वन्द्व समास है।

6. निम्नलिखित में 'द्वन्द्व समास' का शब्द है-

- (a) आज-कल (b) रातों-रात  
(c) दिन-दिन (d) वीर पुरुष

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. कतर-व्योत में कौन-सा समास है?

- (a) द्वन्द्व (b) द्विगु  
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

कतर-व्योत में द्वन्द्व समास है। काटने और छोटने की क्रिया या ढंग को कतर-व्योत कहते हैं। द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, लेकिन दोनों के बीच 'और' शब्द का लोप होता है। जैसे-हार-जीत, पाप-पुण्य आदि।

8. निम्नलिखित युग्मों में से एक समास की दृष्टि से अशुद्ध है -

- (a) भरपेट - अव्ययीभाव (b) रसोईघर - तत्पुरुष  
(c) दालरोटी - द्वन्द्व (d) चालचलन - अव्ययीभाव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(d)

चाल-चालन में द्वन्द्व समास है। शेष युग्म सही हैं।

9. 'जय-पराजय' में कौन-सा समास है?

- (a) अव्ययीभाव (b) बहुव्रीहि  
(c) द्वन्द्व (d) द्विगु

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'जय-पराजय' में द्वन्द्व समास है। जिसका विग्रह है- 'जय और पराजय'।

10. 'जय-पराजय' में कौन-सा समास है?

- (a) द्वन्द्व समास (b) कर्मधारय समास

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'धनुर्बाण' में किस तरह का समास है?

- (a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि  
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

इतरेतर द्वन्द्व में दोनों पद प्रधान तो होते ही हैं, साथ ही अपना अलग-अलग अस्तित्व भी रखते हैं। जैसे- अन्नजल = अन्न और जल,  
धनुर्बाण = धनु और बाण

12. 'हानि-लाभ' में कौन-सा समास है?

- (a) द्विगु समास (b) तत्पुरुष समास  
(c) बहुव्रीहि समास (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

द्वन्द्व का शाब्दिक अर्थ है—युग्म या जोड़ा। द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान रहते हैं अथवा उनके समूह का प्रधानत्व रहता है। जैसे—हानि-लाभ, दिन-रात, माता-पिता, पाप-पुण्य, भाई-बहन आदि।

## बहुव्रीहि समास

1. 'कुसुमाकर' में समास है—

- (a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय  
(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'कुसुमाकर' का समास विग्रह 'कुसुमों (फूलों) का खजाना है जो अर्थात् वसंत' है। अतः इसमें बहुव्रीहि समास है।

2. 'कूपमंडूक' में किस समास की योजना है?

- (a) बहुव्रीहि (b) द्वन्द्व  
(c) तत्पुरुष (d) अव्ययीभाव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'कूपमंडूक' का समास विग्रह 'जिसका ज्ञान (कूप) सीमित हो अर्थात् 'व्यक्ति विशेष' होता है। अतः यहाँ बहुव्रीहि समास है।

3. 'निर्दय' में समास है—

- (a) कर्मधारय समास (b) द्वन्द्व समास

उत्तर—(d)

'निर्दय' का समास विग्रह 'दया नहीं है जिसमें अर्थात् विशेष व्यक्ति' होता है। अतः निर्दय में बहुव्रीहि समास है।

4. 'महात्मा' शब्द में कौन-सा समास है?

- (a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव  
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(\*)

'महात्मा' शब्द का विग्रह यदि 'महान आत्मा' के रूप में किया जाय, तो कर्मधारय समास होगा, किन्तु यदि इसका विग्रह 'महान् है आत्मा जिसकी' (ऐसा व्यक्ति) के रूप में किया जाय, तो यह बहुव्रीहि समास होगा। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (d) को सही माना है।

5. लम्बोदर उदाहरण है—

- (a) बहुव्रीहि समास का (b) द्वन्द्व समास का  
(c) द्विगु समास का (d) कर्मधारय समास का

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

जिस समास में दो शब्द मिलकर किसी तीसरे का विशेषण बन जाएँ, तो वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। इस समास में दोनों शब्दों में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता है और समस्त पद किसी अन्य संज्ञा की ओर संकेत करता है। जैसे—

समास	विग्रह
लम्बोदर	लम्ब है उदर जिसका (गणेश)
चतुर्भुज	चार हैं भुजाएँ जिसकी (विष्णु)
चन्द्रशेखर	चन्द्र है शिखर पर जिसके (शिव)
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके (सरस्वती)
गिरिधर	गिरि को धारण किया जिसने (श्रीकृष्ण)
दशमुख	दस हैं मुख जिसके (रावण)
जलज	जल से उत्पन्न है जो (कमल)

6. 'कमलनयन' में कौन-सा समास है?

- (a) तत्पुरुष समास (b) द्विगु समास  
(c) बहुव्रीहि समास (d) द्वन्द्व समास

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)



समास के कुछ उदाहरण हैं, जो कर्मधारय तथा बहुव्रीहि दोनों में समान रूप से पाए जाते हैं। कमलनयन में पूर्व पद उपमान तथा उत्तर पद उपमेय है। यदि इसका विग्रह 'कमल के समान नयन' किया जाय, तो कर्मधारय समास होगा, परन्तु यदि इसका विग्रह 'कमल के समान नयन हैं जिसके अर्थात् विष्णु' किया जाय, तो बहुव्रीहि समास होगा।

7. 'पतझड़' में कौन-सा समास है?

- (a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि  
(c) अव्ययीभाव (d) द्विगु

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'पतझड़' में बहुव्रीहि समास है। इसका विग्रह 'झड़ते हैं जिसमें पत्ते' अर्थात् विशेष ऋतु।

## □ लिंग

1. लिंग किस भाषा का शब्द है?

- (a) हिन्दी (b) अंग्रेजी  
(c) संस्कृत (d) जर्मन

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

लिंग संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ चिह्न या निशान प्रतीक, आदि होता है। हिन्दी में लिंग दो होते हैं—पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग। सभी शब्द—चेतन और अचेतन—इन्हीं लिंगों में विभक्त हैं। संस्कृत में एक अन्य लिंग भी होता है—नपुंसकलिंग। सभी संज्ञाएँ इन्हीं तीन लिंगों में विभक्त हैं। संस्कृत में एक ही वस्तु या व्यक्ति के वाचक शब्द भिन्न-भिन्न लिंगों के हैं यथा—'तटः-तटी-तटम्' तीनों का अर्थ तट है। इसी प्रकार 'दारा, भार्या, कलत्रम्' तीनों का अर्थ स्त्री है। कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनका अर्थ भेद से लिंग भेद होता है। यथा—मित्र शब्द 'सखा' का बोधक होने से नपुंसकलिंग और 'सूर्य' का बोधक होने से पुल्लिंग है। संस्कृत के प्रत्येक शब्द का लिंग निश्चित है।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द पुल्लिंग है?

- (a) लगन (b) मीमांसा  
(c) आहट (d) माधुर्य

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

माधुर्य पुल्लिंग शब्द है, जबकि लगन, मीमांसा एवं आहट स्त्रीलिंग शब्द हैं।

3. इनमें से पुल्लिंग शब्द कौन-सा है?

- (a) दया (b) निर्धनता  
(c) बुढ़ापा (d) दुर्घटना

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

बुढ़ापा, पुल्लिंग शब्द है शेष स्त्रीलिंग हैं। जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में ना, आव, पन, वा, पा होता है, वहाँ पुल्लिंग शब्द होते हैं। जैसे—गाना, आना, बहाव, चढ़ाव, बड़प्पन, बढ़ावा इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- बन्दूक, बकवास, बगल, बचत, बदबू, बनावट, बरात, बधाई, बर्फ, बहार, बाँह, बातचीत, बागडोर, बारिश, बाद, बुद्धि, बूँद, बैठक, बोटल, बौछार आदि स्त्रीलिंग शब्द हैं।
- दंगा, दण्ड, दबाव, दर्जा, दर्पण, दफ्तर, दरबार, दस्तखत, दहेज, दाँत, दाग, दानव, दाम, दही, दास, दिन, दिमाग, दिल, दीप, दीपक, दूध, दृश्य, देशाटन, दूतावास, देहात, दैत्य, देश, द्वार, द्वेष इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।
- नकद, नक्षत्र, नगर, नमक, नल, नाखून, नियम, निवास, निवेदन, निशान, निष्कर्ष, नींबू, नीर, नीलम, नृत्य, नेत्र, नैहर, न्याय, न्यास इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

4. निम्नलिखित में पुल्लिंग शब्द है—

- (a) सरसों (b) मकई  
(c) सारस (d) मूँग

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

सारस, पुल्लिंग शब्द है, शेष स्त्रीलिंग शब्द हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अनाजों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे—गेहूँ, चावल, बाजरा इत्यादि, किन्तु अपवाद स्वरूप कुछ अनाज स्त्रीलिंग में आते हैं। जैसे—अरहर, सरसों, मकई, मूँग इत्यादि।
- संकट, संकलन, संकेत, संकोच, संखिया, संगठन, संगम, संगीत, संघटन, संवय, संचार, संयोग, सन्तुलन, सन्देश, संन्यास, सम्पर्क, सम्बन्ध, संयम, संवर्द्धन, संविधान, संस्थान, संहार, सत्तू, सत्र, सूत, सदन, सदावर्त, सफर, समीर, सर, सरकस, सरसिज, सरोहर, सलाम, सवैया, सहयोग, सहारा, साक्ष्य, साग, साधन, साया, सार, सिंगार, सिन्दूर, सियार, सिर, सिरका, सिल्क, सींग, सीप, सुधांशु, सुमन, सुर, सूअर, सूचीपत्र, सूत्र, सूना, सूद, सूप, सेतु, सेब, सेवन, सोच, सोना, सोफा, सोम, सोरठा, सोहर (गीत), सौजन्य, सौभाग्य, सौरभ, सौहार्द, स्तम्भन, स्तर, स्थल, स्पन्दन, स्पर्श, स्फोट, स्मारक, स्वत्व, स्वरूप, स्वर्ग, स्वर्ण, स्वांग, स्वाद इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

5. निम्न में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?

- (a) चना (b) अरहर  
(c) बाजरा (d) उड़द

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में गलत बताते हुए इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है, जबकि पहले जारी उत्तर कुंजी में सही उत्तर था।

6. इनमें से कौन-सा शब्द पुल्लिंग नहीं है?

- (a) बनवट (b) छाता  
(c) सूर्य (d) अमरूद

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

बनवट, पुल्लिंग शब्द नहीं, बल्कि स्त्रीलिंग शब्द है। शेष पुल्लिंग शब्द हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- ❏ बण्डल, बन्दरगाह, बखान, बबूल, बखिया, बचपन, बचाव, बड़प्पन, बरतन, बरताव, बल, बलात्कार, बहलाव, बहाव, बहिष्कार, बटेर, बाँध, बाँस, बाग, बाज, बाजा, बाट, बाजार, बादाम, बाल, बाहुल्य, बिछावन, बीज, बिल, बुखार, बूँद, बेंत, बेलन, बेला, बेसन, बोझ, बोल, ब्योरा इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

7. निम्नांकित में पुल्लिंग शब्द कौन-सा है?

- (a) मजा (b) सजा  
(c) कजा (d) रजा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

मजा पुल्लिंग शब्द है, शेष स्त्रीलिंग हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- मंच, मंचन, मण्डन, मन्तव्य, मन्त्रिमण्डल, मकबरा, मकरन्द, मजमा, मजीरा, मटर, मसूर, मठ, मतलब, मद, मद्य, मच्छर, मनसूबा, मनोवेग, मरहम, मरोड़, मवेशी, मलय, मलयगिरि, मलाल, मवाद, महुआ, माघ, माजरा, मातम, मिजाज, मील, मुकदमा, मुरब्बा, मुकुट, मूँगा, मृग, मेघ, मेवा, मोक्ष, मोड़, मोती, मोतीचूर, मोम, मोर, मोह, मौन, म्यान इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

8. निम्नलिखित शब्दों में पुल्लिंग का चयन कीजिए-

- (a) हवा (b) कोयल  
(c) दारा (d) शिक्षा

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

संस्कृत में भार्या, दारा एवं कलत्र तीनों शब्द पत्नी के लिए प्रयुक्त होते हैं, परन्तु दारा पुल्लिंग शब्द है। भार्या स्त्रीलिंग एवं कलत्र नपुंसकलिंग है, शेष स्त्रीलिंग हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- ❏ हकीकत, हड़प, हड़ताल, हत्या, हद, हलचल, हवा, हाँक, हाय, हाट, हालत, हिंसा, हिचक, हिदायत, हींग, हिम्मत, हल्दी, हैसियत, होड़ा इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

- ❏ शंका, शपथ, शक्कर, शरण, शर्म, शर्त, शतरंज, शराब, शरारत, शहादत, शान, शाखा, शाम, शामत, शिखा, शिकायत, शिरा, शृंखला, शौकत इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।  
❏ कक्षा, कटार, कटुता, कड़क, कतरन, कतार, कथा, कन्या, कन्न, कमर, कमाई, कमान, कमीज, करवट, करुणा, कवायद, कसक, कसम, कसरत, कपास, कसौटी, कलिख, करतूत, किस्मत, किशमिश, कीमत, कील, कुंजी, कुटिया, कुल्हाड़ी, कृपा, कैद, कोख, कोयल, क्रिया, क्रीड़ा, क्षमा इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

9. निम्नलिखित शब्दों में नपुंसकलिंग का चयन कीजिए-

- (a) स्त्री (b) दारा  
(c) कलत्र (d) पत्नी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. दिये गये विकल्पों में से 'ज्ञानवती' का पुल्लिंग शब्द छाँटिए -

- (a) ज्ञानवत (b) ज्ञानवान्  
(c) ज्ञानयुक्त (d) ज्ञानेय

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'ज्ञानवती' का पुल्लिंग 'ज्ञानवान्' होता है। शेष विकल्प असंगत हैं।

11. निम्नलिखित में से पुल्लिंग शब्द है-

- (a) घास (b) आय  
(c) व्यय (d) नहर

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

व्यय पुल्लिंग शब्द है, शेष स्त्रीलिंग हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- ❏ वजन, वज्र, वन, वनवास, वर, वरप, वर्जन, वसन्त, वहिरंग, वाचन, वात, वार, वाष्प, विकल्प, विक्रय, विघटन, वित्त, विलम्ब, विमर्श, विलास, विष, विलयन, विवाद, विसर्जन, विस्फोट, वृत्त, वेश, वैभव, वैमनस्य, वैराग्य, वैष्णव, व्यंग्य, व्यंजन, व्यवधान, व्याख्यान, व्याघात, व्यास इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।  
❏ आग, आजीविका, आज्ञा, आत्मा, आन, आत्मजा, आत्महत्या, आदत, आपदा, आपत, आय, आयु, आराधना, आवाज, आशंका, आस्तीन, आह, आहट, आशीष इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।  
❏ घटा, घटिका, घास, घिन, घुड़दौड़, घुड़साल, घूस, घृणा, घोषणा इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।  
❏ नकल, नजर, नहर, नफरत, नफासत, नसीहत, नब्ज, नमाज, निद्रा, निराशा, निशा, निष्ठा, नींद, नीयत, नींव, नोक, नौबत, नेत्री इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

12. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द पुल्लिङ्ग है?

- (a) आय (b) व्यय  
(c) नहर (d) लहर

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. लिंग की दृष्टि से 'दही' क्या है?

- (a) स्त्रीलिङ्ग (b) पुल्लिङ्ग  
(c) नपुंसकलिङ्ग (d) उभयलिङ्ग

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

लिंग की दृष्टि से 'दही' पुल्लिङ्ग शब्द है। ईकारान्त संज्ञाएँ जैसे-नदी, रोटी, टोपी इत्यादि स्त्रीलिङ्ग होती हैं, किन्तु अपवाद स्वरूप घी, मोती, दही पुल्लिङ्ग शब्द की श्रेणी में आते हैं।

14. निम्नलिखित शब्दों में से एक पुल्लिङ्ग शब्द है-

- (a) चाय (b) शिकंजी  
(c) लस्सी (d) दही

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. निम्नलिखित में पुल्लिङ्ग शब्द नहीं है-

- (a) रत्न (b) मोती  
(c) नकल (d) बचपन

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

नकल स्त्रीलिङ्ग शब्द है, शेष पुल्लिङ्ग हैं।

16. निम्नलिखित शब्दों में से पुल्लिङ्ग शब्द का चयन कीजिए-

- (a) सूची-पत्र (b) किताब  
(c) गंगा (d) संसद

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

सूची-पत्र पुल्लिङ्ग शब्द है, शेष स्त्रीलिङ्ग के श्रेणी में आते हैं।

17. निम्नलिखित शब्दों में से स्त्रीलिङ्ग शब्द है -

- (a) टकसाल (b) दाग  
(c) घर (d) खीरा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'टकसाल' स्त्रीलिङ्ग शब्द है, जबकि दाग, खीरा, घर पुल्लिङ्ग शब्द हैं।

18. निम्नलिखित में से ईकारान्त संज्ञा (स्त्रीलिङ्ग) नहीं है -

- (a) नदी (b) टोपी  
(c) उदासी (d) पहिया

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'पहिया' ईकारान्त संज्ञा (स्त्रीलिङ्ग) नहीं है, बल्कि आकारान्त पुल्लिङ्ग है। शेष विकल्पों में ईकारान्त संज्ञा (स्त्रीलिङ्ग) शब्द हैं।

19. निम्नलिखित में से कौन-सा स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होता है?

- (a) ऋतु (b) पण्डित  
(c) हंस (d) आचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

ऋतु स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त किया जाता है, शेष पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- हुंकार, हज, हक, हठयोग, हड़कम्प, हमला, हरण, हरिण, हल, हवन, हवाला, हार (माला), हाशिया, हास्य, हित, हिम, हीरा, हुस्म, हुलास, हेतु, हैजा, होंठ, होटल, होश इत्यादि पुल्लिङ्ग शब्द हैं।
- आलस्य, आचार, आईना, आचरण, आखेट, आभार, आलू, आवेश, आविर्भाव, आश्रम, आश्वासन, आसन, आषाढ़, आस्वादन, आहार आसव, आशीर्वाद, आकाश, आयोग, आटा, आमंत्रण, आक्रमण, आरोप, आयात, आयोजन, आरोपण, आलोक, आवागमन, आविष्कार इत्यादि पुल्लिङ्ग शब्द हैं।
- रकम, रक्षा, रंग, रगड़, रचना, रज्जू, रसद, रफ्तार, रसना, रस्म, राख, रामायण, राय, रास, राह, राहत, रियासत, रियायत, रिपोर्ट, रिश्त, रिमझिम, रीझ, रीढ़, रुकावट, रेखा, रेल, रोक, रौनक इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्द हैं।

20. निम्नलिखित में से स्त्रीलिङ्ग शब्द को चुनिए-

- (a) धुआँ (b) संख्या  
(c) भत्ता (d) धावा

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

संख्या स्त्रीलिङ्ग है, शेष पुल्लिङ्ग हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- संतान, सम्पदा, संसद, सँभाल, संवेदना, संस्कृत (भाषा), संस्था, सजा, सज्जण, सजावट, सड़क, सत्ता, सनक, सनद, सम्यता, समझ, समस्या, सरसों, सरकार, सराय, सलामत, सलतनत, ससुराल, साँझ, साध, साँस, साजिश, सिफारिश, सीक, सीध, सीमा, सुगन्ध, सुध, सुधा, सुरंग, सुलह, सुविधा, सुबह, सूजन, सूझ, सूरत, सेज, सेंध, सेना, सेवा, सेहत, सौगन्ध, सौगात, सौँफ, स्थापना इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्द हैं।

21. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?

- (a) हाथी (b) मोती  
(c) पानी (d) नकेल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

नकेल स्त्रीलिंग है, जबकि हाथी, मोती तथा पानी पुल्लिंग शब्द हैं।

22. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग नहीं है?

- (a) झुरमुट (b) अन्त्येष्टि  
(c) इच्छा (d) निराशा

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

झुरमुट स्त्रीलिंग नहीं, बल्कि पुल्लिंग है, शेष स्त्रीलिंग हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- झंझा, झंझावत, झकझोर, झकोर, झाड़ (झाड़ी), झंखाड़, झोंगुर, झुण्ड, झुकाव तथा झूमर पुल्लिंग शब्द हैं।
- झंकार, झंझट, झख, झिझक, झड़प, झपक, झपट, झपास, झरझर, झकझक, झलमल, झाड़फूंक, झाड़, झौंझ, झौंझर, झोंप, झाड़न, झालर, झिड़क, झील, झूम इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।
- अँगड़ाई, अँतड़ी, अकड़, अवल, अड़चन, अदालत, अप्सरा, अपेक्षा, अपील, अफीम, अभिधा, अभीप्सा, अवज्ञा, अहिंसा, अरहर, अवस्था स्त्रीलिंग शब्द हैं।
- इंच, इन्द्रिय, इच्छा, इजाजत, इज्जत, इमारत, ईंट, ईद, ईख, ईर्ष्या स्त्रीलिंग शब्द हैं।

23. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?

- (a) उत्साह (b) चक्रव्यूह  
(c) मृत्यु (d) संकल्प

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

मृत्यु स्त्रीलिंग शब्द है, शेष पुल्लिंग हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- मंजिल, मँझधार, मन्त्रणा, मंशा, मचान, मजाल, मज्जा, मखमल, मटक, मणि, ममता, मरम्मत, मर्यादा, मलमल, मशाल, मशीन, मस्जिद, महक, महफिल, महिमा, माँग, माता, मात्रा, माया, माप, माला, मिठास, मिर्च, मिलावट, मीनार, मुद्रा, मुराद, मुलाकात, मुठभेड़, मुस्कान, मुसीबत, मुस्कराहट, मुहब्बत, मुद्दत, मुहर, मूँग, मूँछ, मूर्खता, मेखला, मेहनत, मैना, मैल, मौज, मौत इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

24. निम्नलिखित शब्दों में से एक स्त्रीलिंग शब्द है -

- (a) डोर (b) रस्सा

(c) धागा

(d) सूत

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(a)

डोर एक स्त्रीलिंग शब्द है तथा अन्य सभी धागा, रस्सा तथा सूत पुल्लिंग शब्द हैं।

25. निम्नलिखित शब्दों में से एक स्त्रीलिंग है -

- (a) दूध (b) मक्खन  
(c) मट्ठा (d) छाछ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

छाछ शब्द स्त्रीलिंग है। दूध, मट्ठा तथा मक्खन शब्द पुल्लिंग है।

26. निम्नांकित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग नहीं है?

- (a) सुबह (b) दोपहर  
(c) साँझ (d) दिन

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

दिन स्त्रीलिंग नहीं, बल्कि पुल्लिंग शब्द है।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- दंगल, दम्भ, दंश, दबाव, दम, दमन, दर्प, दल, दलन, दलबल, दलाल, दस्त, दस्यु, दालान, दाद, दानपत्र, दामन, दाय, दारु, दाह, दिखावा, दिवाला, दियारा, दीया, दुःख, दुराव, दुर्ग, दुलार, दुशाला, दृग, दौर, दौरा, दौरान, द्वन्द्व, द्वारा, द्वीप, द्वेष इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

27. निम्नलिखित में कौन शब्द स्त्रीलिंग नहीं है?

- (a) पानी (b) मानी  
(c) कहानी (d) रानी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

पानी स्त्रीलिंग नहीं, बल्कि पुल्लिंग शब्द है। द्रव्यवाचक संज्ञाएँ पुल्लिंग की श्रेणी में आती हैं, किन्तु अपवाद स्वरूप चाय, स्याही, शराब इत्यादि स्त्रीलिंग श्रेणी में आती हैं।

28. निम्नलिखित शब्दों में कौन स्त्रीलिंग नहीं है?

- (a) रोटी (b) पूड़ी  
(c) पानी (d) नदी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।



29. 'ठाकुर' शब्द का स्त्रीलिंग क्या होगा?

- (a) ठकुरानी (b) ठकुराइन  
(c) ठकुरिन (d) ठाकुरी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'ठाकुर' शब्द का स्त्रीलिंग 'ठकुराइन' होता है।

30. 'कवि' का स्त्रीलिंग है-

- (a) कविइत्री (b) कवित्री  
(c) कवयित्री (d) कवियित्री

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'कवि' का स्त्रीलिंग 'कवयित्री' होता है।

31. कवि का स्त्रीलिंग होगा-

- (a) कवियत्री (b) कवियित्री  
(c) कवयित्री (d) कवियित्री

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. निम्नलिखित युग्मों में से एक लिंग की दृष्टि से शुद्ध है -

- (a) सम्राट - सम्राटिनी (b) वीरांगने - वीरांगना  
(c) गोप - गोपिनी (d) सुलोचन - सुलोचना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(d)

लिंग की दृष्टि से विकल्प (d) युग्म शुद्ध है। अन्य शुद्ध युग्म हैं- सम्राट-सम्राज्ञी, वीर-वीरांगना, गोप-गोपी।

33. 'ऋषि' का स्त्रीलिंग है-

- (a) ऋषिणी (b) ऋषि पत्नी  
(c) ऋषिका (d) ऋषी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'ऋषि' का स्त्रीलिंग 'ऋषिका' है।

34. दिये गये विकल्पों में से 'सम्राट' शब्द का स्त्रीलिंग छाँटिये -

- (a) सम्राटी (b) समराटिन  
(c) सम्राज्ञी (d) स्त्री-सम्राट्

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'सम्राट' का स्त्रीलिंग 'सम्राज्ञी' होता है। शेष विकल्प असंगत हैं।

35. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द है, जो सदैव स्त्रीलिंग से प्रयुक्त होता है?

- (a) पक्षी (b) बाज  
(c) मकड़ी (d) गेडा

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

कुछ प्राणी स्त्री रूप में जाने जाते हैं। जैसे- मकड़ी, मछली, कोयल, चिड़िया, चील, मकड़ी आदि। इन्हें नित्य स्त्रीलिंग कहते हैं। यदि इनसे पुल्लिंग बनाना हो, तो इनसे पहले 'नर' लगाया जाता है।

36. 'युवा' शब्द का लिंग परिवर्तित करने के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही शब्द छाँटिये -

- (a) युवी (b) युवराज्ञी  
(c) युवती (d) युवराज

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'युवा' पुल्लिंग शब्द है। इसका स्त्रीलिंग शब्द 'युवती' होता है। अतः 'युवा' शब्द का लिंग परिवर्तन करने पर 'युवती' होगा।

37. निम्नलिखित शब्दों में किस एक का लिंग परिवर्तन हिन्दी भाषा में प्रचलित नहीं है?

- (a) चाचा (b) बहन  
(c) कोयल (d) भैंसा

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

हिन्दी भाषा में कोयल का लिंग परिवर्तन प्रचलित नहीं है। कोयल शब्द सदा स्त्रीलिंग में होता है, किन्तु लिंग परिवर्तित करते समय आगे नर या मादा जोड़ दिया जाता है। जैसे-नर कौआ-मादा कौआ, नर कोयल-मादा कोयल। शेष में लिंग परिवर्तन होता है। जैसे- चाचा-चाची, बहन-भाई, भैंसा-भैंस इत्यादि।

38. अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग निर्णय का आधार है—

- (a) उनके साथ प्रयुक्त क्रिया (b) उनके साथ प्रयुक्त विशेषण  
(c) उनके साथ प्रयुक्त अव्यय (d) ए और बी दोनों सही हैं

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

प्राणिवाचक संज्ञाओं का लिंग निर्णय सरल है, किन्तु अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग निर्णय में कठिनाई होती है। कुछ अप्राणिवाचक सदैव पुल्लिंग रहते हैं, जैसे-पर्वत—हिमालय, सतपुड़ा। कुछ सदैव स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होंगे, जैसे- नदियाँ—गंगा, यमुना, कावेरी। अप्राणिवाचक शब्द के साथ प्रयुक्त क्रिया के साथ उसके लिंग का निर्णय कर सकते हैं, जैसे- यमुना बहती है। बहना क्रिया है और इससे यमुना का लिंग निर्धारण किया जा सकता है। इसी प्रकार विशेषण से भी लिंग निर्धारण हो सकता है। जैसे-

अच्छी गुड़िया। 'अच्छी' विशेषण के माध्यम से निर्धारित किया जा सकता है कि गुड़िया स्त्रीलिंग है। 'अव्यय' शब्द लिंग परिवर्तन में बदलते नहीं हैं। अतः इनके द्वारा लिंग निर्धारण नहीं किया जा सकता है।

39. क्रिया के किस रूप में कर्ता के अनुसार लिंग परिवर्तन नहीं होता है?

- (a) वर्तमानकालिक रूप में (b) भविष्यकालिक रूप में  
(c) भूतकालिक रूप में (d) आज्ञार्थक रूप में

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हो, तब कर्मणि प्रयोग होता है। जैसे-सीता ने पत्र लिखा, इसमें क्रिया के अनुसार लिंग परिवर्तन हुआ है, न कि कर्ता के अनुसार। इसमें क्रिया भूतकालिक रूप में है।

## कारक

1. आचार्य किशोरीदास वाजपेयी के मत से हिन्दी में कितने कारक हैं?

- (a) 6 (b) 7  
(c) 8 (d) 5

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने किशोरीदास वाजपेयी ग्रन्थावली वैल्युम-I में लिखा है, हिन्दी में विभक्तियों की संख्या बिल्कुल कम है। 'ने', 'को', 'से', 'का', ('के'-'की') 'में' और 'पर'। विभक्तियों से 'कारक' आदि का बोध होता है। यदि ये विभक्तियाँ न हों, तो संज्ञा मात्र से कुछ काम न चले। कारक का लक्षण बहुत स्पष्ट है-क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध हो, उसे 'कारक' कहते हैं। इस लक्षण के अनुसार, कारक छह हैं, जिन्हें कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण कहते हैं। हिन्दी व्याकरणकारों ने आठ कारक लिखे हैं। सम्बन्ध तथा सम्बोधन को भी उन्होंने 'कारक' समझ लिया है। आप लक्षण पर उतारकर देखें, सम्बन्ध तथा सम्बोधन कारक नहीं हैं। उनका क्रिया से सम्बन्ध नहीं है।

2. कारक के भेद हैं-

- (a) पाँच (b) छः  
(c) सात (d) आठ

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

वाक्य में जिसके द्वारा क्रिया की सिद्धि हो उसे कारक कहते हैं। हिन्दी में कारकों की संख्या आठ मानी गयी है-कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण तथा सम्बोधन, जबकि संस्कृत साहित्य में छः कारक माने जाते हैं जिसमें षष्ठी और सम्बोधन की गणना नहीं होती है।

3. कर्मकारक के लिए प्रयुक्त होने वाला चिह्न है-

- (a) ने (b) के लिए  
(c) से (d) को

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

किसी वाक्य में प्रयोग किए गए पदार्थों में जिसको कर्ता सबसे अधिक चाहता है उसे कर्म कारक कहते हैं। पाणिनि ने कर्म कारक की परिभाषा इस प्रकार दी है 'जिस वस्तु या पुरुष के ऊपर क्रिया का फल समाप्त होता है, उसे कर्म कहते हैं।' संस्कृत में सम्बोधन सहित 8 विभक्तियाँ (कारक) होती हैं। उनके नाम और चिह्न इस प्रकार हैं (षष्ठी को कारक नहीं माना जाता है। सम्बोधन प्रथमा का ही भेद है)।

विभक्ति	कारक	चिह्न
1. प्रथमा	कर्ता	ने
2. द्वितीया	कर्म	को
3. तृतीया	करण	से, के द्वारा
4. चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
5. पंचमी	अपादान	से (अलग होने की स्थिति में)
6. षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, ना, ने, नी, रा, रे, री,
7. सप्तमी	अधिकरण	में, पर
8. सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अये, भो: हो, अरे

4. कर्मकारक की विभक्ति है -

- (a) पर (b) ने  
(c) को (d) से

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. "दशरथ के पुत्र राम ने रावण को मारा" इस वाक्य में कौन-सा पद कारक बनने की सबसे कम योग्यता रखता है?

- (a) राम (b) रावण  
(c) दशरथ (d) पुत्र

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

कर्ता जिस साधन या माध्यम से कार्य करता है, उस साधन या माध्यम को करण कारक कहते हैं। कभी-कभी 'से' या 'के द्वारा' विभक्तियों के बिना भी करण कारक का प्रयोग होता है। "दशरथ के पुत्र राम ने रावण को मारा" इस वाक्य में कारक बनने का सबसे कम गुण पद 'राम' है, क्योंकि दशरथ के पुत्र 'राम' ही हैं। इस वाक्य में संज्ञा का प्रयोग दो बार हुआ है, 'दशरथ के पुत्र' और 'राम'। अतः 'दशरथ के पुत्र' पद के प्रयोग से ये सिद्ध होता है कि 'राम' पद का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

6. 'उसने उसे छल से पराजित किया' में छल से में कौन-सा कारक है?

- (a) कर्ता (b) करण  
(c) अपादान (d) कर्म

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

संज्ञा आदि शब्दों के जिस रूप से क्रिया के करने के साधन का बोध हो अर्थात् जिसकी सहायता से कार्य सम्पन्न हो, वह करण कारक कहलाता है। प्रस्तुत वाक्य में 'छल से' कार्य सम्पन्न हो रहा है। अतः यहाँ 'करण कारक' है।

7. 'करण कारक' किस वाक्य में है?

- (a) राम को फल दो  
(b) वह कलम से लिखता है  
(c) यह राम की पुस्तक है  
(d) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में 'करण कारक' है। जिस वाक्य में क्रिया के सम्बन्ध का बोध होता है, इसे 'करण कारक' कहते हैं। इसकी विभक्ति 'से' है। प्रस्तुत वाक्य में लिखने का कार्य 'कलम से' हो रहा है। अतः यहाँ 'करण कारक' है।

8. निम्नलिखित वाक्यों में से एक में करण कारक के विभक्ति चिह्न का प्रयोग हुआ है -

- (a) पैरों से चलना यात्रा, प्राणों से चलना जीवन, समुदाय से चलना समाज तथा देश और काल से चलना इतिहास कहलाता है।  
(b) आकाश से गिरी एक बूँद कहीं मोती, कहीं विष तो कहीं कीचड़ बनी।  
(c) रेल से उतरा मुसाफिर ईश्वरचंद्र विद्यासागर को कुली समझ बैठा।  
(d) पेड़ से गिरता सेब न्यूटन के द्वारा स्थापित गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत का आधार बना।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में करण कारक का प्रयोग हुआ है। अन्य विकल्पों में अपादान कारक का प्रयोग हुआ है।

9. 'उससे अच्छे तो आप हैं' में कौन-सा कारक है?

- (a) अधिकरण (b) अपादान  
(c) करण (d) सम्बोधन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी से अलग होना पाया जाय, वह अपादान कारक कहलाता है। प्रस्तुत वाक्य में 'उससे' और 'आप' दोनों का तुलनात्मक होना अलग रूप है। अतः यह वाक्य 'अपादान कारक' होगा। माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने भी अपनी उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) अर्थात् 'अपादान' माना है।

10. निम्नलिखित वाक्यों में से अपादान परसर्ग से युक्त वाक्य है-

- (a) हम कान से सुनते हैं।  
(b) मोहन से उठा नहीं जाता।  
(c) राम ने अपने पुत्र से नाता तोड़ लिया।  
(d) रावण राम के बाण से मारा गया।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017 उत्तर—(c)

प्रस्तुत वाक्य में 'राम' का 'पुत्र' से अलग होने का अर्थ प्रकट करता है। अतः इस वाक्य में अपादान परसर्ग है। विकल्प (a) तथा (d) में करण परसर्ग है। ज्ञात हो कि 'परसर्ग' को 'कारक' भी कहते हैं।

11. 'पेड़ से पत्ते गिरते हैं' में कारक है—

- (a) कर्ता कारक (b) अपादान कारक  
(c) करण कारक (d) सम्बन्ध कारक

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

जब संज्ञा जिस रूप में अलगाव की स्थिति होती है, तो अपादान कारक होता है। पेड़ से पत्ते का गिरना अलगाव की स्थिति प्रदर्शित करता है। अतः यह पंचमी विभक्ति का अपादान कारक है। इसका चिह्न 'से' है।

12. 'अपादान कारक' किस वाक्य में है?

- (a) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं  
(b) धोबी को धुलने के लिए कपड़े दो  
(c) उसकी गाय सुन्दर है  
(d) वह फल खाता है

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'वह घर से बाहर गया' - इस वाक्य में 'से' कौन-सा कारक है?

- (a) कर्ता (b) कर्म  
(c) करण (d) अपादान

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

प्रस्तुत वाक्य से घर से अलग होने का प्रतीक है। अतः इस अर्थ में यहाँ अपादान कारक होगा।

14. 'मेरे घर से आपका, घर पाँच किमी. दूर है' इस वाक्य में 'घर से' में कौन-सा कारक है?

- (a) कर्म (b) करण  
(c) सम्बन्ध (d) अपादान

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

संज्ञा के जिस रूप से अलगाव का बोध हो उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'से' है। 'मेरे घर से आपका, घर पाँच किमी. दूर है', में एक घर के दूसरे घर की दूरी या अलगाव की स्थिति है।

15. 'वह कार मेरी है' इस वाक्य में कौन-सा कारक है?

- (a) करण (b) सम्बन्ध  
(c) सम्प्रदान (d) अधिकरण

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का सम्बन्ध दूसरी वस्तु से जाना जाये, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। प्रस्तुत वाक्य में 'कार' का सम्बन्ध 'मुझसे' (मेरी) है। अतः यहाँ सम्बन्ध कारक है।

16. क्रिया का आधार सूचित करने वाला कारक है -

- (a) अपादान कारक (b) सम्बन्ध कारक  
(c) अधिकरण कारक (d) सम्प्रदान कारक

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

क्रिया का आधार सूचित करने वाला कारक 'अधिकरण कारक' कहलाता है। इसकी विभक्ति के रूप में 'पर' तथा 'में' का प्रयोग किया जाता है।

17. 'तोता डाल पर बैठा है' इस वाक्य में कौन-सा कारक है?

- (a) करण (b) सम्बन्ध  
(c) अधिकरण (d) अपादान

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। अतः प्रस्तुत वाक्य में अधिकरण कारक का प्रयोग हुआ है।

18. निम्नलिखित वाक्यों में से एक में करण कारण के विभक्ति चिह्न का प्रयोग हुआ है—

- (a) लड़का दर्द के मारे छटपटाता रहा  
(b) भोजन के निमित्त पधारिये  
(c) सिंह वन में या गुफा में रहते हैं  
(d) सरकार गरीबों के वास्ते कई योजनाएँ चला रही है।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में करण कारक के विभक्ति चिह्न का प्रयोग हुआ है। विकल्प (b) में सम्बन्ध कारक तथा विकल्प (c) में अधिकरण कारक का प्रयोग हुआ है। विकल्प (d) में सम्प्रदान कारक का प्रयोग हुआ है।

## □ विराम चिह्न

1. 'सुख-दुःख' के बीच लगने वाला (-) चिह्न है—

- (a) निर्देशक चिह्न (b) योजक चिह्न  
(c) विवरण चिह्न (d) अपूर्ण विराम

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

सुख-दुःख के बीच लगने वाला चिह्न योजक चिह्न (-) है।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा अल्पविराम चिह्न है?

- (a) (.) (b) (;)  
(c) (,) (d) (!)

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

वाक्यों तथा शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने तथा किसी विषय-प्रसंग को भिन्न-भिन्न वर्गों में बांटने के लिए विराम चिह्नों की आवश्यकता पड़ती है जो उच्चारण के समय प्रयोग करने से उस वाक्य अथवा शब्द का अर्थ स्पष्ट होता है। मुख्य विराम चिह्न इस प्रकार हैं—

विराम	चिह्न
पूर्ण विराम	
अल्प विराम	,
अर्ध विराम	;
योजक चिह्न	-
प्रश्नवाचक चिह्न	?
विस्मयबोधक चिह्न	!
उद्धरण चिह्न	“ ”

3. मनोविकार सूचक शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों के अंत में किस चिह्न का प्रयोग होता है?

- (a) विस्मयबोधक (b) प्रश्नवाचक  
(c) अर्धविराम (d) अल्पविराम

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

मनोविकार सूचक शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों के अंत में विस्मयबोधक चिह्न का प्रयोग होता है। यह चिह्न, आश्चर्य, खुशी, सम्बोधन व्यक्त करने के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

4. जब वाक्य के मध्य में कोई शब्द या पद छूट जाता है, तब उसे पूरा करने के लिए उस स्थान पर कौन-सा विराम चिह्न लगाकर उसके ऊपर लिखा जाता है?

- (a) अपूर्णसूचक विराम चिह्न (b) अर्ध विराम चिह्न



उत्तर—(d)

जब वाक्य के मध्य में कोई शब्द या पद छूट जाता है, तब उसे पूरा करने के लिए उस स्थान पर हंसपद विराम चिह्न (^) लगाकर उसके ऊपर लिखा जाता है।

## □ अव्यय

1. 'अथवा' व्याकरण की दृष्टि है—

- (a) सन्धि (b) उपसर्ग  
(c) अन्दाय (d) अव्यय

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

जिन पदों या अव्ययों द्वारा मुख्य वाक्य जोड़े जाते हैं, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं। इसके चार उपभेद हैं—

क. संयोजक—और, व, एवं, तथा।

ख. विभाजक—या, वा, अथवा, किंवा, कि, न कि, नहीं तो।

ग. विरोधदर्शक—पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर, वरन्, बल्कि।

घ. परिणामदर्शक—इसलिए, सो, अतः, अतएव।

2. 'भला मैं क्या कर सकता हूँ' वाक्य में 'भला' शब्द है—

- (a) संज्ञा (b) सर्वनाम  
(c) विशेषण (d) अव्यय

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

अव्यय वह शब्द होता है जिस पर लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता है। प्रस्तुत वाक्य में 'भला' शब्द अव्यय है, क्योंकि इस पर लिंग, वचन, कारक आदि का प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

3. निम्नलिखित में से कृदन्त अव्यय का एक प्रकार नहीं है—

- (a) पूर्वकालिक कृदन्त (b) भूतकालिक कृदन्त  
(c) तात्कालिक कृदन्त (d) पूर्ण क्रियाद्योतक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

अविकारी कृदन्त (अव्यय) चार प्रकार के होते हैं— पूर्वकालिक कृदन्त, तात्कालिक कृदन्त, अपूर्ण क्रियाद्योतक तथा पूर्ण क्रियाद्योतक। भूतकालिक कृदन्तों का प्रयोग सामान्यतः विशेषण की तरह होता है।

## □ काल

1. 'क्रिया के उस रूपान्तर को क्या कहते हैं जिससे उसके कार्य-व्यापार के समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध हो?

- (a) संज्ञा (b) परिमाणबोधक विशेषण

उत्तर—(d)

'क्रिया' के उस रूपान्तर को 'काल' कहते हैं जिससे उसके कार्य-व्यापार के समय उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध होता है। काल के तीन प्रकार होते हैं—वर्तमान काल, भूतकाल तथा भविष्यत् काल।

## □ वाच्य

1. 'मोहन से चला नहीं जाता' वाक्य में कौन-सा वाच्य है?

- (a) कर्मवाच्य (b) भाववाच्य  
(c) कर्तृवाच्य (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

भाववाच्य, क्रिया के उस रूपान्तर को कहते हैं, जिससे वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता का बोध हो। जैसे—मोहन से चला नहीं जाता, मुझसे बैठा नहीं जाता। इन वाक्यों में कर्ता और कर्म के स्थान पर क्रियाएँ ही अधिक प्रधान हो गयी हैं।

2. 'मरम बचन जब सीता बोला' पंक्ति का प्रयोग हुआ है—

- (a) कर्मवाच्य (b) कर्तृवाच्य  
(c) गलत वाक्य (d) भाववाच्य

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

क्रिया के विशुद्ध रूप के बारे में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने जायसी ग्रन्थावली की भूमिका में लिखा है "पद्य में कभी-कभी वर्तमान काल के रूप के स्थान पर संक्षेप के लिए धातु का रूप रख दिया जाता है, जैसे— (क) हों अन्धा जेहि सूझ न पीठा। (सूझ = सूझती है) (ख) बिनु गय बिरिछ निपात जिमि ठाढ़-ठाढ़ पै सूखा (सूख = सूखता है)"। उक्ति-व्यक्ति प्रकरण में क्रिया के ऐसे शुद्ध रूपों की बहुतायत है। वहाँ पद्य लिखते समय क्रिया-रूप को संक्षिप्त करना आवश्यक न था। शुक्ल जी ने एक रोचक उदाहरण तुलसीदास जी से दिया—'मरम बचन जब सीता बोला'। यहाँ बोला वास्तव में बोल है। छन्द की दृष्टि से संक्षिप्त न होकर और विस्तृत हो गया है। ऐसे पदों का एक उदाहरण जायसी से दिया है— 'देखि चरित पदमावति हँसा। शुक्ल जी कहते हैं "बोला और हँसा वास्तव में 'बोल' और 'हँस' हैं, जो छन्द की दृष्टि से दीर्घान्त कर दिए गए हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि संक्षिप्त रूपों का व्यवहार दोनों लिंगों में समान रूप से हो सकता है।" तुलसीदास और जायसी कर्मवाच्य प्रयोगों से परिचित थे और रामचरितमानस में ऐसे रूप भरे पड़े हैं। सम्भव है बोला का सम्बन्ध मरम बचन से हो, किन्तु जायसी ने हँसा का प्रयोग निस्सन्देह क्रिया का विशुद्ध रूप ध्यान में रखकर किया है। प्रस्तुत वाक्य में क्रिया में कर्म की प्रधानता है। अतः स्पष्ट है कि यह वाक्य कर्मवाच्य है।

## □ प्रत्यय

1. निम्नलिखित शब्दों के मूल शब्द तथा उसमें लगे प्रत्यय का एक युग्म गलत है, वह है -

- (a) सुन्दरता - सुन्दर + ता (b) कठिनाई - कठिन + आई  
(c) बचपन - बच + पन (d) पाँचवीं - पाँच + वीं

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

‘पन’ कोई प्रत्यय नहीं है। अतः विकल्प (c) में मूल शब्द में लगा प्रत्यय गलत है। शेष विकल्प में लगे प्रत्यय सही हैं।

2. ‘प्रामाणिक’ शब्द के मूल शब्द और प्रत्यय का सही अलगाव है -

- (a) प्रमाण + क (b) प्रमाण + इक  
(c) प्रा : माणिक (d) प्रमा + आणिक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

मूल शब्द ‘प्रमाण’ में ‘इक’ प्रत्यय लगकर ‘प्रामाणिक’ शब्द बना है।

3. निम्नलिखित में से किस शब्द में तद्धित प्रत्यय लगा है?

- (a) पठनीय (b) कृपालु  
(c) गंतव्य (d) हँसोड़

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(b)

‘कृपालु’ में गुणवाचक तद्धित प्रत्यय है। इसमें मूल शब्द ‘कृपा’ में ‘आलु’ प्रत्यय लगा है। शेष में कृत् प्रत्यय है।

4. ‘पाण्डव’ शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

- (a) कृदन्त (b) तद्धित  
(c) स्त्री (d) प्रत्यय नहीं है

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगने वाले प्रत्यय को ‘तद्धित’ प्रत्यय कहा जाता है। ‘पाण्डु’ में ‘य’ तद्धित-प्रत्यय लगाने से पाण्डव बना है। व्यक्ति वाचक से अपत्यवाचक संज्ञाएँ किसी नाम के अन्त में तद्धित प्रत्यय जोड़ने से बनती हैं। जैसे—वासुदेव-वासुदेव (‘अ’ तद्धित-प्रत्यय जोड़कर), कुन्ती-कौन्तेय (‘एय’ तद्धित-प्रत्यय जोड़कर), कुरु - कौरव (‘अ’ तद्धित-प्रत्यय जोड़कर), पृथा-पार्थ (‘अ’ तद्धित-प्रत्यय जोड़कर)।

5. ‘गौरव’ शब्द किस तद्धित प्रत्यय के योग से बना है?

- (a) अ (b) इक  
(c) आयन (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

‘गुरु’ विशेषण में ‘अ’ तद्धित प्रत्यय के योग से भाववाचक संज्ञा ‘गौरव’ बना है।

6. ‘लौकिक’ शब्द में प्रत्यय है-

- (a) लोइक (b) किक  
(c) अक (d) इक

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

‘लौकिक’ शब्द में ‘इक’ प्रत्यय है। इसके अन्तर्गत ‘औ’ का वृद्धि रूप ग्रहण कर रहा है।

7. ‘ई’ प्रत्यय किस शब्द में नहीं है?

- (a) तेली (b) चमेली  
(c) माली (d) अलबेली

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

‘चमेली’ शब्द में ‘ई’ प्रत्यय नहीं है। शेष शब्दों में ‘ई’ प्रत्यय है।

8. निम्न में से प्रत्यय रहित शब्द है-

- (a) दर्शनीय (b) दुर्गुण  
(c) भिक्षुक (d) कर्तव्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘दुर्गुण’ प्रत्यय रहित शब्द है, क्योंकि दुर्गुण में दुर् उपसर्ग है। दर्शनीय में ‘दृश’ धातु ‘अनीय’ प्रत्यय है। भिक्षुक में ‘भिक्ष’ धातु ‘उक’ प्रत्यय है। कर्तव्य में ‘कृ’ धातु ‘तव्य’ प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

9. इनमें से .....कृदन्त है।

- (a) मिठाई (b) लड़ाई  
(c) दवाई (d) तारी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

क्रिया (धातु) के पीछे लगकर संज्ञा और विशेषण शब्दों की रचना करने वाले प्रत्ययों को ‘कृत’ प्रत्यय कहते हैं और इनके मेल से बने शब्दों को ‘कृदन्त’ शब्द कहते हैं। ‘लड़ाई’ भाववाचक संज्ञा है, जिसमें ‘लड़’ धातु में ‘कृत’ प्रत्यय ‘आई’ लगा। इसी प्रकार ‘जुताई’, ‘सुनाई’, ‘पढ़ाई’ में क्रमशः ‘जुत’, ‘सुन’ तथा ‘पढ़’ धातु में ‘आई’ ‘कृत्’ प्रत्यय लगा है।

10. ‘कृत’ प्रत्यय लगता है-

- (a) क्रिया के अन्त में (b) संज्ञा के अन्त में  
(c) सर्वनाम के अन्त में (d) विशेषण के अन्त में

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'प्रत्यय' रहित शब्द बताइए-

- (a) मर्मज्ञ (b) वैज्ञानिक  
(c) कृपालु (d) अनुवाद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

प्रत्यय रहित शब्द 'अनुवाद' है। अनुवाद शब्द में 'अनु' उपसर्ग है। 'अनु' का अभिप्राय है क्रम, पश्चात्, समानता। 'मर्मज्ञ' में 'ज्ञ' (जानने वाला अर्थ में) प्रत्यय है। कृपालु में 'कृप' धातु 'आलु' (वाला या युक्त अर्थ में) प्रत्यय के योग से 'कृपालु' शब्द बना है। वैज्ञानिक में 'इक' प्रत्यय लगा है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) अर्थात् मर्मज्ञ दिया है, जो कि गलत है।

12. कौन देशज प्रत्यय का उदाहरण नहीं है?

- (a) फर्साटा (b) अड़ियल  
(c) उच्चतर (d) घुमक्कड़

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

जनसाधारण की भाषा में विकसित तथा प्रचलित ऐसे शब्दों को देशज शब्द कहते हैं, जिनका स्रोत ज्ञात न हो, अर्थात् जिनकी उत्पत्ति न तो संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश स्रोत से हुई हो और न ही किसी विदेशी स्रोत से। जैसे-खिड़की, घपला, पेड़, चूहा, पेट, खौंसी, थैला कुछ देशज शब्द अनुकरणात्मक भी होते हैं, जैसे-म्याऊँ-म्याऊँ, चिपचिपा, चूँ-चूँ, पिलपिला, फटफटिया, फर्साटा, अड़ियल, मरियल, सड़ियल, घुमक्कड़, भुलक्कड़ पियक्कड़ इत्यादि। उच्चतर, संस्कृत भाषा का विशेषण है। अतः उच्चतर तत्सम शब्द है।

## □ उपसर्ग

1. निम्नलिखित शब्दों में से किस शब्द में उपसर्ग नहीं है?

- (a) मिलान (b) सुपुत्र  
(c) अधर्म (d) सुकर्म

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'मिलान' शब्द में उपसर्ग नहीं है। इसमें 'मित' शब्द में 'आन' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है, जबकि सुपुत्र में 'सु' उपसर्ग, अधर्म में 'अ' उपसर्ग तथा सुकर्म में 'सु' उपसर्ग का प्रयोग किया गया है।

2. 'दुर्व्यवहार' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है-

- (a) दुः (b) वि  
(c) अब (d) उपर्युक्त सभी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(\*)

'दुर्व्यवहार' शब्द में 'दुर्' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। दुर्व्यवहार का विच्छेद दुर् + वि + अव + हार होता है।

3. निम्नलिखित में से किस शब्द में 'उपसर्ग' है?

- (a) दशक (b) पराजय  
(c) लालिमा (d) कारीगर

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर—(b)

पराजय में 'परा' उपसर्ग का प्रयोग किया गया है। 'परा' उपसर्ग का अर्थ है-परे, पीछे अथवा उल्टा। पराजय का तात्पर्य है- हार। अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

4. 'प्रत्युत्पन्न' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है -

- (a) प्र (b) प्रति  
(c) प्रत्यु (d) प्रत्युत्

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'प्रत्युत्पन्न' शब्द में 'प्रति' उपसर्ग है। इसका विच्छेद प्रति + उद् + पन् (जो ठीक समय पर प्रस्तुत हो जाय) है।

5. 'अनंग' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?

- (a) अन (b) अन्  
(c) अ (d) अनन्

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'अनंग' शब्द में 'अन्' उपसर्ग है। इसका विच्छेद अन् + अंग (कमदेव) है।

6. निम्नलिखित में किस शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?

- (a) भरपूर (b) भरसक  
(c) भरतार (d) भरपेट

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'भरतार' शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है, जबकि भरपूर, भरसक, भरपेट में 'भर' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। 'भर' उपसर्ग का अर्थ 'पूरा' या 'भरा हुआ' होता है।

7. किस शब्द में 'आ' उपसर्ग नहीं है?

- (a) आजन्म (b) आगमन  
(c) आकर्षक (d) आदरणीया

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

आदरणीया शब्द में 'आ' उपसर्ग नहीं है, जबकि आजन्म, आगमन तथा आकर्षक शब्दों में 'आ' उपसर्ग का प्रयोग किया गया है। अतः विकल्प (d) सही उत्तर है।

8. निम्नलिखित शब्दों में से एक में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?

- (a) कुख्यात (b) कुचाल  
(c) कुलीन (d) कुयोग

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(c)

‘कुलीन’ शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है, जबकि कुख्यात (कु + ख्यात), कुचाल (कु + चाल) तथा कुयोग (कु + योग) में ‘कु’ उपसर्ग का प्रयोग हुआ है।

9. निम्नलिखित में से किस शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं है?

- (a) प्रश्न (b) प्रतिष्ठा  
(c) अधिकार (d) संस्कार

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

‘प्रश्न’ शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है, जबकि प्रतिष्ठा (प्रति + स्था) में ‘प्रति’ उपसर्ग, अधिकार (अधि + कार) में ‘अधि’ उपसर्ग तथा संस्कार (सम् + कार) में ‘सम्’ उपसर्ग का प्रयोग हुआ है।

10. ‘संस्कार’ शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है?

- (a) सम् (b) सन्  
(c) सम्स् (d) सन्स्

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

‘संस्कार’ शब्द में ‘सम्’ उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। सम् का अर्थ है भली प्रकार उत्कृष्ट, साथ या पूर्ण संस्कार, पूर्णतया, संयोग, दोष दूर करना, सुधार, मन में पड़ने वाला प्रभाव, धार्मिक रीति-रिवाज आदि।

11. ‘सम्’ उपसर्ग से निम्न शब्द कौन-सा है

- (a) संस्कार (b) सामना  
(c) समझौता (d) स्वयं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. ‘उपसर्ग’ से सम्बन्धित सूत्र है-

- (a) प्रादयः (b) परश्च  
(c) गतिश्च (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

‘प्रादयोऽसत्त्वे निपतसंज्ञा भवन्ति’ उपसर्ग का सूत्र है। उपसर्ग गतिसंज्ञक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

13. ‘उच्चारण’ शब्द में उपसर्ग है—

- (a) उ (b) उच्  
(c) उत् (d) उच्च

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उच्चारण का सन्धि विच्छेद ‘उत् + चारण’ होता है। अतः उच्चारण में ‘उत्’, उपसर्ग है, किन्तु वास्तव में ‘उत्’, ‘उद्’ का सन्धि रूप है।

14. निम्नलिखित शब्दों में से एक में उपसर्ग का प्रयोग हुआ है -

- (a) निगाह (b) निवाला  
(c) निढाल (d) निशाचर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(c)

निढाल शब्द में ‘नि’ उपसर्ग का प्रयोग किया गया है। अन्य शब्द उपसर्ग रहित हैं।

15. किस शब्द में ‘अ’ उपसर्ग है?

- (a) अभिमान (b) अनजान  
(c) अभाव (d) अवमान

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

अभाव में ‘अ’ उपसर्ग का प्रयोग किया गया है, जबकि अभिमान में अभि, अनजान में ‘अन’ तथा अवमान में ‘अव’ उपसर्ग का प्रयोग किया गया है।

## □ पर्यायवाची

1. ‘शाखामृग’ शब्द का पर्यायवाची है -

- (a) हिरण (b) वानर  
(c) तोता (d) भौंरा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

‘शाखामृग’, कपि, मर्कट, कपीश, हरि, कीश इत्यादि वानर के पर्यायवाची हैं।

2. ‘सौदामिनी’ का पर्यायवाची है -

- (a) बिबुध (b) शक्र  
(c) क्षणप्राभा (d) आसार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

सौदामिनी का पर्यायवाची चपला, प्रभा, विद्युत, क्षणप्राभा, तड़ित इत्यादि होता है। बिबुध, देवता का; शक्र, इन्द्र का पर्यायवाची है।



3. इनमें से 'अज्ञ' का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

- (a) विज्ञ (b) अनाभिज्ञ  
(c) मूर्ख (d) मूर्ख

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'विज्ञ', 'अज्ञ' का विलोम है, शेष 'अज्ञ' के पर्यायवाची हैं।

4. अधोलिखित में कौन एक 'घर' का पर्यायवाची है?

- (a) अयन (b) चयन  
(c) मयन (d) घरन

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'घर' का पर्यायवाची गृह, सदन, अयन, निकेतन, भवन, निलय, मन्दिर, धाम इत्यादि हैं।

निर्देश (प्रश्न 5-7) : नीचे दिए गए शब्दों के विकल्पों में से एक शब्द पर्यायवाची (समानार्थी) नहीं है, उसे छँटिये -

5. तलवार

- (a) खड्ग (b) असि  
(c) करगल (d) कुठार

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'कुठार', तलवार का पर्यायवाची नहीं, बल्कि फरसा का पर्यायवाची है। तलवार के पर्यायवाची हैं- खड्ग, कृपाण, असि, करगल, करवाल, शमशीर आदि।

6. गंगा

- (a) भागीरथी (b) सुरसरि  
(c) अवतरणी (d) मंदाकिनी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

अवतरणी, गंगा का पर्यायवाची नहीं है। गंगा का पर्यायवाची भागीरथी, सुरसरि, मंदाकिनी, जाह्नवी, देवनदी, देवपगा, विष्णुपदी, त्रिपथगा है।

7. इन्द्र

- (a) भूपेन्द्र (b) शक्र  
(c) सुरपति (d) पर्वतारि

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'भूपेन्द्र' इन्द्र का नहीं, बल्कि राजा का पर्यायवाची शब्द है। इन्द्र के पर्यायवाची हैं - सुरपति, शविपति, देवराज, शक्र, पर्वतारि, महेन्द्र, मधवा, देवेन्द्र आदि।

8. 'कलश' का पर्याय है-

- (a) जल (b) कुम्भ  
(c) पात्र (d) उपस्कर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

कलश का पर्याय कुम्भ, घट, घड़ा तथा गगरा होता है। पानी, वारि, नीर, सलिल, अम्बु, तोय, पय, जीवन, आब, उदक इत्यादि जल के पर्याय हैं।

9. 'सरस्वती' के चार पर्याय दिये गये हैं। इनमें गलत कौन है?

- (a) भारती (b) शारदा  
(c) भामा (d) वागीश्वरी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

सरस्वती के पर्याय भारती, शारदा, वागीश्वरी, वाणी, गिरा, भाषा, ब्राह्मी, वीणापाणि, वागीश, महाश्वेता तथा निधात्री हैं, जबकि भामा रत्नी का पर्याय है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- लक्ष्मी के पर्यायवाची हैं-पद्मा, रमा, इंदिरा, कमला, पद्मासना, समुद्रजा, क्षोरोद, श्री आदि।
- पार्वती के पर्यायवाची हैं-गिरिजा, शैलसुता, अम्बिका, भवानी, गौरी, उमा, रुद्राणी, हेमवती, शैलसुता, मैनसुता, अम्बा आदि।
- सीता के पर्यायवाची हैं-वैदेही, जानकी, भूमिजा, रामप्रिया, जनकसुता आदि।

10. महाश्वेता किसका पर्यायवाची है?

- (a) लक्ष्मी (b) सरस्वती  
(c) पार्वती (d) सीता

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. चंद्रिका का पर्याय है-

- (a) चन्द्रहास (b) रजत  
(c) कौमुदी (d) स्वर्णकिरण

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

चंद्रिका का पर्यायवाची, चाँदनी, ज्योत्स्ना, कौमुदी, जुन्हाई, अंजोरिया आदि हैं।

12. 'वेश्या' के चार पर्याय दिये गये हैं। इनमें त्रुटिपूर्ण कौन-सा है?

- (a) गणिका (b) वारांगना

(c) कुलटा

(d) रंडी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘वेश्या’ के पर्याय गणिका, वारांगना, रंडी, मंगलमुखी, रामजनी, सदासुतगिन, पतुरिया इत्यादि हैं, जबकि कुलटा, स्वैरिणी, पुंश्चली, छिनाल इत्यादि व्यभिचारिणी के पर्याय हैं।

13. ‘देवता’ का पर्यायवाची शब्द है-

- (a) अनीक (b) विबुध  
(c) अलकेश (d) ज्योतिष्क

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

आदित्य, अमर्त्य, गीर्वाण, देव, अमर, सुर, विबुध, निर्जर इत्यादि ‘देवता’ का पर्यायवाची है।

14. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ ‘नौका’ है-

- (a) तरणि (b) तरुण  
(c) तरुणी (d) तरण

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

‘नौका’ का पर्यायवाची नाव, तरी, तरिणी, तरणी होता है। रामा गुप्ता की पुस्तक ‘व्याकरण वाटिका’ में तरणि को भी नाव के पर्यायवाची में शामिल किया गया है। तरुणी का अर्थ युवती तथा तरुण का अर्थ युवक होता है।

15. ‘मोर’ का पर्यायवाची इनमें से क्या है?

- (a) कलापी (b) तड़ित  
(c) विशिख (d) विलक्षण

T.G.T. परीक्षा, 2003

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

मोर का पर्यायवाची मयूर, शिखी, ध्वजी, नीलकण्ठ, कलापी, भुजंगारि, शिवसुतवाहन आदि हैं। तड़ित, दामिनी का, विशिख, बाण का तथा विलक्षण, पण्डित का पर्यायवाची है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- विद्युत का पर्यायवाची है-चपला, प्रभा, बिजली, दामिनी, क्षणप्रभा, सौदामिनी आदि।  
➤ बाण का पर्यायवाची है-इषु, शर, नाराच, शिलीमुख, आशुग आदि।  
➤ विद्वान का पर्यायवाची है-सुधी, कोविद, बुध, धीर, मनीषी आदि।

16. ‘बसन्त’ के चार पर्याय दिये गये हैं। इनमें त्रुटिपूर्ण कौन है?

- (a) ऋतुपति (b) कुसुमाकार

(c) मधुमास

(d) कांतार

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

बसन्त के पर्याय हैं-ऋतुपति, कुसुमाकर, मधुमास, ऋतुराज, बहार इत्यादि। कांतार, वन का पर्याय है।

17. ‘स्थिर’ शब्द का पर्याय है—

- (a) स्थिरता (b) निश्चलता  
(c) अडिग (d) दृढ़ता

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

‘स्थिर’ शब्द का पर्यायवाची अडिग, निश्चल, दृढ़, स्थायी, स्थावर इत्यादि है।

18. ‘देहधारी’ शब्द पर्यायवाची है—

- (a) जिह्वा का (b) जीव का  
(c) जल का (d) जय का

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

‘देहधारी’ शब्द का पर्यायवाची प्राणी, जीवधारी, जीव, जीवनधारी इत्यादि है।

19. ‘प्रतारक’ किसका पर्यायवाची है?

- (a) ठग का (b) टेक का  
(c) टीका का (d) डर का

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

‘प्रतारक’ ठग का पर्यायवाची है। इसके अन्य पर्यायवाची हैं- वंचक, अड़ीमार, प्रवंचक, जालसाज इत्यादि।

20. निम्नलिखित शब्दों में से ‘अर्थ’ का अर्थ नहीं है -

- (a) धन (b) मतलब  
(c) कारण (d) विश्वास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

‘अर्थ’ का अर्थ मतलब, धन, अभिप्राय, कारण इत्यादि होता है।

21. ‘अंस’ शब्द का अर्थ है -

- (a) हिस्सा (b) भाग  
(c) अंश (d) कन्धा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

‘अंस’ शब्द का अर्थ ‘कन्धा’ होता है, जबकि ‘अंश’ का अर्थ हिस्सा या भाग होता है।

22. 'हिमवान्' का पर्याय है—

- (a) हिमवर्षा (b) हिम  
(c) हिमाद्रि (d) हिममानव

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'हिमवान्' का पर्याय 'हिमाद्रि' होगा। इसके अन्य पर्याय हैं—हिमालय, हिमगिरि, गिरिराज, नगपति, नागेश इत्यादि।

23. 'उपानह' शब्द किसका पर्यायवाची है?

- (a) जूता का (b) जोर का  
(c) जादू का (d) ज्येष्ठ का

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

पादुका, पदत्राण, उपानह, पनही, खड़ाऊ इत्यादि जूता का पर्यायवाची है।

24. 'ओघ' शब्द पर्यायवाची है—

- (a) ढेर का (b) ढोंग का  
(c) ढीठ का (d) डेरा का

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'ओघ' शब्द का पर्यायवाची ढेर, समूह, जमाव, राशि, पुँज इत्यादि होता है।

25. कौन-सा शब्द 'गंगा' का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) जाह्नवी (b) देवाप्रगा  
(c) सुरसरि (d) सरिता

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

सरिता, गंगा का नहीं, बल्कि नदी का पर्यायवाची है। गंगा के पर्यायवाची हैं—जाह्नवी, सुरसरि, देवसरि, विष्णुपदी, देवाप्रगा, देवनदी, त्रिपथगा, मन्दाकिनी, अलकनन्दा, सुरध्वनि, नदीश्वरी, भागीरथी इत्यादि।

26. 'गंगा' का एक नाम है—

- (a) हंससुता (b) सुरसर  
(c) विष्णुपदी (d) धेनुमती

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'बादल' का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) जलद (b) नीरद  
(c) वारिधि (d) मेघ

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

वारिधि, बादल का नहीं, बल्कि समुद्र का पर्यायवाची है। सिन्धु, सागर, जलधि, उदधि, पारावार, नदीश, वारीश, पयोनिधि, रत्नाकर, नीरनिधि, पयोधि, तोयनिधि, जलधाम इत्यादि भी समुद्र के पर्यायवाची हैं, जबकि मेघ, नीरद, जलद, अभ्र, पयोदि, जलधर, पयोधर, वारिधर, वारिद इत्यादि बादल के पर्यायवाची हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ जल के पर्यायवाची के अन्त में 'द' अक्षर जोड़ देने पर बादल का पर्यायवाची बन जाता है।  
☛ जल के पर्यायवाची के अन्त में 'धि' अक्षर जोड़े देने पर समुद्र का पर्यायवाची बन जाता है।  
☛ जल के पर्यायवाची के अन्त में 'ज' अक्षर जोड़ देने पर कमल का पर्यायवाची बन जाता है।

28. इनमें से 'बादल' का पर्यायवाची शब्द नहीं है—

- (a) जलद (b) जलधि  
(c) मेघ (d) वारिद

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. 'बादल' का पर्यायवाची शब्द नहीं है?

- (a) अभ्र (b) जीभूत  
(c) वारिद (d) मर्कट

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

अभ्र, जीभूत, वारिद, नीरद, मेघ, पयोदि, जलधर, बलाधर, वारिधर इत्यादि बादल के पर्यायवाची हैं, जबकि मर्कट, बन्दर का पर्यायवाची है।

30. निम्नलिखित में से 'अभ्र' का पर्यायवाची है—

- (a) रत्नाकर (b) बादल  
(c) आकाश (d) पवन

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b & c)

'अभ्र' बादल एवं आकाश दोनों का पर्यायवाची है।

31. 'अतिथि' का पर्यायवाची है—

- (a) अमृतफल (b) उन्नयन  
(c) आगन्तुक (d) आजन्म

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'अतिथि' का पर्यायवाची है—आगन्तुक, अभ्यागत, पाहुना, गृहागत इत्यादि।

32. पर्यायवाची की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है -

- (a) आकाश - पुष्कर (b) कमल - तामरस  
(c) यमुना - जाह्नवी (d) कामदेव - मनोभव

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

विकल्प (c) युग्म अशुद्ध है। यमुना का पर्यायवाची जाह्नवी नहीं है, बल्कि गंगा का पर्यायवाची है। शेष युग्म सही हैं।

33. इनमें से किस शब्द के पर्यायवाची गलत हैं?

- (a) कमल - जलज, पंकज, सरोज  
(b) पुष्प - कुसुम, फूल, सुमन  
(c) सरस्वती - गिरा, भारती, वाणी  
(d) सूर्य - दिवस, याम, वासर।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

प्रस्तुत विकल्प (a), (b) तथा (c) के पर्यायवाची शब्द सही हैं, जबकि विकल्प (d) में प्रस्तुत सूर्य के पर्यायवाची गलत हैं। सूर्य के पर्यायवाची हैं- मार्तण्ड, दिनकर, दिवाकर, भानु, भास्कर, रवि, मरीचि, प्रभाकर, सविता, पतंग, हंस, आदित्य, अंशुमाली इत्यादि। दिन के पर्यायवाची वासर, दिवस, दिवा, वार इत्यादि हैं।

34. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द 'पताका' का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) झण्डा (b) निशान  
(c) प्रस्तर (d) ध्वज

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2009

उत्तर—(c)

झण्डा, ध्वज, निशान, ध्वजा इत्यादि 'पताका' के पर्यायवाची हैं, जबकि पाषाण, प्रस्तर, पाहन तथा अश्म पत्थर के पर्यायवाची हैं।

35. 'केतु' का पर्यायवाची है -

- (a) राहु (b) नाग  
(c) अंशुक (d) ध्वज

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'केतु' का पर्यायवाची 'ध्वज' है। इसके अन्य पर्यायवाची हैं- झण्डा, पताका, निशान इत्यादि, जबकि 'नाग' हाथी का पर्यायवाची है।

36. 'स्त्री' का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

- (a) तरुणी (b) प्रमदा  
(c) ललाम (d) ललना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'स्त्री' के पर्यायवाची शब्द नारी, वनिता, महिला, कान्ता, रमणी, अबला, कामिनी, भामिनी, प्रमदा, ललना, तरुणी, अंगना इत्यादि हैं। ललाम का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है।

37. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ 'स्त्री' है-

- (a) अंगजा (b) अंगना  
(c) आँगन (d) अंगार

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'हवा' का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) अनिल (b) अनल  
(c) मारुत (d) पवन

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

अनिल, मारुत, पवन, वायु, समीर, वात, बयार, समीरण, मरुत, प्रकम्पन इत्यादि 'हवा' के पर्यायवाची हैं, जबकि अनल, अग्नि, पावक, दहन, वायुसखा, कृशानु, धूमकेतु, वह्नि इत्यादि 'आग' के पर्यायवाची हैं।

39. 'आकाश' का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

- (a) गगन (b) नभ  
(c) अम्बर (d) अवनि

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

गगन, नभ, अम्बर, चौ, व्योम, अभ्र, अन्तरिक्ष, आसमान, अनन्त इत्यादि 'आकाश' के पर्यायवाची हैं, जबकि अवनि, भू, इला, भूमि, धरा, उर्वी, धरती, धरित्री, धरणी, वसुधा, वसुन्धरा, मेदिनी, अचला, क्षिति, मही इत्यादि पृथ्वी के पर्यायवाची हैं।

निर्देश (प्रश्न 40-44 के लिए)—इन प्रश्नों में प्रत्येक में एक शब्द दिया गया है जिसके नीचे चार शब्द अंकित हैं। इनमें से एक शब्द दिए हुए शब्द का समानार्थी है। सही समानार्थी शब्द चुनिए-

40. कमल

- (a) पारिजात (b) रजनी  
(c) विभावरी (d) यामिनी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

पारिजात, कमल का समानार्थी शब्द है। रजनी, विभावरी तथा यामिनी रात्रि के पर्यायवाची हैं।

41. कलानिधि

- (a) नीर (b) हिमाँशु



(c) अम्बु

(d) आगार

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

चन्द्र, चाँद, चन्द्रमा, हिमाँशु, सुधाँशु, सुधाकर, राकेश, शशि, सारंग, निशाकर, निशापति, रजनीपति, मृगांक इत्यादि कलानिधि के पर्यायवाची हैं।

42. तुंग

(a) उन्नत

(b) प्रचण्ड

(c) नारियल

(d) पुन्नांग

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

तुंग का पर्यायवाची ऊँचा, उन्नत, गगनचुम्बी, उच्च, लम्बा इत्यादि होता है। प्रचण्ड, उग्र का पर्यायवाची है।

43. शिखी

(a) शिखायुक्त

(b) मयूर

(c) बुलबुल

(d) बैल

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

शिखी का पर्यायवाची मोर, मयूर, वहीं, सारंग, केकी इत्यादि हैं।

44. मिलिन्द

(a) भुजंग

(b) सरिता

(c) कगार

(d) भ्रमर

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

मिलिन्द का पर्यायवाची भौरा, भ्रमर, अलि, षट्पद, मधुकर, द्विरेफ, मधुप इत्यादि हैं।

45. 'धूसर' किसका पर्याय है?

(a) अश्व

(b) मेघ

(c) गर्दभ

(d) अजा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

खर, गर्दभ, रासभ, बेशर, चक्रीवान, वैशाखनन्दन, धूसर इत्यादि गर्दभ के पर्यायवाची हैं।

46. 'अद्रि' शब्द का अर्थ है-

(a) दुःख

(b) गीला

(c) व्यर्थ

(d) पर्वत

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'अद्रि' का पर्यायवाची है-पर्वत, पहाड़, शैल, गिरि, भूधर, अचल, महीधर, नग, भूभूत, धरधर, शृंगी इत्यादि।

47. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ 'एतराज' है -

(a) आपत्त

(b) आपत्ति

(c) संकट

(d) विपत्ति

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'एतराज' का अर्थ 'आपत्ति' है। आपत्त, संकट तथा विपत्ति एक ही अर्थ प्रकट करते हैं।

48. 'बाण' का पर्याय है-

(a) हय

(b) अर्चि

(c) उर्वी

(d) आशुग

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

तीर, शर, विशिख, आशुग, शिलीमुख, इषु, नाराच इत्यादि 'बाण' के पर्याय हैं। हय, घोड़ा का, अर्चि, किरण का तथा उर्वी, पृथ्वी का पर्यायवाची है।

49. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'कमल' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) अरविन्द

(b) शतदल

(c) सरसिज

(d) अमिय

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर—(d)

कमल के पर्यायवाची सरोज, जलज, पंकज, नीरज, अरविन्द, शतदल, सरसिज, अब्ज, पद्म, कंज, अम्बुज, नलिन, तामरस, वारिज, राजीव, पुण्डरीक, उत्पल, जलजात, इन्दीवर, कोकनद इत्यादि हैं, जबकि पीयूष, सुधा, अमिय, जीवनोदक इत्यादि अमृत के पर्यायवाची हैं।

50. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द कमल का पर्यायवाची नहीं है?

(a) सरोज

(b) जलद

(c) पंकज

(d) जलजात

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. 'राजीव' शब्द का पर्याय है -

(a) तामरस

(b) पारद

(c) रसाल

(d) कुमुद

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'राजीव' का पर्याय तामरस है। रसाल, आम का तथा कुमुद चाँदी का पर्यायवाची है।

52. निम्नलिखित में घोड़ा का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

- (a) अश्व (b) सैन्धव  
(c) घोटक (d) यातुधान

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

अश्व, वाजि, हय, घोटक, सैन्धव, तुरग, तुरंग आदि घोड़ा के पर्यायवाची हैं, जबकि यातुधान, असुर, दनुज, दानव, दैत्य, निशिचर, निशाचर, रजनीचर आदि राक्षस के पर्यायवाची हैं।

53. 'तुरंग' शब्द का पर्यायवाची शब्द चुनिए—

- (a) कुरंग (b) शार्दूल  
(c) वाजि (d) शश

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

54. 'अश्व' का पर्यायवाची शब्द है—

- (a) घोटक (b) अनन्त  
(c) सुरपति (d) दिनकर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. 'वाजी' शब्द का पर्यायवाची है—

- (a) अश्व (b) बेसर  
(c) शृगाल (d) किंकर

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

घोड़ा, वाजी, घोटक, हय, बाजि, तुरंग, रविसुत इत्यादि अश्व के पर्यायवाची हैं। किंकर 'दास' का पर्यायवाची है।

निर्देश (प्रश्न 56-65 के लिए)— निम्न प्रश्नों में प्रत्येक में किसी सर्वाधिक उपयुक्त युग्म को चुनिए जो दिए गए शब्द का पर्यायवाची हो।

56. अंतरिक्ष

- (a) पृथ्वी, आकाश (b) व्योम, आकाश  
(c) सुरप, सिद्धपथ (d) अनन्त, गगन

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

अंतरिक्ष के पर्यायवाची व्योम, आकाश, गगन, नभ, अम्बर, अभ्र, आसमान, शून्य इत्यादि हैं।

57. अम्बुज

- (a) कमल, शंख (b) कमला, ब्रह्मा

(c) बज्र, बेंत

(d) मीन, जलकुम्भी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

अम्बुज का पर्यायवाची कमल, अरविन्द, राजीव, जलज, शंख, सरोज, पंकज, पद्म, पुण्डरीक, जलजात, नलिन इत्यादि होता है।

58. खल

- (a) विश्वासघाती, निर्लज्ज (b) नीच, दुर्जन  
(c) दुष्ट, धोखेबाज (d) खली, खरल

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

खल का पर्यायवाची नीच, दुर्जन, दुष्ट, अधम, पाजी इत्यादि होता है।

59. तृण

- (a) तुच्छ, अल्प (b) घास, पत्ता  
(c) तिनका, घास (d) लता, द्रुम

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

तिनका एवं घास तृण के पर्यायवाची हैं।

60. क्षुद्र

- (a) कंजूस, कृपण (b) निर्धन, दरिद्र  
(c) अल्प, मामूली (d) नीच, अधम

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

क्षुद्र के पर्यायवाची नीच, अधम, घटिया, ओछा इत्यादि हैं।

61. उग्र

- (a) तीव्र, रौद्र (b) प्रचण्ड, क्रोधी  
(c) उत्कट, घोर (d) शिव, सूर्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उग्र के पर्यायवाची भयानक, क्रूर, क्रोधी, प्रचण्ड, तीक्ष्ण, तेज इत्यादि हैं।

62. बटोही

- (a) बटमार, एकाकी (b) असहाय, दुर्गम  
(c) पथिक, राहगीर (d) पाथेय, मेघ

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

बटोही के पर्यायवाची शब्द राही, पथिक, मुसाफिर, राहगीर, यात्री, पंथी इत्यादि हैं।

63. विरद

- (a) यश, ख्याति (b) बीज, मूल  
(c) वृक्ष, पौधा (d) विरही, वियोगी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

विरद के पर्यायवाची ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति, यश इत्यादि हैं।

64. यातुधान

- (a) पथिक, कष्ट (b) काल, हवा  
(c) यातना, हिंसा (d) राक्षस, निशाचर

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशाचर, निशाचर, रजनीचर इत्यादि यातुधान के पर्यायवाची हैं।

65. विभु

- (a) सर्वव्यापक, नित्य (b) ब्रह्म, आत्मा  
(c) महान, ईश्वर (d) चिरस्थायी, दृढ़

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

विभु के पर्यायवाची सर्वव्यापक, अनन्त, अजन्मा एवं नित्य इत्यादि हैं।

66. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिये गये कूट का सही

उत्तर चुनिए-

सूची-I

(शब्द)

क. जलज

ख. जलद

ग. जलधि

कूट: क ख ग

(a) (i) (ii) (iii)

(b) (ii) (i) (iii)

(c) (iii) (ii) (i)

(d) (ii) (iii) (i)

सूची-II

(अर्थ)

(i) बादल

(ii) कमल

(iii) समुद्र

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I

(शब्द)

जलज

जलद

जलधि

सूची-II

(अर्थ)

कमल

बादल

समुद्र

67. निम्न में से कौन-सा पर्यायवाची शब्द-युग्म सही नहीं है?

- (a) कमल-मृणाल (b) ओस-नीहार

(c) आकाश-अभ्र

(d) गाय-द्विज

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

कमल का पर्यायवाची मृणाल, ओस का पर्यायवाची नीहार तथा आकाश का पर्यायवाची अभ्र होता है, जबकि द्विज ब्राह्मण, पक्षी तथा दाँत के पर्यायवाची हैं। गाय से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

68. 'द्विज' शब्द का अर्थ है-

- (a) ब्राह्मण (b) दाँत  
(c) पक्षी (d) इनमें से सभी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

69. 'पक्षी' शब्द का पर्यायवाची है -

- (a) अंशुक (b) द्विज  
(c) वरुण (d) तरुण

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'पक्षी' शब्द का पर्यायवाची द्विज, विहग, विहंग, खग, पखेरू, परिंदा, पतंग, शकुन्त, चिड़िया आदि हैं।

70. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'हंस' का पर्यायवाची है?

- (a) कुरंग (b) भुजंग  
(c) मराल (d) पंचबाण

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

हंस के पर्यायवाची मराल, मुक्तभुक्, सरस्वती वाहन इत्यादि हैं। कुरंग, हिरन का तथा भुजंग, सर्प का पर्यायवाची है। पंचबाण, कामदेव का पर्यायवाची है।

71. 'शिव' का कौन-सा अर्थ नहीं है?

- (a) महादेव (b) पशुपति  
(c) चक्रपाणि (d) शंकर

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

शिव के पर्यायवाची महादेव, पशुपति, शंकर, उमापति, कैलाशपति, शंभु, हर, महेश्वर, त्रिपुरारि, गंगाधर, चन्द्रशेखर, महेश, चन्द्रमौलि, मदनारि इत्यादि हैं। चक्रपाणि, विष्णु का पर्यायवाची है।

72. 'खेचर' का पर्याय होगा-

- (a) आकाश में चलने वाला (b) पक्षी  
(c) ग्रह (d) इनमें से सभी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

‘खेचर’ का पर्याय आकाशचारी, तारागण, वायु, देवता, विमान, पक्षी, बादल इत्यादि होता है।

73. ‘कामदेव’ का पर्यायवाची शब्द कौन-सा है?

- (a) सरोज (b) उरोज  
(c) मनोज (d) पाथोज

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

मदन, मनोज, मार, मदन, मकरध्वज, मनोभव, पंचशर, स्मर, मनसिज, मन्मथ, मीनकेतु, कन्दर्प, अनंग, रतिपति, कुसुमशर इत्यादि कामदेव के पर्यायवाची हैं। सरोज, कमल का तथा उरोज, स्तन का पर्यायवाची है।

74. ‘कौंच’ का पर्यायवाची शब्द है-

- (a) शीशा (b) सीसा  
(c) शिपा (d) शिसा

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

कौंच के पर्यायवाची शब्द शीशा तथा दर्पण हैं।

75. निम्नलिखित में अर्थ की दृष्टि से सही शब्द युग्म कौन है?

- (a) जातवेद - लोहा (b) जातरूप - चाँदी  
(c) परभृत - कौआ (d) ताम्रचूड़ - मुर्गा

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

तमचुर, अरुणशिखा, ताम्रचूड़, कुक्कुट, चरणाशुद्ध इत्यादि मुर्गा के पर्यायवाची हैं। अतः विकल्प (d) युग्म सही है। जातवेद ‘अग्नि’ का, जातरूप ‘सोना’ का तथा परभृत ‘कोयल’ का पर्यायवाची है।

76. निम्नलिखित शब्दों में से ‘हनुमान’ का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

- (a) रामभक्त (b) पवनसुत  
(c) बजरंगबली (d) कपीश्वर

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

‘हनुमान’ का पर्यायवाची ‘रामभक्त’ नहीं है, जबकि पवनसुत, बजरंगबली, कपीश्वर, महावीर, रामदूत, कपीश, आंजनेय, मारुतिनन्दन, पवन कुमार, अंजनिपुत्र, केसरीनन्दन, जितेन्द्रिय, पवनपुत्र इत्यादि ‘हनुमान’ के पर्यायवाची हैं।

77. अलंकेश पर्यायवाची शब्द है-

- (a) बादल का (b) कल्पवृक्ष का  
(c) कुबेर का (d) चपला का

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

धनद, यक्षराज, धनाधिप, राजराज, किन्नरेश, धनपति, धनेश, अलंकेश, धनपाल तथा धनेश्वर इत्यादि कुबेर के पर्यायवाची हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ देववृक्ष, कल्पद्रुम, हरिचन्दन, मन्दार, सुरतरु, पारिजात, कल्पतरु, कल्पशाल इत्यादि कल्पवृक्ष के पर्यायवाची हैं।  
☛ विद्युत, चंचला, तड़ित, बिजली, क्षणप्रभा, दामिनी इत्यादि चपला के पर्यायवाची हैं।

78. ‘तरकश’ का पर्यायवाची शब्द है-

- (a) तीर (b) धनुष  
(c) प्रतिचा (d) निषंग

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

‘तरकश’ का पर्यायवाची शब्द निषंग है। निषंग का अर्थ ‘खड्ग’ एवं ‘तूणीर’ भी है।

79. ‘प्लवग’ शब्द का अर्थ है-

- (a) बन्दर (b) मेढक  
(c) पक्षी (d) पानी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(\*)

‘प्लवग’ का अर्थ बन्दर, हिरन, मेढक, जल-पक्षी, सिरस का पेड़, सूर्य के सारथी का एक नाम है।

80. ‘सूर्य’ का पर्यायवाची नहीं है-

- (a) रवि (b) भास्कर  
(c) हंस (d) सारंग

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

सारंग, अनेकार्थी शब्द है। इसके अर्थ हैं-कोयल, चातक, मोर, हंस, बाज, सिंह, घोड़ा, हाथी, मृग, सूर्य, चन्द्रमा, सोना, भौरा, धनुष, बादल, समुद्र, शंख तथा कामदेव इत्यादि। अतः सारंग को सूर्य के पर्यायवाची शब्द में शामिल नहीं किया जा सकता, जबकि रवि, भास्कर, हंस इत्यादि सूर्य के पर्यायवाची हैं।

81. निम्नांकित में से कौन-सा शब्द ‘सूर्य’ का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) दिनकर (b) दिवाकर  
(c) भास्वर (d) अंशुमाली

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(\*)

मार्तण्ड, दिनकर, दिवाकर, भानु, भास्कर, रवि, मरीचि, प्रभाकर, सविता, पतंग, हंस, आदित्य, अंशुमाली इत्यादि सूर्य के पर्यायवाची हैं। भास्वर भी सूर्य का पर्यायवाची है। अतः प्रस्तुत विकल्प में सभी सूर्य के पर्यायवाची हैं।



# □ विलोम

निर्देश (प्रश्न 1-2) : निम्नलिखित शब्दों के लिए इनका उपयुक्त विलोम शब्द (विपरीतार्थक) छाँटिए -

## 1. गणतन्त्र

- (a) प्रजातन्त्र (b) हृदयतन्त्र  
(c) यन्त्रतन्त्र (d) राजतन्त्र

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

‘गणतन्त्र’ शब्द का विलोम (विपरीतार्थक शब्द) राजतन्त्र होता है। अन्य विकल्प असंगत हैं।

## 2. गुण

- (a) सगुण (b) गुणातीत  
(c) अवगुण (d) गान

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

‘गुण’ का विलोम शब्द अवगुण होता है। इसका विलोम ‘दोष’ भी होता है। अन्य विकल्प असंगत हैं।

## 3. सृष्टि का विलोम शब्द है-

- (a) मरण (b) प्रलय  
(c) वृष्टि (d) मोक्ष

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

‘सृष्टि’ का विलोम ‘प्रलय’, ‘मरण’ का विलोम ‘जन्म’, ‘मोक्ष’ का विलोम ‘बन्धन’ होता है।

## 4. ‘सृष्टि’ शब्द का विलोम है-

- (a) सन्धि (b) विग्रह  
(c) प्रलय (d) उत्कृष्ट

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

## 5. ‘समष्टि’ का विलोमार्थी शब्द है-

- (a) विशिष्ट (b) व्यक्ति  
(c) अशिष्ट (d) अपुष्टि

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

‘समष्टि’ का विलोमार्थी शब्द ‘व्यक्ति’ होता है। विशिष्ट का साधारण, अशिष्ट का शिष्ट तथा अपुष्टि का विलोम पुष्टि होता है।

## 6. ‘स्वप्न’ का विलोम है-

- (a) दिवस्वप्न (b) खुमारी  
(c) निद्रा (d) जागरण

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

डॉ. हरदेव बाहरी (हिन्दी : शब्द- अर्थ-प्रयोग) के अनुसार ‘स्वप्न’ का विलोम ‘जागरण’ होता है। ‘निद्रा’ का विलोम भी ‘जागरण’ होता है।

## 7. ‘आर्द्र’ का विलोम शब्द है-

- (a) नम (b) शुष्क  
(c) गीला (d) लट्ठीला

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘आर्द्र’ का विलोम ‘शुष्क’ होता है। ‘गीला’ का विलोम ‘सूखा’ तथा ‘लट्ठीला’ का विलोम ‘कड़ा’ होता है।

## 8. ‘कुटिल’ का विलोम है-

- (a) जटिल (b) रूढ़  
(c) ऋजु (d) वक्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘कुटिल’ का विलोम ‘सरल’ होता है। ‘वक्र’ तथा ‘कठिन’, ‘कुटिल’ के समानार्थी हैं। ‘जटिल’ तथा ‘वक्र’ दोनों का विलोम ‘सरल’ अथवा ‘ऋजु’ होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ⇒ कृत्रिम का विलोम प्रकृत होता है।
- ⇒ कोप का विलोम कृपा होता है।
- ⇒ कर्म का विलोम निष्कर्म अथवा अकर्म होता है।
- ⇒ कृष्ण का विलोम श्वेत अथवा शुक्ल होता है।

## 9. ‘आवाहन’ का विलोम है-

- (a) अवगाहन (b) तिरोभाव  
(c) विसर्जन (d) धन्यवाद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘आवाहन’ का विलोम ‘विसर्जन’ होता है। आविर्भाव का विलोम तिरोभाव होता है।

## 10. ‘परुष’ शब्द का विलोम है-

- (a) अपौरुष (b) सरल  
(c) कठोर (d) कोमल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

परुष का विलोम कोमल अथवा अपरुष होता है। सरल का विलोम कठिन होता है। कोमल एवं कठोर परस्पर विलोम हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- परकीय का विलोम स्वकीय होता है।
- परमार्थ का विलोम स्वार्थ होता है।
- पराजेय का विलोम अपराजेय होता है।
- परिणत का विलोम अपरिणत होता है।
- परिपुष्ट का विलोम अपरिपुष्ट होता है।

**11. परुष का विलोम शब्द है-**

- (a) बल (b) शक्ति  
(c) कोमल (d) इनमें से कोई नहीं

**T.G.T. परीक्षा, 2002**

**उत्तर—(c)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**12. 'आसक्त' का विलोम है-**

- (a) विरक्त (b) अनुरक्त  
(c) संसक्ति (d) विभक्त

**T.G.T. परीक्षा, 2013**

**उत्तर—(a)**

'आसक्त' का विलोम अनासक्त अथवा विरक्त होता है। अनुरक्त का विलोम भी विरक्त होता है। विभक्त का विलोम अविभक्त होता है।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- आसान का विलोम मुश्किल होता है।
- आसीन का विलोम अनासीन होता है।
- अस्तिक का विलोम नास्तिक होता है।
- आस्था का विलोम अनास्था होता है।
- आहार्य का विलोम अनाहार्य होता है।

**13. उपजाऊ का विलोम है-**

- (a) सिंचित (b) खाद  
(c) ऊसर (d) बंजर

**T.G.T. परीक्षा, 2013**

**उत्तर—(c)**

उपजाऊ का विलोम अनुपजाऊ तथा ऊसर होता है। डॉ. हरदेव बाहरी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी : शब्द-अर्थ-प्रयोग' में उपजाऊ का विलोम अनुपजाऊ लिखा है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) दिया है।

**अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**

- उपकारक का विलोम अनुपकारक होता है।
- उपमित का विलोम अनुपमित होता है।
- उपमेय का विलोम अनुपमेय होता है।
- उपयुक्त का विलोम अनुपयुक्त होता है।
- उपार्जित का विलोम अनुपार्जित होता है।

**14. 'परिश्रम' शब्द का विलोम है -**

- (a) आश्रय (b) विश्राम  
(c) विश्रांत (d) विश्रम

**आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012**

**उत्तर—(b)**

'परिश्रम' शब्द का विलोम विश्राम होता है। अन्य विकल्प असंगत हैं।

**15. 'परिश्रम' का विलोम शब्द है -**

- (a) विश्रांत (b) अश्रम  
(c) विश्रम (d) विश्राम

**आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009**

**उत्तर—(d)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**16. 'सुषुप्ति' का विलोम है -**

- (a) जागरित (b) जागना  
(c) जगाना (d) जागरण

**आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012**

**उत्तर—(a)**

'सुषुप्ति' का विलोम जागरित होता है। 'सोना' का विलोम 'जागना' तथा 'शयन' का विलोम 'जागरण' है।

**17. 'उत्थान' का विलोम शब्द क्या है?**

- (a) प्रस्थान (b) पतन  
(c) विस्थापन (d) अनुत्थान

**P.G.T. परीक्षा, 2011**

**उत्तर—(b)**

'उत्थान' का विलोम 'पतन' होता है।

**18. 'स्वजाति' शब्द का विलोम है-**

- (a) अजाति (b) कुजाति  
(c) सुजाति (d) विजाति

**आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012**

**उत्तर—(d)**

'स्वजाति' शब्द का विलोम 'विजाति' है।

**19. 'स्वधर्म' शब्द का विलोम है-**

- (a) अधर्म (b) परधर्म  
(c) विधर्म (d) सुधर्म

**G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017**

**उत्तर—(b)**

'स्वधर्म' शब्द का विलोम 'परधर्म' होता है। अधर्म, विधर्म परस्पर समानार्थी हैं, जिनका विलोम धर्म होगा। सुधर्म, कुधर्म का विलोम है।